क्या होगा यदि

यीशु ने जो कहा उसका मतलब वही था?

नाटे ब्रॅमसेन

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका मतलब वही था?

यीशु का कहना यदि आपके वर्तमान जीवनशैली में लागू करने का
कभी भी इरादा नहीं होता तो क्या होगा?
यदि उसके कहने का मतलब सब कुछ बदलने का होता तो क्या होगा?

यीशु आपके जीवन का यदि सिर्फ़ एक हिस्सा नहीं चाहता तो क्या होगा?
यदि वह सब चाहता है तो क्या होगा?

यदि सिर्फ़ संतुलित मसीही जीवन ही यीशु मसीह का संपूर्ण समर्पण होता तो क्या होगा?
क्रूस उठाना ही यदि मसीही अनुयायियों के लिए केवल विकल्प न होता,

परंतु एक आज्ञा जिसका पालन करना हैं तो क्या होगा?

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका मतलब वही था?

यह पुस्तक पढ़ने से जीवन-परिवर्तनकारी निहितार्थों के साथ बहुत सारे सवाल पूछती है।
यीशु ने जो कहा यदि उसका मतलब वही था, तो उसका वचन हमारे नातेसंबंध, निवेश, बोलना,
दृष्टिकोण, चेले बनाना, आत्मिक शासन, और हमारे जीवनों के सभी
क्षेत्रो पर उसका कैसा प्रभाव होता?

ध्यान रहे। यह यात्रा आपके जीवनों पर कब्ज़ा कर सकती है।

नाटे ब्रॅमसेन का जन्म सेनेगल में हुआ, उन्होंने अपना अधिकांश जीवन अफ्रीकी महाद्वीप पर बिताया। २२ उम्र में, मध्य पूर्व में सड़क पर रहनेवाले बच्चों के साथ काम करते हुए, उन्होंने रॉक इन्टरनॅशनल संस्था स्थापन की, जो की एक गैर-लाभकारी संघटन और परियोजनाओं के लिए एक मार्ग हैं जो खतरे, दुर्व्यवहार और उपेक्षा के बीच बच्चों को राहत, अवसर और देखभाल प्रदान करती है। रॉक महत्वपूर्ण ज्ञान का बहुभाषीय मिडिया संसाधन करने का स्त्रोत भी है। नाटे अंतरराष्ट्रिय प्रकल्पों पर ध्यान देते है जब वे वैश्विक भ्रमणशील सेवकाई जारी रखते है। उनके मन में इस पीढ़ी को प्रोत्साहन देना है कि वे यीशु मसीह के बिना शर्त अनुयायी हो जाए और लोगों तक सुसमाचार पहुँचते हुए देखें।

मसीही जीवन/ शिष्यत्व/प्रेरणादायक

ISBN 978-1-62041-038-7
9 781620 410387 >

ROCK INTERNATIONAL
www.rockintl.org

क्या होगा यदि

यीशु ने जो कहा उसका मतलब वही था?

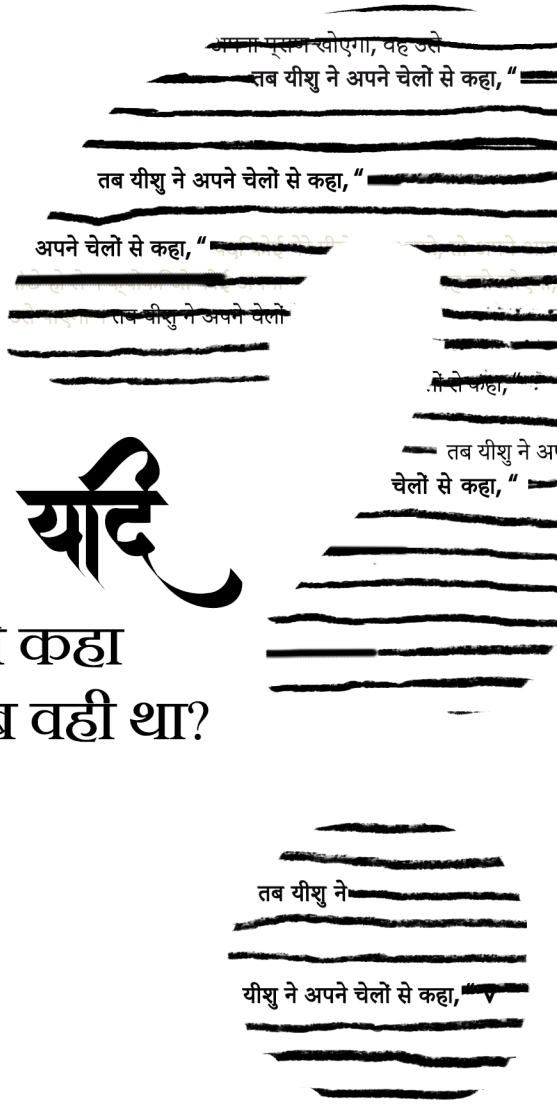

क्या होगा यदि

यीशु ने जो कहा उसका मतलब वही था?

लेखक : नाटे ब्रॅमसेन

अनुवादक : सॅमसन लंकेश्वर

नाटे ब्रॅमसेन द्वारा **क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका वही मतलब था?**

सॅमसन लंकेश्वर द्वारा हिंदी भाषा में अनुवादित
क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका वही मतलब था? का हिंदी संस्करण

सर्वाधिकार सुरक्षित।

प्रथम संस्करण

ISBN-978-1-62041-038-7
बच्चों के लिए राहत, अवसर और देखभाल • www.rockintl.org

Hindi edition of **What If Jesus Meant What He Said?**
Copyright © 2017, 2025 ROCK International

• ***R**elief, **O**pportunity & **C**are for **K**ids*
• ***R**esources **O**f **C**rucial **K**nowledge*
P.O. Box 4766, Greenville, SC 29608 USA
www.rockintl.org • resources@rockintl.org

बाइबल सोसायटी, भारत द्वारा 2022 में अनुवादित हिंदी बाइबल का मुख्य रूप से उपयोग किया गया है।

क्याला क्राहन द्वारा पृष्ठ चित्र रचना

जे. हॉड़गिन्स द्वारा आतंरिक रचना और लेआउट

भारत में मुद्रित

Printed In India

उन जवान लोगों के लिए जिन्होंने मेरे साथ चेलें
बनाने की इस यात्रा में विश्व का सफर किया।

यह आपके लिए है।

मेरी हमेशा यही प्रार्थना रही है कि आप
यीशु मसीह के बिना शर्त चेले बनें, चेले
जो उसके वचन में बने रहते हैं।

यह पुस्तक आपके लिए मेरा दिल है।

निशाने की और दौड़ते रहो, ताकि वह
इनाम पाएं जिसके लिए परमेश्वर ने आपको
मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

फिलिप्पियों ३:१४

विषय-सूची

परिचय ८

भाग १ "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे ...." १०

१ उथल पुथल शुरू होती है १२
२ क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था? १८
३ अनंतकाल के लिए निमंत्रण २६
४ समर्पण में विजय पाना ३५

भाग २ "... तो अपने आप का इन्कार करे..." ४०

५ स्वयं का त्याग या स्वयं का इन्कार ४२
६ जब स्वतंत्रता पिछड़ी लगती है ४८
७ जीवन के लिए नींव ५४
८ घर की रुपरेखा बनाना ५९
९ परमेश्वर के वचन द्वारा अपने आजीविका की रुपरेखा बनाना ६१
१० परमेश्वर के वचन द्वारा चेले बनाने की रुपरेखा तैयार करना ६८
११ परमेश्वर के वचन द्वारा अपने निवेश को तैयार करना ८२
१२ परमेश्वर के वचन द्वारा रिश्तों को बनाना ९४
१३ परमेश्वर के वचन द्वारा अपने शब्दों को बनाना १०४
१४ परमेश्वर के वचन द्वारा क्षमा करने की प्रक्रिया को बनाना ११५
१५ परमेश्वर के वचन द्वारा अपने सुरक्षा को तैयार करना १२६
१६ परमेश्वर के वचन द्वारा जीवन के दुश्मन उत्पन्न होते हैं १३१
१७ पवित्र आत्मा के साथ तालमेल बनाना १३७

भाग ३ "...और अपना क्रूस उठाए..." १४४

१८ यीशु ने आपको क्रूस से नहीं बचाया १४६
१९ क्रूस को समझना १५१
२० परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना १६०
२१ क्रूस की आशीषें १६८
२२ दुःख और उत्पीड़न की दस आशीषें १७३

भाग ४ "....और मेरे पीछे हो ले।" १९६

२३ जब मसीह घर में प्रवेश करता है १९८
२४ अनुसरण करना सीखना २०३
२५ प्रभु को बताना कि क्या करना है ? २१४
२६ आपके पास वह नहीं है जो इसके लिए आवश्यक है २२०
२७ बिना पछतावे का जीवन २२४

अंतिम टिप्पणियां २३३
लाभदायक सुविधाएं : परमेश्वर के वचन का गहन अध्ययन २४३
गहराई में जाना : किताबें और मिडिया संसाधनों २५१

परिचय

दुनिया को किसी और किताब की जरुरत नहीं है। इसे यीशु मसीह के प्रति बिना शर्त समर्पित जीवनों की जरुरत है।

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका वही मतलब था? क्या होगा यदि वह आपकी जिंदगी का सिर्फ़ एक हिस्सा नहीं चाहते? क्या होगा यदि वह आपका सर्वस्व चाहते हों?

क्या हम उनके कथनों को सांस्कृतिक रूप से-स्वीकृत बनाने के लिए उन्हें हल्के कर देते हैं, बजाय इसके कि उन्हें जीवन-परिवर्तनकारी शब्दों के रूप में स्वीकार करें? क्या होगा यदि प्रभु का यह इरादा नहीं था कि हम उनके शब्दों की व्याख्या कर उन्हें हल्का करें?

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

अपनी पीढ़ी के लोगों के साथ मेरी विश्वव्यापी सेवकाई में, मैं ऐसे कई लोगों को देखता हूँ जो अपनी विश्वास-यात्रा में भ्रमित हैं। मैं उन्हें यह पूछते हुए सुनता हूँ : *"मसीह में विश्वास करने से लेकर मसीह के साथ चलने तक की यात्रा क्या होती है?" "यह कैसी होनी चाहिए?" "हम मसीह यीशु को अपना उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करने से लेकर अपने प्रभु के रूप में उनके प्रति समर्पित होने की ओर कैसे आगे बढ़ते हैं ?"*

मसीह का अनुसरण करने के उनके सर्वव्यापी आह्वान के लिए समरूप, विधि-सम्मत या आसान उत्तर सुझाने के बजाय, इस पुस्तक के पन्ने उन गहन प्रश्नों की पड़ताल करतें हैं जो हमें मसीह के वचनों को मानने के लिए स्वयं से पूछने चाहिए। अगर यीशु ने जो कहां उनका वही मतलब था, तो उनके शब्द हमारे रिश्तों, निवेशों, वाणी, दूसरों के प्रति दृष्टिकोण, आत्मिक अनुशासन, शिष्यत्व और अंतत:, जीवन के हर पहलू को जीने के हमारे तरीके को कैसे प्रभावित कर सकते हैं ?

परमेश्वर के वचन को अपने जीवन के अनुसार ढालने की कोशिश करने के बजाय, हम अपने जीवन को परमेश्वर के वचन के अनुसार कैसे ढाल सकते हैं ? क्या होगा यदि प्रभु यीशु हमें क्रूस से बचाने के लिए नहीं, बल्कि उस प्याले से बचाने के लिए मरें? यदि हम मसीह यीशु के एक अनुयायी के इस संक्षिप्त कथन के अनुसार जीएँ तो क्या होगा? *"मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है।"* (फिलिप्पियों १:२१)

जीवित रहना मसीह और मरना सबसे बड़ा लाभ कैसे हो सकता है?

यह और अधिक प्रयास करने की बात नहीं है। यह परमेश्वर को और अधिक गहराई से जानने की बात है। यह एक दिव्य और अनंत प्रेम कहांनी में आने का निमंत्रण है जिसे स्वयं प्रभु परमेश्वर ने तैयार किया है।

क्या हम इस आत्म-निरिक्षण की यात्रा के लिए तैयार हैं? क्या हम कठिन प्रश्नों को पूछने और कठिन उत्तरों को पाने के लिए तैयार हैं ? क्या हम इस प्रश्न के अस्थायी और शास्वत निहितार्थों पर विचार करने के लिए तैयार हैं .....

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहा उसका वही मतलब था?

नाटे ब्रॅमसेन, २०२५

भाग १

“यदि मेरे आना

कोई
पीछे
चाहे ....”

१

उथल पुथल शुरू होती है

हाँ मैं जानता हूँ। मैंने ऐसे लेख पढ़े थे, जिनमे मुझे बिना पूरी तैयारी के मैरेथॉन न दौड़ने की चेतावनी दी गई थी। लेकिन अगर आप आयोजन से कुछ सप्ताहों पहले की गई चार-मील की दौड़ को *"तैयारी"* नहीं मानते, तो मेरी तैयारी कुछ भी नहीं थी- मेरी सामान्य कसरत और कभी-कभार की तैराकी को छोड़कर। स्टॉकहोम मैरेथॉन का एक चेतावनी भरा ईमेल मेरे दिमाग में बस गया था : *"४२, १९५ मीटर दौड़ना सहनशक्ति की परीक्षा है। जब तक आप पूरी तरह से स्वस्थ न हों तब तक दौड़ शुरू न करें।"*

मुझे याद है कि उस महत्वपूर्ण दिन से कुछ हफ़्ते पहले, मैं कोलोराडो रनिंग कंपनी में गया और मेरे एक साथी ने मुझसे पूछा, *"आप कौन-सी दौड़ में दौड़ने की योजना बना रहे हैं?"* उसे यह बताने के बाद कि मैं स्टॉकहोम मैरेथॉन दौड़ने जा रहा हूँ, उसने मेरा जायज़ा लिया और पूछा, *"आपका प्रशिक्षण कार्यक्रम क्या रहा है?"* यह सच्चाई न बताना चाहते हुए कि मैंने अभी तक तैयारी के लिए एक मील भी नहीं दौड़ा था (मेरी तैयारी की चार मील की दौड़ तो दूर की बात थी), मैंने उत्तर दिया, *"यह थोड़ा अपरंपरागत रहा है, लेकिन सब बहुत अच्छा चल रहा है।"* शुक्र है, मेरे उत्तर से वह कुछ हद तक संतुष्ट हो गया, और अगला प्रश्न किया, *"नकद या उधार?"*

मैं किसी भी तरह से चिकित्सा या पेशेवर सलाह (या सामान्य ज्ञान) को अनदेखा करने की वकालत नहीं कर रहा हूँ, लेकिन जब मैंने अपनी *"अपरंपरागत"* तैयारी के बावजूद मैरेथॉन दौड़ने की अपनी योजना के बारे में सोचा, तो एक गहरा सबक मिला। हम ज़िंदगी की सबसे महत्वपूर्ण दौड़ों से खुद को सिर्फ़ इसलिए आसानी से दूर कर सकते हैं क्योंकि हम खुद को कम तैयार महसूस करते हैं।

(ओह, और अगर आप जानने को उत्सुक हैं, तो स्वीडन में उस बरसाती शनिवार को, केवल एक ही लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए -कि मैरथॉन पूरी करना है-मैं लगभग १७,००० अन्य धावकों के साथ कतार में था और लड़खड़ाते हुए किसी तरह से मैं समापन रेखा तक पहुँचा!)

आपको क्या रोक रहा है?

बाइबल ऐसे लोगों की कहानियों से भरी पड़ी है जिन्हें लगा कि वे उन चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं जिनका सामना करने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था। मूसा ने वाक्पटुता की कमी को अपना बहाना बताया जब परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों को मिस्र से बाहर निकालने का आदेश दिया। गिदोन ने अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि को एक बाधा समझा जब परमेश्वर ने उसे शक्तिशाली मिद्यानियों के विरुद्ध सेना का नेतृत्व करने के लिए चुना। सीदोन की विधवा ने अपने संसाधनों की कमी का रोना रोया जब भविष्यवक्ता एलिय्याह ने उसे बताया कि वह उसके लिए परमेश्वर के प्रबन्ध का माध्यम बनेगी। जब परमेश्वर ने यिर्मयाह को अपना प्रवक्ता नियुक्त किया तो उसने उसकी उम्र कम होने को एक समस्या बताया। पतरस ने अपने अतीत को याद किया और पीछे हटने का प्रयास किया...

जैसा कि इस कहांवत में प्रतिबिंबित होता है, *"परमेश्वर सुसज्जित लोगों को नहीं बुलाते, वे बुलाए गए को सुसज्जित करते हैं,"* इन सभी लोगों ने स्वयं को उस दौड़ के लिए अपर्याप्त तैयार महसूस किया जो परमेश्वर ने उनके सामने रखी थी। लेकिन उन सभी के बीच एक समान बात यह थी कि परमेश्वर उनके साथ थे। वे पर्याप्त से बढ़कर थे।

मसीह का अनुसरण करना यह नहीं है कि हम कितना तैयार महसूस करते हैं।

मसीह का अनुसरण करना यह नहीं है कि हम कितना तैयार महसूस करते हैं।

मसीह का अनुसरण करना यह नहीं है कि हम कितना तैयार महसूस करते हैं। यह एक निमंत्रण है। यह एक परम मांग है—जो गलील सागर के तट पर कुछ मछुआरों से मसीह के कहें शब्दों में प्रतिध्वनित होती है : *"मेरे पीछे चले आओ"* (मत्ती ४:१९)।

एक निमंत्रण। एक बुलाहट। एक चुनाव। शास्वत खोज के लिए जीवन के आरामदायक स्थिति से बाहर निकलने की तत्परता। परमश्वर साधारण लोगों को असाधारण जीवन में बुलाता है। जब मसीह उनसे मिले, तब पतरस और अन्द्रियास जाल को समुंदर में डाल रहे थें- अपने काम पर ध्यान केन्द्रित कर रहे थे। याकूब और यूहन्ना अपने जाल सुधार रहे थें- अपने भविष्य की तैयारी कर रहे थे। मत्ती अपनी महसूल लेने की चौकी पर बैठा था-अपने आजीविका को और भी मजबूत कर रहा था। लेकिन मसीह ने हस्तक्षेप किया

और उसने उन्हें एक नया व्यवसाय अपनाने और एक अलग भविष्य का सपना देखने के लिए आमंत्रित किया।

शायद आप भी इन चेलों के समान हैं। इस पुस्तक को पढ़ते हुए आप अगले कुछ घंटों में अपने जीवन की मौलिक परिवर्तन की योजना नहीं बना रहे हैं। तो फिर आपके लिए एक प्रश्न है : क्या आप प्रभु यीशु के निमंत्रण पर अपने व्यवसाय और भविष्य को बदलने के लिए तैयार हैं? क्या आप अपने जाल थामे हुए हैं जबकि मसीह आपको राष्ट्रों पर प्रभाव डालने के लिए बुला रहे हैं? क्या आप अपने भविष्य को छोड़कर, प्रभु यीशु द्वारा आपके के लिए तैयार किए गए कार्य हेतु बुलाए जाने के लिए तैयार हैं ?

इन प्रश्नों को आपका उत्तर आपकी प्रतिक्रिया ही देगी। कोई संयोगवश मसीह का अनुसरण नहीं करता।

मसीह की बुलाहट के लिए आप क्या नहीं त्यागना चाहेंगे?

- सुरक्षा?
- नौकरी?
- पद?
- घर?
- सपने?
- लोगों की स्वीकृति?
- लोगों की धारणाएं?
- सुविधा?
- परिवार?
- रिश्ते?
- जीवन?

क्या ये प्रश्न अनुचित हैं? ऊपर उल्लिखित लोगों ने ऐसा नहीं सोचा था। आगे आनेवाले पृष्ठों में, प्रभु यीशु के वचनों के प्रकाश में इन सभी मुद्दों पर प्रश्न उठाए जायेंगे।.

पवित्र बाइबल में किसी भी स्त्री या पुरुष को उसके या अपनी यथास्थिति में बदलाव के बिना प्रभु यीशु का अनुसरण करने के लिए नहीं बुलाया गया। क्या आप इस नियम के लिए अपवाद हैं? मसीह की सांसारिक माँ के रूप में अपनी भूमिका को मरियम द्वारा विनम्रता से स्वीकार करना उसकी प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक था, फिर भी उसने अपनी जान जोखिम में दाल दी और अस्थायी रूप से अपने जीवन से प्यार करने का इन्कार किया। उसने परमेश्वर की दासी के रूप में उनकी आज्ञा मानने और उनके प्रति समर्पण करने के लिए सब कुछ त्याग दिया। युसुफ की मान-मर्यादा और सम्मान समाप्त हो गया जब उसने मरियम को अपनी पत्नी स्वीकार करने के लिए स्वर्गदूत के संदेश को मान लिया, और खुद को मरियम के गर्भवती होने के कथित कलंक में फसा लिया। किसी भी जीवन में मसीह का प्रवेश गलतफहमी, विघटन, और सामाजिक विषय में बदलाव लाता है।

हमारे सृष्टिकर्ता हमसे उससे ज़्यादा कुछ नहीं माँगते जो उसने स्वयं दिया है।

हम उसी प्रश्न का सामना कर रहे हैं जिसका सामना मरियम और युसुफ ने किया था।

क्या आप मसीह को अपना जीवन देने के लिए तैयार हैं? क्या आप उनका अनुसरण करने और उसे गहराई से जानने की कीमत पर अपनी सामाजिक स्थिति को बनाए रख रहे हैं? क्या आप जीवन को वैसे ही त्यागने के लिए तैयार हैं जैसा आप जानते हैं ताकि जिस उद्देश्य के लिए आपको बनाया गया था उस उद्देश्य को पूरा करें?

हमारे सृष्टिकर्ता हमसे उससे ज़्यादा कुछ नहीं माँगते जो उसने स्वयं दिया है। उसने अपनी महिमा का वैभव त्याग दिया ताकि एक असहाय नवजात शिशु के शरीर में निवास करे, एक नाजायज संतान के रूप में जाना जाए, और अपने पहले बिस्तर को चरनी बनाए, और कपड़ों की पट्टियों को अपने शिशुवस्त्र में धारण किया। वह एक अधिकृत क्षेत्र में एक नागरिक के रूप में जन्मा, जन्म के तुरंत बाद शरणार्थी बन गया, और तीन साल तक बेघर रहा। मसीह ने गरीबी और सामाजिक अस्वीकृति की स्थिति में इस जगत में आने का चुनाव किया, जिससे इस वचन का अर्थ और गहरा हो जाता है : *"तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह जानते हो कि वह धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ"* (२ कुरिन्थियों ९:७)।

निमंत्रण यह उसके पीछे चलना है। उसके पदचिन्हों पर। जहाँ वह पहले ही जां चूका है। जहाँ वह जां रहा है।

एक स्नातक विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में, मुझे याद है कि मैं तब घबरा गया था जब परमेश्वर के एक सेवक ने छात्र सम्मलेन में मसीह के कुछ कठिन वचनों के संबंध में कहां था, *"अब इन वचनों में, यीशु ने जो कहां उसका वास्तव में वह मतलब नहीं था।"* मुझे आश्चर्य हुआ, *"क्या मैंने सही से सुना था?"* उस दिन से, मैं यह प्रश्न पूछ रहा हूँ, *"क्या होगा अगर यीशु ने जो कहां, उसका मतलब वही था? क्या यह हो सकता है कि समस्या मेरे कठोर ह्रदय में है न कि मसीह की स्पष्ट शिक्षाओं में ? क्या होगा अगर यीशु मेरे जीवन का सिर्फ एक हिस्सा मात्र नहीं बनना चाहते? क्या होगा अगर वह मुझे पूरी तरह से चाहते हैं? क्या होता अगर इसहाक वाट्स ने अपनी पंक्ति, "*इतना अद्भुत, इतना दिव्य प्रेम, मेरी आत्मा मेरा जीवन मेरा सर्वस्व मांगता है," सही प्रमाणित कर दिया होता?[१]

बिलीवर्स बाइबल कमेंट्री के लेखक विल्यम मॅकडोनाल्ड, ने कहां : *"होशियार इश्वरविज्ञानी आपको हजारों कारण बता सकते हैं कि इसका अर्थ जो है वह नहीं है, लेकिन साधारण अनुयायी इसे उत्सुकता से स्वीकार कर लेते हैं, यह मानकर कि प्रभु यीशु जानते थे कि वे क्या कह रहे हैं।*[२] *सोरेन किर्केगार्ड, एक डॅनिश दार्शनिक, ने लिखा, "*बाइबल समझना बहुत ही आसान है। लेकिन हम मसीही षडयंत्रकारी ठगों का एक समूह हैं। हम इसे समझने में असमर्थ होने का दिखावा करते हैं क्योंकि हम अच्छी तरह से जानते हैं कि जैसे ही हम इसे समझेंगे, हमें उसके अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।"[३]

इन लोगों ने सही कहां था।

यीशु मसीह ने कहां, ***"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करें और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"*** (मत्ती १६:२४)।[४] और अगर हम मत्ती की पुस्तक में इसे न पढ़ पाए, तो मरकुस और लूका दोनों में यीशु के मुख से निकले यही कथन शामिल है।

यह पुस्तक इसी खोज के बारे में है।

हम इसी आधार पर आगे अध्ययन करेंगे कि यीशु ने जो कहां, उसका मतलब बिल्कुल वही था। इस बात को ध्यान रखते हुए, असहज होने की अपेक्षा करें।

जोख़िम

इस पुस्तक को पढ़ने में एक स्पष्ट ख़तरा है।

अगर आप यह मान लेते हैं कि यीशु ने जो कहां, उसका मतलब वही था, तो न केवल यह आपको असहज करेंगा बल्कि आपका जीवन हमेशा के लिए बदल जाएगा। जैसे जैसे आप पढेंगे, आपको पता चलेगा कि यीशु मुख्य रूप से परिवार के उस अड़ियल सदस्य से, आप के बगल वाले कार्यालय कक्ष में बैठे व्यक्ति से, या रविवार सुबह आपकी पंक्तियों के उस पार बैठे व्यक्ति से बात नहीं कर रहे हैं। वह आप से बात कर रहे हैं। आपके जीवन के बारे में। आपके हृदय के बारे में। पृथ्वी पर आपके क्षणभंगुर अस्तित्व के बारे में।

जब यशायाह भविष्यद्वक्ता ने ईश्वरत्व को कहते सुना, *"मैं किसको भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा?"* (यशायाह ६:८), तो उसने दूसरों को चुनने के लिए स्वेच्छा से प्रतिक्रिया नहीं दी। इसके बजाय, उसने उत्तर दिया, *"मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज।"* परिवर्तन की शुरुआत खुद से हुई।

यीशु का अनुसरण करने का आपका चुनाव निर्णय किसी और के आज्ञाकारिता पर निर्भर नहीं करता। यह आपकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। जब आप प्रभु यीशु मसीह के सम्मुख खड़े होंगे, तो आप किसी दूसरे व्यक्ति पर दोष मढ़कर उनके शास्वत वचन की अवज्ञा का बहाना नहीं बना पाएंगे।

क्या आप यीशु मसीह का अनुसरण करने को तैयार हैं तब भी जब ये असुविधाजनक, असहज, शर्मनाक या बिल्कुल मूर्खतापूर्ण लगे ?

यह सब एक निमंत्रण से शुरू होता है।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. मसीह के वचनों का पूरी तरह से पालन न करने के लिए आप ने अतीत में कौन-कौन से बहाने बनाए हैं ? स्पष्ट रूप से बताएं ।

२. मसीह की बुलाहट के लिए आप क्या त्यागने को तैयार नहीं होंगे?

३. मानव रूप में पृथ्वी पर आने के लिए मसीह ने किन चीजों का त्याग किया?

४. अगर आप उसका अनुसरण करने के लिए उसके निमंत्रण को पूरी तरह से समर्पित होते हैं तो आपका जीवन कैसे बदल सकता हैं?

२

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां, उसका वही मतलब था?

मुझे यह कल की ही बात लगती है। कांपते पैरों से, मैं ब्लौक्रान्स पुल के कमान के पास धीरे से चल रहा था। उसके खुले ग्रिलवर्क वाले रास्ते से मेरे और घाटी के तल के बीच में ७०९ फिट की दक्षिणी अफ्रीकी हवा का एहसास हो रहा था। ठंडी सुबह थी। बादल छंट चुके थे और सूरज अब उत्तर में त्सित्सिकम्मा पर्वत और दक्षिण में चमकते हिन्द महासागर को रोशन कर रहा था। मिशन : दुनिया के सबसे ऊँचे व्यवसायिक पुल बंजी से कूदने का अनुभव करें।[५]

मुझे इलास्टिक डोरियों से जुड़े एल्यूमिनियम कैराबिनर्स के साथ पुरे शरीर को कवच में बांधा गया था, कर्मचारियों ने मुझे शुभकामनाएँ दी। मैं सीमेंट से बनाए खड़े रहने के स्थान के किनारे खड़ा था। सामने ऊपर एक निशान चेतावनी दे रहा था, "डर अस्थायी है, पछतावा हमेशा के लिए है।" मेरे मस्तिष्क में आवाजें जो चिल्ला रही थी "लौट आओ! लौट आओ!" इन्हें नजर अंदाज करते, मैंने कर्मचारियों को कोई आखरी सलाह पूछी। उनका जवाब था : "संकोच मत करो।" तकनीकी संगीत की लय में, एड्रेनालाईन का उफान और दिल की धड़कन के साथ, मैंने भयावह उलटी गिनती सुनी, "५-४-३-२-१ कूदो!!!" आज्ञा ख़त्म होने से पहले, मैं ने पुल से छलांग लगाईं थी।

मेरी इच्छाओं की सूची से एक और चीज़ पूरी हो गई।

पागलपन? शायद अँधविश्वास? बिल्कुल नहीं। दशकों के बेहतरीन सुरक्षा रिकॉर्ड और सिद्ध बंजी तकनीकी, ने ब्लौक्रान्स पुल पर बंजी की विश्वसनीयता की पुष्टि की।

सवाल यह नहीं था कि "क्या यह सुरक्षित है" या "क्या बंजी मुझे थामे रखेगी ?" बल्कि "क्या मैं छलांग लगाऊंगा?"

इसी तरह, जब बात आती है कि परमेश्वर ने पवित्र बाइबल में जो प्रकट किया है, उस पर हम किस हद तक भरोसा करने को तैयार हैं? क्या हम अपने जीवन के लिए उस पर विश्वास करते हैं? हालांकि बहुत से लोग परमेश्वर पर विश्वास रखने का दावा करते हैं, लेकिन वे अपने वादे के मुताबिक जीने में असफल रहते हैं।

मसीह का अनुसरण करना ज़्यादा कोशिश करने के बारे में नहीं है। यह उन्हें जानने के बारे में है।

किसी बीमार व्यक्ति के बारे में सोचिए जो किसी दवाई में उपचार गुण होने का दावा करता है, फिर भी उसे निगलने से इन्कार कर देता है। या कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी लेखक की महानता का बखान है, लेकिन उसकी लिखाई कभी नहीं पढ़ता। इसी तरह से, क्या हम यीशु मसीह को प्रभु तो कहते हैं, लेकिन अपने जीवन जीने के तरीके से उसकी प्रभुता को नकारते हैं?

मसीह पर भरोसा करना आस्था का दावा नहीं है। यह उनमे-आस्था से भरा जीवन जीने के बारे में है। मसीह का अनुसरण करना ज़्यादा कोशिश करने के बारे में नहीं है। यह उन्हें जानने के बारे में है- उनके हृदय, उनके जूनून, उनकी इच्छा को। मसीह को जानना किसी धार्मिक अनुभव के बारे में नहीं है। यह एक क्रांतिकारी मुलाकात के बारे में है। क्या आप ने उनसे मुलाकात की है? या क्या आधुनिक मसीही धर्म ने आपको यह विश्वास दिलाया है कि मसीह की बुलाहट को आपके व्यक्तिगत प्राथमिकताओं के अनुसार ढाला जा सकता है? क्या प्रभु यीशु आपकी पहले से मौजूद जीवनशैली में प्रस्थापित होने का इरादा रखते हैं?

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां, उसका वही मतलब था?

जहाँ यात्रा शुरू होती है

"इसी कारण मैं ने सब से पहले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा" (१ कुरिन्थियों १५:३-४)।

जिस जीवन के लिए हमें बनाया गया है, वह उसी क्षण शुरू होता है जब हम अपना विश्वास स्वयं से और अपने प्रयासों से हटाकर प्रभु यीशु मसीह पर और जो उन्होंने अपनी मृत्यु, दफनाया जाना और पुनरुत्थान के द्वारा हमारे लिए पूरा किया, उस पर स्थानांतरित करते हैं। मसीह का अनुयायी बनने का पहला कदम यह विश्वास करना है कि यीशु ने शास्वत जीवन के बारे में जो कहां था उसका मतलब यही था।

*"यीशु ने उससे कहां, "पुनरुत्थान और जीवन **मैं ही हूँ**; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंतकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?"* (यूहन्ना ११:२५-२६)

हमारे कर्म परमेश्वर के सम्मुख हमें स्वीकृती नहीं दिलाते। मसीह हमें स्वीकृति दिलाते हैं।

"क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमंड करे। क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिए तैयार किया।" (इफिसियों २:८-१०)

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर ने जगत को मनुष्यों के लिए बनाया और उसने मनुष्यों को अपने लिए बनाया। उसने पहला पुरुष और स्त्री को *"उसके अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाया"* (उत्पत्ति १:२६), अर्थात् उसने उन्हें उसे जानने और उससे प्रेम करने की क्षमता दी। वह चाहता था कि वे उसके साथ अनंतकाल बिताएं।

लेकिन फिर पहिला पुरुष आदम, जिसने परमेश्वर की आज्ञा उल्लंघन करने का चुनाव किया। और जैसा कि परमेश्वर ने चेतावनी दी थी, पाप मृत्यु लेकर आया। बाइबल में, मृत्यु का अर्थ विनाश नहीं है; इसका अर्थ अलग होना है। जीवन के स्त्रोत से अलग होना। पाप ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच के रिश्ते को बिगाड़ दिया। मानवजाति का पिता होने के नाते, आदम के पाप ने हम सभी को पाप से दूषित किया, लेकिन हम अपने द्वारा लिए गए निर्णयों के लिए उसे दोषी नहीं ठहरा सकते। *"इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।"* (रोमियों ५:१२)

हमारे सामने एक गंभीर समस्या है। परमेश्वर सिद्ध और पवित्र हैं। पाप से कलंकित कोई भी आत्मा उनके साथ अनंतकाल तक नहीं रह सकती। लेकिन वह केवल पवित्र ही नहीं हैं। पहला यूहन्ना ४:८ हमें बताता है, *"परमेश्वर प्रेम है।"* ध्यान दें कि यह नहीं कहता कि परमेश्वर

केवल प्रेम करते हैं; वह प्रेम है (ग्रीक भाषा में अगापे)। उनका प्रेम असीम रूप से गहरा, बिना शर्त, त्यागपूर्ण प्रेम है जो दूसरों की भलाई चाहता है, चाहे वे कितने भी अयोग्य क्यों न हों। परमेश्वर का प्रेम भावनाओं पर नहीं पर चुनाव पर आधारित है (यूहन्ना ३:१६ देखे)। परमेश्वर के जैसा प्रेम जो हम अपने चारों ओर देखते हैं उसे लोभी, कामवासना से भ्रमित न करें। हमारे जगत में, जब किसी की इच्छा के विरोध में उस पर शारीरिक वासना थोपी जाती है, तो उसे प्रेम नहीं बल्कि दुर्व्यवहार कहते हैं। ऐसा *"प्रेम"* लेता है। परमेश्वर का प्रेम देता है। लेकिन परमेश्वर हम पर अपने असीम, शुद्ध, भावुक प्रेम का स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं करते। वह हमें चुनाव करने की स्वतंत्रता देते हैं। प्रेम का रिश्ता चुनाव से बढ़ता है, दबाव से नहीं। यदि आप पवित्र शास्त्र जानते हैं, तो फिर आप जानते हैं कि परमेश्वर, ने अपने महान् प्रेम और पवित्रता से इस सर्वोच्च प्रेम कहांनी को रचा है।[६]

परमेश्वर केवल प्रेम नहीं करता ; वह प्रेम है।

हजारों सालों के लिए, परमेश्वर ने सैंकड़ो सटीक भविष्यवाणियाँ और प्रभावशाली चित्रणों के माध्यम से अपने प्रतिज्ञात मसीह के आगमन का मार्ग प्रशस्त किया। परमेश्वर के पवित्र व्यवस्था में प्रत्येक पापी को मरना आवश्यक था। परंतु अपने न्याय और दया में, परमेश्वर ने कुछ निर्दोष जानवर जैसे कि मेमने को दोषी पापियों के स्थान पर मृत्यु के रूप में स्वीकार किया। इस तरह दोषी पापियों पर दया करते हुए पाप के विरुद्ध न्याय को बनाए रखा। ऐसे बलिदानों के लहू ने पाप को ढक दिया, उस समय तक जब परमेश्वर पापियों के उद्धार के लिए उद्धारकर्ता न भेजे जो जगत के पाप के कर्ज़ की कीमत भर देगा। उद्धारकर्ता का नाम यीशु था।

"परंतु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ, ताकि व्यवस्था के अधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।" (गलातियों ४:४-५)

सृष्टिकर्ता ने अपनी सृष्टि के साथ मिलकर अंतिम छुटकारे का अभियान चलाया। प्रतिज्ञा दिया हुआ उद्धारकर्ता अदृश्य परमेश्वर का हुबहू प्रतिरूप था। एक कुंवारी कन्या के गर्भ से, उसने पतित मानवजाति के जगत में प्रवेश किया। वह पापरहित जन्मा था, हालाँकि उसने हमारी तरह देह धारण की थी, फिर भी वह पवित्र था। वह प्रेम था। उसने अपने पापरहित और त्यागमय जीवन के माध्यम से अदृश्य परमेश्वर के स्वरूप को साक्षात् प्रकट किया। जैसे *"परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप उठा ले जाता है"* (यूहन्ना १:२९), उसने स्वेच्छासे पापीयों के स्थान पर दु:ख उठाया और मर गया, और पवित्र परमेश्वर के क्रोध को पूरी तरह से सह लिया। अपने पवित्र लहू से, यीशु ने जगत के पाप का कर्ज़ भर दिया। क्रूस से, उसने

घोषणा दी, *"पूरा हुआ!"* (यूहन्ना १९:३०)। पाप के भयानक मृत्यु दंड की पूरी कीमत चुकाई गई ताकि जो कोई उस पर विश्वास करता है उसे क्षमा मिल सके।

लेकिन कहांनी यहीं समाप्त नहीं होती। अपनी मृत्यु के तीसरे दिन, यीशु पुनर्जीवित हो गया! उसने मृत्यु और कब्र पर विजय प्राप्त की, और फिर कभी नही मरा। पवित्र शास्त्र कहता है, *"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परंतु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन है"* (रोमियों ६:२३)। जिसने कभी पाप नहीं किया उस प्रभु पर मृत्यु का कोई अधिकार नहीं था। उन सभी से जो प्रभु यीशु पर और क्रूस और खाली कब्र के द्वारा उनके द्वारा किए गए कार्यों पर विश्वास रखते हैं, यीशु वादा करते हैं, *"मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले पर विश्वास करता है, अनंत जीवन उसका है; और उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती परंतु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।"* (यूहन्ना ५:२४)

ऐसे शब्द सुनकर कुछ लोग कहते हैं, *"मेरा न्याय मत करो!"* उन्हें यह एहसास नहीं होता कि परमेश्वर का स्तर हमारे स्तर से अलग है। पापी लोग और उनके स्वयं के बनाए धर्म *"अच्छे और बुरे"* के आधार पर सोचते हैं और यदि मेरे अच्छे कर्म बुरे कर्मों से अधिक हैं, तो उम्मीद है कि परमेश्वर मुझे स्वीकार करेंगे।" लेकिन सच्चा और जीवित परमेश्वर लोगों को या तो धर्मी या अधर्मी के रूप में देखता है।

किसी खेल में गोलों के आधार पर हार या जीत का पता लगाने के लिए आपको फुटबॉल (जिसे पैरों से खेला जाता है- जिसे सॉकर भी कहते है) का शौक़ीन प्रशंसक होने की आवश्यकता नहीं है। खेल के अंत में, कॉर्नर किक की संख्या, गोल के शॉर्ट्स लगाए या गेंद पर कब्ज़ा करने का समय मायने नहीं रखता। मायने यह रखता है कि किस टीम ने ज़्यादा गोल किए। अगर कोई इस बात पर ज़ोर देने का प्रयास करता है कि उसकी टीम को विजेता माना जाए क्योंकि उन्हें पीले कार्ड कम मिले हैं, तो हम उन्हें ठीक तरह से अज्ञानी ही समझेंगे। लेकिन जब अनंतकाल के मामलों की बात आती है, जैसे क्षमा, परमेश्वर के साथ रिश्ता, और स्वर्ग में प्रवेश का अधिकार- तो मनुष्य ऐसे निश्चित नियमों पर अड़ा रहता है जो परमेश्वर की धार्मिकता के सिद्ध मानक की अवहेलना करते हैं।

क्योंकि हमें आदम का पापी स्वभाव विरासत में मिला है, इसलिए हम सभी अधर्मी जन्में हैं, इसी वजह से हम परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन करते हैं । हम निंदा के पात्र हैं। लेकिन यीशु हमें दोषी ठहराने नहीं आए। वह आया *"ताकि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परंतु जो उस पर विश्वास नहीं*

करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिए कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया" (यूहन्ना ३:१७-१८)। यीशु उस न्याय को पूरा करने आए जिसकी परमेश्वर की धार्मिकता के सिद्ध मानक मांग करते हैं। वह हमें पाप के दंड और बंधन से मुक्त करने, और हमें अपनी धार्मिकता के वस्त्र पहनाने आए।

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ"। (२ कुरिन्थियों ५:२१)

स्मरण रखें

यह एक जीवन-परिवर्तनकारी सत्य आहे। यीशु हमें सिर्फ किसी बात से बचाने नहीं आए थे। वे हमें किसी के लिए बचाने आए थे।

सुसमाचार नरक के अग्नि बीमा से कहीं बढ़कर है। यह परमेश्वर के अनंतकाल के राज्य में शास्वत जीवन के बारे में है। एक ऐसा जीवन जो अभी शुरू होता है। पहला कुरिन्थियों १:८ हमें बताता हैं कि यीशु मसीह *"अंत तक दृढ़ भी करेगा कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के दिन में निर्दोष ठहरे"*।

लेकिन निर्दोष शब्द का अर्थ कहीं अधिक गहरा है।

मध्य पूर्व में रहते समय, मेरी मुलाकात एक प्रतिष्ठित व्यक्ति से हुई जिसे मेरी गतिविधियों से सख्त नफरत थी। कई मौकों पर, उसने मुझ पर अवैध गतिविधियों का आरोप लगाया। जब एक आरोप झूठा साबित होता, तो वह एक नया आरोप गढ़ लेता। एक बार मेरे कार्यस्थल पर मुझे पुलिस से नोटिस मिलने लगे जिनमे कहां गया था कि मुझे अधिकारीयों से मिलना चाहिए। एक मित्र (वह एक अंतरराष्ट्रीय वकील भी था) ने मुझे सावधान किया कि तीसरा नोटिस मिलने पर गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया जाएगा।

यीशु हमें सिर्फ किसी बात से बचाने नहीं आए थे। वे हमें किसी के लिए बचाने आए थे।

दूसरी नोटिस मिलने पर, मैं पोलिस स्टेशन गया। स्थानीय पुलिस प्रमुख को आरोपों के पीछे के कारण तो पता नहीं था, लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि वे सिस्टिम की जाँच करेंगे कि कहीं मैं किसी क़ानूनी परेशानी में तो नहीं फसा हूँ। बिना किसी घबराहट के, मैं सिस्टम जांच पूरी होने का इंतजार करता रहा। बीस मिनटों बाद (उस समय प्रमुख पुलिस अधिकारी ने मुझे चाय भी दी), उनका एक सहायक एक चिट्ठी लेकर आया। चिट्ठी

लेने के बाद, पुलिस प्रमुख ने मुझे देखा और कहां, *"आप किसी गलत कामों के केवल दोषी ही नहीं, बल्कि तुम्हारा हिसाब पूरी तरह से साफ है।"*

इस पर विचार कीजिए।

अगर आप यीशु के बारे में परमेश्वर की कहीं बातों पर विश्वास करते हो और अगर आप उसपर भरोसा करते हो जो उसने तुम्हारे लिए अपने बहाए हुए लहू और विजयी पुनरुत्थान के जरिए किया हैं, तो आप परमेश्वर के समक्ष न सिर्फ क्षमा किए गए हो, बल्कि निर्दोष और हमेशा के लिए स्वीकार किए गए हो ! आपका खाता पूरी तरह साफ है! यह शानदार आशा विश्वास के द्वारा आपके लिए है।

इस न चूकें। जब पाप के दंड से बचने की बात आती है, तो यह मायने नहीं रखता कि आपका विश्वास कितना है। आपके विश्वास का उद्देश्य मायने रखता है। एक व्यक्ति पतली बर्फ में भी बहुत विश्वास रख सकता है, लेकिन उसका विश्वास उसे ठंडे पानी में उतरने से नहीं रोक पाएगा। यह विश्वास की मात्रा नहीं जो उद्धार देती हैं, बल्कि परमेश्वर जिस पर विश्वास आधारित है।

अपने सांसारिक जीवन के अंत के करीब, पौलुस ने अपने विश्वास का वर्णन कुछ इस तरह से किया : *"जिस पर मैंने विश्वास किया है, मैं जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह धरोहर को उस दिन तक रखवाली कर सकता है"* (२ तीमुथियुस १:१२)। अवश्य होनेवाली मृत्यु के सामने पौलुस का आत्मविश्वास उसके अद्भुत उपलब्धियों, उसके ज्ञान की गहराई, या उसके विश्वास की महानता का कारण नहीं था। यह सब उस परमेश्वर के बारे में था जिस पर उसने अपना विश्वास रखा था।

मेरे लिए ब्लौक्रान्स पुल से छलांग लगाने का समय आया, तो छलांग की सफलता इस बात पर निर्भर नहीं थी कि मुझे बंजी पर थोड़ा सा या पूरा विश्वास था। बस दो सवाल मायने रखते थे।

क्या मैं छलांग लगाऊंगा? (मैंने छलांग लगाई)

क्या बंजी मुझे थाम पाएगी? (हाँ, उसने थामा)

जब आप अनंतकाल में अपनी आगामी छलांग के बारे में सोचते हैं, तो आपने किस बात पर और किस व्यक्ति पर अपना भरोसा रखा है?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. यीशु कौन है, और वे इस धरती पर क्यों आए?

२. आपके अपने शब्दों में, *"यीशु मसीह और क्रूस पर उनके काम पर भरोसा"* करने का क्या अर्थ है?

३. यीशु के लिए आपके कौनसे जवाब बेहतर तरीके से वर्णन करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(अ) *"मैं उन्हें अपनी पूर्व जीवनशैली में ढालने की कोशिश कर रहा हूँ।"*

(ब) *"यीशु से मेरी एक क्रांतिकारी, जीवन-परिवर्तनकारी मुलाकात हुई है।"*

३

अनंतकाल के लिए निमंत्रण

जब हम अपने क्षितिज से परे, पहुँच से परे दुनियाओं के बारे में सुनते हैं, तो हमारे हृदय में कुछ जागृत होता है। चाहे किसी पर्ची पर लिखी अनोखी जगहें जो हमारी इन्द्रियों को हमारी ओर खिंच लेती हैं या दूर दूर तक फैली आकाशगंगाओं का साहित्यिक वर्णन, हम जो देखते हैं उससे कहीं अधिक की लालसा रखते हैं। जीतनी अधिक हमारी जिज्ञासा जागृत होती है, उतना ही अधिक हम कुछ और अनुभव करने को तरसते हैं।

बचपन में, पिटर पैन्स के नेवरलैंड बारे में सुनकर मेरे भीतर ऐसी दुनिया में जाने की इच्छा जागृत हुई जहाँ मैं कभी बुढ़ा न होऊँ। फिर ब्युटी एंड द बीस्ट की रहस्यमय कहांनी थी जिसमें जानवर जैसे अप्रिय व्यक्ति को बेले जैसी प्यारी महिला बिना शर्त प्रेम और स्वीकार कर सकती थी। और सिंड्रेला के उस जादुई रात का आश्चर्य जब वह गरीबी के दलदल से मुक्त होकर महल की धनदौलत में पहुंचती थी। टॉल्किन की मध्य पृथ्वी की दुनिया और उसके कल्पित बौने, घाटियों में रहनेवाले, भूत और बौने लोगों ने मेरे अंदर रोमांच और अमरता की चाहत जगाई।

यदि हमें केवल इस भौतिक दुनिया के लिए बनाया गया होता, तो फिर हमारी लालसाएँ पूरी होतीं, न कि ज़्यादा खुराक के लिए लगातार इच्छाएं या हमारी नवीनतम लत के बढे हुए व्यक्तित्व की अतृप्त लालसा। सी. एस. लुईस ने लिखा :

> एक शिशु को भूख लगती है : तो इसका मतलब है कि भोजन नाम की कोई चीज़ है। एक बत्तख का बच्चा तैरना चाहता है : तो इसका मतलब है कि पानी जैसी कोई चीज़ है। मनुष्यों को यौन इच्छा होती है : तो इसका मतलब संभोग नाम की कोई चीज़ है। अगर मैं अपने भीतर ऐसी इच्छा पाता हूँ जिसे इस संसार का कोई भी अनुभव पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर सकता, तो सबसे संभावित स्पष्टीकरण यह है कि मुझे किसी दूसरे जगत के लिए बनाया गया था।[७]

और हम इस दूसरे जगत के बारे में कैसे जानें जिसके लिए हमें बनाया गया था? हमें बस उस *"नियम-पुस्तक"* (जिसे पवित्र शास्त्र के रूप में जाना जाता है) में जानने की आवश्यकता है जो हमें उस परमेश्वर ने प्रदान की है जिसने पहले दो मनुष्यों को *"अपने स्वरूप और समानता में"* बनाया था (उत्पत्ति १:२६-२७)। परमेश्वर ने लोगों को अपने सृष्टिकर्ता के साथ घनिष्ट संगति में रहने और उसकी महिमा के लिए जीने के लिए रचा था। लेकिन परमेश्वर और मनुष्य के बीच जो घनिष्ट रिश्ता शुरू में था वह पाप के कारण टूट गया। फिर भी परमेश्वर के पास छुटकारे की एक योजना थी। पाप की समस्या से निपटने की एक योजना। एक ऐसी योजना जिसका पतित मानवजाति के और अधिक प्रयास करने से कोई लेना देना नहीं था। यह परमेश्वर के बारे में है जो हम में से एक बना – देहधारण करने के लिए ताकि वह स्वयं को व्यक्तिगत रूप से प्रगट कर सके, पाप और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सके, और पापियों के लिए अपने पास वापस आने का मार्ग खोल सके। और अब जबकि उसने ऐसा ही किया है, वह हमें अपने साथ घनिष्ट, शास्वत रिश्ते में आमंत्रित करता है- एक ऐसा रिश्ता जो अभी शुरू होता है। सुसमाचार यही प्रदान करता है। यहीं हमारी सभी लालसाएँ संतुष्ट होती हैं।

स्थिति तैयार करना

हम आंदोलनों, प्रवृत्तियों, सनकों, शैलियों और तौर-तरीकों की एक धर्मनिरपेक्ष दुनिया में रहते हैं। कपड़ों से लेकर कारों तक, चिन्हों से अभिनेत्रियों तक, जूनून और आंदोलनों की लपटें उस समय की गरमाहट से भड़कती हैं। उदाहरण के लिए संगीत को ही लीजिए। नब्बे के दशक की शुरुआत में, न्यू किड्स ऑन द ब्लॉक स्कुल के गलियारों में चर्चा का विषय था, लेकिन जल्द ही इसकी जगह न्यूसिंक, स्पाईस गर्ल्स और बैकस्ट्रीट बॉयज ने ले ली। हालाँकि उनके गाने आज भी प्लेलिस्ट में जगह बनाते हैं, लेकिन शीर्ष पर उनका दबदबा जोनस ब्रदर्स या हायस्कूल म्युसिकल के क्रेज ने ले लिया था जो वालमार्ट के गलियारों में कपड़ों, पोस्टर्स, खाने के डिब्बे या ऐसे किसी भी चीज़ से हावी थी जिस पर गैब्रिएला या ट्रॉय के चेहरे की मुहँर लगाई जा सकती थी। याद है जब हन्ना मोन्टाना की मुस्कान देखे बिना बाहर जाना नामुमकिन था? (या क्या वह मायली सायरस थी? मैं अभी भी उलझन में हूँ) आप में से कुछ लोगों के लिए, यह एक पुरातन इतिहास है; आपको शायद ही पता हो कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ। हम मौजूदा क्रेज पर बात करते हुए और भी आगे बढ़ सकते हैं, लेकिन बात तो साफ़ है। हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जो चलन में है, और जब वह चलन में आता हैं तो व्यवसायिक लोग ऐसे समय का लाभ उठाने के लिए तैयार रहते हैं।

यही हम खुद को मत्ती १६ में पाते हैं। यीशु अपनी लोकप्रियता की चरम पर हैं। उन्होंने अंधों को दृष्टि दी हैं, लंगड़ों को चंगा किया है, कोढ़ियों को शुद्ध किया हैं, मृतकों को पुनर्जीवित

किया हैं और अब तक सुने गए सबसे प्रभावशाली भाषण दिए हैं। उनके प्रशंसकों की भीड़ उमड़ रही हैं, उन्हें छूने के लिए भीड़ में से आगे आ रहे हैं, और उनके पीछे चलने के लिए अपने आरामदायक क्षेत्रों और जीवनशैली को त्याग रहे हैं।

यह उनका क्षण था!

लेकिन प्रसिद्धि की लपटों को भड़काने के बजाय, यीशु ने भीड़ को थोड़ा नज़दीक आने को कहां, मानो यह संकेत दे रहे हों कि उन्हें यह क्षण नहीं गँवाना चाहिए। और फिर उन्होंने इसे सामने रखा।
निमंत्रण।

परम निमंत्रण

शुरुआत तो ठीक रही। यीशु ने अपनी शर्त इस वाक्य के शुरू की, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, ..."* (मत्ती १६:२४)।

सबको अपनाना।

मसीह किसी को भी बुलाते हैं। पुरुष। स्त्री। वरिष्ठ नागरिक। बच्चे। कोलंबियाई। चीनी। कॅनडाई। झेक। कांगोली। यहाँ पर कोई भिन्नता नहीं है। मसीह की बुलाहट से कोई भी व्यक्ति वंचित नहीं है, सिवाय उनके, जो नहीं आना चाहते। मसीह का निमंत्रण उनका अनुसरण करने की अनुमति के बारे में नहीं है। यह उनका अनुसरण करने के मार्ग के बारे में है।

मसीह का निमंत्रण उनका अनुसरण करने की अनुमति के बारे में नहीं है। यह उनका अनुसरण करने के मार्ग के बारे में है।

यीशु के शुरूआती कथन में दो शब्द हैं जो एक स्पष्ट कहांनी बताते हैं : यदि और इच्छाएं।

यदि। यह शब्द दर्शाता है कि प्रस्ताव दिया जाने वाला है। हमें अपनी सांसारिक जीवन-यात्रा में महिमा के प्रभु के साथ चलने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है। *यदि कोई चाहे।*

दूसरे शब्द पर ध्यान दीजिए। इच्छाएं। शब्दकोष इस शब्द को *"एक प्रबल भावना या भूख"*[८] के रूप में परिभाषित करता है। हर इन्सान की प्रबल इच्छाएं होती हैं जो उसके कार्यों को प्रेरित करती हैं। कुछ लोग प्रेम पाने की इच्छा रखते हैं जबकि अन्य प्रसिद्द होने की चाहत रखते हैं। कुछ लोग नाम कमाने की चाहत रखते हैं जबकि कुछ लोग संपत्ति के

लिए परिश्रम करते हैं। कुछ लोग लोग उत्तेजना की तलाश में रहते हैं जबकि कुछ लोग सहजता से संतुष्ट रहते हैं।

अपने ह्रदय को जाँचना

१७०० के दशक के उत्तरार्ध में, थॉमस चाल्मर्स नामक एक सेवक ने *"द एकस्पल्सीव पॉवर ऑफ अ न्यू अफेक्शन"* शीर्षक से एक विचारोत्तेजक उपदेश दिया । उनका मूल सिद्धांत यह था कि वे हमारे जीवन से प्रेम को बाहर निकालने का एकमात्र तरीका एक महान, परम प्रेम की खोज करना है। उन्होंने आगे कहां, *"ह्रदय में किसी चीज़ से जुड़े रहने की आवश्यकता होती है।"*[९] संत ऑगस्टीन ने उनके लिखे आत्मकथात्मक कामों को 'पापकबुली' शीर्षक में संस्करणों में बनाया हैं, उसमे कहां है : *"हे परमेश्वर, आप ने हमें अपने लिए बनाया है, और हमारा ह्रदय तब तक बेचैन रहता है जब तक आप में विश्राम नहीं पाता ।"*[१०] मनुष्य तब तक सदैव अपूर्ण रहेंगा जब तक उसकी आँखे प्रभु यीशु मसीह की सुंदरता और उनके अस्तित्व के उद्देश्य के प्रति नहीं खुल जाती।

इन प्रश्नों पर विचार करने के लिए पढ़ने से थोड़ा रुक जाए :

- आपका ह्रदय किस बात से आकर्षित होता है?
- आपका सबसे बड़ा जूनून या जोश क्या है?
- आपके जीवन में चिंता या परेशानी का कारण क्या होता है?
- आप अपना पैसा, समय और शक्ति कहां निवेश करते हैं?
- आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है इस बारे में आपका मित्र क्या कहेंगा?
- आप अपना खाली समय किस बारे में दिन में सपने देखने में बिताते हैं?
- आप जो करते हैं और जो कहते हैं उसे करने के लिए आपको क्या प्रेरित करता है?
- ऐसा क्या हो सकता है कि जिससे तुम जीवन जीने की इच्छा खो बैठो?

इन प्रश्नों को आपके ह्रदय को उजागर करने दो। प्रभु यीशु कुछ भी नहीं छिपाते। कोई भी जो उनका अनुसरण करने का चुनाव करता है वह वहीँ व्यक्ति है जिसने यीशु मसीह को परम खज़ाने के रूप में खोज लिया है।

अगर हम मसीह का अनुसरण करने को खज़ाने के बगैर एक नियत कर्म के रूप में मानते है, तो हम सुसमाचार के आनंद और परिपूर्णता को गवां रहे हैं। हम अस्तित्व में रहने और नष्ट होने से कहीं अधिक के लिए बनाए गए थे। हम किसी उच्च शक्ति द्वारा अविष्कृत खेल को जीतने के लिए नहीं बनाए गए हैं जहाँ जीतनेवाले स्वर्ग जाते हैं और हारनेवाले नरक जाते हैं। हमें एक पवित्र और असीम रूप से सुंदर परमेश्वर के साथ घनिष्ट और अनंतकाल के रिश्ते में बुलाया गया था जिसने अपने अपने पुत्र के रूप में स्वयं को हमारे सामने प्रगट किया है। बाइबल बेहतर जीवन जीने के लिए एक नियम-पुस्तक नहीं है। यह प्रेम को जानने का और अब तक की सबसे महान् प्रेम कहांनी का हिस्सा बनने के लिए निमंत्रण है।

इसी वजह से यीशु ने कहां, *"यदि कोई मेरे पीछे आना **चाहे**।"*

पृथ्वी पर हमारा संक्षिप्त जीवन मसीह को हमारी कहांनी में शामिल करने के बारे में नहीं है, लेकिन वह हमें उसके साथ शामिल करने के बारे में है। *"क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है"* (कुलुस्सियों ३:३)। यीशु के प्रति हमारे प्रेम की कमी नहीं जो उसका अनुसरण करने के अपने इन्कार करने के पीछे है, लेकिन हमारे प्रति उसके प्रेम को पहचानने में हमारी असफलता हैं।

जब परमेश्वर के प्रति हमारा प्रेम मायने नहीं रखता

कई साल पहले, मैं उत्तरी आयरलैंड में एक सम्मलेन में बोल रहा था जब एक युवा अभिनेत्री ने उसके कुछ व्यक्तिगत संघर्ष मुझे बताएँ। उसने बताया कि वह यीशु मसीह पर विश्वास करती है लेकिन उसे दो समस्याएं हैं : (१) वह यीशु मसीह से इतना प्रेम नहीं करती थी और (२) उसे अपने पापों के बारे में इतना ख़राब नहीं लगता था।

मेरी तत्काल प्रतिक्रिया मेरे आतंरिक दु:ख की थी -जब तक यह दृढ़ विश्वास में नहीं बदल गया। लगभग सुनाई देनेवाली आवाज़ में, पवित्र आत्मा ने मेरे हृदय में दो बातें कहीं : *"नाथान क्या तू यीशु मसीह से वैसा प्रेम करता है जैसा तुझे करना चाहिए ?"* तुरंत, मैंने उत्तर दिया, *"नहीं। मुझे जैसा करना चाहे वैसा नहीं करता।"* दूसरा प्रश्न। *"क्या तू अपने पापों से नफरत करता है जैसे तुझे करना चाहिए?"* फिर से मेरी प्रतिक्रिया थी, *"नहीं। क्योंकि मैं ने वैसा ही किया था, मैं पाप के प्रगट होने से दूर भागता था। तुरंत, ये विचार मेरे मन में आए :* "बिल्कुल। यह मसीह के प्रति आपका प्रेम नहीं है जो आपको परिभाषित करता है। यह आपके लिए मसीह का प्रेम है जो परिभाषित करता है। पाप के प्रति आपकी घृणा

आपका उद्धार नहीं करती है। यह कि मसीह पाप से कितना घृणा करता था और उसने इसके बारे में क्या किया।

जब हम बिना शर्त, बेफिक्र पिता के प्रेम का अनुभव करते हैं जिसने अपने एकलौते पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा, यह वही प्रेम है जो हमें उसके साथ संगति का आनंद लेने के लिए प्रेरित करता है। यह कठिन प्रयास करने के बारे में नहीं है, बल्कि उस परमेश्वर के प्रति अधीन हो जाने के बारे में है जो हमें हमसे कहीं अधिक प्रेम करता है जितना हम अपने आप से करते हैं। अगर आपको कभी आपके प्रति मसीह के प्रेम पर संदेह हो, तो कलवरी के क्रूस की ओर देखो। परमेश्वर के क्रोध के खाली प्याले की ओर देखो। जो उस पर भरोसा करते हैं उनके लिए अनंतकाल के अभिवचन जो भविष्य में आनेवाले है उनकी ओर देखो (जिन्हें वह अपनी दुल्हन कहता है)।

यह कठिन प्रयास करने के बारे में नहीं है, बल्कि उस परमेश्वर के प्रति अधीन हो जाने के बारे में है जो हमें हमसे कहीं अधिक प्रेम करता है जितना हम अपने आप से करते हैं।

एक बाइबल भाष्यकार जिसने प्रारंभिक कलीसिया पर लिखा, *"तीन सौ सालों तक, मसीही बन कर रहना ये आपके जीवन और संपत्ति और परिवार के लिए बड़े जोखिम का कार्य था। आप जिससे अधिक प्रेम करते है उसकी यह परीक्षा थी। और उस परीक्षा की चरम सीमा पर शहादत थी।"*[११] फिर वह नाटकीय शहादत हो या देह की इच्छाओं की हर रोज की मृत्यु हो, एक मसीही होने के नाते जीवन में हम किसे प्रेम करते है उस विषय तक आ गया। और वह प्रेम केवल कुछ ऐसा नहीं हैं जिसे हम अपने होठों से घोषित करते हैं, बल्कि कुछ ऐसा है जिसे हम अपने जीवन से प्रदर्शित करते हैं।

जब आपका अतीत मायने नहीं रखता

चेलों की यात्रा यीशु द्वारा उन्हें निर्देश देने से शुरू नहीं हुई थी, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)। न ही इसकी शुरुआत चेलों द्वारा महान् क्षमता दिखाने, उनका अनुसरण करने के लिए उन्हें पूछते हुए, सार्वजनिक मौखिक प्रतिबद्धताएं करते हुए, और निश्चित नियम और शर्तों से सहमत होकर शुरू हुई थी।

प्रभु के मुख से दो शब्दों से इसकी शुरुआत हुई थी।

"मेरे पीछे हो ले।"

जब यीशु गलील झील के तट पर पतरस और अन्द्रियास से मिले, तब उसने उन्हें नांव को छोड़ने के लिए नहीं कहां। उसने याकूब और यूहन्ना के जाल के बारे में कुछ भी नहीं कहां। उसने मत्ती से महसूल लेने की चौकी के बारे में कभी उल्लेख भी नहीं किया। जब मसीह ने अपने चेलों से उसके पीछे हो लेने को कहां, तब वहां एक नया रिश्ता था, और इसलिए अतीत की परिचितताओं से अलग होना था।

इस वचन में क्रम की और ध्यान दीजिए। यीशु ने अन्द्रियास और पतरस से कहां, ***"मेरे पीछे चले आओं**, तो **मैं तुम को** मनुष्यों के पकड़नेवाले **बनाऊंगा**"* (मत्ती ४:१९)। मसीह ने अपने चेलों को बुलाया कि उसके पीछे हो ले, उन्हें अभिवचन दिया कि वह उन्हें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाएगा। यीशु की यह ज़िम्मेदारी थी कि उन्हें बदल दे। मसीह का संदेश यह नहीं था, *"आपका जीवन बदलो और मेरे पीछे आओ।"* पर *"मेरे पीछे हो लो और मैं तुम्हारा जीवन बदल दूंगा"* ऐसा था।

"आपका जीवन बदल लो" यह स्वयं-सहायक संदेश खोखला और शक्तिहीन है। जब तक मसीह हमारे जीवन में अपना जीवन न भर दे, तब तक हम सच्चे और स्थायी परिवर्तन में असमर्थ हैं। मसीह हमारे होठों से पहले हमारे जीवन चाहता है। हमारे हाथों से पहले हमारे हृदय। हमारे पैरों से पहले हमारा प्रेम।

उस दिशा पर गौर करें जिस ओर यीशु हमें बुला रहे हैं। *"मेरे पीछे हो ले।"* यीशु के पीछे हो लेना यह सचमुच कई और से आना और किसी और से आना है। उसकी बुलाहट श्रेष्ठगीत २:१० उसकी पुकार प्रेमी की उसकी प्रेमिका को की गई पुकार में प्रतिबिंबित होती है, *"हे मेरी प्रिय, हे मेरी सुंदरी, **उठकर चली आ**"*।

वह हमें अपने पास बुलाता है। दूसरों से और अन्य चीजों से दूर।

हमारे अतीत से।
हमारी असफलताओं से।
हमारी सांसारिक पहचान और रोजमर्रा की जिंदगी से।
हमारी प्रशंसा और उपलब्धियों से।
वह सब कुछ जो अस्थायी है उससे हमारे लगाव से।
देह के व्यसनों से जो हमें एक हिंसक भंवर में फंसा देता है।

आपके जीवन में क्या है, जो पीछे छोड़ा जाएगा जब आप आपकी यात्रा यीशु को सौंपते है? वह हमें वहां से बुलाता है ...अपने पास लेने के लिए बुलाता है। पुनर्वास कार्यक्रम, निश्चित नियमों एक नयी रूपरेखा, या एक शैक्षिक गठन से अधिक कुछ है।

स्वयं के पास।

यीशु ने पहले हमें उसके पीछे हो लेने को कहां, उसके लिए लड़ने के लिए नहीं। आना है, जीतने के लिए नहीं। (उसने पहले ही लड़ा है और विजय प्राप्त की है। हमारे छुटकारे के लिए युद्ध रोमी क्रूस और खाली कब्र पर सुरक्षित किया गया है।)

इस पर भी ध्यान दीजिए यीशु ने *"जाओ!"* शब्द से शुरुआत नहीं की।

उसने कहां, *"चले आओं।"*

हम किसी लक्ष्य की ओर इस विचार के साथ नहीं दौड़ रहे हैं कि अंतत: हम अपने पुराने जीवन में वापस लौट आएंगे। हम जीवन में समाधान की तलाश में नहीं हैं। हम जीवन के स्त्रोत के पास आ रहे हैं। *"जाओ!"* कई गंतव्यस्थान का संकेत दे सकता है, लेकिन *"मेरे पीछे हो लेना"* यह एक केन्द्रित खोज है। बाद में, यीशु अपने चेलों को आज्ञा देगा, *"**जाओ**, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"* (मत्ती २८:२०)। लेकिन वह मिशन किसी समय के लिए आरक्षित है।

आओ यह उसका निमंत्रण अनंतकाल के लिए है।

यह सलाद बार नहीं है

यीशु मसीह का निमंत्रण सलाद बार पर आप सब कुछ खाने के जैसा नहीं है। ऐसी छोटी भोजनशाला पर, जैतून, प्याज और भुट्टा ये सब मिलाकर मेरा सलाद बनता है, टमाटर, मूली और ककड़ी इनकी कोई जगह नहीं। हमें जो पसंद है वह हम चुनते हैं और उसका इन्कार करते हैं जो हमारी प्राथमिकताओं में नहीं आते। लेकिन हमें ऐसा पवित्र शास्त्र के साथ नहीं करना चाहिए। मसीह की सीख जो सुहावनी है उसे स्वीकार करने और उस सीख को अस्वीकार करें जो हमें नापसंद हैं क्योंकि वे हमारी वर्तमान जीवनशैली के लिए खतरा हैं ऐसा करने का क्या हमें अधिकार हैं?

क्या आप परमेश्वर के शर्तों पर आने को तैयार हैं और उसने जो कहां हैं उस पर भरोसा करते हैं? वह अपने वचनों को संशोधित नहीं करेगा और आपकी प्राथमिकताओं के अनुसार

आपको जुड़ने के लिए नहीं कहेंगा। आप अपने आप से जितना प्रेम करते है उससे ज़्यादा परमेश्वर आप से प्रेम करता है उस पर भरोसा करने की वह आप से मांग करता है। इयुजिन पीटरसन का संदेश, वचन का संक्षिप्त विवरण, भजन संहिता ९०:२ को इस प्रकार बताता है : *"एक समय से लेकर अब तक, आप परमेश्वर है।"* हमें अंतिम साहस, सर्वोच्च प्रेम कहांनी और शास्वत पुरस्कार की खोज करने और जीवन जीने के लिए आमंत्रित किया गया है।

उसके पीछे हो लेना यह एक-तरफा ख़ोज है। *"चले आओ"* यह बुलाहट अपने आपका इन्कार करने और अपना क्रूस उठाने के साथ शुरू होती है और उसके बाद उसके साथ हमेशा आनंद के साथ जीवन बिताने में पूरी होती है। इस पुस्तक के पृष्ठों में, उसे अधिक घनिष्टता में जानने, उसे अत्याधिक जोश के साथ प्रेम करने, और उसके साथ पूरी तरह से आनंद मनाने के लिए हम इस ख़ोज के लिए प्रयास करना चाहते हैं। यह सब कुछ हमें उसी प्रश्न की ओर लाता है।

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

और उसका वही मतलब था, तो क्या हम अपने आप को उसे समर्पित करने के लिए तैयार हैं?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके अपने जीवन में *"अनंतकाल के लिए"* की लालसा को कैसे महसूस करते हैं इसका वर्णन कीजिए।

२. आपकी इच्छाओं के बारे में इस पाठ के प्रश्नों का उत्तर देते हुए आप ने आपके बारे में क्या सीखा ? क्या आपको कोई आश्चर्य हुआ?

३. आपको क्या लगता है कि किस बात से यीशु आपको बुला रहे हैं? क्या हम अपने आप को उसे समर्पित करने को तैयार हैं?

४

समर्पण में विजय पाना

गभीरता से, आय-ट्यून्स के तीन-मिनट गीत को खरीदने से जुड़े संबंधित नियम एवं शर्तों के नौ पन्ने कौन पढ़ता है ? क्या आप को कभी पता है कि यहाँ पर नियम एवं शर्तें हैं? मैं मानता हूँ कि जो मैं ढूंढ रहा हूँ जब वह मुझे मिलता है, तब तुरंत अनुबंध के निचले भाग तक झट से पहुंचता हूँ , और अनिवार्य बॉक्स में एक आसान जांच होती है। उसके साथ, मैं सहमत होता हूँ कि मेरे नसीब में फिर जो कुछ भी हो। एक्स्पेडिया पर होटल बुक करने से अमेझोन पर पुस्तक खरीदने तक, हमारा लक्ष्य वस्तु पर रखने की प्रवृति होती है, प्रक्रिया पर नहीं। हम तुरंत परिणामों वाली एक सरल प्रक्रिया चाहते हैं।

क्या हमने यीशु मसीह की बुलाहट के साथ भी इस तरह व्यवहार किया है?

क्या हम हमारे उद्धार को प्रार्थना कहने, गलियारों में चलने या प्रतिबद्धता के कार्ड पर हस्ताक्षर करने के बाहरी अनुभव को आधार बनाया हैं-स्वयं उद्धारकर्ता को जाने बगैर? क्या हम लोग-प्रसिद्द *"उद्धार बॉक्स"* की जांच करते हैं और जीवन में सामान्य रीतिसे लौट जाते है, यह मानते हुए कि परमेश्वर केवल बौद्धिक सहमति चाहता था? जबकि उद्धार स्पष्ट रीतिसे मसीह और उसके पूरे किये हुए काम में केवल विश्वास द्वारा अनुग्रह से ही मिलता है, ऐसा अनुग्रह जीवन को अपरिवर्तनीय रूप से बदल देता है। कोई यीशु मसीह के प्रेम का अनुभव और स्वीकार दोहरे जीवनशैली में लिप्त रहने के लिए नहीं करता है।

कलवरी के प्रेम के लिए एकहीं उचित प्रतिक्रिया यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व के प्रति पूरी तरह से समर्पण है। शिष्यत्व का यह जीवन व्यक्तिगत परिपूर्णता के बारे में नहीं, लेकिन उसको जानने और उसके समान बनने के जोशीले खोज के बारे में है। मसीह के पीछे चलने का चुनाव यह एक निर्णय है कि हमारे दोहरे जीवन को परे करे और स्वयं मसीह के एकहीं दृष्टि से खोज करना है। यदि यह अवास्तविक लगता है, तो पढ़ते रहिए।

अंत में, यहाँ पर इन्कार होगा। कोई और इन्कार करेगा। *"इन्कार"* शब्द की परिभाषा *"देना या मंजूर करने को अस्वीकृत करना जिसके बारे में बिनती या इच्छा की गई है।"*[१२] एक तो स्वयं का इन्कार किया जाएगा और अस्वीकृत किया जाएगा, या यीशु मसीह का इन्कार और अस्वीकृत किया जाएगा। यीशु ने कहां, *"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता"* (मत्ती ६:२४)।

एक तो स्वयं का इन्कार किया जाएगा और अस्वीकृत किया जाएगा, या यीशु मसीह का इन्कार और अस्वीकृत किया जाएगा।

इस बिंदु के शरुआत की खोज आप नहीं है। यह उससे शुरू होती है। वह बुलाता है। वह बोलता है। वह निमंत्रित करता है। हमारी ज़िम्मेदारी उत्तर देना है। आपका अतीत आपकी क्षमता को परिभाषित नहीं करता। फिर आपका अतीत प्रतिष्ठित या निंदनीय जो भी हो- मसीह में आप एक नई सृष्टि हैं।

जब हम अतीत को मानदंड का हिस्सा होने देते हैं जबकि हम या कोई और, मसीह के पीछे चल सकता है, तो हम सुझाव देते हैं कि परमेश्वर को अपना मिशन पूरा करने के लिए किसी तरह हमारे पोर्टफोलियो की आवश्यकता है। सच से और दूर कुछ भी नहीं हो सकता। बुलाहट को कौन जवाब दे रहा है इस पर ध्यान दिए बगैर, पहिला कदम यह समर्पण है।

शैक्षणिक खोज में, आप अग्रिम कक्षा लेने से पहले, आपको छोटे-स्तर के, प्राथमिक कक्षाओं को लेना चाहिए जिसे आवश्यक शर्तें कहां जाता हैं। एक बार आप इन कक्षाओं में पास हो जाओ, तो आपको अधिक जटिल पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया जाएगा। क्या यह विश्वविद्यालय की ओर से सजा है कि आपको आवश्यक शर्तें मानना चाहिए? नहीं। आवश्यक शर्तें आपको सफलता के लिए स्थापित करने के इरादे से हैं। इस तरह का प्राथमिक ज्ञान महत्वपूर्ण है। भीड़ को कहते हुए, यीशु ने उसके पीछे हो लेने की आवश्यक शर्तें घोषित की। *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)। मसीह का बुलावा व्यक्तिगत प्रतिबंध और स्वयं- इन्कार के लिए निर्देश से यह अत्यंत चरम और क्रांतिकारी था।

न्यू किंग्स जेम्स संस्करण में, मत्ती १६:२४ इस तरह से अनुवादित किया है, *"यदि कोई मेरे पीछे आने की इच्छा करता है, तो वह अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले।"* स्वयं का इन्कार करने का चुनाव करना ताकि मसीह के पीछे चले यह *"तो वह"* इस शब्दों के साथ परिचित होता है।

ऐसा होने दे।

'अनुमति देने का अर्थ *"रोकना या मना करना नहीं।"*[१३] यदि मैं किसी वस्तु को गिरने दूँ, तो इसका मतलब है कि उसे रोकने का एक अवसर मेरे पास था। यही बात आत्मिक रूप से सच है। परिवर्तन की शक्ति व्यवहार में बदलाव करने में नहीं है, बल्कि मसीह की पर्याप्तता में है।

फिलिप्पियों २ में, हम पढ़ते हैं, *"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो;.... जिसने अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।"* (फिलिप्पियों २:५, ८)

ऐसा होने दे।
यह उसे हम में काम करने देने के बारे में है, अधिक प्रयास करने के बारे में नहीं। हमारी शक्ति में अधिक प्रयास करना यह केवल उसे काम करने देने में रूकावट है। यह अंत में समर्पण के बारे में है। यह एक उत्तम रणनीति ढूंढने के बारे में नहीं।

जैसे यह अगले पाठ में स्पष्ट हो जाएगा, यह स्वयं-इन्कार के बारे में भी नहीं है।

जब हमारा लक्ष्य स्वयं-इन्कार पर होता है, तब स्वयं और प्रभु को संतुष्ट करने के लिए हमें क्या पूरा करना चाहिए इस ओर एकाग्रता चली जाती है। *"मसीह के पीछे चलने"* की प्रक्रिया ही उसके साथ अधिकृत रिश्ते के लिए एक विकल्प हो जाती है। क्या नाम की मसीहियत ने महिमामय शास्वत सम्बन्धात्मक अवसर के मसीह के संदेश के महत्त्व को कम किया है, जिसे किसी प्रकार के अयोग्य अस्थायी धार्मिक कर्त्तव्य में बदल दिया हैं?

मसीह का अनुसरण करना किसी बचाव या परहेज़ की मानसिकता अपनाने के बारे में नहीं है। यह मत पीओं, नशा मत करो, पार्टी मत करो, श्राप मत दो, झूठ मत बोलो, शादी से पहले लैंगिक सहवास मत करो, अश्लील चित्र न देखो, फंसांओं मत, और सूची और भी बढ़ते ही जाती है। मुझे गलत मत समझो। परमेश्वर का वचन हमें देह की अभिलाषाओं से दूर भागने को कहता है। लेकिन ऐसी अभिलाषाओं से दूर भागना यह उद्देश्य नहीं है। यह खोज नहीं है। इस में कोई आश्चर्य नहीं कि आज के जवान इस जगत में (और चर्च में) बेचैन रहते हैं! हमारी पीढ़ी (और हर एक पीढ़ी) को एक पवित्र कारण से सृजा गया था जिसे हम हासिल कर सकते हैं! हमारे पास उसके लिए जीने को जूनून और एक उद्देश्य चाहिए जिसके लिए मरना है!

मसीह हमें वह उद्देश्य देने के लिए आया।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. क्या आप मसीह का संदेश को एक धार्मिक दायित्व या एक संबंधपरक अवसर के रूप में देखते हैं? स्पष्टीकरण दीजिए।

२. क्या यहाँ आपके अतीत से कोई बात है जिसे आप आपकी परिभाषा करने दे रहे हैं? स्पष्टीकरण दीजिए।

३. आपके जीवन के कौनसे क्षेत्रों में आप परमेश्वर के अधिकार को समर्पण करने के बजाय *"कठिन प्रयास"* कर रहे हैं ? आपके जीवन के उस क्षेत्र को परमेश्वर को नियंत्रित करने देना कैसा लगेगा?

भाग २

"... तो आप इन्कार

अपनों

का

करो....”

५

स्वयं का त्याग या स्वयं का इन्कार

यीशु ने कभी नहीं कहां, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो उसे स्वयं का त्याग का अभ्यास करना चाहिए।"* वास्तव में, ऐसा संदेश उसने सच में जो कहां उसके विरोध में हो जाएगा। स्वयं का त्याग और स्वयं का इन्कार के बीच में क्या फर्क़ है? स्वयं का इन्कार करने का सही अर्थ क्या है? मुझे ख़ुशी है आपने पूछा है! फर्क़ जीवन-बदलनेवाला है।

सेनेगल में खुले-पानी में तैरनेवाला और मध्य पूर्व में सालों तक तैरने के प्रशिक्षक के रूप में, मैं तुरंत सीख गया कि स्वयं का त्याग यह खेल के लिए आदर्श है।

सुबह ३:४५ को बजनेवाला अप्रिय अलार्म सुबह के अभ्यास के लिए जो जीवनशैली मैंने चुनी थी उसके लिए दिन का पहिला स्मरण था। मेरे आहार में कुछ बदलाव किये गए थे। कुछ निश्चित भोजन से तो दूर ही रहना था। सोडा, आइसक्रीम, चिप्स और तले हुए भोजन की मनाही थी। और फिर एक प्रतिबद्ध तैरनेवाले के रूप में मेरे जीवन पर कुछ सामाजिक प्रभाव थे -थकान, दोस्तों के साथ शाम को मर्यादित घूमना, बड़े सबेरे उठना, और बहुत सी बातें।

न चूकने के लिए यहाँ पर एक महत्वपूर्ण सबक है। मेरी मानसिकता *"क्या यह योग्य है"* ऐसी नहीं थी? इसके बजाय, मेरा प्रश्न था, *"मैं कैसे तेज तैर सकता हूँ?"* मुझे समझ नहीं थी कि मुझे दंड दिया जा रहा है, बल्कि मैं मेरे आसपास के लोगों से ज़्यादा एक अलग उद्देश्य की खोज कर रहा था। एक नए उद्देश्य ने मुझे कार्य करने की प्रेरणा दी। तैराकी एक पद, विजय, मेडल प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। एक तैराकी और प्रशिक्षक के रूप में, नए सत्र

जिसे हमें हमारे जीवन में बदलने की आवश्यकता हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह गलत कल्पना है कि आपके जीवन से हानिकारक बातों को निकाल दे, लेकिन स्वयं का इन्कार करना एक अलग शुरुआती बिंदु की मांग करता है।

जिद्दी, और निश्चल चर्च के लिए इलाज अधिक प्रयास करना नहीं, लेकिन मसीह के पूरे किये हुए काम की सुंदरता पहचानना है।

हम दाऊद और गोलियत की कहांनी में पढ़ते हैं और हमारे बच्चों को सिखाते हैं कि दाऊद की प्रशंसा करे जिसने एक महाकाय व्यक्ति को पत्थर और गोफन के साथ मारा। लेकिन मुझे यह सुझाव देने दीजिए कि उस कहांनी में जैसा दाऊद था वैसे हम नहीं हैं? हम इस्राएली सेना के पीछे रहनेवाले डरपोक सैनिक हैं जो युद्ध में जाने के लिए डर रहे थे जब हमारा *"दाऊद"* वहां जाने के लिए अग्रणी था-गोफन के साथ नहीं, लेकिन क्रूस के साथ। केवल एक अद्भुत कार्य के विजय से, उसने हमेशा के लिए पाप और मृत्यु, शैतान और नरक की सामर्थ्य को नष्ट किया। यीशु और अधिक दृढ़ निश्चय के लिए नहीं बुला रहा है। वह हमें अपने खातिर उसके विजय पर विश्वास रखने को कह रहा है। वह अपने आप के लिए मृत्यु को बुला रहा है और हमें अपने स्वयं के प्रयासों पर निर्भर रहने के बजाय उसके विजयों की शक्ति में जीने के लिए अवसर दे रहा है।

जब बास्केटबाल ने मेरे दिल पर राज किया

मेरी किशोरावस्था में, मैं व्यवसायिक बास्केटबाल में पेशा बनाने की इच्छा रखे हुए था। मेरे दिन, उर्जा और सोच खेल में मगन थे। बढ़ती बौद्धिकता से, बास्केटबाल मेरा परमेश्वर, मेरी मूरत हो गई थी। निश्चित, मसीह में मुझे नरक से अग्नि बीमा प्रदान किया था, लेकिन मैं उसके पीछे नहीं चल रहा था। इसके बजाय, मैं उसे मेरे पीछे आने को कह रहा था-उस दिन तक जब वह गलील के झील के मेरे किनारे तक मेरे पास चलता हुआ नहीं आया।

जब मैं १५ साल का था, मेरे माँ-बाप अमरीका गए, जिस कारण से मुझे मेरे हाईस्कुल के आखरी दो साल वहां पूरे करने में सहायता मिली, मुझे स्काउट की जानकारी मिली और सागर के दूसरे छोर पर खेल की गति के अनुरूप ढलने का अवसर मिला। सब कुछ ठीक हो रहा था। सेंट लुईस, सेनेगल से जाकर, साउथ कॅरोलिना में यात्रियों के आराम करने के स्थान पर मैंने स्वयं को एसीसी बास्केटबाल देश के केन्द्रीय स्थान में पाया। मुझे तुरंत एक संघ मिला जिसके साथ मैं खेलू और मेरे कनिष्ठ सत्र के लिए प्रशिक्षण शुरू किया। विश्वविद्यालय की टीम में मेरी जगह प्राप्त की और पूर्व एनबीए प्रशिक्षक मिला जिसके

साथ प्रशिक्षण करे, मुझे इस बात पर यकीन था कि सब कुछ उद्देश्य की ओर ले जा रहा है। मेरे उद्देश्य की ओर।

तब यह हुआ- परमेश्वर ने मुझ से बात की।

हम थोड़े समय के लिए कॅलिफोर्निया गए कि मेरे दादी और रिश्तेदारों से मिले। वहां रहते हुए, मैं इब्रानियों की पुस्तक पढ़ रहा था जब मेरी नजर परिचित वचन पर ठहरी। *"इस कारण जबकि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमे हमें दौड़ना है धीरज से दौड़ें, और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करनेवाले यीशु की ओर ताकते रहें..."* (इब्रानियों १२:१-२अ)।

मैंने इस भाग को अनगिनत बार पढ़ा था, लेकिन उस दिन जैसे कि वे चार शब्द बड़े प्रज्वलित नजर आए : हर एक रोकनेवाली वस्तु दूर करे। इन शब्दों ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव किया। बास्केटबॉल यह पाप नहीं था, लेकिन मेरे जीवन में वह एक बोझ था जो मुझे स्वार्थी अस्तित्व की ओर खींच रहा था जो मुझे स्वयं-संतुष्टि और स्वयं की महिमा की नई ऊँचाई और सपनों से भरे हुए था। निश्चित ही, मैंने मेरी योजनाओं में परमेश्वर को शामिल किया होगा। आख़िरकार, मैं विदेश में व्यवसायीक बॉल खेलने को तैयार था (जैसे कि वहां पर ऐसे निवास के लिए ये स्वर्ग में सम्मान का पुरस्कार था)। लेकिन मैंने मेरे जीवन को उसकी योजनाओं में नहीं जोड़ा था। मैंने शास्वत मूल्य और आशीष की उसकी बुलाहट स्वीकृत करने के बजाय मेरे जीवन पर उसकी आशीष के लिए मैंने प्रार्थना की। इस इकरार ने मेरे हृदय को भेद दिया।

हर एक रोकनेवाली वस्तु दूर करे। इन शब्दों ने मेरे दिल पर गहरा प्रभाव किया।

आसुओं से लथपथ चेहरे के साथ, मैं मेरे मा-बाप के पास गया और मेरे अप्रत्याशित खेल से तुरंत निवृत्ति जाहिर की। (क्या मैंने उल्लेख किया क्या कि मेरे जीवन में कोई बीच का रास्ता नहीं है? मैं एक तो सब कुछ के साथ प्रवेश कर चुका हूँ या सब कुछ के साथ बाहर जा चुका हूँ)। जब हमने चर्चा कि क्या हुआ था, और कैसे परमेश्वर के वचन ने मुझसे बात की, तब प्रशिक्षक को बताने से पहले और इस बात को अधिकृत करने से पहले मेरे माँ-बाप ने मुझे प्रार्थना करने को प्रोत्साहित किया। मुझे याद है मैंने उनसे कहां कि हम प्रार्थना कर सकते है, लेकिन इसका कोई लाभ नहीं होगा, क्योंकि परमेश्वर ने पहले ही सब बातें स्पष्ट कर दी है।

बास्केटबाल सोच निकल गई थी।

इस बिंदु से मत चूकिए। बास्केटबॉल पाप नहीं था। परमेश्वर खेल के क्षेत्र से बहुत सारे व्यक्तियों का उपयोग करता हैं। प्रभु हमारे हृदयों की ओर देखता हैं। यहाँ पर कुछ स्पष्ट प्रश्न हैं जो हमें मूर्तियों को पहचानने में सहायता करेंगे जो हमारे जीवनों में भर गए हैं।

- मेरे दिल पर क्या राज करता है?
- चुनाव जो मैं करता हूँ उसे कौन आज्ञा देता है?
- सुसमाचार के लिए मेरे जोश के स्तर को कौन या क्या निर्धारित करता है?
- क्या कोई भौगोलिक स्थान मेरे परमेश्वर के कार्य में सहभाग को निर्धारित करता है?
- क्या मेरे पेशे की खोज मेरे जीवन की सेवकाई को निर्धारित करता है? या क्या मिशन मेरे पेशे की खोज को निर्धारित करता है?
- क्या किसी बिंदु पर परमेश्वर की अवज्ञा करने के लिए ऐसा कुछ भी मुझे प्रभावित करता है?
- क्या ऐसा कुछ है जो मुझे यीशु मसीह के साथ मेरे संबंध से बढ़कर महान् आनंद देता है?
- क्या यहाँ भविष्य के बारे ऐसा कुछ भी है जो मुझे प्रभु और उसकी योजनाओं से बढ़कर उत्साहित करता है?
- मैं अक्सर दिन के सपनों में क्या देखता हूँ?
- मुझे किस बारे में बात करने में सबसे ज़्यादा मजा आता है?
- मुझे सबसे अधिक क्या खोने का डर रहता है?
- मैं मेरे पैसे सबसे अधिक किस बात पर खर्च करना पसंद करता हूँ?
- मैं मेरा समय सबसे अधिक कहां बिताने में आनंद करता हूँ?
- जब चीज़ें मेरी इच्छानुसार नहीं होती तो मुझे शिकायत करने का क्या कारण है?
- मैं किसकी रक्षा और बचाव के लिए दृढ़ता से प्रयास करता हूँ?

आइए इसे सरल और साधा बनाए। स्वयं का त्याग यह आपके जीवन से कुछ बातों को निकालना हैं- आमतौर पर अस्थायी रूप से-कि अधिक महत्वपूर्ण बातों पर लक्ष्य केन्द्रित करें। स्वयं का इन्कार आपके जीवन के सिंहासन से नीचे उतरना है ताकि मसीह को आपके सपने, जूनून और खोज पर राज करने दे।

जब व्यर्थता आराधना में बदल जाती है

आपके सपने चाहे कितने भी महान् या महत्वाकांक्षी क्यों न हो या सफलता की खोज में आप कितने ही डूबे हुए क्यों न हो, यदि आप आपके जाल को पीछे छोड़ने को तैयार नहीं है जब मसीह बुलाते हुए आता है, आप निडरता घोषित करते हैं कि आप और आपकी योजनाएं ये आपके जीवन के स्वामी है, वह नहीं। लेकिन सुसमाचार यह है : यदि आप अब भी साँस ले रहे हैं, तो अब तक आपके कहांनी का अंत लिखा नहीं गया है।

मुझे अच्छी तरह याद है २००४ के पतझड़ में साऊथ कॅरोलिना, उत्तरी ऑगस्टा में मैं संदेश दे रहा था। प्रार्थना सभा के बाद में, एक वृद्ध मनुष्य सिसकते हुए ऊपर आते हुए लड़खड़ाया, *"मैंने मेरे जीवन को बर्बाद किया है!"* मैंने मेरे जीवन को बर्बाद किया है! *" मैंने मेरे जीवन को बर्बाद किया है!"* वे आसूं मुझ बीस वर्ष के व्यक्ति के कंधो पर गिरे जो शक्तिशाली रीतिसे बोए गए। बरसों, मेरे जीवन के लिए एक चेतावनी के रूप में मैं उस क्षण को स्मरण करता था। हालाँकि, मुझे बाद में एहसास हुआ कि जो कुछ उसने कहां था वह पूरी तरह से सही नहीं था। जीवन बर्बाद नहीं होता जब तक वह समाप्त नहीं होता। यीशु मसीह केवल हमारे अतीत को क्षमा नहीं करता -वह उसकी महिमा के लिए उसका उद्धार करता है यदि हम उसे हमारा टुटाहुआ जीवन दे दे। जो कुछ हमने बर्बाद किया है वह उसे लेना चाहता है और उसे अपने अनुग्रह और दया के लिए आराधना के जीवन में बदल देता है।

अपने स्वयं के लिए बिताएं वर्षों को परमेश्वर फिर से प्राप्त करता है इस बारे में जब मैं सोचता हूँ, तब मैं मध्य पूर्व राष्ट्र के वृद्ध मनुष्य के बारे में सोचता हूँ जहाँ मैं बहुत वर्ष रहा। वह हमेशा हमारे रास्ते पर उसकी चरमराती पुरानी साइकिल पर आता था उसमे सामने की ओर एक बक्सा रहता था। जैसे ही चलाता था, वह पुकारता था, *"बेकिया!"* जिसका सरल अर्थ *"टूटी हुई चीज़ें।"* यदि किसी के पास कुछ भी टूटे हुए या बेकार की चीज़ें होती, तो वह उन्हें थोड़े से पैसों में खरीदता और उसे ठीक करता या फिर से नया बनाता-उसे मूल्यवान वस्तु बनाता। मसीह हमारे जीवन के साथ यही करता है।

वह हमें स्वयं का त्याग द्वारा अपने जीवनों को ठीक करने के लिए नहीं कह रहा है। बल्कि, वह हमें अपने टूटे हुए जीवन उसे सौंपने को कह रहा है (अपने आपका इन्कार करने के द्वारा), ताकि वह हमारे जीवनों को कुछ तो सुंदरता में बदल दे।

स्वयं का इन्कार आपके जीवन के सिंहासन से नीचे उतरना है ताकि मसीह को आपके सपने, जूनून और खोज पर राज करने दे।

बहुत लोगों को यीशु की कल्पना पसंद है, और वह कौन है इस सत्य पर बौद्धिक रूप से विश्वास करते हैं। उन्होंने कभी *"यीशु को उनके हृदयों में आने"* की प्रार्थना की होगी। लेकिन मसीह समर्थकों को इकट्ठा करने नहीं आया। वह उसके जोड़ीदार के लिए आया। उसकी दुल्हन। वह अस्थायी पहचान के लिए नहीं आया। वह हमारे साथ उत्साहित, शास्वत संबंध स्थापित करने आया।

आपके जीवन में, क्या स्वार्थ निकल गया है और प्रभु को नियंत्रण करने दे दिया है जिसने आपसे शास्वत प्रेम से प्रेम किया है?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. स्वयं का त्याग और स्वयं का इन्कार के बीच में क्या फर्क़ है?

२. आप ने इस पाठ में प्रश्नों का उत्तर देने के द्वारा आपके सपने, जूनून और खोज के बारे में क्या सीखा हैं?

३. क्या आप ने यीशु को आपके जीवन का नियंत्रण दे दिया हैं? यदि नहीं, तो आपको पीछे क्या रोक रहा हैं?

६

जब स्वतंत्रता पिछड़ी लगती है

चेतावनी : यह पाठ जो संस्कृति आपको बता रही है उसके विरुद्ध जाता है। लेकिन सवाल वहीं रहता है : *"क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?"*

अब आपके पास अधिकार नहीं हैं।
अब तुम्हारा नियंत्रण नहीं हैं।
आपका जीवन आपका नहीं है।
तुम स्वेछासे अपना सब कुछ उसे सौंप देते हो। समाप्त।

यह शायद बुरे समाचार जैसा नजर आता है, लेकिन ठहरे रहो। यह स्वतंत्रता है।

इस सत्यता को स्पष्ट करने के लिए, कागज का एक खाली पन्ना ले लो। कोई फर्क़ नहीं पड़ता कि वह किस आकार या रंग का है, या वह लकीरोंवाला या छेदवाला है। अब, खाली पृष्ठ के नीचे हस्ताक्षर करें। यही जो आप परमेश्वर को देते हैं। यह स्वार्थ का इन्कार करने की सच्चाई है। आप आपके जीवन में, आपके सपनों के साथ, आपके रिश्तेनातों के साथ, आपकी मृत्यु के साथ वह जैसा चाहता है वैसे करने देने के लिए परमेश्वर को रिक्त अनुबंध देते है। याद रखे आपके लिए उसकी देखभाल बेजोड़ है, उसकी सामर्थ्य असीमित है, उसका प्रेम शास्वत है, और उसका ज्ञान अथाह है। आप उस पर विश्वास रख सकते हैं ! आप जितना सोच सकते उससे कहीं बेहतर वह आपके जिंदगी के कॅनवास पर जो चाहता है वह कहांनी चित्रित करना चाहता है। और यह अनंतकाल के लिए महत्वपूर्ण होगी। याद रखे, सब कुछ जो आपके पास है वह सर्व प्रथम उससे है। वह आपके अस्तित्व को

बिगाड़ने के लिए नहीं आया। वह आया कि आपको जीवन दे जिसे जीने के लिए आपको सृजा गया था।

स्वतंत्रता का पीछा करना

डिस्ने स्टोअर में पूर्व कलाकार (डिस्ने कर्मचारियों के लिए उपयोग किया हुआ शब्द) सदस्य के रूप में, मैं क्या कह सकता हूँ? मैं एक प्रशंसक हूँ। आपके अगले डिस्ने कराओके रात के लिए मुझे निमंत्रण दीजिए और संभावनाएं है, मैं वहां रहूँगा। लेकिन कई डिस्ने सिनेमा "स्वतंत्रता' की परिभाषा कई ज़्यादा विकृत करते हैं यह मैंने देखा है इस पर मैं कुछ भी सहायता नहीं कर सकता।

उदाहरण के लिए, 'द लायन किंग' पर ध्यान दें। प्रतिबंध से स्वतंत्रता की सिम्बा की खोज ने उसे एक गीत गाने में ले गई : *"कोई नहीं कह रहा, 'यह करो!' कोई नहीं कह रहा, 'वहां रहो!' कोई नहीं कह रहा, 'उसे रोको!' कोई नहीं कह रहा, 'यहाँ देखो!' पूरे दिन भर सभी तरफ दौड़ने के लिए स्वतंत्र है, मेरे तरीके से सब कुछ करने के लिए स्वतंत्र है!"* एल्सा ने फ्रोझन में उसी दृष्टिकोण को घोषित किया है। *"यह समय है की मैं क्या कर सकता हूँ वह देखे, कि मर्यादा की परीक्षा करे और नई राह प्राप्त करे.... नहीं सही, नहीं गलत, मेरे लिए कोई नियम नहीं, मैं स्वतंत्र हूँ। इसे छोड़ दीजिए!"* यही विचारधारा अलाद्दीन और जास्मिन के गीतों में इस्तेमाल की गई है, *"एक पूरा नया जगत"*- मेरा एक सबसे पसंदीदा डिस्ने गीत। वे एक दूसरे को घोषित करते हैं, *"एक पूरा नया संसार, एक नया दृष्टिकोण का शानदार बिंदु, कोई हमें बताता नहीं 'नहीं!', या कहाँ जाएँ, या कहें हम केवल सपने देख रहे हैं।"*

क्या होगा यदि सच्ची स्वतंत्रता अधिकार की अनुपस्थिति नहीं, पर अंतिम प्रेम की उपस्थिति है?

क्या आप इन गीतों में स्वतंत्रता के हर एक संस्करण के बीच में समानांतर देखते हैं? स्वयं के बाहर कोई प्रतिबंध और कोई अधिकार नहीं है। यदि यह सच है, तो यीशु दासत्व लाने आया। लेकिन क्या होगा यदि सच्ची स्वतंत्रता अधिकार की अनुपस्थिति नहीं, पर अंतिम प्रेम की उपस्थिति है? क्या होगा यदि परमेश्वर वास्तव में आपसे ज़्यादा प्रेम करता है जितना आप खुद से प्रेम करते हैं? क्या होगा यदि परमेश्वर के पास आप जो कुछ भी कल्पना कर सकते उससे भी ज़्यादा बड़ी योजनाएं हैं ? क्या होगा यदि सच्ची स्वतंत्रता केवल समर्पण में ही अनुभव की जा सकती हैं?

प्रभु के विरुद्ध विद्रोह जो हमें प्रेम करता है वह स्वतंत्रता प्रदान नहीं करता; वह उसे बिगाड़ता है। लेकिन विद्रोह स्वतंत्रता को बिगाड़ने का केवल एकहीं रास्ता नहीं है। यहाँ पर और भी रास्ते हैं।

दूसरे विश्व युद्ध के दौरान, लाखो यहूदीयों को (और उनके साथ सहानुभूति रखनेवालों को) उत्तरी यूरोप के उस पार सताव करने के लिए ले जाया गया जहाँ बहुसंख्य लोगों ने उनके विनाश के लिए बनाए गए कुख्यात गैस चेंबरों में अंत करना पड़ा। ऐसी कुछ छावनी को देखने मैं गया, जैसे दकाऊ और ऑसशिविट्स, और आगंतुकों का स्वागत करनेवाला संकेत सतानेवाला था। बड़े मोटे अक्षरों में छावनी के लोहे के दरवाजे के ऊपर ये शब्द अलंकृत किए गए थे : अर्बट मष्ट फ्रे (मतलब, "काम आपको स्वतंत्र करता है।")। उस तीन जर्मन शब्दों ने कैदियों के मन में आशा की किरण जागृत की होगी-लेकिन ज़्यादा समय के लिए नहीं। उस दरवाजे के भीतर, वे सत्य सीखते होंगे। उन्हें फंसाया गया है।

दु:खद रूप से, यह झूठ कि काम हमें स्वतंत्र करता है आज भी कई हृदयों में जीवित है, खास करके चर्च में। कई लोग उनके मसीह जीवन में स्वतंत्रता को अंतिम स्थान के रूप में सोचते हैं। वे सोचते हैं कि स्वतंत्रता यह परमेश्वर को संतुष्ट करना हैं, और यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार चलते हैं, तो हम अंत में स्वतंत्र होंगे। हम इस नज़रिया को एक सीधे प्रश्न से जाँच सकते हैं। क्या हम कह रहे हैं, *"यदि मैं ----------करता हूँ, फिर परमेश्वर ----------यह करेगा?"*

यह समझ लीजिए कि मैं यहाँ परमेश्वर के क्रोध से स्वतंत्रता के बारे में नहीं कह रहा हूँ। हम पूर्ण क्षमा और स्वीकृति प्राप्त करते हैं जब हम हमारी खातिर यीशु मसीह के उद्धार के पूरे किए काम पर विश्वास करते हैं। उस स्वतंत्रता को उद्धार कहते है और परमेश्वर के समक्ष हमारे स्थान को मसीह में धर्मी के रूप में सुनिश्चित करते हैं।

उस बारे में मैं जो कह रहा हूँ वह स्वयं का इन्कार करने की बुलाहट है- जो हमें उसके प्रेम को और भी ज़्यादा आनंद मनाने में स्वतंत्रता देता है। ध्यान दीजिए, मैंने यह नहीं कहां, *"परमेश्वर द्वारा और भी प्रेम करने के लिए स्वतंत्रता।"* परमेश्वर जिसने पहले ही जो किया है उससे ज़्यादा वह हमें प्रेम नहीं करता। परमेश्वर का वचन कहता है, *"इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे"* (यूहन्ना १५:१३)। यह वह प्रेम है जिसके साथ उसने हमसे प्रेम किया है। यीशु मसीह अपने स्वयं का जीवन देने के द्वारा आपके प्राण का उद्धार करने से पहले ही इस शापित जगत में आया है। लेकिन उसके प्रेम का आनंद आप अपने लिए कितना प्राप्त करोगे और घनिष्टता जो वह देता है उसमे प्रवेश

करने का आप ने चुनाव किया। आप उसे पूरी तरह से समर्पित होकर उसके प्रेम में बने रह सकते हैं या आप अवज्ञा में और पाप की दासता में जीवन व्यतीत सकते हैं।

एक जाँच सूची से भी अधिक

खेल जीतने के समान परमेश्वर की खोज करने के बजाय, समझ लीजिए कि वह चाहता है कि वह आपके परमेश्वर के रूप में जाना जाए जो आपके लिए तरसता है। उसका वचन, बाइबल, यह एक प्रेम पत्र है जिसमे हर एक कहांनी, पन्ना और शब्द अपने सृष्टिकर्ता के ह्रदय को प्रगट करते हैं।

किसी भी प्रेम संबंध में, जब पत्रों को आदान-प्रदान किया जाता हैं, तब हर एक विवरण महत्वपूर्ण है। क्या उसने *"मेरे पूरे प्रेम के साथ"* समाप्त किया है या उसने पूरी *"ईमानदारी"* से उसे लिया है? क्या उसने उसके किसी एक उपनाम का प्रयोग किया था? क्या पत्र को बिना जोश के जल्दी ख़त्म किया है? क्या उसने पत्र को उसके प्रिय सुगंध से भर दिया है? क्या उसने उसके मैं को साधारण रीतिसे चिन्हित किया है, या क्या उसने उसके ऊपर एक डिस्ने टेढ़ा घेरा बनाया है? जी हाँ, हम इन बातों को देखते हैं क्योंकि यह जो लिखता है उसके ह्रदय को प्रगट करता है।

स्वयं का इन्कार करने की बुलाहट यह जाँच सूची से भी अधिक है, और किसी निर्धारित नियमों से कहीं अधिक कठोर है। मसीह के पीछे चलना यह एक खोज है। स्वयं का इन्कार यह हर रोज की आवश्यक शर्तें हैं कि उसे ज़्यादा घनिष्टता से जाने। यीशु हमारे जीवनों के सिंहासन के लिए लड़ नहीं रहा। वह उसे देना आवश्यक है। मसीह की खोज करने का एकहीं रास्ता यह उसे हमारे जीवनों पर राज करने देना है। वह प्रभु है; वह केवल एक अच्छी कल्पना नहीं हो सकता।

उसे इस तरह से सोचो : हम अबसे नहीं जी रहे हैं, लेकिन मसीह हममे जीवित है। हमारे जीवनों पर उसके प्रेम ने कब्ज़ा कर लिया है। हमें स्वयं को मरा हुए के रूप में जीने के लिए बुलाया गया है, कि सच्चा जीवन राज कर सके। स्वयं के लिए जीवित मृत के रूप में हमारी यात्रा उसे जानने, उसके बारे में सीखने, उससे बातें करने, उसकी आवाज़ सुनने और उसके वचन के द्वारा हमारे जीवनों की रुपरेखा बनाने के द्वारा शुरू होती हैं-जिस पर हम नीचे आनेवाले पन्नों में चर्चा करेंगे।

"इन्कार" में गोता लगाना

यीशु इस्तेमाल करता है उस *"इन्कार"* शब्द को गहराई में देखे। यह शब्द ग्रीक भाषा में अपरनिओमाई है। यह दो शब्दों से बनता है : अपो, इसका मतलब *"अलग होना,"* और अर्नियोमाई का मतलब, *"किसी का इन्कार करना, या अस्वीकृत करना, या जो कुछ दिया है उसे अस्वीकृत करना।"* इसे स्पष्ट करने, हम इस शब्द का अर्थ इस तरह कह सकते हैं, *"यह मानना कि किसी को किसी के साथ कोई जान-पहचान संबंध नहीं है।"* दूसरे रीतिसे कहना यह इस तरह होगा, अपने स्वयं को भूल जाना, और अपने स्वयं के दृष्टिकोण और अपने स्वयं के हित को गवां देना। यह केवल प्राथमिकताओं की पुनर्व्यवस्था या स्वयं का नवीनीकरण नहीं है।

मृत्यु हो रही है। जीवन का जन्म हो रहा है।

स्वयं का त्याग और स्वयं का इन्कार के बीच के फर्क़ को याद रखने का सरल रास्ता यह है : स्वयं के इन्कार में स्वयं प्रथम आता है। स्वयं के इन्कार में हमारा लक्ष्य करने पर है, खोज करने पे नहीं। दूसरे पहलू पर, स्वयं के इन्कार में लक्ष्य यह करने में नहीं, पर प्रभु के प्रति समर्पित होने में है जिसने हमारा उद्धार उसके लहू से किया है। *"तुम अपने नहीं हो क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो"* (१ कुरिन्थियों ६:१९-२०)। *"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता"* (मत्ती ६:२४)।

मसीह के पास आपके जीवन का सिंहासन रहने के लिए, आपको अधिकार का त्याग करना चाहिए। स्वयं का इन्कार करो। वह आपके जीवन के सिंहासन पर उसके तौर-तरीके का दबाव नहीं डालेगा। *"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया"* (गलातियों २:२०)।

वह जो कहता है वह होता है। कहाँ पर वह कहता है, हम जाते हैं।

क्योंकि हमारी समझ आज्ञा मानने के लिए आवश्यक शर्त नहीं है जब हमें वह पता है। यह स्वयं का इन्कार करने का मुख्य भाग है। यदि हम मसीह की आज्ञा केवल तभी मानते हैं जब हम समझते हैं वह हमें क्या पूछ रहा है, तो हम उसे केवल हमारे गुरु के रूप में मान रहे हैं। यदि हम मसीह की बात तब भी मानते हैं जब ऐसा 'क्यों' यह हम नहीं समझते हैं तब हम उसे हमारे प्रभु के रूप में आदर करते हैं। क्या हम जिस तरह जीवन जीना चाहते हैं

उसमे हम परमेश्वर को शामिल करने का प्रयास करते हैं या क्या हम जिस तरह का जीवन जीते हैं उसे परमेश्वर को परिवर्तित करने देते हैं? क्या हम आज्ञा मानने में देरी करते हैं जब परमेश्वर का वचन हम जैसा सोचते हैं और जीवन जी रहे हैं उस मार्ग में कोई मायने नहीं रखता हैं? एक परिवर्तित जीवन परमेश्वर की महिमा की अगुवाई के द्वारा हर एक बातों में चलता हैं -समझ और सुविधा की अगुवाई के द्वारा नहीं।

तो फिर यह वास्तव में किस तरह होता है? पढ़ते रहिए।

यदि हम मसीह की बात तब भी मानते है जब ऐसा 'क्यों' यह हम नहीं समझते हैं तब हम उसे हमारे प्रभु के रूप में आदर करते हैं।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आप *"स्वतंत्रता"* को कैसे समझते हैं? क्या स्वतंत्रता की आपकी समझ परमेश्वर के वचन से मेल खाती हैं?

२. *"स्वयं का त्याग "* और *"स्वयं का इन्कार"* के बीच का फर्क़ हर एक के जीवित उदाहरण देने के द्वारा स्पष्ट कीजिए?

३. क्या मसीह की आज्ञा मानने का कोई मतलब होता है जब हम ऐसा 'क्यों' यह नहीं समझते? यह परमेश्वर का कैसे आदर करता है?

७

जीवन के लिए नींव

स्वयं का इन्कार करना कुछ हद तक अमूर्त लग सकता है, वह इस तरह के प्रश्न पैदा करता है : *"कौनसे व्यवहारिक कार्य आप करते हैं?" "यदि मेरी राय और मेरी इच्छा वास्तव में कार्यरत नहीं है, तो क्या होना चाहिए? क्या परमेश्वर मुझसे बात करनेवाला है और प्रक्रिया रचनेवाला है?"*

उसने यह पहले से ही किया है।

जब हम मसीह को प्रभु को मानकर उसके साथ अपने नए जीवनों के बारे में सोचते हैं, तो एक घर बनाने की कल्पना कीजिए। पहले, नींव रखी जाती है। बाद में, घर की रुपरेखा बनाई जाती है। हम भी यही से शरुआत करते हैं। एक घर की रुपरेखा बनाने के साथ शुरू नहीं होता, क्योंकि योग्य अधिसंरचना के बगैर वह गिर जाएगा। हम नींव के साथ शरुआत करते हैं, और फिर एक रुपरेखा बनाते हैं।

हमारे घर की नींव

यूहन्ना १:१४ में, हमें बताया गया हैं कि शब्द देहधारी हुआ और उसने हमारे साथ निवास किया। यह महत्वपूर्ण है। यीशु और वचन एक समान है। वास्तव में, परमेश्वर के वचन ने देहधारण किया। यह वही शब्द था जिसने संसार को अस्तित्व में आने के लिए कहां था और वह सब बातों को एकसाथ जोड़े हुए है-हमारे विश्व की आकाशगंगाओं से लेकर हमारे शरीर की कोशिकाओं तक को, *"उसकी सामर्थ्य के वचन द्वारा"* (इब्रानियों १:३)। यह शब्द केवल हमारे बीच में रहने के लिए नहीं आया; तो उसने अपने हृदय को हमें बताया है। परमेश्वर क्या सोचता है इस बारे में हमें आश्चर्य नहीं करना हैं।

जिस तरह से एक घर को नींव होना चाहिए जिस पर उसे बनाना है, उसी तरह से हमारे जीवन जिस पर बनाएं जाए उसकी एक नींव होना चाहिए। वह नींव परमेश्वर का वचन है। याद रखे, शब्द यह कोई तो है। पहला कुरिन्थियों ३:११ हमें बताता हैं, *"क्योंकि उस नींव को छोड़ जो पड़ी है, और वह यीशु मसीह है, कोई दूसरी नींव नहीं डाल सकता।"* यदि हम स्वीकार करते हैं जो हमें परमेश्वर के वचन से पसंद हैं, लेकिन सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अप्रासंगिक या असुविधाजनक रूप से समझकर उसका कुछ भाग अस्वीकार करते हैं, तो हमारी नींव उसके वचन के बजाय हमारा मन हो जाता है। तब हम उसके वचन के प्रति ख़ुशी ख़ुशी समर्पित होने के बजाय केवल उसका पालन कर रहे हैं और अपना पूरा जीवन उस पर बना रहे हैं।

हम मेसे कई लोग आसानी से समझनेवाले बच्चों के गीत गाते बड़े हुए हैं : *"बुद्धिमान मनुष्य ने उसका घर चट्टान पर बनाया!"*.... मुर्ख मनुष्य ने उसका अपना रेत पर बनाया![१४] मत्ती ७:२४-२७ से यीशु के प्रसिद्द दृष्टांत में, बिंदु यह था कि किसी के घर को तूफान-मुक्त वातावरण में बनाना है। दोनों ही घर को तूफान टकराव सहना पड़ा। इसका कोई मतलब नहीं कि हमारा पृथ्वी पर का घर-हमारे जीवन- बाहरी रूप में कितना सुंदर या प्रभावशाली हो सकता है। अनेक अवसरों पर, बाइबल हमारे शरीर को एक तम्बू के रूप में सूचीत करती है- एक अस्थायी निवास। यदि हमारा घर टिकनेवाले नींव पर बनाया नहीं गया है, तो सब कुछ ख़त्म हो जाएगा। परमेश्वर का वचन हमें सिखाता है, *"क्योंकि हर एक प्राणी घास के समान है, और उसकी सारी शोभा घास के फूल के समान है। घास सुख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परंतु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है"* (१ पतरस १:२४-२५)।

.हम ऐसी नींव कैसे रखे?

हम नहीं बना सकते।

नींव पहले ही रखी गई है। हमने केवल उस पर बनाया हैं। तो, यह कैसे दिखता है?

इब्रानियों का लेखक हमें बताता है कि, *"और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है; क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है, और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है"* (इब्रानियों ११:६)। हम उसकी आज्ञा मानकर उसके वचन की नींव पर बनाते हैं। यह हमें कितना विश्वास है यह इसके बारे में नहीं। यह इस बारे में है कि हम हमारे परमेश्वर में कितना विश्वास रखते है जो उन्हें पुरस्कार देता है जो उस पर विश्वास करते हैं और उसके वचन का पालन करते हैं।

यीशु और चेलों के बीच में आँखे खोलनेवाली मुलाकात लूका १७:६ लिखी गई है जहाँ वे विश्वास के बढ़ने के लिए पूछते है -इस बारे में यीशु आवश्यक रूप से उत्तर देते है, *"नहीं।"* उसके सटीक शब्द ये *"यदि तुमको राई के दाने के बराबर भी विश्वास होता, तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते कि जड़ से उखड़कर समुद्र में लग जा, तो वह तुम्हारी मान लेता।"* उसके स्पष्टीकरण ने उन्हें विश्वास की अधिक मात्रा की ओर इशारा नहीं किया, लेकिन विश्वास जो उनके पास पहले से था उसे ठीक तरीके से इस्तेमाल करना, फिर वह छोटा क्यों न हो।

हमें आज्ञा मानने के लिए बड़े विश्वास की जरुरत नहीं। लेकिन हमारे पास जो विश्वास है उसमे बने रहना है जो उस प्रभु पर है जो उसकी सामर्थ्य के वचन द्वारा सब कुछ संभाले हुए है। हमें क्यों, कहाँ, कब या कैसे इन्हें समझने की जरुरत नहीं। परंतु हमें वह कौन है और उस पर विश्वास रखकर इसे समझने की जरुरत हैं। यही तो स्वयं का इन्कार करने का मुख्य भाग है।

हायडिंग प्लेस में एक स्पष्ट भाग, १९७५ का एक सिनेमा उस पुस्तक पर आधारित है उसी शीर्षक के साथ जिसे कॉरी टेन बूम ने लिखा था, जो इस सत्य को प्रगट करता है। छिपनेवाले यहूदियों के सफर की पुस्तक में कॉरी पूरा विवरण देते है, पकडे जाना और रावेनब्रक में तकलीफ सहना, जो एक नाझी की यातना देने का छावनी थी । एक दृश्य में, कॉरी की बहन, बेट्सी टेन बूम, छावनी के एक भाग में बाइबल पढ़ रही थी जब उसे दूसरे कैदी द्वारा रोका गया इस तरह उपहास करते हुए, *"नासमझ के लिए वचन कितने सांत्वना देनेवाले लगते हैं । इस स्थान पर, यह मज़ाक है।"* परमेश्वर परपीड़क या प्रेमपूर्ण, शक्तिहीन या सर्वशक्तिमान है क्या इस पर आगामी चर्चा करने के बाद में, स्त्री उसके फटे हुए हाथमोजे निकालकर अपना कुचला हुआ हाथ दिखाती है। वारसॉ सिम्फनी आर्केस्ट्रा में वह पहली वायलिन बजानेवाली थी यह उसके अतीत के बारे में बताती है, वह बेट्सी से पूछती है, *"क्या यह तुम्हारे परमेश्वर की मर्जी थी?"* कॉरी और बेट्सी दोनों ने ही माना कि वें नहीं जानते कि परमेश्वर ने उन पर यातनाएं क्यूँ होने दी, वे उनके ओर से मसीह के दु:ख उठाने की कहांनी बोलते रहते हैं। निंदा के स्वर में, स्त्री पूछती है, *"आप क्या सोचती है कि तुम्हारे प्रेमी परमेश्वर ने तुम्हें यहाँ क्यों भेजा है? बेट्सी ने उत्तर दिया,* "उसकी आज्ञा का पालन करने। यदि आप उसे जानते है, तो आपको क्यों यह जानने की जरुरत नहीं।"[१५]

हमें क्यों, कहाँ, कब या कैसे इन्हें समझने की जरुरत नहीं। परंतु हमें वह कौन है और उस पर विश्वास रखकर इसे समझने की जरुरत हैं।

बाइबल लोगों के बारे बताती हैं जिन्होंने उसके वचन को गंभीरतापूर्वक लिया और उसके पीछे हो लिए, भले ही उन्हें कुछ भी पता नहीं था कि आगे क्या कुछ होगा। नूह को पृथ्वीपर जलप्रलय कैसा होगा इसके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी, लेकिन उसे प्रभु पर विश्वास था जिसने उसे जहाज बनाने को कहां। मूसा को उस बारीकियों को जानने की जरुरत नहीं थी कि परमेश्वर इस्राएलियों को मिस्र देश से बाहर कैसे लाएगा। उसे केवल प्रभु को जानने की जरुरत थी जो उसे भेज रहा और उसके साथ जानेवाला था।

यहोशू को बारीकियां नहीं बतायी गई थी कि यरीहो की दीवार कैसे गिरेगी, लेकिन उसे यह पता था कि यरीहो के दीवार के आसपास बहुत बार चक्कर लगाने को किस ने कहां था। कप्तान नामान को पूरा विवरण नहीं मिला था कि यर्दन नदी में सातवीं बार डुबकी लगाने के बाद में उसके शरीर से कुष्ठरोग कैसे निकल जाएगा। भले ही बताएं गए विवरण से क्रोधित हुआ था, फिर भी अंत में नामान ने परमेश्वर के संदेशवाहक की बात मान ली और जैसे कहां गया था पानी में डुबकी लगाई थी। शद्रख, मेशख और अबेदनगो को जलती भट्टी से छुटकारे की प्रतिज्ञा नहीं दी गई थी। लेकिन उन्हें पता था किसने उन्हें आज्ञा दी है है कि मूर्ति के आगे न झुकना। सूची का कोई अंत नहीं।

शोरगुल के जगत में परमेश्वर की आवाज़ को पहचानना

इसलिए, यदि आज्ञा मानना परमेश्वर के वचन पर चलना है, तो इस आवाज़ से भरे जगत में उसकी आवाज़ सुनने के लिए क्या सुनना और जानना आवश्यक है?

हम किसी और की आवाज़ कुछ अलग तरीके से समझ सक सकते हैं। एक मार्ग उस व्यक्ति के साथ समय बिताने के द्वारा हो सकता है जिसकी वह आवाज़ है। जब हम परमेश्वर के वचन पर मनन और चिंतन करते हैं, तब हम परमेश्वर की आवाज़ किस तरह की है उसे सुन सकते हैं- क्योकि उसका वचन ही परमेश्वर बोलता है। जब हम कुछ तो सुनते हैं जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध जाता है, तब हम जान सकते हैं कि वह उसकी ओर से नहीं है।

क्या कभी आप ने किसी के बारे में अफवाह सुनी है, एक अफवाह इतनी बेतुकी, कि आप ने हैरानी में कहां, *"वह व्यक्ति कभी भी ऐसी बात नहीं कहेंगा?"* आप को पता है यह उसका व्यक्तित्व या चरित्र ऐसा नहीं है कि ऐसी बात कहें। उसी तरह से, जब आप पुलपिट और जनता से कुछ सुनते हैं जो परमेश्वर के नाम और चरित्र को झूठा ठहराया जाए, तो आप जान सकते है यह उसकी आवाज़ नहीं है। उसका हस्ताक्षर उसके वचन में है।

हमारे जवानी के अंत के समय में, मेरा मित्र जॉन और मैंने बाइबल का अध्ययन करने का विचार किया यह जानने के लिए कि हम क्यों विश्वास करते हैं जो हम विश्वास करते है, इसके बजाय कि उसे केवल स्वीकार करे जो हमें सिखाया गया है और उसका पालन करने के आदी हो जाए। हम अपने आप के लिए यह खोजना चाहते थे कि परमेश्वर ने विभिन्न मामलों के बारे में क्या कहां है और उस नींव पर बनाए। हमारे बुजुर्ग हमें चर्च इमारत की मुख्य बातें बताते हैं और बुधवार रात्रि के प्रार्थना सभा के बाद, हम अभ्यास करने शुरू करते हैं जिसमे पवित्र जीवन जीने से पवित्र आत्मा के दान के लिए शरणार्थी से प्रेम करने तक बातें समाई होती हैं। भले ही हम सप्ताह दौरान कुछ संशोधन कर सकते और दूसरों से विचार प्राप्त करते हैं, हमारी बुधवार रात्रि का नियम सरल था। केवल एक ही पुस्तक खोली जाती थी : बाइबल।

आज तक, मैं उन बुधवार रात्रि को रचनात्मक और मूलभूत समय के रूप में याद करता हूँ जब मुझे एक बात पर विश्वास हो जाता है : यीशु ने जो कहां यदि उसका वही मतलब था, तो क्या होगा, फिर केवल संतुलित मसीही जीवन यह उसके प्रति पूरी तरह से प्रतिबद्ध जीवन है।

पूरी-तरह से प्रतिबद्ध।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. यीशु के एक सच्चे अनुयायी के जीवन के लिए नींव क्या है?

२. क्या आप उस समय का उदाहरण दे सकते हैं, जब विश्वास में, आप ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया जबकि आपको पता भी नहीं था कि सब कुछ कैसे होगा?

३. आपके जीवन में अन्य बातें कौनसी हैं जो आपको परमेश्वर की आवाज़ सुनने और पहचानने से बाधा कर सकती हैं?

८

घर की रुपरेखा बनाना

चेतावनी : यदि आप जीवन को पहले जैसा ही चाहते हैं, तो आप अगले कुछ पाठों को टाल दीजिए।

भले ही इमारते बनाने की परियोजनाए कभी भी मेरी विशेषता नहीं रही, फिर भी मुझे इमारते बनाने के बारे में काफ़ी जानकारी हैं यह समझने के लिए कि एक इमारत का ठीक रीतिसे निर्माण किया जाए और यह कि उसकी रचना उसके अंतिम आकार को दर्शाती है। बांधकाम के शुरुआती चरण में भी, इमारत का ढांचा अंतिम निर्मिती की एक झलक प्रदान करता है। थोड़ी सी कल्पना से हम उसे देख सकते हैं कि घर कैसे दिखेगा। जबकि शटर का रंग, फर्श का चुनाव, रंग का चुनाव, और रसोई की सजावट ये एक रहस्य बना रह सकता हैं, हमें घर पूरा होने के बाद वह कैसे दिखेगा उसकी सामान्य कल्पना रहती है।

आइए इस छवि को ध्यान में रखे जब हम परमेश्वर को हमारा घर, हमारे जीवन का निर्माण करने देते हैं। अतः, वह इसे कैसे करता है?

इन शब्दों को इब्रानियों की पुस्तक के ग्यारवे अध्याय में ध्यान दे। *"विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ हम देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो"* (इब्रानियों ११:३)।

इसे समझ लीजिए!

जगत परमेश्वर के वचन से बनाए गए हैं; उसके द्वारा जो अदृश्य है। इब्रानियों का पूरा ११वा अध्याय पुरुषों और स्त्रियों के बारे में बताता जाता हैं जिनके जीवन विश्वास के द्वारा रचे गए हैं-अपक्व, अदृश्य विश्वास जिसने उनकी अगुवाई की कि परमेश्वर के वचन का पालन करें। हाबिल ने संयोग से उत्तम भेंट नहीं चढ़ाई; परमेश्वर के वचन ने कहां रक्त की आवश्यकता थी

और हाबिल ने आज्ञा मानी। नूह ने जहाज को केवल मजे के लिए नहीं बनाया; परमेश्वर ने उसे वैसे करने को कहां था और नूह ने आज्ञा पालन किया। अब्राहम एक यात्री के रूप में भटकता नहीं रहा कि रेगिस्तान के हर एक कोने से स्मृति चिन्ह इकठ्ठा करें। परमेश्वर ने उसे वहां जाने के लिए कहां था, *"उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा"* (उत्पत्ति १२:१) और अब्राहम ने आज्ञा पालन किया. मूसा फिरसे मिस्र नहीं गया (जहाँ वह हत्या के मामले में चाहिए था) ताकि कुछ लाखो इस्राएलियों को (चालीस वर्ष भेड़ों की रखवाली करने के बाद) को छुडाए क्योंकि यह एक पदोन्नति समान नजर आ रहा था। वह गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे जलती झाड़ी से बातें की और उसे जाने के लिए कहां था। मूसा ने आज्ञा पालन किया। इब्रानियों ११ उन्हें विश्वास के पुरुष और स्त्री के रूप में स्मरण करता है एक कारण के लिए : उन्होंने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया और उसका पालन किया।

यही पर बातें व्यवहारिक और विशेष होती हैं जब आप उन्हें बनाने के लिए तैयार हैं।

स्वयं के इन्कार की यात्रा परमेश्वर के वचन को हमारे जीवन के प्रत्येक भाग को निर्माण करने देना है। आपकी आजीविका, आपका निवेश, आपका खर्च, आपके रिश्तेनाते, आपकी प्राथमिकताएं, आपके राजनीतिक दृष्टिकोण, आपकी सेवा, आपका मिशन, आपका आराम, आपकी मनोवृत्ति, आपके खाने की आदतें, आपके शब्द, आपके विचारों को परमेश्वर के वचन के द्वारा निर्माण करने दे।

जी हाँ, यह अब असहज और दखल देनेवाला होते दिख रहा हैं। क्या आप तैयार हैं?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके जीवन के कौनसे क्षेत्र में परमेश्वर के वचन को आपके निर्णय की रचना करने देना आपके लिए सबसे मुश्किल था? क्यों?

९

परमेश्वर के वचन द्वारा अपने आजीविका की रुपरेखा बनाना

जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर का वचन हमारे जीने के तरीके को कैसे परिवर्तित करता हैं, तो आइए हम ये हमारे आजीविका से कैसे जुड़ा उससे शरुआत करें। आप पूछ सकते हैं : *"ठहरिए, क्या परमेश्वर का वचन वास्तव में मेरे आजीविका पर ध्यान देता है?"* पूर्ण रूप से।

हमारी अपनी नियमावली (बाइबल), जो हमें हमारे सृष्टिकर्ता-मालिक, उद्धारकर्ता ने प्रदान की है, वह आपके और मेरी तरह के रोजमर्रा के लोगों के बातों से भरा हुआ हैं -धर्मनिरपेक्ष पेशे के साथ पुरुष और स्त्रियों की कहांनियां : चरवाहें, मछुआरे, कुम्हार, शिल्पकार, किसान, सरकारी अधिकारी, सैनिक, जेल सुरक्षाकर्मी, शास्त्री, धोबी, ऋणदाता, तम्बू बनानेवाले, सराय के मालिक, व्यवसाय के मालिक, महसूल लेनेवाले, लेखापाल और भी अधिक। लेकिन उनकी आजीविका उनकी कहांनियों का लक्ष्य या पहचान करनेवाले गुण नहीं थे। उनका काम सरल रूप से जो कुछ उन्होंने किया वह था, वे कौन थे वो नहीं। हमने कभी यीशु को लोगों को उनके सांसरिक पेशा बदलने के लिए प्रेरित करते हुए नहीं देखा। जबकि किसी समय उसने अवश्य कुछ व्यक्तियों को उनके पेशे से बुलाया कि शिष्यत्व के अटूट प्रकार में आए, उसने उन्हें दूसरे सांसारिक पेशे के लिए कभी नही बुलाया।

हम लोगों को उनकी बुलाहट के बजाय उनके पेशे पर लक्ष्य केन्द्रित करने के द्वारा उनका अहित करते हैं।

जब कोई हायस्कूल में वरिष्ठ होता है, तब वहां दो अवश्य प्रश्न उन्हें पूछे जायेंगे : *"कौनसे विश्वविद्यालय वे जायेंगे?"* और *"आप क्या अभ्यास करनेवाले हैं?"* विश्वविद्यालय में जाने

के बाद, छात्र इस प्रश्न पर विचार करना शुरू करते हैं, *"आप आपके डिग्री के साथ क्या करना चाहते है? फिर एक व्यक्ति एक मस्तिष्क चिकित्सक या पाठशाला का प्रिंसिपल, पानी के भीतर का हॉकी खिलाड़ी या एक अधिकृत व्यवसायिक लेखापाल हो इसका वास्तव में कोई मतलब नहीं। इसके बजाय, हम मसीह के अनुयायी को उत्तम प्रश्न यह पूछ सकते हैं :* "क्या प्रभु को आपके आजीविका पर नियंत्रण है?"

जब हम इस जगत में हमारी अस्थायी आजीविका को हमारी पहचान के प्रमुख विशेषता देते हैं, तब मसीह को जानना और उसकी गवाही देने के हमारे शास्वत मूल्यवान मिशन को हमारे सांसारिक अस्तित्व के ठंडे बस्ते में रखना आसान होता है। मसीह के अगली पीढ़ी के अनुयायी इस प्रश्न का उत्तर देंगे तब क्या होगा, *"आप क्या करते हो?"* जो कुछ तो इस समान, *"मैं यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करता हूँ और साथ ही साथ मस्तिष्क चिकित्सक हूँ"*?

इस बारे में सोचिए। आपको किस के लिए बुलाया गया है?

हमारी बुलाहट क्या है?

यीशु हमारी बुलाहट हमें बताते हुए अस्पष्ट नहीं था। परमेश्वर ने जो पहले ही प्रगट किया है उसके बारे में आपको प्रार्थना करने की जरुरत नहीं है।

"इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ; और देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे संग हूँ।" (मत्ती २८:१९-२०)

"परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदियां और सारे सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" (प्रेरितों के काम १:८)

"पर तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग, और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिसने तुम्हें अंधकार में से अपनी अद्भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।" (१ पतरस २:९)

परमेश्वर हर एक राष्ट्र, वंश और भाषा से लोगों को एकसाथ बुला रहा हैं- आपकी भागीदारी के साथ या उसके बगैर। वह उसके पुत्र, यीशु मसीह के लिए एक पवित्र

दुल्हन एकसाथ ला रहा है। आप इस मिशन में आमंत्रित हैं। उसका मिशन। परमेश्वर के पास कोई दूसरी योजना नहीं क्योंकि पहली योजना अब कार्यरत है और वह विफल नहीं की जायेगी। उसी समय, उसके सर्वाधिकार और प्रेम में, उसने आपको भागीदारी का चुनाव दिया है जिसे आप अस्वीकार कर सकते हैं। जैसे मोर्दकै ने एस्तेर के सेवक हताख द्वारा उससे कहां, *"क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदीयों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परंतु तू अपने पिता के घराने समेत नष्ट होगी"* (एस्तेर ४:१४)। अगर आप मिशन स्वीकार नहीं करते, तो वह किसी और का उपयोग करेगा, लेकिन मसीह के शब्दों को न भूले जो मत्ती १६:२४ के आगे आते है, *"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?"* (मत्ती १६:२५-२६)

अलार्म बजाना

डेल्टा एयरलाइन्स का एक इमानदार डायमंड मेडल पानेवाले सदस्य के रूप में, मैंने हर वर्ष ७५ दिन या ज़्यादा एक एयर पोर्ट या हवाई जहाज में बिताता था। हालाँकि मैं सामान्य रूप से एयर पोर्ट को मेरे दफ्तर के रूप में इस्तेमाल करता था, कभी कभी मुझे बाहर जाने की और हवाई अड्डे के विस्तारित भाग की जाँच करना आवश्यक होती थी। ऐसे ही एक दिन, मैं रास्ते के बीच में पॅरिस में प्रसिद्ध लौरे म्यूजियम पर गया।

गॅलरी के इटालियन प्रांगन का अवलोकन करने में, मैं शायद जगत के सबसे प्रसिद्ध चित्र, मोनालिसा के यहाँ रुक गया। अचानक रूप से, सभी दिशाओं से अलार्म बजने लगे और अप्रिय रूप से ज़ोरदार घोषणा फ्रेंच, चाइनीज, और रशियन भाषाओँ में कहने लगे कि किसी आपात स्थिति के कारण सभी मेहमानों को तुरंत परिसर खाली करना होगा। मैंने तुरंत उसके अनुसार कार्य किया, लेकिन जब मैं बाहर जाने के रास्ते पर जा रहा था, मैंने देखा कि कोई भी (मेरा कहने का अर्थ सचमुच कोई एक व्यक्ति भी नहीं) प्राचीन कलाकृति को देखने से नहीं चूका। वे उस कला की प्रशंसा करते रहे और हॉल में घूमते रहे। उसकी जांच करने के बाद कि मैं पूरी बात की कल्पना नहीं कर रहा था (और मैं नहीं कर रहा था), एक विचार मेरे मन में आया। शायद कुछ लोग शुरू में अलार्म के बारे सोच रहे थे, लेकिन उनके आस-पास के लोगों की उदासीन प्रतिक्रियाने उन्हें ये मानने लगाया कि कोई वास्तविक तात्कालिकता

नहीं थी। हर कोई अलार्म को सरल रूप से अनदेखा कर रहा था और चेतावनी जैसे कि वे महज खराबी है।

कुछ थोड़े समय बाद में, वहां अधिक गंभीर वास्तविकता हुई। लौरे पर आए हुए आगंतुको का नजरिया और कृत्य (अभाव) यीशु मसीह के चर्च की स्थिति को अधिक स्पष्ट कराता है।

अलार्म बज गया है। अनंतकाल द्वार पर है। मसीह ने कार्य पूरा किया है जो उद्धार करता है और हमें आज्ञा दी है कि हमारे आस-पास जो भग्नता हैं उन्हें उसका प्रेम और सत्य दिखाए। इसलिए, यीशु मसीह का चर्च किस तरह और क्या कर रहा है?

अलार्म बज गया है। अनंतकाल द्वार पर है।

करीबन २००० साल बीत चूके हैं जबसे यीशु पिता के पास गया है, फिर भी चर्च किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में मुख्य रूप से एक साथ इकट्ठा ही दिखता है। लगभग हमारे ग्रह के ४० प्रतिशत भाग पर सुसमाचार अब तक नहीं पहुंचा है। चर्च के पास इस कार्य को पूरा करने के लिए करीबन ९००० गुना मनुष्यबल मौजूद है और फिर भी उसे पूरा नहीं कर रहे हैं। वास्तव में, यहाँ पर करीबन ९५००० तथाकथित नए सिरे से जन्मे यीशु मसीह में मसीही लोग प्रत्येक वंचित लोगों के समूह के लिए है।[१६]

काम क्यों पूरा नहीं हो रहा है?

सच्ची महान् आज्ञा

शायद हमें उस प्रभु के लिए बहुत थोड़ा प्रेम है जिसने कहां, *"इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"* (मत्ती २८:१९)। मत्ती २८ में के इस भाग को अक्सर महान् आज्ञा के रूप में जाना जाता है। *"आज्ञा"* की डिक्शनरी परिभाषा यह *"सुझाव, आज्ञा, या कर्तव्य है जो एक व्यक्ति या लोगों के समूह को दिया गया है।"*[१७]

मैं यह सुझाव दूंगा कि प्रमुख *"महान् आज्ञा"* यह मत्ती २८ में नहीं मिलती, लेकिन मत्ती २२:३७-३९ में मिलती है। यीशु ने उससे कहां, *"तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान वह दूसरी भी है कि तू अपने पडोसी से अपने समान प्रेम रख।"* हम चाहते हैं कि प्रेम सकारात्मक भावनाओं से प्रवाहित हो, लेकिन परमेश्वर का वचन उस व्यक्ति से प्रेम की आज्ञा देता है जो मसीह का आज्ञाकारी रहेंगा। आप भावनाओं को आज्ञा नहीं दे सकते। यीशु एक अनुयायी की परिभाषा कैसे करता है जो उससे प्रेम करता है? यह

वचन ये स्पष्ट करता है : *"जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता हैं, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता हैं उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा"* (यूहन्ना १४:२१)।

शायद हम यीशु के अंतिम महान् आज्ञा (कि सब जातियों के लोगों को चेले बनाएं) का पालन नहीं करते इसका कारण हमने उसके प्रथम को अनदेखा किया है। क्या यह कारण हो सकता है कि हमारे पास भटके हुओं के लिए बहुत थोड़ा प्रेम है और यह भी कि हमें प्रभु के लिए बहुत थोड़ा प्रेम है?

हमारी प्रथम बुलाहट यह *"सारे जगत में जाओ!"* यह नहीं है परंतु हमारे उद्धारकर्ता को जाने और उससे प्रेम करे यह है। उस प्राथमिक खोज में दूसरी आज्ञा का पालन किया जाएगा।

मत्ती २८ के अंत में मिलनेवाली महान् आज्ञा में कुछ थोड़ी आज्ञाएँ (जाओ, बनाओ, बपतिस्मा दो और सिखाओ) समाई नजर आती है, लेकिन मूल भाषा में, इसमें केवल एकहीं अनिवार्य है-चेले बनाओ। यह हमारी ज़िम्मेदारी है जब हम जगत में जाते हैं। लेकिन यह संयोग से नहीं होगा। ग्रीक भाषा में, मत्ती २८:१९ से वाक्य *"इसलिए जाओ...."* एक सिद्धांतवादी अंश है जो अनिवार्यता का समर्थन करता है। इस प्रकार, अधिक शाब्दिक रूप से इसे ऐसे पढ़ते है, *"आप जाने के बाद में ...."* या *"जब आप जा रहे हैं...."*। हम कहाँ जा रहे हैं? आत्माओं की पकी फ़सल में। हम कैसे जा रहे हैं? अभिप्रायपूर्वक। प्रार्थनापूर्वक, कर्तव्यपूर्वक, प्रेमपूर्वक।

अलौकिक को आपके जीवन में अनुभव करना परिपूर्णता प्रदान करेगा जो कोई भी धर्मनिरपेक्ष रोजगार प्रदान नहीं कर सकता।

हमारे सांसारिक काम जो भी हो, हम सभी को २४ घंटे मिलते हैं। कुछ लोग उसका अधिकतम भाग दफ्तर में बिताते हैं, दूसरे लोग खेल के मैंदान में या अनाज के खेत में। कोई स्कुल कक्षा में रहते हैं और कोई घर पर रहते हैं। आपकी ज़िम्मेदारी और विशेषाधिकार क्या हैं? जब आप जा रहे हैं, आप जाने के बाद-आपको चेले बनाना हैं। अगला पाठ चेले बनाने पर केन्द्रित होने को समर्पित है।

यूहन्ना ४:३५ में, यीशु अपने चेलों से कहता है, *"क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखे उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।"* शायद यीशु ने हमारी जरुरत पर ज़ोर दिया कि हमारी आँखे पके हुए खेत पर जानबूझकर लगाएं क्योंकि दूसरी बातों पर लक्ष्य लगाने की

हमारी प्रवृत्ति होती हैं। आज्ञा पर ध्यान दीजिए : देखो, अपनी आँखे उठाओ और देखो। यीशु नहीं चाहता है कि हम इसे चूके।

परमेश्वर क्या कर रहा है उसमे आप कैसे भाग ले सकते हैं? जान लो कि आपकी पहली बुलाहट उसे जानने और उसकी औरों को पहचान कराने की हैं। फिर आप बच्चों को पढ़ानेवाली या सीनेवाली स्त्री हो, हवाई जहाज ए ३५० की पायलट हो या यांत्रिक इंजिनियर हो जो किसी कारखाने में सीमेंट के जंगल में पूरी तरह से मशगुल है- आपके पास वहां समाज में लोग हैं और आपकी ज़िम्मेदारी वही रहती हैं। क्या ही दु:खद बात है जब मसीही व्यक्ति के प्रमुख कार्य उसके चर्च वातावरण में पवित्र मंडली बनाए रखना है, जबकि हमारे संसार के अधिकांश भाग को अभी भी यीशु के प्रेम का अनुभव करना है और पहली बार उसकी कहांनी और संदेश को सुनना है। शायद वह आपको थोड़े या बिना सुसमाचार के प्रभाव के लिए बुला रहा है कि किसी समाज या देश में जाएं।

जब आप परमेश्वर जो कर रहा है उसमे जुड़ जाते हैं, तब आप आपके जीवन में और आपके आस-पास परमेश्वर के हाथों के कामों को देखने लगते हैं। अलौकिक को आपके जीवन में अनुभव करना परिपूर्णता प्रदान करेगा जो कोई भी धर्मनिरपेक्ष रोजगार प्रदान नहीं कर सकता। जबकि बहुत धन कमाना या आपके सांसारिक पेशे में तरक्की करना यह परमेश्वर की ओर से आशीष हो सकती है, उसके राज्य और महिमा में उसके योगदान के अलावा, प्रेरित पौलुस द्वारा वर्णन किये शब्दों में उसकी जांच करना आपकी समझदारी होगी, *"परंतु जो जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ"* (फिलिप्पियों ३:७-८अ)।

जब आप आपके आजीविका को परमेश्वर के वचन द्वारा बनाते हैं, तब आप क्या करते हैं इसके बारे में वह ज़्यादा नहीं होगा, वरन् आप मसीह में-कौन है इस बारे में होगा। आपके आजीविका के निर्णय वेतन बढ़ोतरी द्वारा चुने नहीं जायेंगे लेकिन सर्वशक्तिमान के साथ प्रार्थनापूर्वक मुलाकात में।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. यदि आप यीशु के अनुयायी हैं, तो आपकी बुलाहट क्या है?

२. यीशु के वचनों ने आपके आजीविका संबंधी निर्णयों को कैसे निर्देशित किया है?

३. आप आपके वर्तमान परिस्थिति में, चेले बनाने के लिए मसीह की आज्ञा का पालन कैसे कर सकते हैं जब आप जगत में जा रहे हो (मत्ती २८:१९)?

१०

परमेश्वर के वचन द्वारा चेले बनाने की रुपरेखा तैयार करना

जीवन में, यहाँ पर कुछ बातचीत है जो कोई कभी नहीं भूल सकता। मैं उन्नीस साल का था। एक पुरानी पाठशाला जो युद्ध-ग्रस्त मध्य-पूर्व राजधानी शहर में स्थापित थी। मेरे सामनेवाली मेज पर कुछ स्थानीय युवा बैठे थे। वे नजदीक के शहर के शरणार्थी थे, अब स्थानीय विश्वविद्यालय में विद्यार्थी थें। हमने ग्रिल किए हुए मेमने, हम्मस और ताज़ी रोटी रात के भोजन को खाते हुए शाम का अधिकतम समय बिताया। मध्य पूर्व के कुछ पारंपरिक संगीत और नृत्य के बारे में बातचीत करने के बाद, हम फिर से मेज पर चाय पीने के लिए बैठ गए।

बातचीत में जान लाना चाहकर, मैंने मेरे एक नए मित्र से पूछा, *"आपके जीवन के सपने क्या हैं? थोड़ी सी हिचकिचाहट के साथ, उसने उन बातों को कहां जो वह शरणार्थी होने के रूप में नहीं कर सका था-जैसे एक डॉक्टर, शिक्षक या वकील। उसने बाद में कहां,* "इसलिए, मैंने निर्णय लिया है कि एक आत्मघाती हमलावर बनूँगा।"

मैंने मेरे चाय के प्याले को रखा, मैं जान गया कि यह नियमित बातचीत नहीं थी।

यदि हमारी चर्चा ने बहुत से मोड़ और बदलाव लिए थें, संक्षेप में, उसने स्पष्ट किया कि वह इस जगत में कुछ बदलाव लाना चाहता है, फिर वह जीवन या मृत्यु के द्वारा ही हो। वह कुछ तो स्वयं से बड़े के लिए जीना चाहता था। उसने देखा कि ऐसा काम करने को प्रतिबद्ध होना यह कार्य पूरा करने का रास्ता है। मुझे अर्थ, उद्देश्य और शास्वत महत्त्व के लिए अपने मानवी चाह का शक्तिशाली स्मरण हुआ-जो अपने आप में, गलत नहीं था।

वह जन्मजात है। परमेश्वर ने हमें शास्वत उद्देश्य के लिए सृजा है। लेकिन हम उस उद्देश्य को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? उत्तर यह शिष्यत्व में पाया जाता है।

जब एक चेला एक अनुयायी नहीं है

यीशु के निमंत्रण के शास्वत शब्द का रिकॉर्ड कि उसके पीछे हो ले इस बात से शुरू होता है, *"फिर यीशु ने चेलों से कहां...."* (मत्ती १६:२४)। इस वचन में, यीशु उसके पीछे हो लेने के लिए चेलों को बुलानेवाला ही था।

ठहरिए। क्या? क्या यीशु के चेले पहले ही उसके अनुयायी नहीं थे? आवश्यक रूप से नहीं।

एक चेला क्या है? *"चेला"* इस शब्द का अर्थ, बहुत आसान रूप में, *"एक गुरु का एक विद्यार्थी।"* मार्शियल आर्ट सीखनेवालों के चेले होते हैं। प्रशिक्षकों के चेले होते हैं, सुसमाचार प्रचारकों के चेले होते हैं। यीशु के भी चेले थे और उनमे से बहुत- जिसमे उसके करीबी गुट में रहनेवालों में से एक मौजूद है- उसने अंत में यीशु को छोड़ दिया। वे पहले उसके चेले थें, लेकिन वे सभी सच्चे अनुयायी नहीं थें। इसके बारे में कुछ इस तरह से सोचिए : सभी चौकोन आयत हैं, लेकिन सभी आयत चौकोन नही हैं। वो यीशु का चेला हो सकता है जो अब तक मसीह का एक सच्चा विश्वासी और अनुयायी न हो, लेकिन यहाँ कोई यीशु मसीह का एक सच्चा विश्वासी और अनुयायी नही हो सकता, जो एक चेला नहीं है।

यीशु के चेलों का सफर उसके साथ इन शब्दों के साथ शुरू हुआ, *"आओ और आप देखोगे"* (यूहन्ना १:३९) या *"मेरे पीछे चले आओ"* (मत्ती ४:१९)। चेले बनने के पहला कदम मसीह के प्रति प्रतिबद्ध होना नहीं है लेकिन उनके लिए उसके प्रतिबद्धता के आधार को समझना है। हमारे लिए भी यह बात लागू होती है। (यूहन्ना २:२३-२५)

लेकिन यीशु मसीह के हर एक अनुयायी की ज़िम्मेदारी क्या है? कि *"जाओ और सभी जातियों के लोगों को चेले बनाओ"* (मत्ती २८:१९)। हमें चेले बनाने के लिए बुलाया गया है, लेकिन किसके चेले या विद्यार्थी? अपने आपके? प्रत्यक्ष में उसी समान नहीं। पौलुस के शब्दों में, *"तुम मेरी सी चाल चलो जैसा मैं मसीह की सी चाल चलता हूँ। क्योंकि हम अपने को नहीं, परंतु मसीह यीशु का प्रचार करतें हैं कि वह प्रभु है; और अपने विषय में यह कहते हैं कि हम यीशु के कारण तुम्हारे सेवक हैं"* (१ कुरिन्थियों ११:१; २ कुरिन्थियों ४:५)। जिस तरह से पहला मनुष्य पवित्र परमेश्वर के स्वरूप के अनुसार बनाया गया था (उत्पत्ति १:२७) कि उसके साथ घनिष्ट संगति का आनंद ले, उसी तरह से हमें यीशु मसीह के साथ संगति

में बुलाया गया हैं- फिर से सृजा गया हैं कि उसके स्वरूप को प्रतिबिंबित करें। यह समस्त मानवजाति के लिए परमेश्वर की इच्छित रूपरेखा है।

उन सभी को जी यीशु मसीह को उनका उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में प्राप्त करते हैं, परमेश्वर का वचन कहता है, *"परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें, जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से, न मनुष्य की इच्छा से, परंतु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं"* (यूहन्ना १:१२-१३)।

और जिन्होंने उसे ग्रहण किया उनके लिए क्या अद्भुत समाचार है? *"क्योंकि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है उन्हें पहले से ठहराया है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे"* (रोमियों ८:२९)।

यहाँ इस जगत में, हम अब वह नहीं है जो हमें होना चाहिए था। हम अब भी देह और उसकी इच्छाओं के साथ संघर्ष में हैं। परंतु यहाँ कुछ तो है जिसके बारे में हम पूरी तरह से निश्चिन्त हो सकते हैं : *"हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है"* (१ यूहन्ना ३:२-३)।

चेले बनना, धर्मांतरित नहीं

मसीह के जीवन से एक बात जो हम सीखते हैं वह यह है कि चेले बनाना एक घटना नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है।

यीशु ने उसके चेलों को जगत में नहीं भेजा कि लोगों को निर्णय लेने के लिए प्रेरित करें। उसने उन्हें जगत में भेजा ताकि चेले बनाएं (मत्ती २८:१९)। उसने उन्हें गवाही देने को नहीं कहां, जैसे कि यह पूरे दिन भर के दौरान ८ से ५ बजे तक का कार्य है। उसने उन्हें कहां वे उसके गवाह होंगे (प्रेरितों के काम १:८)। यह उनकी पहचान थी। वे कौन थें। उन्होंने केवल कुछ ऐसा नहीं कहां। उसी तरह से, उसने उन्हें फल उत्पन्न करने की आज्ञा नहीं दी। उसने उन्हें फल उत्पन्न करने के लिए बुलाया (यूहन्ना १५:१६)।

चेले बनाना सिर्फ़ सिद्धांतों की व्यवस्था सीखना और सिखाना नहीं हैं। यह एक यात्रा है- मसीह का मन और चरित्र की प्रक्रिया हममें और औरों में भी तैयार की जाती हैं। पौलुस ने भी इसे व्यक्त किया, *"हे मेरे बालकों, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक*

मैं तुम्हारे लिए फिर जच्चा की सी पीडाएं सहता हूँ" (गलातियों ४:१९)। मसीह-समान बनने की यात्रा उसी क्षण शुरू होती है जब कोई नए सिरे से जन्म लेता है।

चेले बनाना एक घटना नहीं, बल्कि एक जीवनशैली है।

एक क्षण के कल्पना कीजिए कि आप अब तक सबसे प्रभावी सुसमाचार प्रचारक (मानवी दृष्टिकोण से) जो अस्तित्व में है। बिली ग्राहम, जॉर्ज व्हाईटफिल्ड, जोनाथन एडवर्ड्स या पेंतुकुस्त के बाद के पतरस से भी सबसे प्रभावशाली हैं। यदि किसी तरह से १,००० आत्माएं आपकी सेवा में हर रोज परिवर्तित होती हैं, तो उसी तेजी से (मान लीजिए कि आपको कोई छुट्टी नही है, और यह कि जगत में कोई जन्मा या मरा है, और यह कि वे धर्मांतर अधिकृत है), इस जगत में हर एक को मसीह को जानने के लिए २०,००० वर्ष लगेंगे। जी हाँ यह सही है। ७,५००, ००० दिनों से भी अधिक।

अब कल्पना कीजिए कि यीशु ने जो कहां वही उसका मतलब था। *"इसलिए तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"* (मत्ती २८:१९)। यदि हमें धर्मांतर-खोजनेवाले नहीं होना है-परंतु चेले बनानेवाले-मसीह से सीखनेवाले बनने के लिए लोगों को मदद करना, उन्हें अवसर प्रदान करना की उनके उद्धारकर्ता को जाने और उसके प्रेम में खो जाएँ- इसका परिणाम क्या हो सकता है? १,००० आत्माएं हर रोज धर्मांतरित होते हुए देखने के बजाय, क्या होगा यदि हमें एक साल में मसीह का एक चेला बनाना है? कल्पना कीजिए हमने एक पूरे साल में सिर्फ़ एक तैयार आत्मा में निवेश किया है, जब हम वचन में चलते, उसके जीवन के बारे में बताते और बढ़ते हुए हम करुणा से भरकर मसीह को दर्शाते हैं। यदि, साल में उसी तेजी से, हम एक चेला बनाते है और अगले साल वह चेला जाता है और वैसे ही करता है और इसी तरह आगे शुरू रहता है, तो यही जो आगे होगा :

साल	चेले
१	२
२	४
३	८
४	१६
५	३२
६	६४
७	१२८
८	२५६
९	५१२
१०	१,०२४
११	२,०४८
१२	४,०९६
१३	८,१९२
१४	१६,३८४
१५	३२.७६८
१६	६५,५३६
१७	१३१,०७२

साल	चेले
१८	२६२,१४४
१९	५२४,२८८
२०	१,०२८,५७६
२१	२,०९७,१५२
२२	४,१९४,३०४
२३	८,३८८,६०८
२४	१६,७७७,२१६
२५	३३,५५४,४३२
२६	६७,१०८,८६४
२७	१३४,२१७,७२८
२८	२६८,४३५,४५६
२९	५३६,८७०,९१२
३०	१.०७३,७४१,८२४
३१	२,१४७,४८३,६४८
३२	४,२९४,९६७,२९६
३३	८,५८९,९३४,५९२

भले ही परिणाम ऐसे आज्ञाकारी सेवकाई में कुछ थोड़े सालों में प्रभावी नहीं दिख रहा हो, लेकिन ३३ साल में, जगत के आज के जन्म लेने के गति से भी, पृथ्वी के हर एक व्यक्ति तक सुसमाचार पहुंचाया जाएगा। दिलचस्पी से, यह उन्ही सालों की संख्या है जो यीशु मसीह ने इस पृथ्वी ग्रह पर शारीरिक स्थिति में बिताने का चुनाव किया था।

चेले बनाना आपके दिन का हिस्सा नहीं होगा, लेकिन आपके जीने का मार्ग होगा।

हमें अपने जीवन, प्रेम और होठों के माध्यम से आत्माओं को हमारे उद्धारकर्ता से परिचित कराना चाहिए। इनमे से कोई भी घटक वैकल्पिक नहीं है। यह एक संकुल सौदा है। चेले बनाना आपके दिन का हिस्सा नहीं होगा, लेकिन आपके जीने का मार्ग होगा।

यदि हम अपने होठों से केवल उसके बारे में बोले, लेकिन अपने जीवनों से उसके प्रेम को ऊँचा न उठायें, तो हम *"ठनठनाता हुआ पीतल और झनझनाती हुई झांज"* समान हैं (१ कुरिन्थियों १३:१), ढोंगी जो जगत को विश्वास रखने का कारण देते है कि उसे उसकी जरुरत

नहीं है-क्योंकि कार्य के बिना शब्द क्या है? वे, जैसे रिच मुलिंस लिखते है, *"पनडुब्बी के स्क्रीन दरवाजे जितना बेकार है।"*[१८] दूसरी ओर से, जब हम अपने जीवनों से मसीह को दर्शाते हैं परंतु अपने होठों से उसके बारे में बोलने का अस्वीकार करते हैं, तब हम उसके साथ पहचान दिखाने में अपनी लज्जा को निडर होकर घोषित करते हैं और जगत में सुसमाचार फैलाने में तत्परता की कमी का सुझाव देते हैं।

चार्ल्स वेस्ली मसीह होने कुछ ही समय बाद में, उन्होंने दो प्रश्न सामने लाए :

और क्या मैं मेरे पिता के प्रेम को देख सकता,
या मूल रूप से उसके वरदानों को अपने पास रखने से डरता हूँ?
उसके अनुग्रह की परवाह न करके
सिद्ध करता हूँ कि क्या मैं, पवित्र क्रूस को त्याग दूँ,
और मेरे हृदय के भीतर छिपाने
के द्वारा उसकी धार्मिकता को लेने में इन्कार करूं?

फिर विश्वास के साथ उन्होंने समापन किया :

मनुष्यों से बहिष्कृत, तुझे मैं पुकारता हूँ,
वेश्याएं और महसूल लेनेवाले और चोर; वह उसके हाथो को चौड़ा करता है कि
सभीं को स्वीकार करें, केवल पापी,
उसके अनुग्रह को ग्रहण करते हैं।
उसकी जरुरत नहीं जो धर्मियों के पास है;
वह भटके हुओं को खोजने और उद्धार करने आया।[१९]

यदि हम उसके बारे में बोलने में इन्कार करते हैं, तो क्या हम कभी सच में उद्धारकर्ता -प्रभु जो मार्ग, सत्य और जीवन है, उससे मिले है?

क्या हम विश्वासपूर्वक दूसरों को चेले बनाते हैं? या क्या हम लोग निर्णय ले इसलिए उन पर दबाव डालने का प्रयास करते हैं? शरुआत में, मेरे माँ-बाप ने मुझे सिखाया कि कभी अनजान व्यक्ति पर भरोसा न करना। जी हाँ, सभी को यह सिद्धांत मालूम है। फिर भी, क्या हम कभी कभी लोगों को यीशु पर विश्वास रखने के लिए बिनती करते हैं जिन्हें वे नहीं जानते हैं? शायद इसी कारण से कि हम सिरदर्द, असुविधा और अनुरोध के साथ फंसना नहीं चाहते जो चेले बनाना हमारे जीवनों में बेशक लायेंगे।

इसलिए चेले बनाने और उनके जीवन परमेश्वर के वचन से बनाए जाते यह देखने की यात्रा क्या हैं?

एक चेला बनाना

जीवन के तीन पहलुओं का सुझाव मुझे देने दीजिए जो हमें लोगों को चेले बनाते हुए बताने चाहिए :

- वचन में (मस्तिष्क तक पहुँच)
- मार्ग के अनुसार (हृदय तक पहुँच)
- कामों में (हाथों तक पहुँच)

वचन में

परमेश्वर के वचन में उनके साथ उद्देश्यपूर्वक रहना महत्वपूर्ण है जिनको आप चेले बनाने को सोचते हैं। जब मैं साभिप्राय के साथ चेले बनाना कहता हूँ, मेरे कहने का मतलब है कि आप उन्हें आपके जीवन में अक्सर और व्यक्तिगत स्तर पर चाहते हैं। शायद आपके चेले वे लोग हैं जो आपके साथ दफ्तर में रहते हैं, या आपके परिसर में साथी छात्र हैं। वे पड़ोसी मित्र, या आध्यात्मिक लोग हो सकते हैं जिन्हें आप कसरत करने के स्थान पर मिलते हैं। वे परिवार के सदस्य या आपके घर में काम करनेवाले हो सकते हैं -यें चेले बनाने संबंधित काम में सबसे स्वाभाविक स्थान हो सकते हैं।

जब हम साभिप्राय के साथ दूसरों को चेले बनाते हैं, तब हमें एक साथ परमेश्वर के वचन में गहराई में जाना चाहिए- जो शास्वत है उसके द्वारा अपने जीवन की रुपरेखा तैयार करना है, यीशु ने जो कहां उस पर प्रश्न पूछने हैं, परमेश्वर की बड़ी महिमा को स्पष्ट करना है, अपने जीवन पर उसके प्रभाव की चर्चा करना है और परमेश्वर के वचन के साथ हमारी यथास्थिति को चुनौती देना है। जब हम ऐसा करते हैं, तब हम परमेश्वर के आवाज़, परमेश्वर का मन, परमेश्वर का हृदय और परमेश्वर के चरित्र को सीखते हैं, जो यीशु मसीह के व्यक्तित्व के अनुग्रह और सत्य में मिलता है। फिर यह सुयोजित बाइबल अध्ययन या बातचीत में परमेश्वर के वचन के सौम्य दखल द्वारा होता हो, यदि हम आत्माओं के बारे में सच में फ़िक्र करते हैं, तब हम हमारे मित्रों को सुसमाचार बतायेंग जो *"उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है"* (रोमियों १:१६)।

मार्ग के अनुसार

अगला, यह समान रूप से महत्वपूर्ण है कि हम रोजमर्रा का जीवन एकसाथ जीते हैं, ताकि जिन्हें हम चेले बना रहे हैं (और हमारे आस-पास का बाकी जगत) वे हमें मसीह जो महिमा की आशा है उसमे पा सकते हैं। इसी को तो मैं 'रास्ते के अनुसार" *चेले बनाने को कहना चाहता हूँ। हमारे "रास्ते" में व्यवसायिक बैठक, कॉलेज के क्लास, कॅफेटेरिया में भोजन, किराना दुकान में एक छोटीसी मुलाकात, शाम के समय का खेल या रात में अनौपचारिक बातें शामिल हो सकती हैं। रोजमर्रा के जीवन में जीते हुए दूसरों को अवसर मिलता हैं कि हम में परमेश्वर के आत्मा के फल देखें। बाइबल कहती हैं, "*इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पीओं, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो" (१ कुरिन्थियों १०:३१)।

जिनके साथ हम जीवन बिताते हैं वे हमें रिश्वत का इन्कार करते हुए देखेंगे, क्योंकि हमारी चाह पैसा नहीं है। वे देखेंगे कि हम बदनामी और निंदा का इन्कार करते हैं, क्योंकि हमारा लक्ष्य प्रसिद्धि या मनुष्यों का अनुमोदन नहीं हैं। व्यस्तता की अराजकता में लोग हमारा संयम और अनुग्रह को देखेंगे क्योंकि मसीह का मन हमें नियंत्रित करता है। वे इस बात को जानेंगे कि हम खेल के मैंदान में ठीक से न समझने में और नुकसान उठाने में सक्षम हैं क्योंकि हमारा लक्ष्य यह केवल खेल जितना नहीं हैं परंतु मसीह जीवन का आदर्श रखना है। वे जानेंगे कि नम्रता में हम हमारी अपनी गलतियों पर क्या उपाय करते हैं और फिर से सही रास्ते पर आते हैं कि मसीह की खातिर दौड़ लगाते रहे, और पुनर्स्थापित करने के लिए उसकी सामर्थ्य पर भरोसा करे। इसका यह मतलब नहीं कि हम हमेशा ही एक सिद्ध आदर्श रखते हैं। इसका यह मतलब अवश्य है कि आत्माओं को मसीह के पास लाने में हमारी असफलताएं एक माध्यम हो सकती हैं, जब हम हमारे काम को कबूल करने और मानने में तत्पर होते हैं जो उसकी समानता को प्रतिबिंबित नहीं करता है।

क्या हम मनुष्यों की प्रशंसा चाहते हैं या परमेश्वर की स्वीकृति?

मेरी इच्छा यह है कि हर एक पुरुष और स्त्री जिनको मैं मिलता हूँ उन्हें यीशु मसीह के चेले बनाऊँ, यह समझते हुएं कि प्रश्न जो यीशु ने उसके चेलों से पूछा था उसका उन्हें स्वयं उत्तर देना चाहिए, *"परंतु तुम मुझे क्या कहते हो?"* (मत्ती १६:१५)। यह हर एक व्यक्ति का इस प्रश्न को उत्तर है जो सब कुछ बदलता है। मैं जिनसे मिलता हूँ उस हर एक व्यक्ति को मेरे चरित्र में मसीह दिखाना चाहता हूँ, मेरी बातचीत में उन्हें मसीह के बारे में बताता हूँ, और

मेरी करुणा में उन्हें मसीह का अनुभव कराता हूँ। यह हर एक व्यक्ति पर निर्भर है यह निर्णय करे कि प्रभु जिसे यीशु कहते है उसके बारे मे क्या करे।

कामों में

कृपा करके मसीह सेवकाई के नमूने पर ध्यान दें। मत्ती १० में, चेलों को अपने पास बुलाने और बारह लोगों को उसके सबसे घनिष्ट सांसारिक मित्र चुनने के थोड़े ही समय बाद, उसने क्या किया? उसने उन्ही बारह लोगों को जगत में भेजा, उन्हें यह कहते हुए, *"और चलते चलते यह प्रचार करो : स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। बीमारों को चंगा करो, मरे हुओंको जिलाओ, कोढ़ियों को शुद्ध करो, दुष्टात्माओं को निकालो। तुम ने सेंतमेंत पाया हैं, सेंतमेंत दो"* (मत्ती १०:७-८)।

इस समूह में, जिसे यीशु भेजते हैं, कौन है?

ठीक है, यहूदा, जो उसको धोखा देगा, वह उन चेलों में था। पतरस, ने अब तक यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में कबूल नहीं किया था, वह भी उन बारह में से था जिन्हें भेजा गया था। गतसमनी बगीचे में हर एक चेले ने यीशु को छोड़ दिया था और जबकि मानव आवश्यकता की सबसे बड़ी घडी थी जब वे डर के मारे भाग गए थें। आज भी, वह जो कुछ जगत में कर रहा है उसका हिस्सा होने के लिए उन्हें भेजता है।

जब मसीह ने मत्ती १६:२४ के वचन कहे, चेले पहले से ही उसके साथ चल रहे थें, उससे सीख रहे थें और उसके साथ काम कर रहे थें। परमेश्वर जो कुछ कर रहा था उसका हिस्सा होने के लिए उसने उन्हें बुलाया था। लेकिन स्मरण रखें, यहाँ पर केवल एक चेला और मसीह का एक सच्चा अनुयायी इनमें फ़र्क है। एक उससे गुरु के रूप में सीखता है। दूसरा उसे प्रभु के रूप में समर्पित होता है। हम भटके हुए को निश्चित नियम या उपदेशों का अनुकरण करने के लिए चेला नहीं बनाते। यह एक धर्मी बाहरी बदलाव के बारे में नहीं। बल्कि, हम खोए हुए लोगों को उद्धारकर्ता के साथ भेंट कराने के लिए चेले बनाते हैं ताकि वे उसे उनका उद्धार या जीवन होने के लिए स्वीकर करें या वह जो दावा करता है उसके लिए उसका अस्वीकार करें।

यही जो यूहन्ना ६ में बिल्कुल घटित हुआ।

यीशु ने वह कौन है और पापों की क्षमा के लिए वह अपना शरीर और रक्त देने से क्या करेगा इसके बारे में स्पष्ट उपदेश दिया। यूहन्ना ६:६६, यह स्पष्ट करता है, *"इस पर उसके*

चेलों में से बहुत से उल्टे फिर गए और उसके बाद उसके साथ न चले।" सरल शब्दों में, वे इस बिंदु तक आए जहाँ उसने जो कहां था वह उन्हें पसंद नहीं था। इसलिए उन्होंने उसका अस्वीकार करने का चुनाव किया। यह उसी समय यीशु उसके बारह चेलों की ओर फिरा और कहां, *"क्या तुम भी चले जाना चाहते हो? शमौन पतरस ने उसको उत्तर दिया,* "हे प्रभु, हम किसके पास जाएँ? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है" (यूहन्ना ६:६७-६९)।

बाइबल स्पष्ट है : केवल अनुग्रह द्वारा केवल मसीह में विश्वास द्वारा ही सिर्फ़ आत्मा का उद्धार होता है। एक चेला जो यीशु मसीह में उसका विश्वास करता है तब वह पवित्र आत्मा द्वारा निवास करनेवाला जीवन हो जाता है, जीवन जो पानी के बपतिस्मे को तैयार है (मसीह के साथ उसकी मृत्यु, गाड़े जाना और पुनरुत्थान के साथ उसकी पहचान और एकता की सार्वजनिक रूप से घोषणा करना) और एक पुनर्जन्मे आत्मा पवित्र आत्मा से दान द्वारा समर्थ होता है, जो मसीह के शरीर में सेवा करने को तैयार रहता है। तब हम मसीह के साथ परिपक्वता में ऐसी आत्मा के साथ यात्रा करते हैं ताकि एक साथ मिलकर हम जान सके *"जिन पर परमेश्वर ने प्रगट करना चाहा कि उन्हें ज्ञात हो कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का मूल्य क्या है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है। जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें।"* (कुलुस्सियों १:२७-२८)

किसी को *"कामों में"* चेले बनाना और परमेश्वर की महिमा में एकसाथ काम करना कैसा लग सकता है? उन्हें मसीह के शरीर के लिए हमारी आराधना में या हमारे आस-पास के भटके हुए लोगों के लिए मसीह का प्रेम पहुँचाने में शामिल करने के द्वारा, हम *"सेवकाई प्रशिक्षण का काम"* प्रदान करते हैं। यद्यपि, चेले बनाना और सुसमाचार प्रचार करने को अक्सर अलग ज़िम्मेदारियों के रूप में माना जाता हैं, फिर भी वे मिलकर काम करते हैं। यीशु के हर एक अनुयायी को दोनों का अनुयायी होने बुलाया हैं और दोनों ही काम एक साथ हो सकते हैं।

दूसरे चेले को सुसमाचार-केन्द्रित सेवकाई *"में शामिल करने से बढ़कर* "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो *"इस तरह से प्रोत्साहित करने का कोई उत्तम मार्ग है क्या?* (मरकुस १६:१५)*। फिर हमारा काम बाइबल अध्ययन, बच्चों के क्लब, जो दु:खित है उनके प्रति सेवकाई, अस्पताल में मरीजों से मुलाकात करना, मेहमाननवाजी, हमारे निवासस्थान की जगह पर अंतरराष्ट्रिय छात्रों तक पहुंचना या स्थलांतरित और*

शरणार्थियों के लिए राहत कार्य करना जो भी हो-जो भी खुले दरवाजे जिनके द्वारा हम गए हैं कि हमारे आस-पास के लोगों को सुसमाचार प्रचार करें- "आओ और देखो" ऐसा निमंत्रण किसी को देने के लिए हमें क्या रोक रहा हैं?

हम ने जिन्हें चेला बनाया है उन चेलों को जहाँ परमेश्वर हमें बोने, पानी डालने या अनाज उत्पन्न करने इस्तेमाल कर रहा हैं उन खेतों में उन्हें गवाही देने और काम करने दें । स्पष्ट रूप से, वे इन्हें सार्वजनिक रूप में यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में अब भी स्वीकार करना हैं वे उनके भागीदारी और भूमिका में मर्यादित रहेंगे, परंतु वे यात्रा में शामिल हो सकते हैं।

यीशु ने जो कहां वह करने के लिए, जब हम भटके हुओं के लिए सुसमाचार प्रचार करते हैं तब उन्हें हमें चेले बनाना नहीं है क्या? क्या एक बात को छोड़ कर कोई अन्य बात करना यह उसके उपदेशों और आदर्श के साथ असंगत नहीं है?

शिष्यत्व यह एक जीवनशैली है

यह अत्यंत व्यवहारिक है।

यात्रा शुरू होती है जब हम औरों के लिए अपने जीवन (अपनी स्वतंत्रता और अपने निजी काम को छोड़ने की बड़ी कीमत शामिल रहती है) का निवेश करने को जानबूझकर चुनते हैं, उन्हें वचन में, मार्ग के अनुसार, और कामों में मसीह से परिचित कराते हैं। हम दूसरों को मसीह को पहचानने के लिए अपनी यात्रा में निमंत्रित करते हैं और उनके जीवन और आत्माओं के लिए वास्तविक देखभाल, परमेश्वर के वचन के लिए जोश, और जो हमारे आस-पास दु:खित हैं जिन्होंने मसीह की करुणा का अनुभव करना हैं यह देखने की इच्छा करते हुए मसीह से जान पहचान कराते हैं। हम उन्हें आशाहीन जीवन, जैसे मेरा मध्य पूर्व मित्र ने स्वयं और दूसरों के लिए विनाश के अलावा कोई विकल्प नहीं देखा ऐसे लोगों में आशा देखने के विशेषाधिकार में निमंत्रित करते हैं।

यात्रा शुरू होती है जब हम औरों के लिए अपने जीवन (बड़ी कीमत शामिल रहती है) का निवेश करने को जानबूझकर चुनते हैं।

यीशु ने स्वर्ग जाने से पहले अपने चेलों से कहां, *"जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ"* (मत्ती २८:१९), और फिर उनके लिए यह स्वाभाविक प्रक्रिया थी। उन्हें चेले

बनाने की यात्रा का अनुभव पहले से ही था। कल्पना कीजिए कि खोए हुए लोग गवाही दे सके-शायद अनजाने में- चेले बनाने की यात्रा या उनका उद्धार होने से पहले चेले बने? क्या यह किसी की मसीह में नए जीवन के लिए स्वाभाविक प्रतिक्रिया नहीं होगी कि जाएँ और वैसे ही करें?

२ कुरिन्थियों २:१४-१६ में, हमें बताया गया हैं, *"परंतु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिए फिरता है; और अपने ज्ञान की सुगंध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। क्योंकि हम परमेश्वर के निकट उद्धार पानेवालों और नाश होनेवालों दोनों के लिए मसीह की सुगंध हैं। कुछ के लिए तो मरने के निमित्त मृत्यु की गंध, और कितनों के लिए जीवन के निमित्त जीवन की सुगंध। भला इन बातों के योग्य कौन है?"* यदि आप इत्र या सुगंध लगाते हो, तो इसे कौन सूंघता हैं इस पर आप नियंत्रण नहीं कर सकते। जो कोई भी आपके निकट आएगा वो उसकी सुगंध का अनुभव करेगा।

उसी समय, केवल इसलिए कि आप सोमवार को डियोडोरंट लगाते हो इसका मतलब यह नही कि मंगलवार तक उसकी सुगंध आपको अच्छी लगेगी। ऐसा आपको अक्सर करने की आवश्यकता है। जगत यह बताने में सक्षम होगा कि जहाँ हम समय बिताते हैं वैसी ही सुगंध हमसे निकलती है। जैसे गलातियों ६:७-८ हमें बताता है, *"धोखा न खाओ; परमेश्वर का मजाक उड़ाया नहीं जा सकता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा। क्योंकि जो अपने शरीर के लिए बोता है; वह शरीर के द्वारा विनाश की कटनी काटेगा; और जो आत्मा के लिए बोता है, वह आत्मा के द्वारा अनंत जीवन की कटनी काटेगा।"* मसीह के अनुयायी और चेले बनानेवालों के रूप में, हमें उसके साथ अपने संबंध में सदैव बढ़ते रहना है, परमेश्वर के वचन की शुद्ध करनेवाली शक्ति को अक्सर फिर से लगाते रहना है, और शास्वत बातों पर अपने मन नियमित रूप से स्थापित और पुनःस्थापित करना है जैसे हम *"हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं"* (२ कुरिन्थियों १०:५)।

यदि मेरी माँ कॉफ़ी केक बना रही है, सुगंध मन मोहनेवाली होती है। लेकिन क्या मैं केवल रसोई-घर में प्रवेश करने और अधिक सुगंध लेने पर पर संतुष्ट हूँगा? कदापि नहीं। मैं केवल तभी संतुष्ट हूँगा जब मैं उसका बड़ा टुकड़ा पिघले हुए घी के साथ खाने से उसका मजा लेता हूँ। हमारे जीवन जगत को हमारे उद्धारकर्ता की चाह करने के लिए मन मोहनेवाले सुगंध होने चाहिए -ताकि हमारे द्वारा वे आशा, आनंद, शांति और उद्देश्य जो उन्होंने उनके पूरे जीवन में चाहा है उसका अनुभव कर सकें।

यदि हम हमारे लिए अपने उद्धारकर्ता के विश्वासी अनुयायी करने के बजाय अपने आप के लिए प्रशंसक क्लब पैदा कर रहे हैं, तो हम हमारे बुलाहट के मुद्दे से भटक रहे हैं और परमेश्वर की महिमा को चुरानेवाले हैं। क्या हम मनुष्यों की प्रशंसा चाहते हैं या परमेश्वर की स्वीकृति? हाल ही में, मैं एक प्रश्न से गहराई में समझ गया और दर्दनाक रूप से चुनौती मिली, *"क्या आप बहुगुणित करने योग्य चेले हैं?"* क्या मैं यीशु मसीह के चेले बना रहा हूँ या मेरे अपने? क्या मैं चेले बना रहा हूँ या मैं केवल अपने उपर ध्यान केन्द्रित हूँ? जगत को मेरी प्रतिकृतियों की आवश्यकता नहीं है सिवाय इसके कि जब मेरा जीवन मसीह के समान दिख रहा हो। क्या हमारे जीवन मसीह की सुगंध फैला रहे हैं जो जगत में आशा, आनंद, विश्वास और सत्य जो वही केवल दे सकता है दे रहे हैं?

शिष्यत्व का अंतिम पड़ाव

शिष्यत्व के अंतिम पड़ाव के लिए मृत्यु की आवश्यकता होगी।

पहले, स्वयं के लिए मृत्यु और फिर अपने पापी देह के लिए मृत्यु जब परमेश्वर सब कुछ नया बनाता है। मसीह ने अपने चेलों के लिए इस सत्य की रुपरेखा की। *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाएं, और मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करें, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?"* (मत्ती १६:२४-२६)।

मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होने की यात्रा हमारे पुराने मनुष्य को मृत्यु कहती है। इसी वजह से परमेश्वर का वचन हमें स्मरण देता है, *"पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमंड करू, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का, जिसके द्वारा संसार मेरी दृष्टि में और मैं संसार की दृष्टि में क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ"* (गलातियों ६:१४)।

परमेश्वर की उसके बच्चों के लिए इच्छा यह है कि हमारे मन, हृदय और जीवन उसके वचन से बनाए जाए। उसका उद्देश्य यह है कि हम उसके पुत्र समान दिखे, और दूसरी आत्माओं

को उसके साथ संबंध लाने के लिए जोशीले हो जाए। यह हमारा विशेषाधिकार है। यह हमारी ज़िम्मेदारी है।

लेकिन सच्चे शिष्यत्व हमें सब कुछ त्यागना पड़ेगा।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. एक चेला और एक अनुयायी के बीच में क्या फ़र्क है?

२. कौनसे कुछ व्यवहारिक मार्ग हैं, आपके वर्तमान परिस्थिति में, आप दूसरों को वचन में, मार्ग में और या कामों में चेले बनाते या चेले बनाने की उम्मीद रखते हैं?

३. आप वर्तमान स्थिति में आपके जीवन में किसको चेला बना रहे हैं?

११

परमेश्वर के वचन द्वारा अपने निवेश को तैयार करना

चेतावनी : कृपा करके इस पाठ को केवल इसलिए अस्वीकार न करें क्योंकि यह हमारे आधुनिक सोच को कठोर लगता है। इसे तभी अस्वीकार करें जब यह परमेश्वर के वचन की ज्योति में असत्य सिद्ध हो।

हमें परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की एक स्पष्ट समझ के साथ हमारे निवेश करने की प्रक्रिया को शुरू करना चाहिए। यदि आप ने आपका विश्वास यीशु मसीह पर रखा है, तो आप परमेश्वर को निडर होकर और हमेशा *"पिता"* कह सकते हैं। परमेश्वर का वचन हमें बताता है, *"और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है। इसलिए तू अब दास नहीं, परंतु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ"* (गलातियों ४:६-७)। इस विचार पर कुछ क्षण ध्यान करके, मुझे विश्वास हो गया है कि अधिकांश मसीही लोगों ने इस वचन पर कभी भी गहरा मनन नहीं किया है। वह क्या कहता है उसे देखें! *"परंतु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ"*। क्या आपको यह समझ में आया? मसीह में एक विश्वासी के रूप में, आप परमेश्वर के वारिस हैं ! वारिस *"वो है जिसे सब कुछ मिलता है"*। क्या ही खूब!

एक बार जब हमें इस सत्य का पता चलता हैं कि हम कौन हैं और मसीह में हमारे पास क्या है, तब क्या हमें हमारे थोड़े से निवेश और खर्च करने को आत्मविश्वास से उसके वचन के अनुरूप नहीं बनाना चाहिए? दाऊद राजा ने लिखा, *"आकाश तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है;*

जगत और जो कुछ उस में है, उसे तू ही ने स्थिर किया है" (भजन संहिता ८९:११)। स्वर्ग और पृथ्वी हमारे पिता के हैं! क्या हम इस पर विश्वास रखते हैं?

देखिये यीशु ने क्या कहां, देहधारित शब्द जिसने अपने विश्व की रचना की हमें यह कहता है, *"अपने लिए पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो, जहाँ कीड़ा और काई बिगाड़ते है, और जहाँ चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परंतु अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहाँ न तो कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहाँ चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। क्योंकि जहाँ तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेंगा"* (मत्ती ६:१९-२१)।

क्या हमारे वित्तीय खर्च लोगों को हमारे जीवनों के खज़ाने की ओर इशारा करते हैं? आइए उसे फिर से कहें। हमारे वित्तीय खर्च लोगों को हमारे जीवनों के खज़ाने की ओर इशारा करेंगे। केवल एक ही सही प्रश्न यह है, *"क्या खज़ाना है जिसकी ओर हमारे जीवन इशारा करेंगे?"* यीशु उसके चेलों से कहते रहें, *"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेंगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते"* (मत्ती ६:२४)।

केवल दो चीज़ें ही हमेशा के लिए रहती हैं : आत्मा और परमेश्वर का वचन।

आपका पैसा कहाँ जाता है? आपके क्रेडिट कार्ड ब्यौरा या चेकबुक को देखो। इस बिंदु को मत चूकिए। मसीह के अनुयायी को क्या परिभाषित करता है यह आवश्यक रूप से सांसारिक संपत्ति की अनुपस्थिति नहीं। एक सच्चे अनुयायी को क्या परिभाषित करता है वह अनंतकाल के लिए क्या महत्वपूर्ण है उसमे आपके स्त्रोत को निवेश करना है। यह कोई कितना देता है इसके बारे में नहीं है, लेकिन कितना कोई पीछे रख छोड़ता है उस बारे में है। मनुष्य एक तोफे की कीमत जानना चाहता है। परमेश्वर जो पैसा पीछे रखा है, और ह्रदय जो दिया है उसे देखता है।

दो छोटे तांबे के सिक्के जिस स्त्री के पास थे उसकी कहांनी याद है क्या? दोनों ही सिक्कों को खज़ाने में डालने के बाद, यीशु ने उससे कहां, *"मैं तुम से सच कहता हूँ कि इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि उन सब ने अपनी अपनी बढ़ती में से दान में कुछ डाला है, परंतु इसने अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है"* (लूका २१:३-४)।

केवल दो चीज़ें ही हमेशा के लिए रहती हैं : आत्मा और परमेश्वर का वचन।

उन बातों में निवेश कीजिए।

चर्च में उदासीनता

क्या हम खोई हुई आत्माओं के और जिन्होंने सुसमाचार कभी भी नहीं सुना है उनके बारे में फिक्र करते हैं? मैं अपने होठों से बातें करने की बात नहीं कर रहा हूँ, लेकिन अपने जीवनों की गवाही के बारे में। हमारे जगत के जिन लोगों तक सुसमाचार नहीं पहुंचा उनके बारे में सोचते हुए, चर्च कितना थोड़ा देते हैं इसके बारे में सोचिए। आजके तथाकथित चर्च में (जिसमे बहुत सारे लोग भी है जो यीशु के सच्चे अनुयायी नहीं हैं) ऐसा अंदाज़ा लगाया गया है कि हमारी आमदनी के २ प्रतिशत से भी कम पैसा *"मसीही सेवकाई संबंधित कारण से' दिया जाता है।"*

दु:खद रूप से, उदासीनता यहाँ पर रुकती नहीं।

मसीही सेवकाई संबंधित कारण से" दिए गए २ प्रतिशत से कम पैसे में से, बहुत ही थोड़ा यानी उसका छह प्रतिशत पैसा तथाकथित मिशन कार्य के लिए जाता है (चर्च के बाहरी कार्य के लिए खर्च किय जाता है, फिर वो पड़ोसी बीबीक्यु, महीने के बच्चों का प्रायोजन कार्यक्रम को देना, या एक छोटे से समय के लिए एक समूह को मिशन कार्य के लिए भेजना हों....) सरल रूप से कहां जाए, तो मसीही दान का अधिकतम भाग इमारतें, वेतन और ऐशोआराम के लिए होता है।

लेकिन धीरे धीरे मज़ाक और भी बदतर होता जाता है।

इस थोड़े से भाग से जो वास्तव में मिशन कार्य के लिए जाता है, केवल एक प्रतिशत (२ प्रतिशत का छह प्रतिशत) जो जगत के क्षेत्रों के लिए दिया जाता जिन्होंने अब तक सुसमाचार नहीं सुना हैं। यह तो असल में उतनी ही रकम अमरीकी लोग साल में उनके पालतू जानवरों के लिए हेलोवीन वेशभूषा पर खर्च करते हैं। दूसरे तरीके से कहें तो, हर एक तथाकथित मसीह जो $ १००, ००० कमाता है, उसका औसत $१ जिन्होंने परमेश्वर की कहांनी और संदेश कभी नहीं सुना उन तक पहुँचने के काम के लिए दिया जाता है। [२०]

क्या हम यीशु के समान, सचमुच चाहते हैं कि किसी का नाश न हो (२ पतरस ३:९)? यदि ऐसा है, तो हमारे निवेश यह बताएँगे।

परमेश्वर कब दस प्रतिशत नहीं चाहता है

मुझे कुछ सुझाव देने दीजिए कि यीशु आपके दशमांश, आपके दस प्रतिशत के बारे में नहीं सोचता। उसे आपका हृदय चाहिए। परमेश्वर चाहता है कि आप उसके प्रेम से प्रेरित हों

ताकि आपका आत्मविश्वास उसके प्रावधान में हो और आपका जोश उसकी महिमा में हो। ऐसा हृदय यह नहीं पूछेगा, *"कितना मुझे देना चाहिए?"* लेकिन *"कितना मैं दे सकता हूँ?"* कितने थोड़े में मैं रह सकता हूँ?"

शायद ये दु:खद ब्यौरा अमरीकी लोगों के दान देने के बारे में कुछ तो गहन प्रगट करता है। शायद हा वास्तव में विश्वास नहीं करते कि अनंतकाल की सत्यता और यीशु मसीह की बहुमुल्यता के बारे में परमेश्वर का वचन क्या सिखाता है। क्या ऐसा हो सकता है कि जगत ने हमें उसके सिद्धांतों के लिए इतना सुन्न कर दिया है कि हम परमेश्वर के वचन को उसी प्रकार खरीद लेते हैं जैसे कोई बीमा योजना खरीदता है ? जब तक यह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करता है हम उसका पालन करते हैं? हमारे लिए सांसारिक जमा विकल्प से जुड़े रहना कितना आसान होता है-अगर किसी क्षण परमेश्वर का प्रावधान असफल हो-और उसे *"आकस्मिक योजना"* कहते है। *"क्या हम "*विवेकपूर्ण वित्तीय योजना" की आड़ में हमारी होशियारी से बनाए निवृत्ति योजनाओं पर विश्वास करते हैं? क्या परमेश्वर हम में से हर एक को व्यक्तिगत रूप से यह एहसास दिला सकता है कि हम किस प्रकार निवेश कर रहे हैं ?

परमेश्वर चाहता है कि आप उसके प्रेम से प्रेरित हों ताकि आपका आत्मविश्वास उसके प्रावधान में हो और आपका जोश उसकी महिमा में हो।

मरकुस १४ में, एक स्त्री प्रभु यीशु के पास आई और उसके पास के शुद्ध जटामांसी इत्र की बहुमूल्य संगमरमर के पात्र को तोड़ा और उस इत्र को उसके सिर पर उंडेला और उसकी आराधना की। आरोप लगाने वाले स्वर में चेलों ने कहां, *"इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया? क्योंकि यह इत्र तो तीन सौ दीनार से अधिक मूल्य में बेचा जाकर कंगालों में बांटा जा सकता था। और वे उसको झिड़कने लगे"* (मरकुस १४:४-५)। यीशु ने जिसे खज़ाना कहां, उसे चेलों ने नुकसान समझा। क्या हम भी प्रभु के हृदय के स्पर्श से दूर रहने लगे हैं, ये सोचकर कि शास्वत निवेश समय और पैसों की बर्बादी है?

हमारे जगत में, लाखो लोग युद्ध से अनाथ हो गए हैं, हजारो लोग हर रोज कुपोषण और मलेरिया से मरते हैं और अनगिनत अन्य लोगों से यौन-सम्बन्ध, अंगों की तस्करी और मजदूरी कराई जाती हैं। तो फिर हम हमारे उद्धारकर्ता और प्रभु के समक्ष हमारे सुखकारक जीवनशैली के उद्देश्य को कैसे सही ठहरा सकते हैं जिसने कहां, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाएं, और मेरे पीछे हो ले ?"* हर दो दिन में, पूरे साल में जितने लोग पूरे विश्व के आतंकी हमले में मरते हैं उससे भी ज़्यादा

भूख-संबंधित कारणों से मर रहे हैं।[२१] जो हमारे आज के जगत में हमारे जीवनों के लिए बड़ा ख़तरा उत्पन्न करता है? आतंकवाद या भौतिकवाद?

भंडारीपण कभी भी स्वार्थ के बराबर नहीं होता

शायद आप मेरे जैसे हो- आपकी सुखकारक जीवनशैली चाहते हैं जबकि अब भी मसीह के वचन को मानते है। कुछ दावा करते हैं कि अच्छी वित्तीय भंडारीपण के लिए बचत, भूमि बिक्री प्रबंधन, और अपने पैसे बढ़ाने के लिए स्टॉक और बांड्स में निवेश करना हैं। निस्संदेह, बाइबल में बुद्धिमान निवेश को प्रोत्साहित किया है, लेकिन सिर्फ़ जब हम हृदय से करते हैं जिसमें शास्वत मूल्य नजर आता है।

बाइबल कहती है, *"फिर यहाँ भंडारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो"* (१ कुरिन्थियों ४:२)। न्यू लिविंग संस्करण इस तरह कहता है : *"अब, एक व्यक्ति जिसे प्रबंधक के रूप में ज़िम्मेदारी सौंपी है वह विश्वासयोग्य होना चाहिए।"*

हमारे पास जो संसाधन हैं हम उसके प्रबंधक हैं। प्रबंधक के रूप में, हमें हमारे नियंत्रण में जो सभी वित्तीय और संपत्ति हैं उसमे विश्वासयोग्य रहना हैं। क्या हम विश्वासयोग्य प्रबंधक हैं? सीमाएं कहाँ पर हैं? यहाँ पर कुछ प्रश्न हैं जो हमें उसके बारे में सोचने में मदद कर सकते हैं कि हम कैसे काम कर रहे हैं :

- विश्वासयोग्य प्रबंधक क्या करता है और उसका/उसकी प्रमुख ज़िम्मेदारी क्या है?
- यदि यहाँ एक प्रबंधक है तो वहां एक स्वामी भी होना चाहिए। अपने स्वामी ने जो संसाधन उसके प्रबंधक को सौंपे हैं उनसे वह क्या चाहता है?
- क्या मैं मेरी संपत्ति को किसी भी क्षण नष्ट करने तैयार हूँ यदि मेरा स्वामी वैसे मुझे करने कहता है?
- क्या मैं जगत के वित्तीय रूप से समझदारों की नजर में मुर्ख बनने के लिए तैयार हूँ ताकि मेरे स्वामी की इच्छा के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी रहूँ ?
- जब मेरा स्वामी वापस आता है, तो जो सब कुछ उसने मुझे सौंपा है उसे जिस तरह से मैंने निवेश किया उसका वह अनुमोदन करेगा?

२ राजाओं ७ पर ध्यान दीजिए। चार कोढ़ियों ने यह जाना कि दुश्मनों की छावनी खाली पड़ी है और यह कि वहां पर लेने के लिए भोजन और सामान की भरपूर आपूर्ति हैं। बाइबल हमें यह कहती है वे कोढ़ी एक तम्बू से दूसरे तम्बू तक जा रहे थें, वे खा और पी रहे थें, और चांदी और सोना इकठ्ठा कर रहे थें। उसी दौरान निकट का शहर दुश्मन के डर से भूख से मर रहा था। अचानक से कोढ़ियों ने उनके वैसा करने की दुष्टता की स्वयं जांच की। *"तब आपस में कहने लगे, 'जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनंद के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पौ फटने तक ठहरे रहे तो हम को दंड मिलेगा; इसलिए अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें"* (२ राजाओं ७:९)।

उनका निष्कर्ष कितना अधिक हमारा होना चाहिए जब जीवन देनेवाला-सुसमाचार प्रचार की बात आती है?

डर और टूटे मन से स्तंभित इस जगत में, अक्सर कितने बार हम अस्वीकार का डर या सुख के नुकसान के लिए कुछ नहीं करते-बेकार बहानों से अपने आपको न्यायी ठहराते हैं? क्या हम अपने आप को यीशु के सच्चे अनुयायी कह सकते हैं, जबकि भविष्य की आकस्मिकता के लिए अपनी संपत्ति से जकड़े रहते हैं जब यहाँ उसी क्षण मरनेवाले जगत को सुसमाचार के प्रेम के कार्य की आवश्यकता है? वे जो यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वे कुछ नही कर सकते वही लोग कुछ नहीं करने की इच्छा रखते हैं।

जब हमारे जीवनों को गहरी सफाई करने की आवश्यकता है

हाल ही में, मैं मेरे घर नाइगर, अफ्रीका में मेरे गाँव के घर में सामान्य रूप से गहरी सफाई कर रहा था। जैसे ही जाँच प्रक्रिया शुरू हुई, मेरे संपत्ति की *"प्रक्रिया"* के लिए मार्गदर्शक के रूप में निम्नलिखित प्रश्नों का गुट बनाया गया।

१. क्या किसी ओर को मुझसे ज़्यादा इसकी आवश्यकता है?

   जी हाँ? तो उसे दे दीजिए।

   नहीं? दूसरे प्रश्न #२ की जाइए।

२. क्या मैंने इसे पिछले साल उपयोग किया है?

   जी हाँ? प्रश्न #३ की ओर जाइए।

नहीं? तो उसे दे दीजिए।

३. क्या इसका कोई शास्वत मूल्य है और/या क्या यह परमेश्वर की महिमा करता है?

जी हाँ? अगले प्रश्न #४ की ओर जाइए।

नहीं? तो उसे दे दीजिए।

४. क्या मैं उसके कारण यीशु मसीह का ज़्यादा ध्यान करता हूँ?

जी हैं? उसका उपयोग कीजिए।

नहीं? तो उसे दे दीजिए।

किसी भी तरह से मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि मैं ने सिद्धता प्राप्त की है या मैं वह आदर्श बन गया हूँ जिसका अनुसरण किया जाए। मुझ पर विश्वास कीजिए। मुझ में अब भी स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ हैं कि मेरी संपत्ति से जुड़े रहें। (मुझे उपनाम "पैकक्राफ्ट" ऐसे ही नहीं मिला है) मैं सरल रूप से यह सूची बता रहा हूँ कि हम मिलकर मसीह हम में है इसे और अधिक प्रदर्शनात्मक ढंग से दिखा सकते हैं।

कुछ लोग इस कल्पना में सांत्वना प्राप्त करते हैं कि यीशु सभी पुरुष और स्त्री को हर बार उनकी संपत्ति बेचने, उनके घर छोड़ने और जीवन जो वे जानते हैं उसका त्याग करने के लिए खास करके नहीं बुलाता हैं। रॉबर्ट गंड्री ने कुछ अच्छी तरह से कहां : *"यीशु ने अपने सभी अनुयायियों को संपत्ति बेचने का आदेश नहीं दिया था, क्या इससे केवल उन लोगों को ही सांत्वना मिलती है जिन्हें वह यह आदेश देगा।"*[२२]

जब अमीर, जवान शासक यीशु के पास आया और पूछा, *"हे गुरु, मैं कौन सा भला काम करूँ कि अनंत जीवन पाऊं?"* (मत्ती १९:१६)। यीशु ने हर एक नियम को तोड़ा जिसको हर एक चर्च सुसमाचार प्रचार १०१ कहेंगे। इस मनुष्य को परमेश्वर का अनुग्रह और प्रेम के बारे में कहने के बजाय, यीशु ने उसे पहले आज्ञाएँ जो, परमेश्वर के सिद्धता का मानक है उससे चुनौती दी। जवान शासक ने व्यवस्था का पूरी तरह पालन किया है इसके बारे में अपने स्वयं की सिद्धता की थोड़ी सी घोषणा करने के बाद, यीशु ने उत्तर दिया, *"यदि तू सिद्ध होना चाहता है तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १९:२१)।

यीशु ने इस मनुष्य को अतीत के व्यवस्था की ओर इशारा क्यों किया? क्या संपत्ति को नष्ट करने का कार्य शास्वत जीवन के योग्य होगा? नहीं। बल्कि, यीशु इस मनुष्य के विश्वास और निष्ठा के स्त्रोत की पहचान करा रहा था। कोई भी निःसंदेह मसीह का अनुयायी होने से पहले, किसी भी स्त्रोत पर निर्भर रहना, विश्वास, आशा, उम्मीद या निष्ठा रखना जो पूर्ण रूप से और पूरी तरह से मसीह के व्यक्तित्व में स्थिर नहीं है उन किसी भी स्त्रोत से उसे मुक्त होना चाहिए। क्या हम हमारे मन में पहले ही दूसरी योजना तैयार कर रहे हैं जबकि इसके साथ ही परमेश्वर के वचन के सत्य पर कदम रखने का प्रयास कर रहे हैं? यदि ऐसा है, तो हम आसानी से प्रभु से कह रहे हैं कि वह पूरी तरह विश्वासयोग्य नहीं है। यह ऐसा है जैसे कि हम उससे कह रहे हैं, *"यदि किसी कारण आप नहीं आए, तो मेरे पास पहले से योजना है।"*

कभी कभी हमारी पहले से की तैयारी हमारी *"सेवकाई"* की आवश्यकताओं के लिए हमने प्रावधान करने की योजना बनाई है यह दिखाते है। सार्वजनिक क्षेत्र में मसीह के अनुयायियों को सुने। प्रसारण, पॉडकास्ट, और पुलपीट- दान दीजिए अनुरोधों से भरे रहते हैं जैसे कि परमेश्वर प्रावधान नहीं करेगा यदि हम लोगों से नहीं मांगे। क्या हम आत्मविश्वासी पुत्र से ज़्यादा हताश भिखारी समान ज़्यादा जी रहे हैं ? क्या हम परमेश्वर -निर्देशित, परमेश्वर-प्रायोजित, परमेश्वर ने दिए मिशन का हिस्सा हैं या क्या हम नहीं हैं? क्या हम मनुष्यों के लिए प्रार्थना करने के बजाय पैसों के लिए अनुरोध करने पर केन्द्रित हैं? बहुत ही सामान्यत:, हम आत्माओं को प्राप्त करने के बजाय वित्तीय सहायता की अधिक इच्छा रखते हैं। परमेश्वर को हमारा पैसा नहीं चाहिए। उसे हमारे हृदय चाहिए।

बहुत ही सामान्यत:, हम आत्माओं को प्राप्त करने के बजाय वित्तीय सहायता की अधिक इच्छा रखते हैं। परमेश्वर को हमारा पैसा नहीं चाहिए। उसे हमारे हृदय चाहिए।

कोर्री टेन बूम का हृदय कहाँ है जिसने घोषित किया, *"मैं एक सांसारिक मनुष्य के दरवाजे पर भिखारी होने से ज़्यादा प्रेमी पिता का पुत्र होना चाहूँगा।"*[२३] जॉर्ज मुलर, एमी कारमायकल, हडसन टेलर और दूसरे लोग जो उनके आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए परमेश्वर की ओर देखते थे (और मनुष्यों के बड़ी ज़ेब की ओर नहीं) उनके समय पर क्या हुआ? (अस्वीकरण : मैं व्यक्तिगत रूप से कुछ व्यक्तियों को जानता हूँ जैसा उन्होंने किया था वे आजीविका के लिए परमेश्वर पर निर्भर रहते है) विल्यम मॅकडोनाल्ड कुछ इस तरह से लिखते है, *"परमेश्वर जो आज्ञा देता है उसके लिए कीमत भरता है।"*[२४]

क्या आप जीविका, सुरक्षितता, या संतुष्टि के लिए मसीह के बजाय किसी और स्त्रोत की ओर देख रहे हैं? यदि ऐसा है तो, मसीह की आपको बुलाहट ज़्यादातर संभावना आपको यह पूछते हुए शुरू होगी कि आप उसे आपके विश्वास और आत्मविश्वास का स्त्रोत बनाए। मसीह के अनुयायीने सारी उलझनों से मुक्त होना हैं। अन्यथा, जब मसीह बुलाता है, तब हमें इस जगत की चीज़ों (भले ही वे बुरी चीज़ें न हो) के लिए हमारी फ़िक्र के कारण उसका आज्ञापालन करने से दूर रखा जाएगा।

दान देने के लिए बिनती की

जब परमेश्वर के काम के लिए दान देने की बात आती है, तब क्या हम लोगों के अनुरोध करने से पहले देते हैं? या क्या हम हमारे भीतर मसीह के आत्मा की प्रेरणा को उत्तर देते हैं? मकिदुनिया की कलीसिया ने सर्वोत्तम आदर्श रखा। *"उनके विषय में मेरी यह गवाही है कि उन्होंने अपनी सामर्थ्य से भी बाहर, मन से दिया। और इस दान में और पवित्र लोगों की सेवा में भागी होने के अनुग्रह के विषय में, हम से बार-बार बहुत बिनती की, और जैसी हम ने आशा की थी, वैसी ही नहीं वरन् उन्होंने प्रभु को फिर परमेश्वर की इच्छा से हम को भी अपने आपको दे दिया"* (२ कुरिन्थियों ८:३-५)। उन्होंने अपनी इच्छा से दिया। उन्होंने आग्रहपूर्वक अनुरोध किया, प्राप्त करने के लिए नहीं, परंतु देने के अवसर के लिए। क्या वह अपने वित्तीय खर्च को दर्शाता है?

क्या हम इस अवसर की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तलाश कर रहे हैं और यहाँ तक कि बिनती भी कर रहे हैं कि हम अपने व्यक्तिगत संसाधनों का निवेश करके दुनिया के उन लोगों को मसीह के प्रेम का अनुभव कराएं जो इससे वंचित हैं ? क्या हम जो शरणार्थी हमारे वतन में आते हैं उनके लिए फ़िक्र करने के लिए सक्रीय रूप से अवसरों को खोज रहे हैं? क्या हम बेघर, दीन और समाज से बहिष्कृत लोग जो हमारे आस-पास रहते हैं उनके लिए सेवा करने का अवसर प्राप्त हो इसलिए प्रार्थना कर रहे हैं? शास्वत लाभांश के साथ ये निवेश हैं।

कर्ज़ का ख़तरा

जगत का एक औज़ार जो जवान पुरुष और स्त्री को आत्माओं में निवेश करने के बजाय स्वार्थी जीवनशैली में अटका कर रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता है वह कर्ज़ का बढ़ते जाना है। आज बहुत सारे समाज में, कर्ज़ केवल सामान्य नहीं- तो उसे प्रोत्साहित किया जाता है।

क्या हम इस विचार को अपनाते हैं कि हमें कर्ज़ में रहना चाहिए ताकि विश्वविद्यालय से कागज का एक टुकड़ा प्राप्त करे और उपाधि प्राप्त करने पर, मिशन का काम करने के बजाय महीने का हफ्ता भरने में कैद हो जाए? कई लोगों को परमेश्वर की बुलाहट का बोझ हैं कि जहाँ कहीं वह उन्हें ले जाता है वहां बंधनमुक्त होकर सेवा करे, केवल सांसारिक संस्थाओं के लिए वित्तीय ज़िम्मेदारी पाए जो उन्हें निश्चित वेतन, निश्चित स्थान, और निश्चित जीवनशैली के लिए कैद करते हैं। कई जवान लोगों को, जो राष्ट्रों में परमेश्वर की महिमा के लिए बिना शर्त उनके जीवन का इस्तेमाल होते हुए देखने का कभी जोश था, वे अब उनके सांसारिक कर्ज़ को भरने के लिए आरामदायक जीवनशैली में स्थापित हो गए हैं। जिस समय ये सारा कर्ज़ भर दिया जाता है, तब एक जीवनशैली अपनाई जाती है, प्रेम को बढ़ावा दिया जाता है, और मसीह की निस्वार्थ भाव से सेवा करने की कल्पना को अब वर्तमान खोज के बजाय भविष्य की संभावना के रूप में देखा जाता है।

कृपया समझे। मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि यहाँ पर गिरवी रखना या कर्ज़ के लिए कभी समय नहीं है जिसे चुकाने के लिए समय की आवश्यकता हो सकती है। मैं यह सुझाव दे रहा हूँ कि ऐसे निर्णय बहुत अधिक प्रार्थना और बिनती के साथ ही केवल किए जाए, जिसमे शास्वतता हमारे निर्णय करने की प्रक्रिया में प्राथमिकता हो।

जिन्होंने यीशु मसीह की सुंदरता और शास्वत क्षमा का सच में अनुभव किया हैं, वे उनका समय, खज़ाना और वरदानों का निवेश करने सबसे अधिक उत्सुक होंगे ताकि वे दूसरे लोगों को उनके परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रेम को जानते और समझते हुए देखें। एक बार हमारे हृदयों के ऊपर का कब्ज़ा छुट गया, तो जिन चीज़ों ने हमें कभी पीछे रोके रखा था उन्हें परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल किया जा सकता हैं।

लंडन के सिटी रोड़ चैपल (उसे अब "वेस्ली का चैपल" कहां जाता है) और जमीन जहाँ वेस्ली को दफनाया गया है वहां जाने के बाद, मुझे उसके संतुलित वित्तीय योजना का स्मरण हुआ : *"आप जितना कर सकते हो उतना करो, जितना आप बचत कर सकते हो बचत करो, आप जितना सब दे सकते हो उतना दो। जब मेरे पास पैसा है, तब मैं जीतनी जल्दी हो उससे छुटकारा पाता हूँ ऐसा न हो कि यह मेरे हृदय में प्रवेश कर सके। अन्थोनी नॉरिस ग्रोव्स ने सलाह दी :* "मसीही सिद्धांत ये -कठिन परिश्रम करो, थोड़ा सा इस्तेमाल करो, ज़्यादा दो- और सब कुछ मसीह को दो ऐसा होना चाहिए।"[२५] *और पौलुस प्रेरित ने यह चेतावनी तीमुथियुस को दी :* "क्योंकि रुँपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना

प्रकार के दु:खों से छलनी बना लिया है। पर हे परमेश्वर के जन, तू इन बातों से भाग, और धर्म, भक्ति, विश्वास, प्रेम, धीरज और नम्रता का पीछा कर" (१ तीमुथियुस ६:१०-११)।

मसीह की बुलाहट को उत्तर देना यह केवल संपत्ति को नष्ट करने से कहीं अधिक कठोर दिखाई देगा। परमेश्वर केवल हमारी चीज़ों को नष्ट करने की चाह नहीं रखता, परंतु अपने स्वयं का त्याग करने को चाहता है। वह केवल आपके जीवन के ज़्यादातर भाग पर प्रबंधक नहीं होना चाहता, परंतु आप जो भी है और आपके पास जो भी है उस का स्वामी होना चाहता है।

परमेश्वर केवल हमारी चीज़ों को नष्ट करने की चाह नहीं रखता, परंतु अपने स्वयं का त्याग करने को चाहता है।

जब हमारा निवेश परमेश्वर के वचन से किया जाता है, तब वह परमेश्वर की महिमा की खोज से भरे हुए हृदय से प्रवाहित होता है। डेव्हिड लिविंगस्टोन ने ठीक तरह से कहां है : *" मैं मेरे पास जो कुछ भी है या जो मेरा है उसे कोई मूल्य नहीं देता, सिवाय परमेश्वर के राज्य के संबंध से।"*[२६]

यह संपत्ति रहना या नहीं रहने के बारे में नहीं है। हम सबके पास संपत्ति है। यहाँ पर मैं अपने आप से तीन प्रश्न पूछता हूँ : क्या मैं मेरे लिए टिकनेवाला खज़ाना तैयार कर रहा हूँ? मसीह के पीछे चलने की खोज के लिए मेरे अस्तित्व का हर एक भाग बिना शर्त समर्पित करने से मुझे क्या रोक रहा है? क्या परमेश्वर किसी मनुष्य का कर्ज़दार होगा? *"जो कोई इन छोटों में से एक को मेरा चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूँ, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा"* (मत्ती १०:४२)।

इसके बारे में हम निश्चित हो सकते हैं। कोई एक आत्मा भी मसीह के न्यायासन के समक्ष खड़े होकर यह नहीं कह सकती, *"मैंने तुझे बहुत कुछ दिया!"*

चिंतन करें और उत्तर दें

१. क्या है जो आपके जीवन में अनंतकाल में निवेश करने से आपको रोक सकता है?

२. परमेश्वर पर हमारे विश्वास, भटके हुए लोगों के लिए हमारा दृष्टिकोण और हमारे हृदयों के लिए प्रेरणा के बारे में दान देने की हमारी अनिच्छा क्या कह सकती है?

३. हमारी वित्तीय खर्च हमारे जीवनों के खज़ाने की ओर लोगों को इशारा करेंगे। कौनसे खज़ाने की ओर आपका जीवन लोगों को इशारा कराता है?

१२

परमेश्वर के वचन द्वारा रिश्तों को बनाना

जगत के कई सारे भागों में, तथाकथित *"मसीही रिश्तेनाते"* परमेश्वर के वचन के बगैर सांस्कृतिक मानक द्वारा बनाए जाते हैं। रुकिए। मैं प्रेमालाप, प्यार में रिश्ते बनाना या पारिवारिक बातचीत से विवाह की प्रथा की निंदा नहीं कर रहा हूँ। ई-सेवा के द्वारा या एंटा जोड़ी बनानेवाले को आपके लिए काम करने को कहने के द्वारा आपका *"सच्चा प्रेम"* प्राप्त करने का मैं विरोध नहीं कर रहा हूँ। लेकिन जब आपका रिश्ता परमेश्वर के वचन से बनाया जाता है, तब वे घटक उसके संबंध में कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं, न ही अच्छे न ही बुरे। यीशु का अनुसरण करना और ऐसा जीवन जीना जहाँ स्वार्थ मर गया है और आत्मा निर्देश दे रहा है यह ऐसे पद्धतियों के बारे में नहीं हैं।

यह इससे भी अधिक चरम सीमा है।

तो यीशु मसीह के अनुयायी ने परमेश्वर के वचन से उसके प्रेमी रिश्ते को कैसे बनाना है ?

आइए हम मूल बातों के साथ शरुआत करें और जो हमें सच में पता है उसके साथ इस आत्मिक घर की रुपरेखा बनाएं। परमेश्वर चाहता है कि हम शुद्धता और पवित्रता में जीयें (१ थिस्सलुनीकियों ४:३-८)। जीवन जीने के मूल सिद्धांत, इसकी प्रासंगिकता पर विचार करें या उसके मतलब पर चर्चा करने के लिए प्रार्थना करने की कोई आवश्यकता नहीं है। नैतिक शुद्धता पाप को टालने के बारे में प्रमुख नहीं है; यह मसीह समान बनने की खोज है- जो हर एक विश्वासी के जीवन से प्रवाहित होती है जो स्वयं के लिए मृत है। *"क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है"* (कुलुस्सियों ३:३)।

बहुत दूर कितना दूर है?

परमेश्वर की महिमा करनेवाले रिश्तेनाते कैसे दिखते इसके बारे में निर्धारण करने में, प्रश्न जो हमें पूछने चाहिए वे ऐसे नहीं होने चाहिए, *"क्या यह बुरा है?"* या, *"क्या हमें ऐसे कार्यों में भाग लेने की अनुमति हैं?"* जगत (और सांसारिक चर्च) मनुष्य-रचित उपहास्य मानकों द्वारा रिश्तेनातों को बनाता है। हमारा मानक क्या है? कहाँ से और किससे हम हमारा अधिकार प्राप्त करते हैं? प्रश्न ऐसा कभी नहीं रहना चाहिए, *"बहुत दूर कितना दूर है?"* लेकिन, *"क्या यह यीशु मसीह की महिमा करता है?"* और *"ऐसे रिश्तेनातों से हम यीशु मसीह को कितना सम्मान ला सकते हैं?"*

परमेश्वर का वचन यह नहीं कहता कि हमें केवल लैंगिक अनैतिकता को टालना चाहिए। यह हमें उसकी उपस्थिति से भी दूर भागने को कहता है (१ कुरिन्थियों ६:१८; २ तीमुथियुस २:२२)। हमें उसके साथ समय भी नहीं बिताना है। मैं कभी कभी ऐसे वाक्य सुनता हूँ :

- *"जब तक हम यौन सम्बन्ध नहीं बनातें, तब तक हम लैंगिक सहवास से शुद्ध हैं।"*
- *"मैं मेरे जोड़ीदार के साथ सो सकता हूँ, लेकिन एक समय में एक के साथ।"*
- *"हम साथ रह सकते हैं, यदि हम एक दूसरे को सच में प्रेम करते हैं।"*
- *"हलका सा चुम्मा लेना ठीक है, लेकिन होठों में होंठ डालकर चुम्मा लेना थोड़ा ज़्यादा हो जाता है।"*
- *"साइड से आलिंगन ठीक है, लेकिन सामने से आलिंगन नहीं।"*
- *"इस संस्कृति में हम उस तरह से नहीं करते।"*

लेकिन क्या हमारा लक्ष्य नियमों को स्थापित करने का हैं और फिर उसमे अपवाद खोजना हैं ? या क्या हमें रिश्ते को देखनेवाले जगत के सामने अपने परमेश्वर की महिमा करने के शानदार अवसर के रूप में उपयोग करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए क्योंकि वे हमें आत्मा में चलते हुए देखते हैं और, परिणामस्वरूप, देह की इच्छाओं को पूरा नहीं कर रहे हैं? क्या हमारे सभी रिश्तेनाते *"मेरे* (या हमारे) *लिए उसमे क्या है?"* या *"मसीह के लिए इसमे क्या है?"* इसके बारे में है? इसका कारण हमारे बहुत थोड़े रिश्तेनाते लोगों को यीशु मसीह की ओर इशारा करते हैं क्योंकि बहुत थोड़े स्वयं का इन्कार करने से शुरू होते हैं। उसको ऊँचा उठाने को खोजने के सिवाय, हम उसे उसमे समायोजित करने का प्रयास करते हैं।

आइए इसे फिर से कहें। मसीही जीवन का लक्ष्य मसीह की महिमा करना है-फिर वो खाना, पीना या जो कुछ हम करते हैं जो भी हो (१ कुरिन्थियों १०:३१)। क्या यह विधिवाद है? नहीं। यह उद्देश्य के साथ जीने की स्वतंत्रता है। दुर्भाग्य से, कई सारे जो अपने आप को मसीही कहते हैं वे सब जानवरों के समान जीते हैं, वे परमेश्वर के पवित्र आत्मा द्वारा जीने के बजाय उनकी कामुक इच्छाओं द्वारा जीते हैं।

रोमियों १३:१४ हमें बताता है, *"वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो।"* क्या हम हमारे घरों की रूपरेखा इस तरह से कर रहे हैं जो हमारे कामुक इच्छाओं को जगह देती हैं? क्या हम हमारे मन को पाप करने के लिए अपनी देह को प्रलोभित करने दे रहे हैं? रिश्तेनाते परमेश्वर के वचन से बनाने का अर्थ हम परमेश्वर के वचन को पूर्ण अधिकार के रूप में स्वीकार करते हैं।

समझौता और शालीनता के साथ खेलने का विकल्प हमें षडयंत्र रचनेवाले हमारे शत्रु के जाल में ले जाएगा।

"देह के लिए कोई प्रायोजन" न करने में सुरक्षा स्थापित करना और अपने आप को प्रलोभनों के मार्ग में नहीं रखना समाया हुआ है क्या? पूर्ण रूप से। क्या हमें धर्मी सलाह को खोजना और सम्मान करना चाहिए ? निश्चित रूप से। परंतु क्या हमारा लक्ष्य सीमा रेखा पर होना चाहिए? बिल्कुल नहीं। हमारे हृदय का लक्ष्य प्रभु यीशु से प्रेम करना और महिमा करना होना चाहिए, जो हमारे साथ हर क्षण, हर स्थान में है।

बहुतों ने ऐसा मान लिया हैं कि वे प्रलोभन का प्रतिकार करने में बलशाली हैं, वे ही तब लैंगिक पाप में पड़े हैं। क्या यह अचानक हो गया? नहीं, यह पाप के लिए रास्ता देने से हो गया, एक समय में एक सूक्ष्म छूट। *"फेलोशिप ऑफ़ द रिंग"* इस सिनेमा में, बोरोमीर एलरोंड की सलाह के बारे में बताता है, *"कोई सरल रूप से अंधकारमय क्षेत्र में नहीं चलता।"* उसी तरह से, हम कह सकते हैं, *"कोई सरल रूप से लैंगिक अनैतिकता में नहीं चलता।"*[२७] समझौता और शालीनता के साथ खेलने का विकल्प हमें षडयंत्र रचनेवाले हमारे शत्रु के जाल में ले जाएगा।

शुद्धता यह हम क्या नहीं करते इसके बारे में इतना नहीं जितना कि हम क्या करते हैं इसके बारे में हैं। शुद्धता एक खोज है।

लोकांतरण के लिए कुंवारा

मसीह ने आपको पहले विवाह के लिए नहीं बुलाया है। उसने आपको अपने आप के पास बुलाया है। यदि जीवन के रास्ते में, विवाह यह कदम होता है जहाँ वह आपको ले जाता है, तो परमेश्वर की स्तुति करो और उसे उसकी महिमा के लिए इस्तेमाल करो। यदि परमेश्वर, मगर, आपको विवाह से अविचलित जीवन जीने के लिए अगुवाई करता है, तो परमेश्वर की स्तुति करो और उसे परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल करो।

मेरे सांसारिक तीस उम्र में अकेला होते हुए, मुझे अक्सर पूछा जाता था कि क्या मैंने अकेले रहने का सोचा है? लोग पूछते है, *"क्या आप,* "लोकांतरण के लिए कुंवारे*" है? या सरल रूप से,* "क्या आप एक बीटीआर हैं?*" रिकॉर्ड के लिए, वह प्रश्न किसी आसान वर्ग में नहीं आता। मेरी प्रतिक्रिया सरल और सुसंगत है :* "मेरे पास केवल आज का दिन है, और आज मैं एक अकेला व्यक्ति हूँ, इसलिए उस बुलाहट में मुझे परमेश्वर की महिमा करना है।"

हमारे बहुत से विचार हमारे वर्तमान परिस्थिति से नहीं आते, लेकिन भविष्य के हमारे डर से आते हैं। क्या होगा यदि मैं दस वर्ष अकेला ही हूँ? क्या होगा यदि परमेश्वर मुझे मॉरिटानिया या भुतान को बुलाता है जहाँ पर बहुत थोड़े विश्वासी हैं (जिसका यह भी अर्थ कि वहां बहुत थोड़ी स्त्रियाँ है जो यीशु से प्रेम करती है)? क्या होगा यदि मुझे चार साल में कैंसर हो जाता है और मुझे बच्चे नहीं हो सकते?' क्या होगा यदि....?

परमेश्वर के वचन से रिश्तेनाते बनाने में दो अनुच्छेद मेरे मुख्य भाग थे। मैं अक्सर दोनों को पर विचार करता था।

१. मत्ती ६:३४

"अतः कल की चिंता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिंता आप कर लेगा; आज के लिए आज ही का दु:ख बहुत है।" यीशु ने स्पष्ट रीति से कल के बारे में चिंता करने को मना किया है। क्या हमारा भविष्य के बारे सोचना सुझाव देता हैं कि किसी तरह से, परमेश्वर हमारी ओर प्रेम से बर्ताव नहीं करेगा? हम हमेशा यह सपने देखते रहेंगे *"क्या होगा यदि"* हमारे भविष्य के संबंध में, परंतु मसीह की प्रभुता के अधीन होने में भविष्य के लिए हमारे सपने समर्पित करना भी शामिल हैं।

२. विलापगीत ३:२२-२३

"हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरुणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान् है।" परमेश्वर की दया आज के लिए काफी है- कल के लिए नहीं। उसने आपको मन्ना दिया है कि आज आपकी आत्मा को तृप्त कराएं। कल के लिए काफ़ी मात्रा में इकट्ठा करने का प्रयास करो और यह आपको बीमार करेगा। परंतु आप सोने जाने तक उसे पाओगे और शांति से सो जाओगे, यह जानकर कि जब उठोगे, परमेश्वर के दया का मन्ना फिर एक बार उस जमीन को ढ़क देगा जिस पर आप चलोगे।

ये दो वचन एकसाथ एक पैकेज़ बनाते है जो हमारे डर को कुचलता है, फिर वो रिश्तेनाते या और किसी और के बारे में डर हो!

उन्हें स्मरण करो।
उन्हें निकट रखो।
अक्सर उनके बारे में बताओ।

मैं मेरे डर (वर्तमान, हमेशा के काल में), मेरी चिंता, मेरे भविष्य के संबंध (या संबंध नहीं) इन्हें उसके साथ बना रहा हूँ जिसे मैं सत्य और चिरस्थायी के रूप में जानता हूँ- परमेश्वर का वचन।

सही जोड़ी ढूंढना

आइए मुझे यीशु के कुछ अप्रसिद्ध वचन बताने दीजिए जो जवानो के समूह के भक्ति से छूट जाते हैं। यीशु मत्ती १९:१२ में स्पष्ट रूप से कहता है, *"क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्होंने **स्वर्ग के राज्य के लिए** अपने आप को नपुंसक बनाया हैं। जो इसके ग्रहण कर सकता हैं, वह ग्रहण करें।"*

१ कुरिन्थियों ७:३२-३४ उसी कल्पना को प्रतिध्वनित करता है, *"अतः मैं यह चाहता हूँ कि तुम्हें चिंता न हो। अविवाहित पुरुष प्रभु की बातों की चिंता में रहता है कि प्रभु को कैसे प्रसन्न रखे। परन्तु विवाहित मनुष्य संसार की बातों की चिंता में रहता हैं कि अपनी पत्नी को किस रीति से प्रसन्न रखे। विवाहिता और अविवाहिता में भी भेद हैं : **अविवाहिता प्रभु की चिंता में रहती है** कि वह देह और आत्मा दोनों में पवित्र हो, परंतु विवाहिता*

संसार की चिंता में रहती है कि अपने पति को प्रसन्न रखे।" किसी भी तरह से मैं विवाह को हतोत्साहित नहीं कर रहा हूँ, लेकिन हर तरह से मैं हम सबको प्रोत्साहित कर रहा हूँ कि प्रभु जिसने हम सबके लिए अपना सब कुछ दे दिया उसे पूरी तरह से समर्पित हो।

परमेश्वर ने जो दौड़ आपको दी है उसे दौड़ो और फिर देखे कौन आपके साथ दौड़ रहा है।

जब मैं जवान लड़का था, तब एक मित्र ने मुझे एक सलाह दी : *"परमेश्वर ने जो दौड़ आपको दी है उसे दौड़ो और फिर देखे कौन आपके साथ दौड़ रहा है।"* प्रारंभ से, परमेश्वर ने जगत के जो लोग सुसमाचार नहीं जानते (खास करके दु:खी लोग) उन तक उसे ले जाये और यीशु मसीह के बिना शर्त अनुयायियों की पीढ़ी के लिए बोझ रखा था। परमेश्वर ने हम में से हर एक को दौड़ने के लिए एक दौड़ दी है, और यदि जीवन के रास्ते में, वह प्रगट करता है कि विवाह उसके लिए महान् महिमा लाएगा, तो अद्भुत है। लेकिन किसी भी तरह से, आइए दौड़ते रहें। पृथ्वी पर हमारे जीवन केवल सांस की तरह है, और हमारा अकेला रहना उसका केवल कुछ अंश ही होगा। क्या हम अकेले रहने के वर्षों को बर्बाद कर रहे हैं-जो प्रभु के प्रति अटूट भक्ति का बहुमूल्य मौसम है-प्रेमी संबंध में डूबे रहने के द्वारा ? या भयभीत होकर प्रभु को खोजते रहें? और भी ख़राब, क्या हम बिना विवाह का ध्यान रखे प्रेम में तुच्छतापूर्वक लिप्त हो रहे हैं?

क्या हम हमारी जवानी को विवाह या शहादत के प्रति ज़्यादा ज़ोर दे रहे हैं? (प्रेरित १:८ देखे यदि आपको इस वाक्य के बारे में कोई विचार है। इस वचन में "गवाही" के लिए ग्रीक शब्द का अनुवाद "शहादत" के रूप में दूसरे अनुच्छेद में किया है।) क्या हम गलत कल्पना को बताते हैं कि जीवनसाथी के बिना व्यक्ति अधूरा है-जब कि बाइबल की सत्यता यह है कि यीशु मसीह को, कोई जीवनसाथी नहीं, यह सिद्ध संतुष्टि का स्त्रोत है?

यहाँ पर भविष्य के जीवनसाथी को व्यवहारिक उद्धारकर्ता बनाने का एक बड़ा ख़तरा है। आइए मुझे स्पष्ट करने दीजिए।

बहुत सारे जवान वासना और कामुकता से संघर्ष करते हैं, उनमें मैं भी शामिल हूँ। ऐसा सोचना आसान है कि विवाह ऐसे संघर्ष पर उपाय करेगा। परंतु जब हम मसीह को छोड़कर किसी और को पाप समस्या के लिए उपाय के रूप में ढूंढते है, तब हम उस व्यक्ति को एक व्यवहारिक उद्धारकर्ता, एक मूर्ति, एक देवता बनाते हैं। *"क्योंकि वह अभिलाषी जीव को संतुष्ट करता है, और भूखे को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है।"* (भजन संहिता १०७:९)

परेशान विवाह चाहते हो? तो फिर आपके जीवनसाथी को उन इच्छाओं को पूरा करने की आशा रखो जो केवल मसीह संतुष्ट कर सकता है।

उत्तरों के स्थान पर प्रश्न

मैं यह समझने लगा हूँ कि विवाह की आशीष और अकेले रहने पर ध्यान केन्द्रित करने में पूर्ण सुंदरता है। मुझे गलत मत समझो। मैं एक सामान्य व्यक्ति हूँ। यदि मेरे मन के समान होता, तो मैं विवाहित होता। मैंने मेरे करीबी मित्र के साथ आदर्श लड़की के बारे में २४३ बार बातचीत की है। और हाँ, मेरे पास उत्तर हैं। ब्रुनेट, ५' ६'', खिलाड़ी, ऑस्ट्रेलियन (यह उच्चारण से बाहर है), इत्यादि। लेकिन शायद यह मेरी समस्या है। मेरे पास प्रश्नों के स्थान पर उत्तर हैं। इतने वर्षों में, मेरे सामने बहुत सारे प्रश्न आए जो मैंने अपने आपसे पूछे, शास्वता के प्रकाश में, भविष्य के संबंध के बारे में। ये प्रश्न स्पष्ट रूप से पुरुष दृष्टिकोण से लिखे हैं-उसके लेने और उन्हें लागू करने की स्वतंत्रता महसूस करें।

१. क्या यह लड़की मुझे यीशु से प्रेम करने और उसके बारे में अधिक जानने की इच्छा जगाती है?

२. क्या वह जितना प्रेम मुझसे करती है उससे ज़्यादा यीशु से प्रेम करती है?

३. क्या हम व्यक्तिगत रूप से बढ़कर एकसाथ मिलकर यीशु की अधिक प्रभावी सेवा कर सकते हैं?

४. क्या जवान लोग यीशु के पीछे बिना शर्त अनुसरण करते देखने का जोश उसके पास हैं?

५. क्या वह प्रभु यीशु मसीह के लिए मरने को तैयार है?

६. क्या वह मसीह की खातिर जीवन के प्रारंभ में विधवा होने के लिए तैयार है?

७. क्या मैं उसकी वजह से ज़्यादा प्रार्थना कर रहा हूँ?

८. क्या वह मेरे बच्चों की अच्छी मां हो सकती है?

९. क्या वह भटके हुए आत्माओं के लिए मेरे दर्शन को बढ़ावा देती है?

१०. क्या वह ईमानदार, साथ ही प्रोत्साहन देनेवाली है?

सारांश में, यदि यह लड़की मसीह के लिए मेरे प्रेम को नहीं बढ़ाती है, तो मुझे अपने आपको यह प्रश्न पूछना है : किसे मैं ज़्यादा खोज रहा हूँ? मसीह या लड़की? यह केवल तभी जब मसीह को प्रथम स्थान है तो मैं अपने पत्नी को प्रेम करने में समर्थ हूँगा, *"जैसे मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया"* (इफिसियों ५:२५)। विवाह करना यह मेरा उद्देश्य नहीं है। उसे जानना और उसे औरों को बताना यह है। यदि उस रास्ते पर विवाह हो जाता है, तो मैं रोमांचित हो जाऊँगा। यदि नहीं, तो मैं दौड़ता रहूँगा। वह योग्य है!

मसीह का अनुसरण करने की आपकी इच्छा को असफल करने का एक सबसे त्वरित मार्ग यह किसी के साथ एक संबंध की खोज करना है जो यीशु मसीह के साथ नहीं चल रहे हैं। अत्यधिक या अक्सर, मैं जवानों (जो मसीह के अनुयायी होने का दावा करते हैं) को यह तुच्छ वाक्य कहते हुए सुनता हूँ (वे उनके संबंध के चुनाव के बारे में मुझे मनाने का प्रयास करते है); *"[मेरे सहयोगी] परमेश्वर पर विश्वास रखे!"* शैतान भी ऐसा ही करता है (याकूब २:१९)। यीशु मसीह के अनुयायियों के लिए, एक संबंध की खोज करना यह मसीह की परस्पर खोज करना है। असमान जुए में जुड़ना (२ कुरिन्थियों ६:१४) यह दूसरे विश्वास के किसी की खोज करने के लिए मर्यादित नहीं है, लेकिन उसकी खोज करने में भी है जिसे आप से अलग आत्मिक महत्वाकांक्षा है।

वे जो पहले से ही विवाहित हैं, वे अपनी दौड़ अच्छी तरह से दौड़े। आपको ज़िम्मेदारी है कि आपस में प्रेम करें और एक दूसरे के शारीरिक, आत्मिक और भावनात्मक आवश्यकताओं के लिए फ़िक्र करे। फिर भी यीशु मसीह की बुलाहट के प्रति अविश्वासी रहने के लिए विवाह यह कभी भी बहाना नहीं है।

जब प्रेम नफरत समान नजर आता है

लूका १४:२६ में, यीशु भीड़ को इस वाक्य से संबोधित करते है। *"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"* जगत की दृष्टि में, प्रेम नफरत समान नजर आ सकता है। कभी कभी जिन चीज़ों को हम प्रेम के रूप में जानते हैं वास्तव में वे हमारे परिवार की आत्माओं के लिए जबरदस्त नफरत के उदाहरण होते हैं। हम में से बहुतेरे सहमत होते हैं कि एक व्यक्ति की पहली सेवकाई घर पर है। लेकिन क्या हम उस सेवकाई को गंभीरता से लेते हैं? हमारे अपने बच्चे या हमारे समाज के दूसरे जवानों के साथ, हमारी प्राथमिकता क्या हैं? उन्हें उनके पहली नौकरी के लिए तैयार करना या उन्हें यीशु मसीह के साथ भेंट कराने को मार्ग दिखाना? क्या हम अपनी लड़की को एक

दिन मसीह के समक्ष लज्जा भरे- चेहरे से खड़े होने, और उसने जगत की बातों पर अपने जीवन का समय बर्बाद किया इसके बारे में सोचने से अधिक वह पढ़ाई में कम अंक प्राप्त कर रही है उस बारे में सोचते है? जी हाँ, हमें आत्मिक विषयों समान पाठशाला के विषयों में भी सोचना चाहिए। लेकिन जब हम पहली बात पर काम करते हैं, तो क्या हम बादवाली बात को नजरंदाज नहीं करेंगे! इस तरह का संतुलन यीशु ने सिखाया। *"चाहिए था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते"* (मत्ती २३:२३)।

मसीह का अनुसरण करने की आपकी इच्छा को असफल करने का एक सबसे त्वरित मार्ग यह किसी के साथ एक संबंध की खोज करना है जो यीशु मसीह के साथ नहीं चल रहे हैं।

क्या हम अपने बच्चों के शास्वत उद्देश्य के प्रति जीने के लिए उनकी आत्मा में इच्छा को जागृत करने से बढ़कर उनके साथ सांसारिक निकटता का आनंद प्राप्त करेंगे-भले ही वह इच्छा उन्हें विश्व के दूसरी ओर जीवन जीने को मजबूर कर दे ? हमें किससे अधिक आनंद मिलेगा : हमारे बच्चे सांसारिक सफलता का सुखसुविधा भरा जीवन जीयें या वें अपना जीवन उस प्रभु के लिए त्याग दे जिसके मन में उनके लिए समय और शास्वतता के लिए बेहतर है? क्या हमने खुद को इस तरह से नकार नहीं दिया हैं कि हम वास्तव में उन लोगों के लिए जीवन को बर्बाद करना चाहते हैं जिन्हें हम सबसे अधिक प्रेम करने का दावा करते हैं? क्या हम अपने आपके साथ और अपने बच्चों के साथ पूरी तरह से ठीक हैं कि जो अनंतकाल पर न्यूनतम प्रभाव डालने की इसकी क्षमता के बावजूद *"अमरीकी सपने"* पूरा करने का सपना देखते हैं?

क्या हम अपने बच्चों के लिए यह सपना नहीं देखतें और उन्हें प्रोत्साहित नहीं करते कि एक दिन वे सुसमाचार को उन लोगों तक लेकर जायेंगे जिन तक सुसमाचार नहीं पहुंचा हैं ? क्या हम उन्हें उन पुरुषों और स्त्रियों की कहानी सुनाते हैं जिन्होंने यीशु के नाम की खातिर सब कुछ दे दिया? क्या ऐसे विश्वासी लोगों का वे अनुकरण करे ऐसी चाहत हम रखते हैं? या खेल के सितारे और मनोरंजन करनेवाले व्यक्तियों के नाम सबसे ज़्यादा हमारे घर में परिचित और आदर से लिए जाते हैं? क्या हम अपने बच्चों के हृदयों पर प्रार्थना के महत्त्व का प्रभाव डालते हैं? या वे बैचेलर, ब्रिटन गॉट टैलेंट, और भटके हुओं के आसपास के रहस्य के बारे सोचते हुए घर छोड़ते हैं? क्या हम एसाव जैसे मूर्ख है, जो आज के आराम देनेवाले और आसान करनेवाले की खातिर अनंतकाल की बातों को बेचते हैं? क्या होगा यदि यीशु का वास्तव में वही मतलब था जो उसने कहां? *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाएं, और मेरे पीछे हो ले।"*

आपके रिश्तेनाते, आपका विवाह, आपकी मित्रता और आपके परिवार की रुपरेखा बनाने के लिए समय निकाले-समाज द्वारा नहीं, लेकिन परमेश्वर के वचन द्वारा। परिणाम को सांस्कृतिक मसीहियत समान थोड़ा देखने की आशा करे।

जब हम हमारे जीवनों के इस क्षेत्र की रुपरेखा बनाना शुरू रखते हैं, उस प्रभु को याद रखे जिसे हमें हमारी इच्छा समर्पित करना है; वही एकमात्र है जिसने उस कल्पना और सत्यता को बनाया है जिसे हम सब रिश्तेनातों में आनंद लेते हैं। उसके प्रेम में आनंद लेना।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. परमेश्वर के वचन से कौनसे कुछ सिद्धांत जो हमें पहले से ही पता हैं जो सत्य हैं जिसे हम हमारे रिश्तेनाते बनाने में उपयोग कर सकते हैं?

२. भविष्य के डर से आपके वर्तमान रिश्तेनाते के निर्णय को कैसे प्रभावित कर सकते हैं?

३. क्या आपकी होनेवाली पत्नी से आप आशा रखते है कि वह आपके किसी संघर्ष या समस्या का समाधान निकाले? स्पष्टीकरण दीजिए। इसके बजाय आपको किसकी ओर देखना चाहिए और क्यों?

४. यदि आपको बच्चे हैं, तो आप उनमें किस तरह के सपने और जूनून को बढ़ावा दे रहे और प्रोत्साहित कर रहे हैं?

१३

परमेश्वर के वचन द्वारा अपने शब्दों को बनाना

आगे, आइए हम अपने शब्दों पर ध्यान दें। केवल वे ही नहीं जो हमारे मुख से निकलते हैं, परंतु वे जो हमारी उँगलियों से लिखे जाते हैं, हमारे शरीर के हावभाव से व्यक्त किये जाते हैं, या हमारे वस्त्रों पर प्रदर्शित होते हैं।

मसीह के अनुयायी के रूप में, हमारे जीवन ये सभी मनुष्यों द्वारा पढ़े जानेवाले पत्र हैं। *"हमारी पत्री तुम ही हो, जो हमारे हृदयों पर लिखी हुई है और उसे सब मनुष्य पहिचानते और पढ़ते हैं। यह प्रगट है कि तुम मसीह की पत्री हो, जिसको हम ने सेवकों के समान लिखा, और जो स्याही से नहीं परंतु जीवते परमेश्वर के आत्मा से, पत्थर की पटियों पर नहीं, परंतु हृदय की मांस रूपी पटियों पर लिखी है"* (२ कुरिन्थियों ३:२-३)। परमेश्वर का वचन नहीं कहता कि आप एक पत्र होवे (या ईमेल या लिखावट), न ही यह कहता है कि मनुष्यों ने आपके जीवन को पढ़ना है। बल्कि, यह हमें बताता है कि आप एक पत्री हो और वे आपके जीवन को पढ़ रहे हैं। मेरे लिए एकहीं प्रश्न है जो यह है : मेरे जीवन में संसार क्या पढ़ रहा है- यीशु मसीह या नाटे ब्रॅमसेन?

रवी जखरियास-ने जब मैं बीस वर्ष का था तब मेरे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है- उन्होंने कहां, *"बहुत सारे लोग कहते हैं की यहाँ पांच सुसमाचार है : मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना और मसीही लोग। दुर्भाग्य से, कई सारे पहले चार कभी नहीं पढ़ेंगे।"*

अनगिनत स्त्रोतों को समर्पित, ये छोटीसी कविता वास्तविकता को बताती है।

आप एक सुसमाचार लिख रहे हो, एक दिन एक पाठ,

चीज़ें जो आप करते हैं और शब्द जो आप बोलते हैं उसके द्वारा,
आप जो लिखते है वह मनुष्य पढ़ते हैं, विकृत या सत्य,
आपके अनुसार, सुसमाचार क्या है?

तो एक जीवन जो परमेश्वर के वचन से बनाया गया है वह कैसे दिखे?

मसीह के अनुयायी के रूप में, हमें ऐसा होना चाहिए, *"ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके"* (तीतुस २:८)। दोषारोपण से परे सरल बोलते रहने से ज़्यादा, हमें आज्ञा दी गई है : *"कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो"* (इफिसियों ४:२९)। हमारे मुँह से जो भी निकले है वह न केवल दोषरहित होना चाहिए, पर वह सुननेवालों की उन्नति करनेवाला होना चाहिए। जो कुछ किबोर्ड पर टाइप किया जाता है उससे अनुग्रह मिलना चाहिए। यह साधारण रचना केवल हमारे जीवनों को नहीं बदल सकती, परंतु उनके जीवनों को भी जिन्हें हम ये बताते हैं। आइए हम इस बात विचार करें कि हम हमारे बोलने के लिए परमेश्वर के वचन के अनुसार रुपरेखा कैसे बना सकते हैं ।

हमारे शब्दों के लिए छन्नी

"इसलिए हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो" (फिलिप्पियों ४:८)।

जो कुछ हमारे मुंह या किबोर्ड से निकलता है वह पहले ही हमारे मनों से निकल कर आए हैं।

कल्पना कीजिए कि यदि हमने परमेश्वर-प्रेरित इस वाक्य को न केवल हमारे बोलनेवाले शब्दों पर लागू किया होता, पर हमारे सामाजिक माध्यम पोस्टिंग पर भी : व्हाट्सअप, स्नेपचैट, फेसबुक, ट्विटर, इन्स्टाग्राम (मैं केवल उन सूची को बता रहा हूँ जो मैं इस्तेमाल करता हूँ), और जो कुछ भी आनेवालें दिनों में अविष्कृत किया जाएगा कल्पना कीजिए कि हर एक पोस्ट को इस पवित्र आत्मा की छन्नी से होकर जाना हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, फिलिप्पियों ४:८ की छन्नी को हमारे विचारों पर प्रथम लागू

करना चाहिए, क्योंकि जो कुछ हमारे मुंह या किबोर्ड से निकलता है वह पहले ही हमारे मनों से निकल कर आए हैं।

आइए इस छन्नी की ओर थोड़े निकट से देखे।

१. क्या यह सत्य है?

सत्य यह सबसे पहला है! क्या हमें निश्चित रूप से यह पता हैं कि शब्द जो हम बोल रहे हैं या पोस्ट कर रहे हैं वे सत्य हैं? पूरी तरह से सत्य? (यह प्रश्न अधिकांश समाचार स्त्रोतों को स्वयं ही अपात्र ठहराता है।) परमेश्वर का चरित्र एक तरह पूर्ण सत्य जैसा है (यूहन्ना ३:३३)। जो कुछ भी जो पूरी तरह से सत्य नहीं है वह परमेश्वर को योग्य रीति से प्रतिनिधित नहीं करता। यदि वाक्य में अतिशयोक्ति, चापलूसी या धोखा है, तो यह परमेश्वर के हृदय से नहीं आ रहा है।

क्या यह सत्य है?

नहीं? आइए उसे नष्ट होने दे। जी हाँ? अगले #२ की ओर चले।

२. क्या यह महान् है?

"महान् " की परिभाषा *"व्यक्तिगत गुण रहना या दिखाना या उच्च नैतिक सिद्धांत और आदर्श, आदरणीय, वह जो सर्वोत्तम या श्रेष्ठ गुण दिखाते है के रूप में की गई है।"*[२८] फिलिप्पियों ४ में उपयोग किये गए शब्द उससे गहन है। यह ग्रीक शब्द, सेम्नॉस, नए नियम में केवल चार बार आता है। भाष्यकार बार्क्ले ने लिखा है कि यह विशेष शब्द अनुवादित करना कठिन है, लेकिन स्पष्ट करता है कि जब सेम्नॉस का एक व्यक्ति का वर्णन करने के लिए उपयोग करते है, तो यह प्रभु को दर्शाता है जो *"पूर्ण संसार में फिरता है [प्रभु फिर रहा है] जैसे कि वह परमेश्वर का मंदिर है .... लेकिन शब्द [सेम्नॉस] वास्तव में वर्णन करता है जिस पर पवित्रता की गरिमा है।"*[२९] मसीह के अनुयायियों को *"पवित्र आत्मा का मंदिर"* (१ कुरिन्थियों ६:) और *"मनुष्यों द्वारा पढ़ी जानेवाली पत्री"* (२ कुरिन्थियों ३;२) कहते हैं। क्या हम जब बोलते हैं तब संसार परमेश्वर की पवित्रता और गरिमा का अनुभव करता है?

क्या यह महान् है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #३ की ओर चले।

३. क्या यह सही है?

"सही" रहने का अर्थ परमेश्वर के अचल मानक के अनुरूप होना है। दूसरे शब्दों में, मानक जो योग्य है यह हमारे मित्र या हमारे संस्कृति ने स्थापित नहीं किया है, लेकिन परमेश्वर के वचन ने किया है। कभी कभी, यह शब्द *"मासूम"* या *"धर्मी"* के रूप में अनुवादित किया जाता है। क्या हमारे शब्द उस प्रभु की उपस्थिति में धर्मी हैं जो सब देखता और सुनता है?

क्या यह सही है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #४ की ओर चले।

४. क्या यह शुद्ध है?

यह एक शक्तिशाली शब्द है। इसमे पूरी तरह से बेदाग़ होना, किसी भी दूषण से मुक्त, और दूसरों को दूषित करने में असमर्थ ऐसे विचार इसमें हैं। क्या हम यह प्रश्न पूछते हैं, *"क्या यहाँ कोई मार्ग है कि यह विचार या शब्द एक आत्मा को दूषित कर सकेगा और उसे उसकी ओर इशारा करेगा जो मसीह नहीं है?"*

क्या यह शुद्ध है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #५ की ओर चले।

५. क्या यह प्यारा है?

यह शब्द-प्रोसफाईल-सरल रूप से सुंदर है। यह ग्रीक शब्द दो भागों से बना है, प्रोस मतलब *"उसकी ओर"* और फाईल्स का मतलब *"मित्र।"* सरल रूप से कहें तो, प्यारे शब्द ये शब्द हैं जो दूसरों को सुखद करते हैं। एम्पलीफाईड बाइबल इसके अनुवाद में *"मनोहर"* इस शब्द को उचित रूप से उपयोग में लाता है। जबकि यहाँ कुछ संदर्भ होते हैं जिसमे शब्द प्रेम में बोले जाते हैं वे किसी समय सुखद नहीं होते, शास्वतता को ध्यान में लेते हुए, वह शायद सबसे प्यारी बात जो एक मित्र कहता है। क्या मेरे शब्द सुखद और लाभदायक है?

क्या यह प्यारा है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #६ की ओर चले।

६. क्या यह अच्छी रिपोर्ट है?

हम इसे सरल रख सकते हैं। क्या आप अपने शब्दों का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए दूसरों की ख्याति को बढ़ाने के लिए कर रहे हैं? कुछ सालों पहले, परमेश्वर ने मुझे दूसरे पास्टर, शिक्षक या मसीह अनुयायियों के बारे में मेरे संदेश में (या किसी भी सार्वजनिक सभा के संदर्भ में), उनके बारे में मेरी किसी भी राय की परवाह किए बिना, नकारात्मक बोलने के बारे में दोषी ठहराया। इसका यह मतलब नहीं है कि हम झूठे सिद्धांत और पापी आचरण पर न बोले, लेकिन हमें किसी के चरित्र को पूरी तरह से नष्ट किये बिना ऐसा करना चाहिए।

क्या यह अच्छी रिपोर्ट है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #७ की ओर चले।

७. क्या इसमें कोई गुण है?

"गुण" के लिए समानार्थी शब्द *"उत्कृष्टता"* है। क्या मेरा बोलना मेरे सुननेवालों की उन्नति करता हैं? या क्या यह निठल्ले या बेकार की बकबक है? क्या मेरे शब्द प्रासंगिक और आवश्यक हैं?

क्या इसमे कोई गुण है?

नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो अगले #८ की ओर चले।

८. क्या इसमे कोई सराहनीय बात है?

इन आठ बातों में अंतिम छन्नी हमें यह बताती हैं कि हमारे विचार और शब्द सराहनीय होने चाहिए, इसका मतलब *"जिसकी सराहना हो"* या *"तालियों के योग्य"* हो। *"गुण"* से अलग इस शब्द का अक्सर बाइबल में परमेश्वर का वर्णन करने उपयोग करते है, जो स्तुति के योग्य है। क्या मेरा बोलना परमेश्वर की स्तुति और महिमा उत्पन्न करता है? जो सब कुछ हम करते हैं, यही उद्देश्य रहे।
क्या इसमे कोई सराहनीय बात है?
नहीं? आइए इसे नष्ट होने दे। जी हाँ? तो फिर उस पर विचार करे, उसे कहें, पोस्ट करे-जैसे परमेश्वर का पवित्र आत्मा अगुवाई करता है।

हमारा बोलना हमेशा के लिए बदल जाएगा यदि हम फिलिप्पियों ४:८ द्वारा छन्नी करने की आदत को विकसित करें।

निंदा : जब हम करते हैं जिससे परमेश्वर नफरत करता है

अब तक आप में से किसी ने निर्णय किया होगा कि रुपरेखा बनाने की ये बातें बहुत ही गहन हो गई हैं। लेकिन क्या होगा यदि परमेश्वर का वचन का मतलब वही होता है जो वह कहता है? क्या होगा यदि परमेश्वर आप में जीवित है इसका अनुभव करने की स्वतंत्रता अपने स्वयं का इन्कार करना, स्वयं को मरना और केवल मसीह के लिए जीवित रहने के द्वारा आती है ? क्या होगा यदि परमेश्वर को आपके बोलने के कुछ हिस्से में केवल इजाजत नहीं चाहिए, बल्कि आपके सम्पूर्ण अस्तित्व के लिए ? क्या होगा यदि परमेश्वर को आपके विचार, शब्द और पोस्ट पर स्वामित्व चाहिए?

लेकिन, आइए हम इसे दूसरे क्षेत्र पर लागू करें। निंदा।

ग्रीक भाषा में, सिथिरिस्टेस ("निंदा") शब्द का अर्थ: धीरे से बोलनेवाला, चोरी से पीठ में छुरा घोंपने वाला, दूसरे व्यक्ति के चरित्र को गुप्त रूप से नष्ट करनेवाला, इसका मतलब, छिपे तौर पर, खुले में आकर नहीं, लेकिन इसके बजाय *"कोने में"* काम करनेवाला।

क्या यहाँ कोई समय है जब ऐसा दूसरों के लिए करना ठीक है ? कभी नहीं? हम बहाने बनाना या कुछ अपवाद ध्यान में लेने से पहले, परमेश्वर का वचन निंदा (बाइबल इस विषय में बहुत कुछ कहती है) के बारे में क्या कहता है उस पर ध्यान दें। *"जो छिपकर अपने पड़ोसी की चुगली खाए, उसका मैं सत्यानाश करूँगा; जिसकी आँख चढ़ी हों और जिसका मन घमंडी हैं, उसकी मैं न सहूँगा"* (भजन संहिता १०१:५)।

अब कल्पना कीजिए यदि परमेश्वर जिन सब बातों से नफरत करता है वह सबसे बड़ी बातों की सूची बनाएगा। हर कल्पनीय पाप से बाहर, खून से घमंड से अनैतिकता से गुप्तता तक, परमेश्वर की सूची में क्या आएगा?

ओह, ठहरिए। उसने सूची बनाई है।

"छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन् सात हैं जिन से उसको घृणा है : अर्थात् घमंड से चढ़ी हुई आँखे, झूठ बोलनेवाली जीभ, और निर्दोष का लहू बहानेवाले हाथ, अनर्थ कल्पना गढ़नेवाला मन, बुराई करने को वेग से दौड़नेवाले पाँव, झूठ बोलनेवाला साक्षी

और भाइयों के बीच में झगड़ा उत्पन्न करनेवाला मनुष्य" (नीतिवचन ६:१६-१९)। क्या आप ने इस पर ध्यान दिया कि सात बातों में से तीन बातें जिसे परमेश्वर नफरत करता है उसमे अपने शब्द शामिल है, अंतिम दो निंदा पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं?

क्या आपको पता हैं कि परमेश्वर निंदा और बदनामी को उसी वर्ग में रखता है जैसे खून, लैंगिक अनैतिकता और परमेश्वर से नफरत? *"जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, तो परमेश्वर ने भी उन्हें उनके निकम्मे मन पर छोड़ दिया कि वे अनुचित काम करें। इसलिए वे सब प्रकार के अधर्म, और दुष्टता, और लोभ, और बैरभाव से भर गए, और डाह, और हत्या, और झगड़े, और छल, और ईर्ष्या से भरपूर हो गए, और* ***चुगलखोर, बदनाम करनेवाले,*** *परमेश्वर से घृणा करनेवाले, दूसरों का अनादर करनेवाले, अभिमानी, डिंगमार, बुरी बुरी बातों के बनानेवाले, माता पिता की आज्ञा न माननेवाले, निर्बुद्धि, विश्वासघाती, मयारहित और निर्दय हो गए। वे तो परमेश्वर की वह विधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेवाले मृत्यु के दंड के योग्य हैं, तौभी न केवल आप ही ऐसे काम करते हैं वरन् करनेवालों से प्रसन्न भी होते हैं।"* (रोमियों १:२८-३२)

इन वचनों को ध्यान में लेकर, क्या यहाँ निंदा करने का कभी कोई अच्छा समय है?

आराधना करने के बजाय रोना-पीटना

शिकायत करने के बारे में क्या? ओह हाँ। जब तक आप कर सकें इस पुस्तक को बंद कर दें!

बहुत देर हो गई।

*"**सब काम** बिना कूड़कूड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक संतान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो"* (फिलिप्पियों २:१४-१५)। इस वचन में *"सब काम"* का मतलब क्या है ऐसा आप सोचते हैं? जी हाँ, इसका मतलब सब काम।

शिकायत करना यह अविश्वास के लक्षण है। कूड़कूड़ाना यह बोलने का और एक तरीका है, *"परमेश्वर हमेशा ही अच्छा नहीं है"* या *"परमेश्वर हमेशा ही विश्वासयोग्य नहीं है।"*

इस्राएली लोग हाल ही में उनके लाल समुंदर को पार करने से बाहर आए है। परमेश्वर को स्तुति का गीत गाने के बाद, निर्गमन १५:२२ हमें बताता है, *"तब मूसा इस्राएलियों को*

लाल समुद्र से आगे ले गया, और वे शुर नाम जंगल में आए; और जंगल में जाते हुए तीन दिन तक पानी का सोता न मिला।" इस समय लोग कुड़कुड़ाने और शिकायत करने लगे, ये बात जो वे उनके जंगल के पूरे सफ़र में करते रहे। और वे जंगल में तीन दिन बाद चलने के बाद उन्हें क्या करना आवश्यक था? निर्गमन अनेकों बार रिपोर्ट देता है कि इस्राएली लोगों को जंगल में तीन दिन तक सफ़र करना है कि परमेश्वर को बलिदान चढ़ाए और उसकी आराधना करे। और इसके बजाय उन्होंने, तीन दिन बाद क्या किया ?

उन्होंने शिकायत की। आराधना करने के बजाय वे रोना-पीटना करते रहें।

यह महत्वपूर्ण है। जब हमें रोना-पीटने का प्रलोभन होता हैं, तो यह शायद आराधना करने का समय है। जब परिस्थिति कठिन नजर आती है, तब परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करने के लिए स्थिति तैयार है। क्या हमारे हृदय शिकायत करने को तैयार रहते हैं जब हम सोचते हैं जिसके हम पात्र है उससे हमें कम मिला है ? परमेश्वर चाहता है हमारा रोना-पीटना आराधना में बदल जाए, इस कारण से नहीं कि ये उसे महिमा लाता है, लेकिन इस कारण से कि यह मसीह में हमें जो आशा है उसकी एक झलक जगत को देता है। शिकायत होती है जब हमारी उम्मीद पूरी नहीं होती, लेकिन तब क्या जब हमारी आशा हमारे जीवनों के लिए परमेश्वर के परिपूर्ण योजना से कम हो जाती है?

जब हमें रोना-पीटने का प्रलोभन होता हैं, तो यह शायद आराधना करने का समय है।

शिकायत करने की आत्मा के विरुद्ध धन्यवादी आत्मा है। *"हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिए मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है"* (१ थिस्सलुनीकियों ५:१८)। ऐसी भावना के चोरों में से एक असंतोष है। वह चोर आता है और हमारे आनंद को चुराता है जब हम अपना ध्यान अनंतकाल की बातों पर से ज़्यादा सांसारिक बातों पर केन्द्रित करते हैं। परंतु यदि हम परमेश्वर के प्रति धन्यवादी आत्मा में जीवन जीते हैं तो यह दूसरों के प्रति वैचारिक आत्मा के लिए अगुवाई करेगा।

चिंता की मौत

परमेश्वर का वचन चिंता करने के बारे में क्या कहता है?

यीशु ने इस पर भी बोध दिया है। वास्तव में, उसने केवल यह सुझाव नहीं दिया कि यह एक बुरी कल्पना है; उसने अपने चेलों से कहां कि उनके जीवन में चिंता का कोई स्थान नहीं हैं जो उसके ज्ञान, शक्ति और प्रेम पर विश्वास रखते हैं। हाल ही में, मसीह का एक माननेवाला अनुयायी दूसरे को सलाह देता हुआ मैंने हलके से सुना, *"चिंता करना सामान्य है।"* क्या ऐसा है? *"चिंता"* करना उतना ही सामान्य है जितना कि वासना करना, लेकिन क्या किसी एक को भी सही ठहराता हैं? उसके पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने कहां, *"इसलिए मैं तुम से कहता हूँ कि अपने प्राण के लिए यह चिंता न करना कि हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे; और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहिनेंगे। क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?"* (मत्ती ६:२५)।

यीशु ने चिंता न करना यह वाक्य उसी उपदेश में चार बार दोहराया है। यदि देहधारित परमेश्वर एक ही स्थान पर उसी बात को पांच बार कहता है, तो हमें उस पर ध्यान देना चाहिए। चिंता करना परमेश्वर के चरित्र का और उसकी देखभाल, करुणा, शक्ति और प्रेम का इन्कार करने का अपमान करना है। आगे, एक चिंता करनेवाली आत्मा शिकायत करनेवाली आत्मा के लिए मार्ग तैयार करता है।

क्या हम अपने भविष्य को इन सवालों से बना सकते हैं कि क्या हो सकता है या कौन नियंत्रण रखे हुए है?

चिंता के लिए उपाय यीशु के अगले शब्दों में मिलता है। *"आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्य नहीं रखते? तुम में कौन है, जो चिंता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?"* (मत्ती ६:२६-२७)

नायगेर में, मेरे घर पर सुंदर बगीचा है (जब मैं वहां गया था वह केवल बंजर जमीन थी जिससे वह उत्पन्न हुआ) पत्तों से ढके एक मंडप के साथ। मेरे सुबह की दिनचर्या में से एक हैं लताओं के बीच में पक्षियों का गुनगुनाना सुनना और यह स्मरण करना कि एक नया दिन उदय हुआ है जिसमे, फिर एक बार, उनका सृष्टिकर्ता उनके लिए देखभाल कर रहा है। अगर पक्षी गीत गा सकते है, तो मैं भी उस पर कैसे भरोसा नहीं रख सकता और उसकी स्तुति नहीं कर सकता? क्योंकि मेरे पास स्वर्गीय पिता है, क्या मैं मेरी चिंताओं को प्रार्थना में न बदल दूँ?

"किसी भी बात की चिंता मत करो; परंतु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएँ। तब परमेश्वर

की शांति, जो सारी समझ से परे हैं, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।" (फिलिप्पियों ४:६-७)

अपने बोलचाल को समर्पित करो

यदि परमेश्वर के वचन को अपने विचार और बोलने को बनाने देना कठिन महसूस होता है, तो ठीक, आप इसे समझ रहे हैं... यह ऐसा ही है!

याकूब हमें बताता है, *"पर जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता; वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है"* (याकूब ३:८)। तो क्या किया जा सकता है? क्या हम और भी कठिन प्रयास करें? नहीं, हमें अपने नियंत्रण को छोड़ देना चाहिए। हमें पवित्र आत्मा को समर्पित हो जाना है और हमारे विचार, हमारी जीभ, हमारे शब्द, हमारे पोस्ट, हमारे चित्र, हमारे ट्वीट्स....हमारे सब कुछ पर उसे नियंत्रण करने के लिए आमंत्रित करे। यह समर्पित होना केवल तब होता है जब हम पहचानते हैं कि हम मृत है और मसीह अब हम में जीवित है। जी हाँ, फिर एक बार, हमें अपने पुराने स्वयं का और उसकी इच्छाओं का इन्कार करना है।

रोमियों ६:१३ में, हमें आज्ञा दी है, *"और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो।"* हमारे शरीर के अंग साधन हैं। साधन के लिए यहाँ पर उपयोग किया हुआ ग्रीक शब्द न्यूटूल है। ये साधन (मस्तिष्क, जीभ, आँखे, कान, हाथ, पैर इत्यादि।) ये न तो अच्छे हैं न बुरे हैं। ये समझ हमें कहती है कि अपने आप से कुछ प्रश्न पूछे :

- क्या मैं प्रभु और उसके वचन को ध्यान में लिए बगैर कार्य करने या बोलने में जल्दी करता हूँ?
- मेरे शरीर के साधनों को कौन नियंत्रण करता है?
- इन साधनों को मैं किसे सौंपता हूँ?
- दिन के लिए कौन निर्णय करता है? स्वयं? या पवित्र आत्मा?
- क्या मैंने मेरा मन और मुख को परमेश्वर को समर्पित किया है?

परमेश्वर के प्रति इस समर्पण भाव से जीना एक बार का निर्णय नहीं है। इसके लिए क्षण क्षण में समर्पित होने की आवश्यकता है। गीत लेखक, काटे विल्किंसन, ने पूरी तरह से इसे व्यक्त किया है :

मसीह, मेरे उद्धारकर्ता का मन,

दिन ब दिन मुझ में रहे,

उसके प्रेम और शक्ति से नियंत्रण करे,

जो सब कुछ मैं करता हूँ और बोलता हूँ।[३०]

क्या ऐसा है?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके जीवन की पत्री से दूसरे लोग कौनसी बातें, अच्छी या बुरी पढ़ रहे हैं?

२. फिलिप्पियों ४:८ से कौनसे आठ छन्नी को आप लागू करने में संघर्ष करते हैं? आप इस क्षेत्र में कैसे विजय प्राप्त कर सकते हैं?

३. जब परमेश्वर आराधना की इच्छा करता है तब हम हमारे जीवनों में कहाँ पर रोना-पीटना या शिकायत करते हैं?

४. भविष्य में शिकायत करने के लिए चिंता करना हमें कहां तैयार कर रही हैं?

५. कुछ भी हो जाए के बजाय कौन नियंत्रण में है इसके द्वारा मैं मेरे भविष्य की रुपरेखा कैसे बना रहा हूँ?

१४

परमेश्वर के वचन द्वारा क्षमा करने की प्रक्रिया को बनाना

इसकी कल्पना कीजिए। गंभीरता से।

क्या होगा यदि हमने हर एक जीवन को यीशु मसीह की दृष्टि से देखा है?

इसमें कोई शक नहीं, हमारा अस्तित्व परिवर्तित हो जाएगा और हमारे आसपास का जगत यीशु को हम में देख सकेंगे।

जी हाँ, मसीह दूसरों के बारे में क्या सोचता है यह हम जान सकते हैं, लेकिन क्या हम उसके समान सोचना चाहते हैं? पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को उपदेश दिया, *"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो"* (फिलिप्पियों २:५)। यहाँ पर और एक महत्वपूर्ण मार्ग है कि हमें मसीह को समर्पित होने में अपने स्वयं का इन्कार करना है।

हम हर रोज जिन आत्माओं से मुलाकात करते हैं-हमारे स्थानिक कैफे में मिलनेवाले लोग, समाचार में दिखनेवाले हिंसात्मक कार्यकर्ता, सामाजिक माध्यम पर मत व्यक्त करनेवाले मित्र, या दफ्तर में के कर्मचारी जिनके साथ हम पानी पीने के स्थान पर बातें करते हैं उनके लिए मसीह का क्या मन है? अक्सर, लोगों के कृत्य, शब्द, प्रतिष्ठा, राजनीतिक संबंद्धता- या हमारे अतीत में उनसे वार्तालाप द्वारा हमारे मन में उनकी पहचान बनाई जाती हैं। क्या होगा, इसके बजाय, हम उनकी रचना, उनके बारे में परमेश्वर का वचन क्या कहता है उससे करें?

हमारे हृदय और आँखों को फिर से नया बनाने के लिए क्या आवश्यकता होगी कि मसीह समान देखे और सोचे? आत्माओं के लिए परमेश्वर के साथ हमारे हृदयों को समरूप करना क्या हम चाहते हैं?

सभी लोगों के प्रति परमेश्वर का दृष्टिकोण

आइए हम तीन बातों के साथ शरुआत करें जो हम जानते हैं जो हर एक व्यक्ति के बारे में सच है।

सत्य # १ : परमेश्वर सभी लोगों को प्यार करता है।

दाऊद राजा ने ऊँचे स्वर में कहां, *"तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?"* (भजन संहिता ८:४)। प्रभु यीशु ने कहां, *"परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया"* (यूहन्ना ३:१६)। परमेश्वर ने लोगों से प्रेम किया। किसी के प्रति मेरे विचार की परवाह किए बिना, मैं यह जान सकता हूँ परमेश्वर उनके बारे में क्या सोचता है। यिर्मयाह ३१:३ में, परमेश्वर अपने लोगों को स्मरण दिलाता है, *"मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ।"* हमारे हृदयों के परिवर्तन के लिए मुख्य स्त्रोत यह है कि *"हम इसलिए प्रेम करते हैं कि पहले उसने हमसे प्रेम किया"* (१ यूहन्ना ४:१९)।

सत्य # २ : परमेश्वर ने सभी लोगों को बनाया है।

भजनकार स्मरण करता है, *"मेरे मन का स्वामी तो तू है; तू ने मुझे माता के गर्भ में रचा। मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिए कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भांति जानता हूँ"* (भजन संहिता १३९:१३-१४)। यह बहुत बढ़िया है। जब आप आपकी माता के गर्भ में थे,एम्नियोटिक द्रव में तैर रहे थे, परमेश्वर ने आपको एकसाथ जोड़े रखा, डीएनए डबल हेलिक्सेस और सब कुछ। पूरी तरह से। बिना गलती के।

मेरी दादी मेरे लिए सबसे अद्भुत बिनियां बुनती है (या जैसे मेरे कॅनडा के मित्र उसे कहते है : टॉक्स)। उसे बुनते हुए देखना, मैंने कुछ तो सिखा है। जब वह एक गलती करती है, तो वह धागे को एक बिंदु तक खींचती है जहाँ गलती हुई है, और वहां से बुनना शुरू करती है। अंत में बिनियाँ मिलती है जिसमे कोई भी खुली हुई जगह या धागा नहीं रहता। परमेश्वर की सूक्ष्मता की कल्पना कीजिए। वह उत्कृष्ट कलाकार, शिल्पकार और डिझायनर है- और आपको बनाने में, उसने कोई गलती नहीं की। यह सच है कि हम पाप में जन्मे हैं आदम

के चुनाव के कारण। और यह सच है कि हमें एक उद्धारकर्ता की बहुत ही आवश्यकता है । लेकिन यह भी सच है कि परमेश्वर ने आपको बनाने में कोई गलती नहीं की। आप-जी हाँ, आपको-भयानक और अद्भुत रीति से बनाया है। और उसी तरह से उन सभी लोगों को जिन्हें आप मिलते हैं।

जिन आत्माओं को हम अक्सर तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं वे ही दुश्मन के शिकार हैं।

सत्य # ३ : परमेश्वर ने उसका पुत्र सभी लोगों के लिए दे दिया।

यीशु ने अपने चेलों से कहां, *"इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे"* (यूहन्ना १५:१३)। क्रूस पर उसकी मृत्यु के द्वारा, उसने सभी लोगों को परमेश्वर के प्रेम का परिमाण प्रगट किया। उसने उसके पुत्र को मेरे और उनके पापों के लिए दु:ख उठाने और मरने के लिए दे दिया। *"और वही हमारे पापों का प्रायश्चित्त है, और केवल हमारे ही नहीं वरन् सारे जगत के पापों का भी"* (१ यूहन्ना २:२)।

इसलिए, हर एक व्यक्ति जिन्हें मैं मिलता या देखता हूँ वह : (१) परमेश्वर द्वारा प्रेम किया हुआ (२) जैसा परमेश्वर की सोच थी उसके अनुसार वास्तव में सृजा गया, और (३) परमेश्वर की दृष्टि में उसकी इतनी मूल्य है कि उसने अपना पुत्र दे दिया कि उनके शास्वत दोषों को अपने ऊपर उठा ले। इस तरह का ज्ञान लोगों के मेरे दृष्टिकोण को क्यों नहीं बदल सकता?

ऐसा क्या है जो मुझे एक आत्मा को परमेश्वर की दृष्टि से देखने को रोकता है?

अंधे लोगों को थप्पड़ मारना

हालांकि मैं एक शरारती बच्चा था, मेरे माता पिता को एक अंधे व्यक्ति को थप्पड़ मारने के लिए कभी भी अनुशासन नहीं करना पड़ा। मैंने कभी ऐसा अपराध नहीं किया। क्या आप प्रभावित हुए? (हो सकता है, आप मेरे अच्छे बर्ताव के लिए प्रभावित नहीं हुए हो!)

पाप में फंसे लोगों के लिए परमेश्वर का वचन क्या कहता उसके बारे में सोचे। *"परंतु यदि हमारे सुसमाचार पर परदा पड़ा है, तो यह नष्ट होनेवालों ही के लिए पड़ा है। और उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके"* (२ कुरिन्थियों ४:३-४)।

अविश्वासियों को अँधा किया गया है। वे शैतान के बंधन में हैं जो उन्हें बांधता है। जिन आत्माओं को हम अक्सर तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं वे ही दुश्मन के शिकार हैं।

क्या हम बंधित, अंधी आत्माओं से जिन्होंने हमारे उद्धारकर्ता के अनुग्रह का अनुभव न किया उनसे बाइबल के उपदेशों को समर्पित होने की आशा रखें? वर्तमान में हम किन क्षेत्रों में पुनर्जीवित न हुए जगत पर ऐसी आशाएं थोप रहे हैं?

जबकि कई विश्वासी भटकी हुई आत्माओं को यीशु की दृष्टि से देखते हैं और उसकी करुणा से उन तक पहुंचते हैं, तब तथाकथित कलीसिया कितनी बार अंधों को थप्पड़ लगाती हैं यह परेशान करनेवाला है। नहीं, हम उन तक दृश्य हानि से नहीं जा रहे हैं और उनके चेहरे पर प्रहार नहीं कर रहे हैं। लेकिन हम शायद आत्मिक समानता कर रहे होंगे; और उनके अंदरूनी और बाहरी खालीपन के लिए सेवकाई करने के बजाय, नए सिरे से न जन्मे हुओं पर बाहरी कार्य सुधारने के लिए कर रहे हैं। परमेश्वर के वचन में दी गई रुपरेखा के द्वारा लोगों की धारणा बनाने के बजाय हम जो देखते और सुनते हैं केवल उसी के द्वारा अक्सर हम कितनी बार उनके बारे में धारणा बनाते हैं? क्या हम उनके लिए प्रार्थना करने के बजाय उनके व्यवहार के बारे में उन्हें दोष देने में जल्दी करते हैं? क्या वें परमेश्वर के प्रेम और सत्य को समझ सके इसलिए हम उनकी ओर से प्रार्थना और प्रार्थना में समय बिताने के बजाय हम उनके बारे में निंदा करने को (ताकि दूसरे यह जान सके कि वे कितने बुरे हैं) तैयार रहते हैं? अगर ऐसा है, तो हम वास्तव में अंधों को थप्पड़ मार रहे हैं।

बारंबार, हम व्यक्तियों को एक विशेष पाप जो वे करते हैं उनमें वर्गीकृत करते है लेकिन वो ही नहीं जो उनको परिभाषित करता है। परमेश्वर लोगों के केवल दो वर्ग को देखता है : (१) वे जिन्होंने यीशु मसीह के पूरे किए हुए काम के द्वारा क्षमा प्राप्त की है, और (२) वे जिन्होंने नहीं की है।

क्या हम हर एक आत्मा को चाहे वह अंधी हो या नहीं, क्रूस के प्रकाश में देखते हैं ? पहले वर्ग में के लोगों को मसीह कौन है और उसने उनके लिए क्या किया है उस पर विश्वास रखने के द्वारा धर्मी घोषित किया गया है। वे जो दूसरे वर्ग में हैं, वे अभी भी उनके पापों में अंधे और भटके हुए हैं, वे शैतान के अँधेरे राज में बंदी हैं। पौलुस की इफिसियों को पत्री हमें स्मरण कराती हैं कि हमारा युद्ध लोगों के साथ नहीं लेकिन शैतान की योजनाओं के साथ हैं। *"क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से और अधिकारीयों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं"* (इफिसियों ६:१२)।

हमारा शत्रु देह और रक्त नहीं है। क्योंकि मैं जगत के उस क्षेत्र में रहता हूँ, जहाँ युद्ध सामान्य है, मैं अक्सर अपने आप से यह प्रश्न पूछता हूँ जब आत्माओं का विचार आता है ; *"क्या उनके पास रक्त है जो उनकी धमनियों से बहता है ?"* यदि है, तो फिर वे मेरे शत्रु नहीं है। इस रीति से आत्माओं को देखना हमें २ कुरिन्थियों ४:१८ की गहन समझ देता है। *"और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परंतु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की है, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।"*

क्या हम भटके हुए जगत के लिए अस्थायी उपाय खोज रहे है जब शास्वत आत्माएं दांव पर हैं? यूहन्ना और याकूब चाहते थे कि यीशु लोगों के कुछ निश्चित समूह पर स्वर्ग से आग की बरसात करे। यीशु ने उन्हें झिड़का, *"तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों का नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिए आया है। और वे किसी दूसरे गाँव में चले गए"* (लूका ९:५५-५६)।

हम शैतान की योजनाएं जानते हैं, लेकिन क्या हम फिर भी उसमे गिर रहे हैं?

क्या हम मसीह की करुणा बताने से ज़्यादा हमारे देश के आचरण को बदलने पर अधिक केन्द्रित हैं? क्या हम, एक कलीसिया के रूप में, पापी मनुष्यों को प्रेम करने से बढ़कर उनके बारे में नैतिकता के कानून बनाने पर ज़्यादा ध्यान दे रहे हैं? अच्छा आचरण किसी को बचा नहीं सकता। सुसमाचार हर एक को बचा सकता है। क्या हम लोगों के ऊपरी और बाह्य आचरण को बदलने का प्रयास कर रहे हैं या क्या हम परमेश्वर के शास्वत क्षमा को बता रहे हैं जो हृदय को बदलता है? परमेश्वर ने यीशु को इसलिए नहीं भेजा कि इस पतित जगत का सुधार करे। वह आया ताकि पापियों का परिवर्तन करें और उन्हें उसकी दुल्हन होने के लिए बुलाएं।

क्षमा से मुक्ति

प्रश्न उभर आते हैं। जैसे मसीह जगत को देखता है वैसे हम इसे सच में कैसे देख सके? हमारे अतीत की सभी यातना और हमारे आसपास जो दुष्टता है उसके साथ, क्या हम ऐसे जंजाल में फंसे जगत को क्षमा कर सकते और कलवरी का प्रेम दिखा सकते हैं? यह अगला भाग अस्पष्ट, शायद, किसी के लिए दु:खद होगा। यह हमें हमारे प्रमुख प्रश्न की ओर लाएगा : क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

नडेक्स डेग नगा वोलोफ?

शायद परदेसी भाषा नजर आती है? यह वोलोफ भाषा है, सेनेगल में प्रमुख भाषा है, जहाँ मैं पैदा हुआ (एफवायआय, वाक्य का अर्थ, "क्या आप वोलोफ समझते है?") उसी तरह से, यीशु के शब्द आज हमारे कानो को परदेसी लगते हैं। *"परंतु मैं तुम सुननेवालों से कहता हूँ कि अपने शत्रुओं से प्रेम रखो; जो तुम से बैर करें, उनका भला करो। जो तुम्हें श्राप दें, उनकों आशीष दो; जो तुम्हारा अपमान करें, उनके लिए प्रार्थना करो"* (लूका ६:२७-२८)। यीशु निष्क्रिय अज्ञानता के बारे में वकालत नहीं कर रहे हैं; वह सक्रीय प्रेम सीखा रहे हैं। मैंने मसीही लोगों को मुझे ऐसे कहते सुना है ये शब्द व्यवहारिक या लागू करने जैसे नहीं है, परंतु यीशु ने जो कहां यदि उसका वही मतलब था तो क्या होगा? क्या होगा यदि हमें हमारे हर एक बातचीत को इन शब्दों से बनाना हैं-क्या हम मसीह समान ज़्यादा दिखेंगे?

मध्य पूर्व में रहते हुए, मेरे पड़ोस में बहुत ज़्यादा धार्मिक दंगे हुए। जब मैं उन सताएं हुए लोगों को मिलने गया, तब एक पड़ोसी ने मुझे कहां, *"यदि कोई मुझे मारता है, तो मुझे उसे तुरंत मारना है। यह इसी तरह से होता है।"*

यह इसी तरह से होना चाहिए?

क्या होगा यदि क्षमा उनके लिए मुक्ति का मार्ग है जो अतीत को ध्यान में लिए चलते हैं? क्या सताव सहनेवाले और सतानेवालों के लिए क्षमा यह मुक्ति का मार्ग हो सकता है? क्या हमारा जगत बढ़ती आक्रामकता के पतन के चक्र में मसीह के शब्द और काम को जानने की असमर्थता के कारण फंसा नहीं है? क्या कड़वाहट और नाराजगी में ही रहना केवल अनसुलझे तनाव, हताशा और क्रोध की जकड़ को मजबूत नहीं करता? लेविस स्मेड्स ने कहां, *"क्षमा एक कैदी को मुक्त करना है और आप जान जाओगे कि कैदी आप ही थे।"*[३१]

क्षमा की शारीरिक रचना

"यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।"

यीशु ने अपने चेलों को क्या प्रार्थना करना सिखाया? *"और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर"* (मत्ती ६:१२)। ग्रीक भाषा में *"वैसे"* इस शब्द को अनुवादित करने के लिए कुछ

शब्दों का इस्तेमाल किया गया है। एक का अर्थ *"एक तरह का"* और दूसरा *"बिल्कुल वैसा ही"*। मत्ती में *"बिल्कुल वैसा ही"* शब्द का इस्तेमाल किया है। इस प्रार्थना में, हम परमेश्वर से मांग रहे हैं कि हमें क्षमा कर जैसे हमने दूसरों को क्षमा किया है। क्यों कोई यह प्रार्थना करना चाहेगा? हम जिस तरह दूसरों को क्षमा करते हैं वैसे ही परमेश्वर हमें क्षमा करे ऐसा आप चाहते है क्या? प्रारंभ के चर्च पूर्वज, ऑगस्टीन, ने यीशु की प्रार्थना के इस भाग को ऐसे चिन्हित किया, *"डरावना"* और *"खतरनाक"* बिनती।[३२]

यदि आप सोचते हैं क्षमा यह केवल यीशु का उपबिंदु है, तो उस विचार पर ध्यान दे जो वह उसकी प्रार्थना पूरी करने के लिए तुरंत कहता है : *"इसलिए यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा"* (मत्ती ६:१४-१५)। वह क्षमा पर खांस ज़ोर देता है।

मरकुस ११:२५ में, यीशु ने सिखाया, *"और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।"* जब क्षमा की बात आती है-कौन अपराधी है, अपराधी ने क्या किया या अपराधी ने कितनी बार आपको दु:ख दिया इसका पूरा विवरण अप्रसांगिक है। मत्ती १८:२१ में, पतरस यीशु से पूछता है, *"हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहें, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूँ? क्या सात बार तक?"* क्या यीशु पूछता है, *"ठीक है, पतरस, कौनसे प्रकार के पाप तू क्षमा करना चाहता है?"* नहीं! क्षमा का अपराध या अपराधी से कोई लेना देना नहीं है। तुम्हें कैसे क्षमा किया गया है इससे इसका मतलब है। इसलिए यीशु ने पतरस को उत्तर दिया, *"मैं तुझ से यह नहीं कहता कि सात बार तक वरन् सात बार के सत्तर गुने तक"* (मत्ती १८:२२)। दूसरे शब्दों में, हमेशा और एक बार क्षमा करे।

जब परमेश्वर ने मसीह में आपको भरपूर प्रेम और क्षमा दी है उसका ध्यान करते हो, तो आपके विरुद्ध किसी भी मनुष्य की गलतियाँ क्षमा न की जाए इतनी भयानक नहीं हो सकती।

यीशु एक मनुष्य के बारे में बताता है जिसे बड़े कर्ज़ से क्षमा किया गया था, लेकिन दुसरे छोटे कर्ज़ के क्षमा करने का उसने इन्कार किया। वह निष्कर्ष देता है, *"तब उसके स्वामी ने उस को बुलाकर उससे कहां, 'हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तेरा वह पूरा कर्ज़ क्षमा कर दिया। इसलिए जैसे मैंने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं*

चाहिए था? और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दंड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज़ भर न दे, तब तक उन के हाथ में रहे। इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई की मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा" (मत्ती १८:३२-३५)। यदि आपका उद्धार हो चूका है, तो आपको पवित्र और धर्मी परमेश्वर के विरुद्ध आपके शास्वत पाप के कर्ज़ से क्षमा किया गया है। जब परमेश्वर ने मसीह में आपको भरपूर प्रेम और क्षमा दी है उसका ध्यान करते हो, तो आपके विरुद्ध किसी भी मनुष्य की गलतियाँ क्षमा न की जाए इतनी भयानक नहीं हो सकती।

मुझे स्पष्ट करने दीजिए।

क्या आपको यूहन्ना का एक स्त्री के बारे में लिखना स्मरण है जिसे व्यभिचार करते हुए पकड़ा गया था? ज़ाहिर तौर पर, वह अपराधी थी। वास्तव में, किसी ने उसके अपराध के बारे में या फिर उसे पत्थरवाह करके दंड देना चाहिए इसके बारे में चर्चा नहीं की। उस निष्कर्ष पर ध्यान नहीं दिया गया। उसे वैसे कृत्य करते हुए पकड़ा गया था। लेकिन वह कहांनी का बिंदु नहीं था। स्पष्ट रूप से, वहां पर उस कृत्य में दूसरा और एक दोषी व्यक्ति था। परंतु वह भी बिंदु नहीं था। इसके बजाय, यीशु ने उस पर दोष देनेवालों के विचारों को उनके स्वयं पर लगाया : *"जब वे उससे पूछते ही रहे, तो उसने सीधे होकर उनसे कहां, तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे"* (यूहन्ना ८:७)।

हर एक पत्थर नीचे फेंक देने के बाद और भीड़ घर पर चल गई, यीशु ने उस स्त्री से कहां, *"मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना"* (यूहन्ना ८:११)। उसने उस पर नजर नहीं डाली। वह ठीक तरह से उस पर पत्थर मार सकता था क्योंकि वही एकमात्र निष्पाप था। क्या हो रहा था? वह जल्दी ही उसके पाप अपने स्वयं के ऊपर लेनेवाला था। वह यह कह सका, *"मैं तुझे दोष नहीं लगाता क्योंकि तेरे कारण मुझे दोषी ठहराया जाएगा।"* यही तो सुसमाचार है।

क्रूस पर, यीशु के शब्द जो पहिले लिखे गए है, *"हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं"* (लूका २३:३४)। क्या पापी क्रूस के निकट रहते, उस क्षण, तो उन्हें शास्वत जीवन के लिए क्षमा किया जाता? नहीं। लेकिन स्थायी क्षमा का मार्ग अब खुला होने जा रहा था।

व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री से यीशु ने क्या कहां इस पर फिर से ध्यान दे। *"मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना।"* मसीह ने उसे क्षमा किये जाने

का मार्ग बनायेगा; मसीह सभी को क्षमा देने का मार्ग बनाएगा। यह उस क्रूस पर मसीह ने शास्वत क्षमा का मार्ग खुला किया। यीशु परमेश्वर का मेमना जिसने परमेश्वर के ज्वलंत, धर्मी क्रोध जो हमारे पापों के विरोध में थे सह लिया। उसने शास्वत क्षमा किये जाने का सभी के लिए मार्ग बनाया। पतरस इसे कुछ इस तरह लिखता है, *"उसकी [यीशु की] सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी"* (प्रेरितों के काम १०:४३)। वे जो क्षमा का स्वीकार करते हैं जो यीशु देता है वे क्षमा किये गए है।

क्षमा का व्यवहारिक दृष्टिकोण

हम जिन्होंने उसकी क्षमा प्राप्त की है, जानते हैं कि हमें दूसरों को क्षमा करना है, परंतु हम सच में कैसे क्षमा करें?

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको गहरा दु:ख दिया गया है। शायद आपको लैंगिक, शारीरिक या मौखिक अत्याचार -या तीनों भी सहना पड़ा है। शायद, आपके अतीत के कारण, आप आपकी ओर से यीशु के रक्त द्वारा परमेश्वर की क्षमा के सत्य को नहीं स्वीकार कर रहे है। शायद आपके नाम को बदनाम किया गया हो और झूठ के कारण रिश्तेनाते टूट गए हैं। शायद आपको छोड़ कर किसी और को पदोन्नत किया गया और आपको नजरंदाज किया गया है। शायद जिन पर आप ने विश्वास किया उन्होंने आप को छोड़ दिया है। मुझे आपकी कहांनी पता नहीं है, लेकिन मुझे आपके लिए मसीह का प्रेम पता है। यह उसके अद्भुत प्रेम के प्रकाश में कि हम भटके हुए जगत को देख सकते हैं और ईमानदारी से उन्हें क्षमा कर सकते हैं जैसे हमें क्षमा किया गया है। यही तो बाइबल आज्ञा देती है। *"एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षम करो"* (इफिसियों ४:३२)।

क्या गलत करनेवाले क्षमा के पात्र हैं? नहीं। लेकिन न ही आप या मैं।

क्षमा यह चाहे या नहीं चाहे कोई भी उसके लिए पात्र नहीं है। याद रखें, आप जिस व्यक्ति को क्षमा कर रहे है उसके बारे में क्षमा का कुछ लेनादेना नहीं है और यह मसीह ने आपको कैसे क्षमा किया है उसके बारे में सब कुछ है। जब हम हमारे साथ गलत करनेवालों को क्षमा करने से इन्कार करते हैं, तो हम जगत को खुले तौर से घोषित करते हैं कि हम कलवरी पर यीशु के प्रेम के बारे में बहुत ही थोड़ा सा जानते हैं। यीशु के क्रूस के प्रति कृतज्ञता उस

करुणा और क्षमा में प्रकट होती है जो हम उन लोगों के प्रति दिखाते हैं जिन्होंने हमारे साथ गलत किया है।

एक अंतिम स्मरण।

आप जिस व्यक्ति को क्षमा कर रहे है उसके बारे में क्षमा का कुछ लेनादेना नहीं है और यह मसीह ने आपको कैसे क्षमा किया है उसके बारे में सब कुछ है।

केवल इस कारण से कि आप ने किसी को क्षमा किया है इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने परमेश्वर की क्षमा प्राप्त की है। बल्कि, आप ने सच्चे न्यायाधीश के पास परिस्थिति को सौंप दिया है। जब आप क्षमा करते है, तब ये परमेश्वर पर छोड़ देते है। गलत करनेवालों को, इसके एवज में, मसीह में प्राप्त होनेवाली परमेश्वर की क्षमा को खोजना चाहिए।

मैं इसे केवल एक बार फिर कहूँगा। जब आप क्षमा करते है और विषय को प्रभु को सौंपते है, तो उस *"पत्थर"* को फिर से कभी नहीं उठाना है। एमी कार्माइकल ने 'यदि" नामक एक प्रभावशाली और पढ़ने पीड़ादायक कविता लिखी। उसमे एक पद है, जिसमे कहां गया है,

> यदि मैं दूसरे के विरुद्ध किए पाप को कबुल करता, पछताता और उसे त्याग देता, और उस पाप की मेरी याद को मेरे विचारों को और मेरे शक को उससे भर देता, तो फिर मुझे कलवरी के प्रेम के बारे कुछ भी पता नहीं है।[३३]

परमेश्वर हम पर इतना केन्द्रित है कि उसकी क्षमा के गुण को पहाड़ी उपदेश में दर्शाता है, यीशु सीखाता है कि जब हम आराधना करने आते हैं, *"इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा"* (मत्ती ५:२३-२४)।

जगत युद्ध करना जारी रखेगा। वे अपमान करना, शिकायत करना, और उनकी समस्या के लिए बलि का बकरा खोजना जारी रखेंगे। ऐसी बातों के बारे चिंता न करो। हम में से उनके लिए जिन्होंने कलवरी की क्षमा का अनुभव किया है, इसे स्मरण रखे : *"हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हम से ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए"* (१ यूहन्ना ४:११)।

कलवरी के प्रेम के दृष्टिकोण में, हम दूसरों को क्षमा करेंगे। और क्षमा के द्वारा हम जो प्रदान करते हैं, वे कलवरी के प्रेम का अनुभव करेंगे।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. जिसे क्षमा करने में आपको कठिनाई है उसके बारे में सोचे।

उस व्यक्ति का नाम इन ३ सत्य में जोड़े :

परमेश्वर ----------प्रेम करता है।

परमेश्वर ने ----------बनाया है।

परमेश्वर ने ---------- लिए उसका पुत्र दे दिया।

यह उस व्यक्ति के बारे में आपका दृष्टिकोण कैसे बदलता है?

२. विशेष पापों की सूची बनाएं जिसके लिए आप किसी को क्षमा करने से इन्कार करते है।

क्या मसीह ने उनमे से किसी अपराध के लिए आपको क्षमा किया है?

३. क्या क्षमाहीनता का आत्मा आपको कैद कर रहा है? कैसे?

१५

परमेश्वर के वचन द्वारा अपने सुरक्षा को तैयार करना

इस जगत में सुरक्षा और बचाव का हमारा परिप्रेक्ष्य क्या है? क्या हम पहले शारीरिक दृष्टिकोण से सोचे? या क्या हम प्रमुख तौर से आत्मिक सुविधाजनक बिंदु से चीज़ों को देखे?

अक्टूबर २०१४ में, एबोला संकट जगत के मेरे क्षेत्र में ज़ोर पकड़ रहा था। मुझे मेरे देश से हमेशा संदेश आ रहे थे यह पूछने कि क्या मैं *"सुरक्षित"* हूँ। भले ही उनकी फिक्र सच्ची थी, फिर भी मेरा मन बोझ से भरा था। क्या *"सुरक्षित"* रहना, तो हमारे विश्वास के बारे में क्या? अंत में, मैंने फेसबुक में उत्तर दिया।

> अब मैं चुप नहीं रह सका।
>
> क्या मैं एबोला से 'सुरक्षित *"हूँ इसके बारे अनगिनत संदेश मिलने के बाद और उम्मीद की गई कि मैं "*इस प्राणघातक रोग से बहुत दूर हूँ," मैंने कहां। मेरी फिक्र करने के लिए धन्यवाद....लेकिन।
>
> मेरे मित्रों, परमेश्वर ने उसके अनुयायियों को सांसारिक सुरक्षित रहने के लिए नहीं बुलाया है। यही अवधि है। यह सेवकाई का मापदंड नहीं है। वास्तव में, यदि आप आज्ञा से बढ़कर सुरक्षा चाहते है, तो आप कभी भी यीशु के अनुयायी नहीं होंगे (यूहन्ना १५:१८-२०; लूका ९:२३-२५ देखे)। हम समस्या को नहीं ढूंढते और हम ज्ञान में काम करते हैं, लेकिन यदि दुःख उठाना मुख्य बात है, तो यीशु के प्रेम और स्पर्श की बहुत ही आवश्यकता है, तो शायद वास्तव में वही तो हम चाहते हैं। मैं धन्यवादी हूँ यीशु ने एक सुरक्षित जीवन का चुनाव नहीं किया। मैं एबोला के संबंध में मेरी व्यक्तिगत सुरक्षा के बारे में थोड़ा भी चिंतित नहीं हूँ न ही किसी और खतरे के जो यह अस्तव्यस्त जगत उत्पन्न करता है। मैं, तथापि, जिन्हें यह रोग लग जाता है उनके बारे में ज़्यादा चिंतित हूँ जिन्हें यीशु द्वारा अनंत जीवन मिलता है यह पता नहीं हैं। आइए

हम कोई परदेसी *"सुरक्षित"* है ऐसे प्रश्न पूछना बंद करे, क्योंकि मैं मसीह के पूरे किए हुए कार्य में अनंतकालीन सुरक्षित हूँ। मैं निश्चिन्त हूँ। बल्कि, घुटने पर आओ और उनकी आत्माओं के लिए प्रार्थना करो जो *"सुरक्षित"* नहीं हैं जो यीशु के क्रूस के पास प्रदान किए जानेवाली आशा, शांति और अनंतकाल के जीवन को प्राप्त कर सके।

यदि सुरक्षितता ही यीशु के पीछे चलने की उसकी बुलाहट को मानने की हमारी एक आवश्यक शर्त हैं, तो हम उसका एक अच्छी कल्पना के रूप में आदर कर रहे हैं, लेकिन एक परमेश्वर के रूप में नहीं। क्या हमारा आज्ञा मानना शारीरिक सुरक्षा के अधीन हैं? परमेश्वर ने हमें सुरक्षित जीवन जीने के लिए नहीं बुलाया हैं। उसने हमें विशेष रीति से क्रूस उठाने का जीवन जीने के लिए बुलाया हैं। (हम इस पर अगले पाठ में चर्चा करेंगे)

हम उसका अनुसरण करते हैं इसलिए नहीं कि यह सुरक्षित या सुखकारक है, लेकिन इस कारण से कि वह समय और अनंतकालीनता के लिए खज़ाना है।

क्रूस, मृत्यु का साधन, कभी भी सुरक्षित नहीं था। दुसरे शब्दों में कहें तो, यीशु ने उसके अनुयायियों से कहां कि उसको सताया जाएगा और यरूशलेम में मारा जाएगा (मत्ती १६:२१) और तीन वचनों के बाद में, उसने उन्हें उसके पीछे हो लेने के लिए निमंत्रित किया। यहाँ मसीह की बुलाहट में कोई चूक नहीं है। हम उसका अनुसरण करते हैं इसलिए नहीं कि यह सुरक्षित या सुखकारक है, लेकिन इस कारण से कि वह समय और अनंतकालीनता के लिए खज़ाना है।

यीशु ने उसके चेलों से कहां, *"जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है। क्या पैसे में दो गौरैयें नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिए डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो"* (मत्ती १०:२८-३१)। मसीह ने यह कहने के बाद में अपने चेलों से कहां कि वह उन्हें भेड़ों के रूप में भेड़ियों में बीच भेज रहा है -वे तुम्हें राजाओं के सामने खींच कर लायेंगे, मारेंगे, अस्वीकार किये जाओगे, बदनाम किये जाओगे और उनके निकटतम लोगों द्वारा मारे भी जाओगे।

ख़तरे को चाहना और सुरक्षा की मांग करना इनके बीच में फर्क़ है।

१८३८ के दिसंबर में, वेस्ली समाज के तीन नए मिशनरी, जॉन हंट, थॉमस जागर और जेम्स कलवर्ट, फिजी द्वीप में लकेबा सागर के किनारे पहुंचे। जहांज के कप्तान ने उन्हें विश्वास

दिलाने का प्रयास किया कि यदि वे यहाँ उतरते हैं तो यहाँ के नरभक्षक लोगों द्वारा उनकी मृत्यु अवश्य हैं। कलवर्ट और अन्य व्यक्ति इस बात से डरे नहीं। आखिरी प्रयास में कप्तान ने बिनती की, *"यदि आप इन असभ्य लोगों के बीच में जाते हो तो आप और आपके अन्य साथी अपने प्राण गवां देंगे।"* उसके जवाब में, कलवर्ट ने शांति से जवाब दिया, *"हम यहाँ आने से पहले मर गए थें।"*[३४] कलवर्ट मसीह की बुलाहट को समझ गया था। वह उसके उद्धारकर्ता का उसके लिए प्रेम और उसके उद्धारकर्ता के लिए उसके प्रेम से भरा हुआ और प्रेरित था। सुसमाचार को ले जानेवाले ऐसे प्रारंभिक बहुत से लोगों ने उनकी चीज़ों को कफन बक्से में बाँध दिया था, यह जानते हुए कि वे एक तरफा यात्रा पर जा रहे हैं, यह ध्यान में रखते हुए कि यीशु मसीह का मुख यह उनका अंतिम स्थान है।

जब यशायाह ने परमेश्वर की सरल और स्पष्ट बुलाहट को सुना, *"मैं किसको भेंजू, और हमारी ओर से कौन जाएगा? तब उसने कहां, 'मैं यहाँ हूँ! मुझे भेज!'"* (यशायाह ६:८)। परमेश्वर ने यशायाह को पहले यह नहीं बताया कि उसे किन खतरों का सामना करना पड़ेगा या उसे कौन-सी ज़िम्मेदारियाँ उठानी पड़ेगी। उसी तरह से, जब हम मसीह का चुनाव करते हैं, तब हम काम के वर्णन को उत्तर नहीं दे रहे होते। हम उस प्रभु को उत्तर देते हैं जो हमें उसके साथ काम करने को निमंत्रित करता है।

मेरे मित्र, क्रिस लेगेट की कहांनी वही तो थी।

जब मृत्यु एक निवेश है

क्रिस और मैं कुछ सभाओं में मिले। हम दोनों ही उत्तरी अफ्रीका में समान काम कर रहे हैं। क्रिस का परिवार है और चार बच्चे हैं, पर वो और उसके पत्नी ने उनके जीवनों में परमेश्वर के निर्देश को खोजने के लिए टेनीसे में के उनके आरामदायी घर को छोड़ दिया। लोग जिनको वे नहीं जानते उन्हें प्रेम करने वे गए ताकि वे लोग एक सच्चे परमेश्वर से प्रेम करने लगे जिसे वे अभी तक नहीं जानते थे। वे उनका राजा, यीशु के प्रेम की वजह से वहां गए। मुश्किल भाषा सीखने के अलावा, क्रिस पड़ोसी गरीब लोगों को कम्पूटर सिखाता था, कारागृह के साथ मिलकर लड़कों को प्रशिक्षित करता और उन्हें तैयार करता था कि वे फिर से समाज में आ सके, एक बहु-उद्धेशीय प्रशिक्षण केंद्र की अगुवाई कर रहा था, और छोटे-कर्ज़ देने के व्यवहार की अगुवाई कर रहा था जो बहुत सारे छोटे उद्योग को बढ़ाने में सहाय्यक हो रहे थे। इन सारे कार्यों के द्वारा, क्रिस आत्माओं को प्रभु की ओर इशारा कर रहा था जिसके विषय में सभी भविष्यद्वक्ताओं ने लिखा था (लूका २४:२५-२७)।

जून २००९ में, जब मैं सभा के लिए न्यूझीलंड गया था, मैं ने मेरी हुंडाई कार में के रेडिओ को स्थानीय स्टेशन पर लगाया और *"पॉप का बादशाह"* मायकल जॅक्सन के मृत्यु का समाचार सुना। यह दु:खद समाचार रेडिओं पर हर जगह सुनाई दे रहा था। मेरा गंतव्यस्थान आने के बाद में, मैंने ईमेल खोला और देखा कि जून २३ (जॅक्सन के मरने के दो दिन पहले), मेरा मित्र, क्रिस लेगेट, पर हमला हुआ था और उसे दो अलकैदा बंदूकधारियों ने मार डाला था, वह केवल ३९ साल का था।

मुझे धक्का लगा, मैं इस पर सोचने लगा।

कोई विवाद नहीं कर सकता कि मायकल जॅक्सन एक बहुत ही कुशल संगीतकार और उसके काम को उसी अंदाज से अच्छी तरह से फैलानेवाला था। कई लोग उसे इतिहास का सबसे सफल गीतकार- डांसर मानते थे। क्रिस लेगेट को कुछ थोड़े मूल्यवान लोग जानते थे। उसके काम को अधिकतम लोगों ने नजरंदाज किया था और मसीही समाज में भी इतना प्रतिष्ठित नहीं था।

और फिर भी, एक दिन वे दोनों परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख खड़े होंगे। मुझे इस बात का यकीन नहीं कि जॅक्सन परमेश्वर के उसके संबंध में कहां खड़ा होगा। लेकिन जून २००९ के मंगलवार सुबह को उत्तरी-अफ्रीका की धूल से भरी धरती पर जब गोलियों से छननी हुए क्रिस लेगेट के शरीर से जब आत्मा निकली होगी, मुझे विश्वास है तब यीशु अपने सिंहासन से खड़ा हुआ होगा यह कहते हुए, *"मेरा बेटा घर आ रहा है!"*

क्रिस के स्मरण सभा में, किसी एक वक्ता ने यह वाक्य कहां : *" ऐसा जीवन जो बहुत शोर मचाता है और ऐसा जीवन जो फर्क़ लाता है, इनके बीच में फर्क़ है।"*

दो जिंदगियां।
दो विरासत।
दो अनन्तकालीनता।
दोनों ने जीवन जीया।
दोनों ही मर गए।

बाइबल बताती है, *"और जैसे मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है"* (इब्रानियों ९:२७)। आज, जिस स्थान पर क्रिस ने इस टूटे संसार को छोड़ा था वहां एक पट्टी लिखी हुई है, अरबी, फ्रेंच और अंग्रेजी भाषाओं में, जिस पर तीन शब्द लिखे हैं जो बताने के लिए वह मर गया था।

الله محبة

Dieu est amour

God is love

(परमेश्वर प्रेम है।)

बचाव और सुरक्षा उस प्रभु की आज्ञा मानने के लिए कभी भी हमारी आवश्यक शर्त नहीं हो सकती, जिसने कहां, *"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता हैं; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है। जो अपने प्राण को प्रिय जानता है वह उसे खो देता है; और जो इस जगत में अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनंत जीवन के लिए उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहाँ मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा"* (यूहन्ना १२:२४-२६)।

फिलिप हेन्री के शब्द (मॅथ्यू हेन्री का पिता, प्रसिद्द बाइबल भाष्यकार) सत्य को दोहराते है, *"वह कोई मुर्ख नहीं जो उससे अलग हो जाता जिसकी वह देखभाल नहीं कर सकता, जब वह निश्चित हो जाता है कि जो वह गवाएंगा नहीं उसका उसे पूरा मुआवजा दिया जाएगा।"*[३५]

चिंतन करें और उत्तर दें

१. क्या आपकी अपनी सुरक्षा के लिए आप ध्यान देते हैं या अपने जीवन में आत्मा की आवाज़ सुनकर औरों के सुरक्षा की फिक्र करते हैं? स्पष्टीकरण दीजिए।

२. जिसे आप जानते है उसके बारे में सोचो जिसने परमेश्वर की बुलाहट मानने के लिए व्यक्तिगत सुरक्षा का ख़तरा उठाया। क्या अलग हुआ होता यदि उन्होंने आज्ञा नहीं मानने का चुनाव किया होता?

१६

परमेश्वर के वचन द्वारा जिंदगी के दुश्मन उत्पन्न होते हैं

हालाँकि मेरा खेल इतना खास नहीं, फिर भी मैं ने मेरी जवानी के दिनों में काफी टेबल टेनिस खेली है। शरुआत के दिनों में, मैंने जाना कि मेरी कुशलता को और भी ठीक करने की तुलना में विजय पाना इतना अर्थपूर्ण नहीं था और मेरे विरोधी की कमजोरी समझना और उसके अनुसार तैयारी करना ज़्यादा आवश्यक था। मुझे लगता है कि मैंने यह बात अपने बड़े भाई से सीखी थी, जिसने यह जाना था कि सिर के ऊपर से मेरा मारना अक्सर गलत होता था। वह मुझे मेरी कमजोरी के प्रलोभन में डालने के लिए छोटे शॉर्ट सरल रूप से उसे ऊँचा उठाता था।

दु:खद रूप से, हमारी आत्मा का दुश्मन यीशु के अनुयायियों के लिए वही करता है। उसने हमारी मानवी कमजोरी समझी है और उसका लाभ उठाता है। वह चालाक है। सुसमाचार यह है कि वह वही तकनीक बारंबार इस्तेमाल करता है। बुरा समाचार? हम फिर भी उसके शिकार हो जाते हैं? हम अक्सर हमारे जीवन के *"बॉल"* को अनियंत्रित रूप से मारते हैं और हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा के *"मेज"* को चूक जाते हैं।

यह चित्र किस तरह से बनता है? परमेश्वर के वचन द्वारा अपने जीवन की रचना करने को हम कैसे असफल हो जाते हैं? मैं मेरे अपने जीवन से कुछ उदाहरण दूंगा।

शब्दों को पुनः परिभाषित करना

मैं ने सरल तौर से पाप की पुनः परिभाषा की।

यह जानना कि अश्लील चित्र देखना पाप है, मैं फिर भी इस शब्द को पुनः परिभाषित करने से मेरी कामवासना पूरी करने के लिए सरल रूप से मैं कोई अन्य मार्ग खोजूंगा। मेरी आँखे किसी बात पर लगाने के लिए *"स्वीकृत"* विकल्प देने में हमारे जगत में कोई कमी नहीं, फिर चाहे सूची में दो छोटे वस्त्र पहनेवाली लड़किया हो या नॅशनल जिओग्राफिक या स्पोर्ट्स इल्युस्ट्रेटेड में कम कपड़े पहनी महिलायें हो।

यह यहीं पर खत्म नहीं होता।

मुझे पता है कि यौन अनैतिकता परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है। तो जब तक मैं विवाह से पहले सेक्स से दूर रहता हूँ (मैं एक लड़की की चुम्मी भी नहीं लेता), तो मेरे मार्ग मनुष्य (और चर्च) की दृष्टि में स्वीकृत होंगे। तो मैंने लड़कियों को भावनात्मक रूप से, उनके हृदयों के साथ खिलवाड़ करना और पाप से दोस्ती करने के द्वारा केवल शब्द को पुनः परिभाषित किया। मैं गलत था।

निंदा करना दुष्टता है यह जानने के बाद भी, मैं ने भ्रमित मसीही लोगों के लिए सार्वजनिक रूप से प्रार्थना करना या मेरे *"भटके हुए दोस्तों"* के बारे में उनके गलत व्यवहार को उजागर करने के छिपे इरादे से सलाह माँगने के द्वारा मेरी पद्धति को पुनः परिभाषित किया।

दुश्मन का सूक्ष्म प्रलोभन ये अक्सर दुर्भावनापूर्ण आचरण से ज़्यादा प्राथमिकताओं से चूक जाना है।

किसी को मुझे यह सिखाने की जरुरत नहीं थी कि झूठ बोलना गलत है, लेकिन मैं ने इन शब्दों को नए सिरे से परिभाषित किया और बढ़ा-चढ़ा कर बोलना, अधुरा सच बताना, और अपने हितों और उद्देश्यों के अनुकूल कहांनियाँ पेश करने के लिए विवरण छिपाना स्वीकार कर लिया। मेरा ध्यान अपने प्रभु को प्रसन्न करने पर नही, बल्कि मनुष्यों की राय बनाने पर था। मैं मेरे उद्धारकर्ता को अपमानित कर रहा हूँ इससे बढ़कर मेरे मित्रों को खुश करने के बारे में सोचता था।

सरल रूप से कहां जाए तो, मैं खोज करने का दृष्टिकोण खो चूका था। यह अब परमेश्वर को जानने के बजाय खेल जीतने के बारे में हो गया था।

प्राथमिकताओं को पुनः व्यवस्थित करना

हर साल, मैं काम और संदेश देने के लिए करीबन २० देशों की यात्रा करता था। अक्सर, परिवहन का मेरा तरीका कार किराए पर लेना था। हर एक देश का रास्ते का एक अलग

नियम है, लेकिन एक बार मुझे कार चलाने से पहले समझना है यह है कि किसके पास चौराहे या अन्य विलय स्थितियों में रास्ते का अधिकार है। *"रास्ते का अधिकार"* के अन्य शब्द उस संदर्भ में *"प्राथमिकता"* है। सचमुच, *"प्राथमिकता"* का अर्थ *"चीज़ें जो अन्य चीज़ों से अधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है।"*[३६] मेरा प्रश्न यह है : हमारे जीवन में किसे प्राथमिकता है? अगर हम प्राथमिकताओं की सूची बना ले (हमारा परिवार, काम, खाली समय इत्यादि) क्या हम परमेश्वर का वचन सूची के हर एक पंक्ति पर प्रभाव डाल रहा और उसे नियमित करते हुए देखेंगे? या क्या हम सूची सांसारिक राय, प्राथमिकताएं और सुविधाओं से प्रभावित रहती हैं यह देखेंगे?

क्या हमने परमेश्वर की अनंत प्राथमिकताओं को जगत के अस्थायी दबाव से तबदील किया हैं? यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहां, *"इसलिए तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएँगी"* (मत्ती ६:३३)। बाद में बाइबल में हमें अपनी आवश्यकताओं से बढ़कर दूसरों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देने को कहां हैं : *"विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिंता करें"* (फिलिप्पियों २:३-४)।

दुश्मन का सूक्ष्म प्रलोभन ये अक्सर दुर्भावनापूर्ण आचरण से ज़्यादा प्राथमिकताओं से चूक जाना है। वह दूसरों से पहले स्वयं को रखने का प्रलोभन देता है। सुसमाचार प्रचार करने से पहले आराम रखता है। आज्ञा मानने से पहले सुरक्षितता रखता है। विश्वास से पहले व्यवहारिकता रखता है। विश्वासयोग्यता से पहले मनोरंजन रखता है। क्या हम परमेश्वर के वचन के द्वारा अपनी प्राथमिकताओं को बनाने और दूसरी चीज़ें उनके योग्य स्थानानुसार होने देने के लिए तैयार हैं? क्या हम परमेश्वर के *"रास्ते के नियम"* के अधीन होने को तैयार हैं? (कृपया ध्यान रखे : अधिक से अधिक, उसके मार्ग अनुसार चुनाव करना जगत को समझ नहीं आएगा।)

शालीनता : ख़ामोशी से मारनेवाला

आजकल की मसीहियत ने ऑनलाइन पर संपादकीय प्रकाशन में तथाकथित मसीह संस्कृति की शालीन उपस्थिति के बारे में मुझे गहराई में अवगत कराया गया। यह छोटासा भाग दिखा देता कि हम गुनगुना जीवन जीने का चुनाव क्यों कर सकते हैं, अपनी देह को प्रसन्न करने, और परमेश्वर द्वारा उसके मुख से उगल देने (प्रकाशितवाक्य ३:१५-१७ अनुसार)। लेख का शीर्षक था : *"क्या आप अजीब नहीं हो सकते और मेरे भविष्य के पति के लिए ३० अन्य प्रार्थनाएं।"* इस लेख में विनोदी तत्व थे, लेकिन स्पष्ट रूप से हमारी इच्छा को चित्रित

किया था कि देह को राज करने दो जबकि परमेश्वर की कल्पना को हलके से पकड़े रहो। यहाँ पर कई सारे बिंदु थे। कुछ नीचे दिए हैं :

• # १८ : आपका प्रार्थना का जीवन समृद्ध हो तथा आप प्रतिदिन शांत समय बिता सके।

• # २३ : आपमें न्याय और धार्मिकता क लिए सदैव चाह बनी रहे।

• # २७ : आप आपके शरीर को पवित्र आत्मा के मंदिर के रूप में संभाल सके।

अच्छा, सही लगता है? फिर, इन सुंदरताओं के बीच में फंसे ये हैं :

• # २१ : प्रभु आपमें ब्राइड्समेड सिनेमा के लिए गहरा प्रेम जगाएँ।

मैं क़ानूनी होना नहीं चाह रहा हूँ, लेकिन यदि आप भविष्य की दुल्हन है, तो क्या आपके भविष्य के पति ने आपके शरीर को पवित्र आत्मा का मंदिर होने के रूप में संभाले रखना जबकि सिनेमा जैसे ब्राइड्समेड के लिए *"गहरा प्रेम"* भी रखे, जिसमे विकृत कामुकता शीर्षक है? पतित जगत भी देखनेवालों को ऐसे सिनेमा के बारे में चेतावनी देता है, उन्हें अधिक यौनता के लिए *"आर"* का दर्जा देता है। मैं सोचने के अलावा कुछ नहीं कर सकता कि ये शब्द वचन यूहन्ना, यीशु के चेले ने लिखे हैं वे अपनी पीढ़ी के लिए है : *"तुम न तो संसार और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो। यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड, वह पिता की ओर से नहीं परंतु संसार ही की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेंगा"* (१ यूहन्ना २:१५-१७)।

क्या हम पाप और विकृति से इतने प्रभावित हो गए हैं कि हमारे जीवन न ही केवल ऐसे भ्रष्टाचार को अपनाते हैं, परंतु उस पर मुस्कुराते भी हैं?

पहले उल्लेखित लेख पर मेरी टिपण्णी उसके लेखक के लिए अभियोग नहीं; मैं ऐसी शालीनता के आचरण से बचा नहीं हूँ। यद्यपि मैं जो देखता हूँ वही पाप मेरे जीवन में भी है। लेकिन क्या हम पाप और विकृति से इतने प्रभावित हो गए हैं कि हमारे जीवन न ही केवल ऐसे भ्रष्टाचार को अपनाते हैं, परंतु उस पर मुस्कुराते भी हैं? स्मरण रखे, मैं भी दोषी हूँ।

तुलना और निंदा का खेल

एक मार्ग जिससे हम परमेश्वर के वचन को नजरंदाज करते हैं यह है जब हम अपने आप की औरों से तुलना करते हैं। उदाहरण के तौर पर, हम सांसारिक या अधार्मिक संबंधों को देखतें हैं और हमारे संबंध को उसकी तुलना में पवित्र समझते हैं। लेकिन अपने आपकी औरों से तुलना करने के द्वारा, हम निडर होकर घोषित करते हैं कि हमने उसकी पवित्रता के अलावा कुछ और को मानक बनाया हैं। हम मसीह से और मनुष्य की ओर अपनी आँखे हटाकर हम अपने जीवनों की औरों से तुलना नहीं कर सकते।

हमें हमारे आसपास के लोगों से बढ़कर *"थोड़ा सा अलग' या "*थोड़ा सा उत्तम" बनने के लिए परमेश्वर के वचन ने कभी नहीं कहां। इसके बजाय, वह जैसा पवित्र है, वैसे पवित्र होने के लिए हमें कहां हैं (१ पतरस १:१५), और हमारा स्वर्गीय पिता जैसे सिद्ध है, वैसे ही हम सिद्ध बने (मत्ती ५:४८)। हमें उसके प्रिय बालक होने के रूप में उसका अनुकरण करने को कहां है (इफिसियों ५:१)। क्या होगा यदि परमेश्वर का वास्तव मे वही मतलब था जो उसने अपने वचन में प्रगट किया है? कहाँ हम हमारे सूक्ष्म, सांसारिक समझौते न्याय ठहरा रहे हैं जबकि परमेश्वर की पवित्रता और उसके वचन के ज्योतिमय प्रकाश में नजरंदाज कर रहे हैं? कबसे पतित मानव, जो मिट्टी में वापस लौटेगा, आदर्श होगा कि हम उसका अनुकरण करें?

इसे समझिए : क्षेत्र जिसमे हम हमारे जीवन और कार्यों की दूसरों से तुलना करते हैं वे आम तौर पर सटीक क्षेत्र हैं जिसमें पवित्र आत्मा परिवर्तन लाना चाहता है। जीवन की व्यस्तता में, कैसे अक्सर हम पवित्र आत्मा की आवाज़ को हमें हमारे पापों से दोषसिद्धि ठहराने को नजरंदाज करते हैं ? मैंने एक छोटीसी नोटबुक साथ रखना शुरू किया हैं जिसे मैं प्यार से *"पवित्र आत्मा की नोटबुक"* कहता हूँ। उसमे, मैंने मेरे पापी विचार या कृत्य के बारे में किसी भी दोष का रिकॉर्ड करना शुरू किया है। आगे, जब दूसरों के काम को दोषी ठहराने का प्रलोभन होता है, तो मैं इसके बजाय रुकता और पूछता हूँ, *"प्रभु, ये पाप मेरे जीवन में कहाँ है?"* और फिर मैं दोषसिद्धि को लिखता हूँ। हमको दूसरों की गलतियों पर और परमेश्वर हम में जो काम करना चाहता है उसे नजरंदाज करने पर केंद्रित रहने के लिए दुश्मन कैसे खुश होता है!

दुश्मन उससे युद्ध करेगा जो परमेश्वर आप में बदल रहा है। इसे स्मरण रखे : दुश्मन दोषी ठहराता है, परमेश्वर दोषसिद्धि करता है। परमेश्वर की दोषसिद्धि की इस तरह से रचना की गई है कि आप में मसीह का चरित्र बनाए। दुश्मन के दोषी ठहराने की रचना आप एक आशाहीन प्रकरण हो और परमेश्वर आप में संयम खो रहा है इस पर विश्वास करने में फसाने की है।

दुश्मन झूठ बोल रहा है।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. इस पाठ में पेश किए हुए कुछ *"दुश्मन"*(पाप) से आप किस तरह से संघर्ष कर रहे हैं?

२. दोषी ठहराना और दोषसिद्धि करने के बीच में क्या फर्क़ है? कौनसा परमेश्वर की ओर से है? क्या आपके जीवन में कोई क्षेत्र है जिसमे आपको दोषी ठहर रहे ऐसा लगता है, और यदि है, तो आप आपके विचार कैसे फिर से नया बना सकते हैं?

१७

पवित्र आत्मा के साथ तालमेल बनाना

जीवन में मेरा एक सबसे बड़ा आनंद तैरनेवालों को प्रशिक्षण देना था जब मैं मध्य पूर्व में रहता था। मैं इसमे आनंद महसूस करता था, खेल के कारण नहीं, लेकिन मेरे संघ में के हर एक तैरनेवाले से मुझे प्रेम था। हमारे संघ में विविधता थी, जो ऑस्ट्रेलिया से इटली तक, साउथ अफ्रीका से हॉलंड तक करीबन २० देशों से थे। हर एक दिन, बच्चे मेरी आवाज़ सुनते थे, शायद उन्हें जितना सुनना चाहिए उससे से भी ज़्यादा बार! परीक्षा के समय, वे उसे अच्छी तरह से जानते थे-अलग, गहरी और बड़ी। *"चुस्ती दिखाओ! कारगर बनो! ठोसे मारो! प्रमुख चक्र! दीवार पर आक्रमण करो! आपके हाथ देखो-प्रवेश!"*

खेलने के दिन-एड्रीनलिन के साथ, माता पिता और भीड़ का जोश, और साथ में हो रही घटनाओं का व्यत्यय – ऐसी गड़बड़ी में हो सकता है मेरी आवाज़ गुम हो सकती थी। इसलिए, मैं अक्सर नया तैराक, कम अनुभवी तैराकी को इस गड़बड़ी से किनारे रखता था और उन्हें याद दिलाता था, *" केवल एक ही बात पर ध्यान दो ; प्रशिक्षक, नाटे। जो बातें मैं ने तुम्हें बताई है उसे याद रखो।"*

पवित्र आत्मा की आवाज़

जिस तरह से मेरे तैराकी संघ को मेरी आवाज़ पर ध्यान देना और उस पर केन्द्रित रहना था, उसी तरह से यीशु से प्रतिबद्ध अनुयायियों को इस गड़बड़ी के जगत के संभ्रम के बीच उसकी आवाज़ सुनना चाहिए। तो, पवित्र आत्मा की आवाज़ कैसे होती है?

यह बहुत ही सरल है। पवित्र आत्मा भटके हुए लोगों को तीन क्षेत्र में दोषसिद्धि करता है। यूहन्ना १६:८ इसे स्पष्ट करता है, *"वह आकर संसार को **पाप** और **धार्मिकता** और **न्याय***

के विषय में निरुत्तर करेगा।" जबकि यह वाक्य पवित्र आत्मा के काम के संदर्भ में कहता है कि पापियों को पछताने तक लाए (मन और दिशा में परिवर्तन), इसमे यीशु के अनुयायियों के लिए भी लागूकरण है। एक नए तरीके के मार्ग में, उसकी आवाज़ हमारे हृदयों को पाप, धार्मिकता और न्याय के तीन क्षेत्रों में दोषसिद्धि करने के अर्थ में सदैव स्पर्श करती है।

१. पाप

पाप के बारे में सोचो वे हमारे जीवन में ऐसी बातें है -जो नहीं होनी चाहिए- जो अस्तित्व में है, परंतु नहीं होनी चाहिए। वासना, आलस्य, घमंड, स्वार्थीपन, निंदा, कपट। आपको कल्पना हो गई। हम उसके पवित्रता की सिद्धता कहां चूक रहे हैं? (यदि आप मेरे समान है, तो आप शायद सोच रहे हैं, "मैं उसके पवित्रता की सिद्धता को कहाँ चूक रहा हूँ?")

पाप-बातें जो हमें उसे अधिक जानने से रोकती हैं। प्रोत्साहित हो जब पवित्र आत्मा आपके जीवन में इन बातों को पहचानता है। इसका अर्थ आपको ज़्यादा प्रेम किया गया है (प्रकाशितवाक्य ३:१९, इब्रानियों १२:६)। पवित्र आत्मा हमें यीशु के हृदय को बता रहा है, गलतियाँ जो की हैं उसके लिए हमें दोषी नहीं ठहरा रहा है। (क्या आपको दोषी ठहराना और दोषसिद्धि करने के बीच का फर्क़ याद है? पाठ १६ देखे) जब दोषसिद्धि होती है, क्या हम आज्ञा में कार्य करते हैं, परमेश्वर के पवित्रता के मानक को जानकर? या क्या हम पवित्र आत्मा के दोषसिद्धि को अस्वीकार करते हैं ताकि इस जगत के अस्थिर, अपूर्ण सुख का आनंद उठाए?

२. धार्मिकता

यूहन्ना १६:८ विश्वासियों को लागू करने पर, *"धार्मिकता"* मसीह-समान विशेषताओं के रूप में देखा जा सकता है जो हमारे जीवन में रहनी चाहिए, लेकिन वे नहीं हैं। पवित्र आत्मा हमें कार्यकारी आज्ञा पालन की खोज करने के लिए दोषसिद्धि करता है। यीशु हमें बताता है कि उसका राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करें (मत्ती ६:३३)। ये हमें दु:खित लोगों की सेवा करने, अकेले लोगों से प्रेम करने, करुणा दिखाने, संतों को प्रोत्साहित करने, दूसरों के लिए खर्च करने इत्यादि करने की अगुवाई करता हैं। ये धार्मिकता के कार्य हमें परमेश्वर की सिद्ध इच्छा में चलने को निर्देश देते हैं, जैसे एपफ्रास ने कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए प्रार्थना की : की *"वे सिद्ध होकर पूर्ण विश्वास के साथ परमेश्वर की इच्छा पर स्थिर रहें"* (कुलुस्सियों ४:१२)।

३. न्याय

न्याय को हर एक परिस्थिति में ज्ञान के रूप में सोचा जा सकता है। जब हम जीवन में चलते हैं, परमेश्वर का आत्मा हमने जो चुनाव करना हैं उसके लिए हमें उसका मन देना चाहता है। और-अधिक महत्वपूर्ण- वह हम में प्रत्येक विकल्प के साथ सही दृष्टिकोण का निर्माण करना चाहता है। दूसरे शब्दों में, बड़े विषय ये विशेष विश्वविद्यालय जाने का चुनाव करना नहीं, लेकिन इसके बजाय उस निवास स्थान पर मेरा उद्देश्य क्या है। उस विशेष निवास स्थान पर मेरे विचार, शब्द और कृत्यों से परमेश्वर की महिमा करना यह मेरी हृदय की इच्छा है क्या? शायद बड़ा विषय एक विशेष नौकरी जिसके लिए मैं अर्जी दूँ यह नहीं, लेकिन उस काम की जगह के द्वारा परमेश्वर का आदर हो और उसकी पहचान हो यह मेरी इच्छा होगी क्या? अक्सर, हम हमारे चुनाव करने को ज़्यादा आत्मिक बनाते हैं, जब परमेश्वर की इच्छा परिस्थितियों की खास बातों से ज़्यादा उसकी महिमा करने की होती है। वह चाहता है कि हम केवल उस मार्ग में चले जो उसने पहले से ही प्रगट किया जो उसे प्रसन्न करता है। वह आपको चमत्कारिक प्रगटीकरण नहीं देगा कि कौनसा घर ख़रीदे, लेकिन वह आपको सही निर्णय और शास्वत मूल्य का चुनाव करने को ज्ञान देगा (याकूब १:५)।

दिन के अंत में, आत्मा की भूमिका हमें यीशु की ओर इशारा करना और उसकी महिमा करना है। *"परंतु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेंगा परंतु जो कुछ सुनेगा वही कहेंगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा"* (यूहन्ना १६:१३-१४)।

पवित्र होने के लिए अत्यधिक व्यस्त

यदि हमारे कार्य हमें उसके साथ घनिष्टता से दूर कर रहे हैं, तो हमें हमारे जीवन का फिर से मूल्यांकन करना चाहिए और पूछे, "किसकी आवाज़ मैं सुन रहा हूँ? किसके निर्देश का मैं पालन कर रहा हूँ? यदि हां इतना कुछ कर रहे है कि हमें परमेश्वर की उपस्थिति में रहने के लिए समय नहीं है, तो फिर हम बहुत ही व्यस्त हैं और वह हमसे पूछ रहा उससे ज़्यादा कर रहे हैं (लूका १०:४२)। या, यदि हमारे कार्य लोगों को हमारी ओर इशारा कर रहे हैं, और हम हमारे कामों के लिए महिमा प्राप्त कर रहे हैं, तो हमें कौन चला रहा है उसका फिर से मूल्यांकन करें।

यदि हम परमेश्वर को सुनने में बहुत ही व्यस्त है, तो हम बहुत ही व्यस्त हैं।

स्मरण रखे, परमेश्वर उसकी महिमा किसी ओर के साथ नहीं बांटता। जब हमें महिमा मिलती है, परमेश्वर को नहीं (यशायाह ४२:८)।

इन बातों पर मनन करने के लिए समय निकाले। परमेश्वर के बजाय हम कहाँ पर महिमा प्राप्त कर रहे हैं? हमारे जीवनों में कहाँ पर हम परमेश्वर को महिमा देने के बजाय दूसरों को दे रहे हैं?

हम एक अराजक जगत में जी रहे हैं। सब कुछ हमारा ध्यान और समय अपनी ओर खींचने को देखता है। काम। परिवार। मनोरंजन। मित्र। राजनीति। संघर्ष। रिश्तेनाते। भय। जब मैं परमेश्वर की आवाज़ सुनने में संघर्ष करता हूँ, क्या ऐसा हो सकता है कि मेरा जीवन बहुत ज़ोरदार है? शायद यह दूसरी आवाज़ों को शांत करने के बारे में इतना नहीं जितना कि उस एक आवाज़ के साथ तालमेल बिठाना है-उसकी आवाज़। भजनकार हमें बताता है, *"चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ"* (भजन संहिता ४६:१०)। यह आज्ञा मौन में समाप्त नहीं होती, लेकिन यह जानने की परिपूर्णता में कि वह परमेश्वर है जब हम हमारे जीवन में उसके स्थान को और हमारे क्षणों के लिए उसके उद्देश्य को पहचानते हैं।

हम हमेशा हमारे शोरगुल भरे जगत को चुप नहीं करा सकते, लेकिन हम हमारे स्वामी की आवाज़ को उसके वचन में रहने के द्वारा सुन सकते हैं। यीशु ने अपने अनुयायियों को यूहन्ना १०:२७ में स्मरण कराया, *"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं; मैं उन्हें जानता हूँ, और वे मेरे पीछे चलती हैं।"* यीशु ने पवित्र आत्मा की भूमिका उसके वचन को उन्हें स्मरण कराने की है यह स्पष्ट किया। *"परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहां है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा"* (यूहन्ना १४:२६)।

एक जीवन जो स्वयं का इन्कार करता है जिसमे पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनी और मानी जा सकती है। यह समझ लीजिए। परमेश्वर वह नहीं जो बताने में असफल होता है। वह हमसे उसके वचन में निरंतर बात कर रहा है।

प्रश्न यह है : क्या हम सुन रहे हैं?

यदि हम परमेश्वर को सुनने में बहुत ही व्यस्त है, तो हम बहुत ही व्यस्त हैं।

एक जीवन जो स्वयं का इन्कार करता है जिसमे पवित्र आत्मा की आवाज़ सुनी और मानी जा सकती है।

पवित्र आत्मा का काम

एक जवान लड़के की कहांनी बतायी गई जो एक शिल्पकार के पास गया जो एक ओक के बड़े पेड़ से लकड़ी के छिलके बड़ी बारीकी से निकाल रहा था। साजिश से, जवान ने कलाकार से पूछा, *"आप क्या बना रहे है?"* उसने उत्तर दिया, *"मैं एक शेर गढ़ रहा हूँ। फिर एक बार, लडके ने उस परिस्थिति पर विचार किया और पूछा, "*यह कैसे संभव है? आप लकड़ी के तने में एक शेर कैसे देख सकते है?"

अपनी छेनी रखकर, शिल्पकार ने लड़के की तरफ देखा और उत्तर दिया, *"यह बहुत ही सरल है। मैं एक बड़े लकड़ी से हर एक भाग को काटता रहता हूँ जो शेर के जैसा नहीं दिखता है और जो कुछ मुझे मिलेगा वह शेर होगा।"* उसी तरह से, पवित्र आत्मा का काम है हमें पूर्ण सत्य में मार्गदर्शन करे और, अंत में, यीशु मसीह के स्वरूप में बनाए, जब वह वो सब कुछ निकालता है जो मसीह के सदृश नहीं दिखता।

आज्ञा पालन का पहला कदम कौनसा है जो लेने के लिए परमेश्वर आपको निर्देश दे रहा है? आप पहला कदम लेने से पहले उससे दूसरा कदम प्रगट करने की उम्मीद न करे। यह सांसारिक सरल विश्वास की यात्रा है, हर क्षण में आज्ञापालन करने के द्वारा पवित्र आत्मा में चलना है।

इस घनिष्ठ संबंध में गंभीर ज़िम्मेदारी मौजूद है। बाइबल से इन तीन आज्ञाओं पर मनन कीजिए :

१. पवित्र आत्मा को न बुझाओ

"आत्मा को न बुझाओ" (१ थिस्सलुनीकियों ५:१९)। *"बुझाना"* दीया या आग को बुझा देने को संबोधित करता है। हम पवित्र आत्मा के काम को हम में और हमारे द्वारा बुझाते हैं जब हम उसके कहने को सुनने में असफल होते हैं और इस तरह से *"इस जगत में जलते दीपकों समान चमकने"* (फिलिप्पियों २:१५) में असफल होते हैं। पवित्र आत्मा विश्वासियों को सत्यता में अगुवाई करना चाहता है, लेकिन वह आज्ञा मानने के लिए जबरदस्ती नहीं करेगा।

२. पवित्र आत्मा को शोकित मत करो

"परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिए छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निंदा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर किए जाए। एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे

परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो" (इफिसियों ४:३०-३२)। यह सत्यता आश्चर्यजनक है। समान शब्द *"शोक"* तीव्र शोक के लिए इस्तेमाल किया गया है जो होता है जब प्रियजन मर जाते हैं। हम पवित्र आत्मा को शोकित करते हैं जब हम पवित्रता और प्रेम में जीवन जीने में असफल होते हैं। इसके बारे में सोचिए! परमेश्वर कमज़ोर, पतित मानव को पवित्र आत्मा को शोकित होने देता है ! यह परमेश्वर का उसके बच्चों के लिए कोमल और कृपालु हृदय प्रगट करता है, लेकिन जो प्रभु हमसे प्रेम करता है उसे दु:ख देना यह हमारे लिए कितनी ही दुष्ट और अकृतज्ञ बात है !

३. पवित्र आत्मा से भर जाओ

"इसलिए में यह कहता हूँ और प्रभु में आग्रह करता हूँ कि जैसे अन्यजातीय लोग अपने मन की अनर्थ रीति पर चलते हैं, तुम अब से फिर ऐसे न चलो। क्योंकि उनकी बुद्धि अँधेरी हो गई है, और उस अज्ञानता के कारण जो उनमें है और उनके मन की कठोरता के कारण वे परमेश्वर के जीवन से अलग किए हुए हैं; और वे सुन्न होकर लुचपन में लग गए हैं कि सब प्रकार के गंदे काम लालसा से किया करें। पर तुम ने मसीह की ऐसी शिक्षा नहीं पाई। वरन् तुम ने सचमुच उसी की सुनी और जैसा यीशु में सत्य है, उसी में सिखाए भी गए" (इफिसियों ४: १७-२१)। *"पवित्र आत्मा से भरना"* यह वास्तव में यीशु के आत्मा, उसके आनंद, प्रेम और अन्य गुणों से भरपूर होकर मार्गदर्शित और सामर्थ्यशाली होना है जो उसके चरित्र की सिद्धता को प्रदर्शित करते हैं (गलातियों ५:२२-२५)। परिभाषा से, यदि हम किसी एक बात से भरे है, तो हम किसी और बात से भरे नहीं जा सकते। क्या हम हमारे जीवन के हर एक क्षेत्र में परमेश्वर के विचार को हमारे दृष्टिकोण को भरने दे रहे हैं? परिणाम यह एक जीवन होगा जो यीशु मसीह समान दिखेगा और प्रेम करनेवाला होगा।

पवित्र आत्मा आप में और आपके द्वारा क्या कर सकता है उसकी कोई मर्यादा नहीं है जब आप स्वयं का इन्कार करते हैं, आपका क्रूस उठाते है, और उसकी आवाज़ -प्रत्यक्ष यीशु की आवाज़ सुनते है।

"और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र के आत्मा को, जो 'हे अब्बा, हे पिता' कहकर पुकारता है, हमारे हृदयों में भेजा है। इसलिए तू अब दास नहीं, परंतु पुत्र है; और जब पुत्र हुआ, तो परमेश्वर के द्वारा वारिस भी हुआ" (गलातियों ४:६-७)।

गंभीरता से। स्वर्ग के इस ओर, क्या इससे अच्छा कुछ होगा?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. पवित्र आत्मा वर्तमान स्थिति में आपको पाप, धार्मिकता और न्याय के क्षेत्रों में कैसे अपराधी घोषित कर रहा है?

२. आप इस समय आपके जीवन में यीशु के पवित्र आत्मा को कैसे बुझा रहे हैं या शोकित कर रहे हैं?

३. पवित्र आत्मा की आवाज़ उत्तम रीति से सुनने के लिए आप कौनसे व्यवहारिक कदम उठाएंगे?

भाग ३

“... और क्रूस

अपना

उठाए...”

१८

यीशु ने आपको क्रूस से नहीं बचाया

केवल कोई तर्क किसी को कहता है यदि मैंने बरमूडा चड्डी, एक हवाईन टी-शर्ट और सैंडल पहने हैं, और मुमकिन है मैं किसी कॉर्पोरेट व्यापार बैठक को नहीं जा रहा हूँ। उसी तरह से, अगर मेरा पहनावा फुटबॉल पैड्स, जर्सी, हेल्मेट, मुखसुरक्षा और नुकीले जूतें हैं, तो आप संभवतः मान ले कि मैं फुटबॉल खेल रहा हूँ-अमरीकी फुटबॉल, यही सही है। इसलिए, जब मसीह उसके अनुयायियों को अपना क्रूस उठाने के लिए बुलाता है, तो क्या मान लिया जाता है? जी हाँ, एक व्यक्ति जो क्रूस उठाता है उसके सामने क्लेश, सताव और मृत्यु का अंत है।

अपना क्रूस उठाना उस जीवन जीने के बारे में बताता है जो अस्वीकार और यातना का अंदाज लगाता है। क्लेश की उम्मीद की जाती है। उसी तरह से मृत्यु की भी। आप ने क्रूस को आपके उद्धारकर्ता की आज्ञा से उठाया है। आश्चर्य यह सताव का क्लेश नहीं सहना पड़ेगा। मृत्यु की ओर नहीं ले जाया जाएगा। उसके नाम की खातिर बदनाम नहीं किये जाओगे। क्या ऐसे विचार हमारी २१वीं सदी में हमारे कानों के लिए अनजाने हैं? क्या हम जगत में इतने आरामदायक हो गए हैं जिसने हमारे उद्धारकर्ता को क्रूस पर चढ़ाया है, कि हम किसी तरह से क्रूस की लज्जा और यातना को सहे बगैर *"उसके पीछे चलने"* की आशा रखते हैं? अगर जगत उसका विरोध कर रहा है, तो क्या हमें उनसे उम्मीद करनी चाहिए कि वे हमारी सराहना करेंगे?

यीशु ने कभी भी क्रूस का और न ही उसे उठाने की आज्ञा का नकाब नहीं पहना। मेरा एक प्रिय मित्र, केविन टर्नर मुझे पूछता है, *" 'आओ और मरो' ! शब्दों से कौन क्रांति शुरू करता है?"*

सामान्य मसीही को बताओ कि यीशु ने आपको क्रूस से नहीं बचाया, तो आपको विधर्मी कहां जाएगा। क्या यह मानसिकता इसका एक कारण हो सकती है कि हम मसीह का प्रेम, मिशन और दया की गहराई से चूक जाते हैं? क्या यह हो सकता है कि क्रूस को अपनाने की हमारी अनिच्छुकता भी हमें उसे स्वीकार करने से रोक सकती हैं? और क्रूस को टालने का हमारा प्रयास हम में उसके प्रेम को पूरी तरह से सराहना न करने का परिणाम लाता है।

कई सारे पुरुष और स्त्रियाँ क्रूस की मृत्यु मरे हैं। योसेफस, यहूदी इतिहासकार, यीशु के स्वर्गारोहण के कुछ सालों बाद पैदा हुआ,लिखता है कि रोमी लोगों द्वारा यरूशलेम की घेराबंदी (इसविसन ७०)[३७] के दौरान हर दिन करीबन ५०० लोगों को क्रूस पर चढ़ाया जाता था इस बात का वह गवाह है। आज भी, यहाँ कुछ धार्मिक उग्रपंथिय हैं जो उन्हें क्रूस पे चढाते है जो उनके विश्वास से असहमत है। कई सारे लोगों को क्रूस पर चढ़ाया गया हैं। तो नासरत के यीशु के क्रूस को औरों से किस तरह से अलग किया है? क्या यह क्रूस पर चढाने के बारे में ही केवल है, या क्या कुछ असीम रूप से अधिक भयावह है?

यह विलक्षण है कि गतसमनी के बगीचे में, अत्यंत यातना और शोक में, यीशु ने पिता से कभी बिनती नहीं की कि उसे क्रूस से बचा ले। एक बार भी नहीं। ऐसी कोई प्रार्थना नहीं जहाँ यीशु कह रहे है, *"यदि यह तेरी इच्छा है, तो यह क्रूस मुझ से टल जाए।"* तीन बार, तथापि, यीशु ने अवश्य प्रार्थना की, *"हे मेरे पिता, यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए, तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परंतु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो"* (मत्ती २६:३९)।

कटोरा क्यों और क्रूस नहीं?

परमेश्वर के क्रोध का कटोरा

संपूर्ण पुराने नियम में, हम इस कटोरे को परमेश्वर के क्रोध चिन्ह के रूप में देखते हैं जो मानवजाति की दुष्टता के विरोध में भरा हुआ है। भजन संहिता ७५:८ में, आसाफ लिखता है, *"यहोवा के हाथ में **कटोरा** है, जिसमें का दाखमधु झागवाला है; उसमे मसाला मिला है, और वह उसमें से उंडेलता है, निश्चय उसकी तलछट तक पृथ्वी के सब दुष्ट लोग पी जाएंगे।"* बाद में यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के इन वचनों को लिखा : *"इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने मुझ से यों कहां : मेरे हाथ से इस जलजलाहट के दाखमधु का **कटोरा** लेकर उन सब जातियों को पिला दे जिनके पास मैं तुझे भेजता हूँ"* (यिर्मयाह २५:१५)।

मसीह क्रूस पर जाने से पहले, याकूब, यूहन्ना, उनकी माँ और यीशु के बीच में बातचीत हुई। इस मुलाकात में, चेलों की माँ ने बिनती की कि उसके पुत्रों को उसके राज्य में मसीह के दाहिने और बाएं बैठने का अधिकार दिया जाए। मुझे मसीह का जवाब पसंद है, *"तुम नहीं जानते कि क्या माँगते हो। जो **कटोरा** मैं पीने पर हूँ, क्या तुम पी सकते हो?"* (मत्ती २०:२२)।

उन्होंने उत्तर दिया कि वे उस कटोरे को पी सकते है, उसके उत्तर में यीशु ने कहां, *"तुम **कटोरा** तो पीओगे, पर अपने दाहिने और बाएं किसी को बैठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिए मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिए है"* (मत्ती २०:२३)।

शब्दों के बदलने पर ध्यान दीजिए। पहले उसने उनसे पूछा क्या वे उस कटोरे को पी सकते क्या? फिर वह उनसे कहता है वे उसका कटोरा पीएंगे।

हमें इसे चूकना नहीं है।

मसीह ने परमेश्वर के क्रोध के कटोरे को पीया ताकि हम हमेशा के लिए उसके प्रेम के कटोरे को पी सके।

"जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिए पाप ठहराया कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ" (२ कुरिन्थियों ५:२१)। यीशु हमारे लिए पाप हो गया (पवित्र, असीम पाप का बलिदान)। जब वह क्रूस पर गया, क्या हुआ? उसने बड़े आवाज़ में कहां, *"हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया?"* (मत्ती २७:४६)। यह पृथ्वी पर पहली बार था जब यीशु ने प्रार्थना की और परमेश्वर *"पिता"* को नहीं पुकारा। क्यों? क्रूस पर, यीशु का त्याग किया गया था, पिता के साथ की घनिष्ट संगति से अलग किया गया था ताकि हम उसके प्रेम से कभी भी अलग न किये जाए।

यह पाप का दंड है-अलग होना। अदन वाटिका से आगे, पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से अलग किया था, जब तक यीशु मसीह नहीं आया और हमें परमेश्वर से मिलाप नहीं कराया। अब मसीह के अनुयायी के रूप में, हम आनंद से पढ़ सकते हैं, *"क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ्य, न ऊँचाई, न गहराई, **और न कोई और सृष्टि हमें** परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी"* (रोमियों ८:३८-३९)।

मसीह ने परमेश्वर के क्रोध के कटोरे को पीया ताकि हम हमेशा के लिए उसके प्रेम के कटोरे को पी सके। पूरे अनंतकाल में, हम हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम की गहराई को कभी भी

समझ नहीं पायेंगे, न ही हम पूरी तरह समझ पायेंगे कि हमारा उद्धार खरीदने के लिए उसे क्या किमत चूकानी पड़ी, क्योंकि हम परमेश्वर के क्रोध की बूंद को कभी नहीं चखेंगे।

लेकिन इस कटोरे के बारे में यहाँ और भी है। जिस रात को उसके साथ धोखा किया गया, यीशु ने कटोरा लिया और अपने चेलों को यह कहते हुए दिया, *"**यह कटोरा** मेरे लहू में नई वाचा है : जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो"* (१ कुरिन्थियों ११:२५)। यह कटोरा। उसने हमारा कटोरा पिया ताकि हम उसका पी सके। हमारा कटोरा उसके साथ प्रेम और संगति का है।

कई वर्षों पहले, जब मैं देर रात में मनन कर रहा था तब परमेश्वर के भयावह क्रोध के कटोरे पर कुछ सोच रहा था, तब ये शब्द मुझे दिए गए।

तेरे हाथ में एक कटोरा है,
जिसमे न्याय, मृत्यु और नरक का तलछट भरा है।
यह उस न्याय की गवाही देता है, जिसे पवित्रता मांगती है,
जिसका वर्णन कभी भी कोई नश्वर नहीं कर सकता।

कई समय के बाद तैयार किया गया जैसे मनुष्य क्रोध करता है,
यह कटोरा निरंतर स्मरण साबित करता है,
वो पाप, यद्यपि बड़े पैमाने पर है उसका न्याय किया जाएगा,
और परमेश्वर, जो न्यायी, इससे हटेगा नहीं।

फिर भी प्रेम अज्ञात, विचारों से परे,
स्वर्ग से बाहर आया कि हम सब देखे,
वह जो देह में छिपा हुआ जिसकी झलक जगत देख सके
दया न्याय का सामना करती है, हमें मुक्त करती हैं।

और, ओह भयावह कटोरा निकाल दिया गया,
जिसे एकमात्र निष्पाप पर उंडेला गया,
जो परमेश्वर के अपने होठों के शब्द पर
यह पूरा हुआ, हमेशा के लिए पूरा किया गया।

और अब सभी क्षेत्रों से ऊपर उठाया गया,
उसका कटोरा मेज पर देखता है,
वह बोलता है, "यह मेरा लहू है जो आप पीते हो,
जब तक मैं वापस आऊँ, मेरा स्मरण करो।"

परमेश्वर के क्रोध और अनंतकाल का अलग होना जो निश्चित था उससे हमें बचाने के लिए यीशु मर गया, परंतु वह हमें क्रूस से बचाने के लिए नहीं मरा। कोई भी ईश्वरविज्ञान जो मसीह के पीछे चलने का क्या अर्थ है इससे क्रूस को हटाने का प्रयास करती है वह *"दूसरे मसीह"* को पेश करने का ईश्वरविज्ञान है (२ कुरिन्थियों ११:२-४)। यीशु ने उसके पीछे चलने में क्लेश सहना शामिल है इसका केवल संकेत नहीं दिया। यीशु ने अपने होनेवाले चेलों को क्रूस का चुनाव करने की आज्ञा दी। *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)।

क्रूस केवल विकल्प नहीं है। यह मसीह के साथ घनिष्टता के लिए मार्ग है।

यीशु ने जो कहां वही उसका मतलब था।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. *"यीशु आपको क्रूस से बचाने के लिए नहीं मरा"* इस वाक्य का स्पष्टीकरण दीजिए?

२. आपके जीवन में विशेष पाप के बारे में सोचिए। उस कटोरे के क्रोध में क्या था जो मसीह ने आपकी खातिर पीया? और उसने उसके बदले में आपको पीने के लिए कौनसा कटोरा दिया?

३. क्रूस उठाने के परिणामस्वरूप आप ने कौनसा कष्ट सहा है? और, यदि आप ने कोई क्लेश नहीं सहा है, तो क्यों नहीं?

११

क्रूस को समझना

क्रूस ऐसे ही आपको नहीं मिला है। आप ने इसे चुना है। मसीह का निमंत्रण कि अपना क्रूस उठाना और उसके पीछे हो लेना यह कोई विशेष कुछ बातों को टालना नहीं है। यह किसी विशेष बात को खोजने के बारे में है। उसके पीछे हो लेने के आप के चुनाव की सत्यता स्पष्ट हो जायेगी जब आप क्रूस उठाओगे।

लेकिन रुके रहो, यह उत्साहपूर्ण हो रहा है।

जानबूझकर लिया गया निर्णय

आपके जीवन में *"तूफान"* के कारण क्लेश और क्रूस उठाने के कारण से क्लेश इनके बीच में फर्क़ है। मुझे एक स्त्री याद आती है जो अपनी पीठ में दर्द होने पर विलाप करती है और कहती है, *"यह केवल मेरा क्रूस उठाना है।"* क्या ऐसा है? इस टूटे हुए जगत में, भटके हुए पापी और मसीह के अनुयायी दोनों ही तूफान से टकराएंगे। बातें जैसे कैंसर, बेरोजगारी, या प्रिय जनों की मृत्यु ये जीवन के तूफान हैं और वे किसी को भी हो सकते हैं। तो क्रूस को तूफान से क्या अलग करता है? अत्याचार से केवल क्लेश भोगने को क्या अलग करता है? क्रूस का चुनाव कैसे होता है?

आइए क्रूस उठाने का क्या अर्थ है उसके बारे में मुझे कुछ उदाहरण देने दीजिए। अंतरराष्ट्रिय वस्त्र बनानेवाली कंपनी के लिए मेरे अंकल कई सालों तक सचित्र स्पष्ट करनेवाले के रूप में काम करते रहे। उन्होंने वैश्विक आर्थिक संकट और बड़ी बेरोजगारी के समय के दौरान यह नौकरी की थी। व्यवस्थापक लोग कई अवसरों पर उनके पास अनैतिक व्यवहार को बढ़ावा देनेवाले आक्षेपों और छवियों वाले कपड़े डिज़ाइन करें यह कहने के लिए आते

थे । हालाँकि उन्हें ऐसी बातें करना एक मसीह होने के नाते उनके विचार के विरुद्ध है यह उन्होंने बार बार बताया था, फिर भी वे वैसी मांग करते रहे। अंत में, उन्होंने आखिरी बात कहीं : ऐसे शर्ट डिझाइन करे वरना बेरोजगार बने। इब्रानियों १३ की प्रेरणा से, उन्होंने क्रूस को चुना और नौकरी गवां दी। *"इसलिए आओ, उस की निंदा अपने ऊपर लिए हुए छावनी के बाहर उसके पास निकल चलें। क्योंकि यहाँ हमारा कोई स्थाई नगर नहीं, वरन् हम एक आनेवाले नगर की खोज में हैं"* (इब्रानियों १३:१३-१४)।

परमेश्वर ने आप को कौनसा क्रूस उठाने के लिए बुलाया है? शायद यह रिश्वत, मज़ाक और धमकाना जो अक्सर व्यवसाय जगत की ऊँचाई को प्राप्त करने के मार्ग का हिस्सा होता है, पर उसका इन्कार करने के क्रूस को उठाने के लिए बुलाया है। शायद घर, सुख, और सुविधाओं का त्याग करने के क्रूस उठाने को जो मसीह के सुसमाचार को जिन क्षेत्रों में यह अभी नहीं पहुंचा है उस बड़े मिशन पर ले जाने के लिए है। क्रूस जो भी हो और वह उठाने के लिए जो भी किमत उससे जुडी है, यीशु के शब्द स्मरण रखे, *"और जिस किसी ने घरों, या भाइयों, या बहिनों, या पिता, या माता, या बाल-बच्चों , या खेतों को मेरे नाम के लिए छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा, और वह अनंत जीवन का अधिकारी होगा। परंतु बहुत से जो पहले हैं, पिछले होंगे, और जो पिछले हैं, पहले होंगे"* (मत्ती १९:२९-३०)।

जॉन जी. एलिऑट के गीतों के स्वर, जो १९८० में लिखे गए, मन में आते है।

> क्रूस का स्वीकार करो, जहाँ यीशु ने क्लेश सहा,
> भले ही जो आपका है ऐसा आप दावा करते हो उसको त्यागना है।
> एक खाली कब्र गुलगुथा के दु:ख का समापन करती है
> आपके क्लेश सहने के क्रूस को कल तक सहन करो,
> क्रूस का स्वीकार करो।[३८]

क्रूस ही स्वयं यीशु मसीह के साथ संबंध में है और उसके नाम में जो लज्जा जुडी है उसको सहन करने की स्वीकृति है। सामाजिक क्षेत्र में अस्वीकृत होना क्योंकि आप ने संस्कृति की वेदी पर समझौता करने से इन्कार किया है। आपके मित्रों द्वारा आप को मुर्ख समझना जब आप जो ठोस है उससे अधिक शास्वत को मूल्य देते है।

यह हमें क्रूस के दूसरे पहलू की ओर लाता है।

जानबूझकर घोषित करना

क्रूस उठाना यह निजी चुनाव से अधिक है- अपराध जो हमने किये हैं उस अपराध की सार्वजनिक घोषणा करना है।

रोमन समय में, जब एक अपराधी घोषित व्यक्ति क्रूस पर चढ़ाए जाने की पहाड़ी पर जाता था, तब एक पत्री हर एक के गले में लटकाई जाती थी, देखनेवालों के लिए उनके अपराध वहां लिखे होते थे। दूसरे शब्दों में, भीड़ जो सार्वजनिक प्राणदंड देख रही होती उन्हें वास्तव में पता रहता था कि हर एक व्यक्ति वहां दु:ख और मौत क्यों सह रहा है-भले ही कटाक्ष भी वर्णन में इस्तेमाल किया होता ताकि व्यक्ति की निंदा की जाए।[३९, ४०] मसीह ने संभवतः उसके गले में विवादित पत्री पहनी होगी, *"नासरी यीशु, यहूदियों का राजा।"* अपराध की घोषणा क्रूस पर अपराधी के सिर पर लगायी जाती थी कि अपराध जो किए है वे सभी जो देखनेवाले हैं उनके लिए एक अंतिम स्मरण हो।

यीशु के पीछे चलने में जो भी क्रूस उठाने का चुनाव हम करते हैं, यह यीशु मसीह में जो अंतिम मूल्य और खज़ाना हमने पाया हैं उसकी जगत को घोषणा होगी। यह दो बातों की घोषणा करेगी : (१) हमारी निर्दोषता और (२) उसकी योग्यता। इन विचारों को गीत में सामर्थ्यशाली रूप से जोड़ते हुए, एलिजाबेथ क्लिफने, स्कॉटिश लेखिका, ने इन शब्दों को उसकी मौत के एक साल पहले लिखा।

यीशु के क्रूस पर,
मेरी आँखे जो एक समय देख सकती हैं,
प्रभु का प्रत्यक्ष मरने का प्रकार,
मेरे लिए जिसने वहां क्लेश सहा;
और मेरे टूटे हृदय, आंसुओं से,
दो आश्चर्य मैं कबूल करती हूँ,
उसके महिमामयी प्रेम का आश्चर्य
और मेरी अयोग्यता।[४१]

जब हमने क्रूस उठाने का चुनाव किया, तब हम दोषी थे यह घोषणा हमने की, कि हमने अब उद्धारकर्ता को पा लिया है और खज़ाना जो हमने उसमे पा लिया है वह उसके लिए जीना और मरना योग्य है।

क्रूस उठाना परमेश्वर के साथ हमें संबंध प्राप्त करने की योग्यता नहीं देता है। बल्कि, हमने प्रभु यीशु मसीह में अंतिम संबंध पाप्त कर लिया है, और हमें उसके साथ और उसके क्लेश में घनिष्ट संबंध चाहिए यह संकेत देता है। (फिलिप्पियों ३:१०)

क्या यीशु आपका खज़ाना है यह जगत जानता है? यदि नहीं, तो आप ने सच में क्रूस उठाया है क्या?

जानबूझकर छोड़ देना

क्रूस उठाने का काम सब कुछ छोड़ना है। मुझे स्पष्ट करने दीजिए। क्या आप ने कभी हाथ में भोजन की थाली पकड़कर रेफ्रीजरेटर को हिलाने का प्रयास किया है? संभवतः नहीं। ऐसे काम नहीं होता। सक्सोफोन बजाते हुए कार का तेल बदलने का प्रयास करो। न ही आपका काम न ही आपका तेल बदलना सफल होगा। उसी तरह से, हाथ जगत के खज़ाने से भरे हुए आप कभी भी क्रूस नहीं उठा सकते। इस काम के लिए खाली हाथ की आवश्यकता होती है। क्रूस उठाना यह चुनाव करना है : मसीह के साथ अपना लगाव सब कुछ त्यागने को कहता है। पौलुस के शब्दों में, *"परंतु जो जो बातें मेरे लाभ की थी, उन्ही को मैं ने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ और उसमे पाया जाऊँ, न कि अपनी उस धार्मिकता के साथ, जो व्यवस्था से है, वरन् उस धार्मिकता के साथ जो मसीह पर विश्वास करने के कारण है और परमेश्वर की ओर से विश्वास करने पर मिलती है"* (फिलिप्पियों ३:७-९)।

हमें क्रूस उठाने और यीशु के पीछे चलने से पहले, हमें हमारी खोज, घमंड, योग्यता, और अतीत को उसकी अगुवाई के बदले में पीछे छोड़ना हैं।

यदि एक ऑलिम्पिक तैराक उसके हर रोज के वस्त्र पर चमड़ी से चिपका हुआ तैराक वस्त्र स्पर्धा के लिए पहिनेगा, तो हम उसे प्रतिस्पर्धी नहीं मानेंगे। यदि एक एनबीए खिलाड़ी खेलने के लिए उसके यूनिफ़ॉर्म पर तीन पीस सूट वस्त्र और वैसे जूते पहिनकर आया तो हम *"तैयार नहीं"* ऐसा मानेंगे। जिस तरह से खेल में खेल के वस्त्र पहनने से पहले और साधारण वस्त्र निकालना अनिवार्य है, उसी तरह से मसीह की बुलाहट में है। हमें क्रूस उठाने और यीशु के पीछे चलने से पहले, हमें हमारी खोज, घमंड, योग्यता, और अतीत को उसकी अगुवाई के बदले में पीछे छोड़ना हैं।

जैसे हमने पहले चर्चा की है, जीवन जिसके लिए मसीह हमें बुलाता है वह उसके जीवन के दिव्य मध्यस्थी के (उद्धार का उसका दान) बगैर मानवी रीति से असंभव है। क्रम यह विचारपूर्वक है। यह केवल मसीह ने हमें उसका जीवन देने के बाद में हम क्रूस को ले सकते है। जैसे ऑगस्टीन टुप्लाडी ने लिखा :

मेरे हाथों के परिश्रम से
आपके व्यवस्था की मांग को पूरा नहीं कर सकता;
क्या मेरे उत्साह को कोई राहत नहीं मिल सकती,
क्या मेरे आँसू निरंतर बहते रहेंगे,
सभी पाप का प्रायश्चित्त नहीं कर सके;
आप ने बचाना चाहिए, और केवल आप।[४२]

प्रेम के लिए उत्तर

क्रूस उठाना यह उसके प्रेम के लिए प्रतिक्रिया है, उसका प्रेम प्राप्त करने का ज़रिया नहीं। परमेश्वर का वचन इसे बार बार दोहराता है :

- *"इसलिए हे भाइयों, मैं तुम से* ***परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर*** *बिनती करता हूँ कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढाओं। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।"* (रोमियों १२:१)

- *"अतः हे प्रियो,* ***जब कि ये प्रतिज्ञाएँ हमें मिली हैं,*** *तो आओ, हम अपने आप को शरीर और आत्मा की सब मलिनता से शुद्ध करें, और परमेश्वर का भय रखते हुए पवित्रता को सिद्ध करें।"* (२ कुरिन्थियों ७:१)

- *"****अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए,*** *तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।"* (कुलुस्सियों ३:१)

अपने आपको मसीह को देने में हमारी प्रेरणा यह उद्धार प्राप्त करने की नहीं है, या उसके प्रेम का हकदार बनाने के लिए नहीं है, लेकिन हमारे उद्धारकर्ता को जानने, जिसने हमारे लिए अपने आप को दे दिया। हम उसे प्रेम करते हैं क्योंकि उसने हमसे पहले प्रेम किया है-और उस प्रेम को परमेश्वर के क्रोध के कटोरे को पीने के द्वारा प्रदर्शित किया है।

व्यक्तिगत (परंतु निजी नहीं) संबंध

आइए हम इसको फिर से ध्यान में ले। क्रूस को (१) जानबुझकर चुना जाता है, (२) यह हमारे अपराधों की घोषणा है, और (३) अन्य बातों को छोड़ देने की आवश्यकता होती है। क्रूस उठाना यह (४) उसके प्रेम के प्रति जवाब है, और अंत में, (५) यह व्यक्तिगत और निजी दोनोंही हैं। मसीह ने अपने चेलों से कहां, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)। यीशु इस्तेमाल कर रहे सर्वनाम की ओर थोड़ा बारीकी से देखे : *"अपना"*। मसीह के हर एक अनुयायी ने अपना क्रूस उठाना है।

रोमन काल में, वहां छिपा क्रूस जैसी कोई बात नहीं थी। छवि ही प्रत्यक्ष उपहास्य है। कोई सरल तौर से भारी भरकम रोमन क्रूस या क्रूस की लकड़ी दर्शकों को स्पष्ट हुए बिना उठा नहीं सकता था। तब हम ऐसा अनुमान क्यों लगाते हैं कि आज मसीह हमें जो क्रूस उठाने को बुलाता है वह कोई अलग होगा? मसीह के पीछे चलना यह व्यक्तिगत निर्णय है, लेकिन सबसे निश्चित रूप से यह निजी नहीं है।

जब यीशु अपने चेलों से कह रहा था, तब उसने उनकी तुलना नमक, ज्योति और पहाड़ी पर का नगर से की (मत्ती ५:१३-१६)। ये सभी तीन घटक उनकी उपस्थिति अनुभव कराते और आकर्षित करते हैं-क्योंकि स्वाद, अगुवाई और आशा जो वे प्रदान करते हैं। यीशु ने अपने चेलों से यह भी कहां, *"जो कोई मनुष्यों के सामने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने मान लूँगा। पर जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करेगा, उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के सामने इन्कार करूँगा"* (मत्ती १०:३२-३३)। मसीह के पीछे चलने की उद्देश्यपूर्ण सार्वजनिक बात है जो हमारे आसपास के जगत पर प्रभाव डालने के लिए है।

यदि आप यीशु के अनुयायी है, तो वह आपको आज्ञा देता है कि आपका क्रूस उठा ले- मसीह के साथ व्यक्तिगत पहचान के लिए। उसने हमें एक स्पष्ट चिन्ह दिया है कि इस सच्चाई के संगति का स्मरण कराएं।

बपतिस्मा।

बपतिस्मा यह मंगनी है

बपतिस्मा पछतावा करना और सुसमाचार पर विश्वास रखना और मसीह के पीछे चलने के एक व्यक्ति के चुनाव की सार्वजनिक घोषणा है। मैं इसकी तुलना मध्य पूर्व मंगनी संस्कार से करना पसंद करता हूँ।

यीशु के समय में, एक जवान जोड़ी विवाह के लिए तैयार हो रही है उनकी मंगनी होने से पहले उन दोनों के परिवारों से उन्हें अनुमति मिलती थी। भले ही उनका विवाह अब तक हुआ नहीं है, पर यह समाज और कानून की दृष्टि में वैध और क़ानूनी रूप से बाध्य रहती थी। मित्र और परिवार उनके मंगनी की घोषणा को जनता और व्यापक पार्टी के साथ मनाते है। हाजिर लोगों की नजर में, वे अब अकेले या उपलब्ध नहीं हैं। वे अब जीवनभर के लिए एकसाथ हैं; वे उनके अकेले जीवन के लिए मृत हो गए हैं।

मैं मध्य पूर्व में मित्रों के घर में बैठा हूँ, दुल्हन और दुल्हे के शादी के वस्त्रों में, केक काटते हुए और नाचते हुए उनके तस्वीरों को देखा है। तस्वीरे जो मेरे मित्रों ने मुझे दिखाई हैं वे विवाह की तस्वीरों जैसी दिखती हैं, लेकिन अंदाज लगाओ क्या? वे वैसी नहीं हैं। वो तस्वीरे उनके मंगनी की हैं, जहाँ उन्होंने सार्वजनिक तौर से उनके एक होने की घोषणा की है। जैसे प्रथा है, मंगनी के बाद, जो पति है वो चला जाता है और उसकी दुल्हन के लिए स्थान तैयार करता है। जब स्थान तैयार हो जाता है, वह वापस आता है और उसे ले जाता है ताकि वे पति और पत्नी के रूप में एकसाथ जीवन व्यतीत करे। क्या यह कुछ परिचित नहीं लगता?

यीशु ने कहां, *"तुम्हारा मन व्याकुल न हो; परमेश्वर पर विश्वास रखो और मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते तो मैं तुम से कह देता; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने जाता हूँ। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहाँ ले जाऊँगा कि जहाँ मैं रहूँ वहां तुम भी रहो"*

(यूहन्ना १४:१-३)।

क्या आप आपका विश्वास निजी तौर से जीने का प्रयास कर रहे हैं जबकि प्रभु यीशु ने ऐसा विकल्प नहीं दिया है?

उसी तरह से, बपतिस्मा जगत के सामने एक सार्वजनिक मंगनी संस्कार है, जो स्वर्ग का दूल्हा, यीशु मसीह उसके साथ हमारे अटूट निष्ठा और संबंध की घोषणा करना है। हम अब से इस जगत के प्रेम के लिए उपलब्ध नहीं हैं। हम उसके प्रेम से मोहित हो गए हैं और उसके प्रस्ताव को *"हाँ"* कह दिया हैं। *"अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ*

गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों ६:४)।

जब नायगेर में बपतिस्मा का जश्न मना रहे थे, हमने सचमुच रेगिस्तान की मिट्टी में एक कब्र खोदी, उसमे तिरपाल लगाया, और छेद को निकट के नल या कुएं के पानी से भर दिया। जिसने सार्वजनिक तौर पर मसीह की घोषणा की है वह फिर उस *"कब्र"* में जाता था और -परमेश्वर के वचन में हमें दिए गए नाटकीय चिन्ह के रूप में-पृथ्वी में नीचे जाता है (जो मसीह के साथ मृत्यु का प्रतिनिधित्व करती है) और फिर बाहर आता है (जो मसीह में नए जीवन का प्रतिनिधित्व करती है)।

यहाँ चिन्हों में कोई गलती नहीं हैं। अब से हम नहीं जी रहे हैं, लेकिन मसीह जो हम में जीवित रहता है। बपतिस्मा यह एक सार्वजनिक कृत्य है जो किसी के पुराने जीवन की मृत्यु और नए जीवन की पूरी खोज की घोषणा करती है।

अपरिवर्तनीय बदल।

क्या आप आपका विश्वास निजी तौर से जीने का प्रयास कर रहे हैं जबकि प्रभु यीशु ने ऐसा विकल्प नहीं दिया है? क्या आपका बपतिस्मा हो गया है और क्या यीशु मसीह के साथ आपकी निष्ठा और संबंध को आप ने सार्वजनिक तौर पर घोषित किया है?

लेकिन यहाँ पर और भी ज़्यादा है।

यह संबंध और भी ज़्यादा गंभीर होने के बारे में है।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके जीवन के तूफान और क्रूस जो आपको उठाने के लिए बुलाया गया है इनके बीच में क्या फर्क़ है? दोनोंही के उदाहरण दीजिए।

२. आपके ध्यान को किस बात ने पूरी तरह से भर दिया है और क्रूस को नजरंदाज किया जा रहा है? आपके जीवन से कौनसी आवश्यकताओं को छोड़ देना चाहिए ताकि क्रूस को उठा सके?

३. मसीह के क्रूस को उठाने के लिए जगत की कौनसी बातें आप ने त्याग दी हैं?

४. क्या आप ने मसीह पर आपके विश्वास को जाहिर तौर से प्रगट किया हैं? कहाँ पर आप अभी भी आपके व्यक्तिगत विश्वास को निजी तौर पर रखने के प्रयास कर रहे हैं?

५. क्रूस ने आपके जीवन में या आप जिसे जानते हैं उनके जीवन में कैसे तिरस्कार लाया है?

२०

परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेना

सीनै पर्वत पर बादलों की गड़गड़ाहट, बिजलियाँ चमकाना और धुआं छा गया था, परमेश्वर ने मूसा को अपनी व्यवस्था प्रदान की। परमेश्वर की व्यवस्था में ये मर्मभेदी शब्द मौजूद है, *"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना; क्योंकि जो यहोवा का नाम व्यर्थ ले वह उसको निर्दोष न ठहराएगा"* (निर्गमन २०:७)। बारबार, इस वचन को केवल अपने शब्द के रूप में (जैसे "शाप मत दो") उथलेपन से अनुवादित किया गया है। लेकिन ऐसा अनुवाद परमेश्वर ने जो कहने का सोचा है उसके संदेश के दायरे को सीमित करता है, जो यह था : *"यदि आप मेरा नाम लेने जा रहे है, तो इसे हलके तौर पर न ले।"*

किसी का नाम लेने का क्या अर्थ है? बहुत सी संस्कृति में, जब एक स्त्री का विवाह हो जाता है, उसका आखिरी नाम बदल जाता है। वह रिश्ता, वाचा और एकता के चिन्ह के रूप में उसके पति का नाम लगाती है। मरकुस १०:७-८ में, यीशु कहता है, *"इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेंगा, और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं पर एक तन हैं।"* उसके नाम को ग्रहण करके, दुल्हन उसके परिवार, उनके संबंध और उनके घर का प्रतिनिधित्व करती है।

यदि आप मेरा नाम लेने जा रहे है, तो इसे हलके तौर पर न ले।

इब्रानी शब्द 'नासा' को निर्गमन २०:७ में इस्तेमाल किया है। नासा का *"कि लेना"* ऐसा अनुवाद किया है, लेकिन इसे *"शस्त्र-वाहक होना"* के रूप में ज़्यादा करके सचमुच अनुवादित किया जा सकता है। परमेश्वर वास्तव में कह रहा है : *"मेरे नाम के शस्त्र-वाहक* (सुरक्षा देनेवाला) *न बनो यदि आप इसे आपके जीवनशैली से रक्षा करने को तैयार नहीं है।"*

अक्सर लोग जो उसका नाम लेते हैं उनकी बेपरवाही के कारण कितनी बार हम यह सुनते हैं जो मसीह का इन्कार करते हैं?

स्टैनली जोन्स उनकी किताब *"द ख़ाइस्ट ऑफ़ द इंडियन रोड"* में गाँधी से पूछते है कि मसीहियत को भारत में कैसे स्वाभाविक किया जा सकता है। गाँधी ने उत्तर दिया, *"मैं ऐसा सुझाव दूंगा, सबसे पहले, आप सभी मसीही, मिशनरी और उन सभी ने यीशु मसीह समान जीवन जीना शुरू करे।"*[४३] हालाँकि किसी भी व्यक्ति का मसीह को स्वीकार या इन्कार करना केवल दूसरे *"मसीही"* के आचरण पर (क्योंकि मसीह को मनुष्यों द्वारा वैध या अपात्र नहीं ठहराया जा सकता) आधारित करना यह मुर्खता है, गाँधी का वाक्य तब भी ठोस है। क्या हमारे जीवन अनुग्रह और पवित्र सामर्थ्य जो हमने प्राप्त की है उसकी गवाही देते हैं? क्या हमारे जीवन आत्माओं को आकर्षित करते हैं या उन्हें उसकी सुंदरता से ध्यान हटाते हैं? क्या भटके हुए जगत के पास कोई कारण है कि आशा की उम्मीद करे जिसका हम आनंद लेते हैं? क्या हम उसके नाम की रक्षा और सम्मान कर रहे हैं? या क्या हम इसे शर्मसार कर रहे हैं?

जब दाऊद राजाने बथशेबा के साथ व्यभिचार किया, वह पछताया और परमेश्वर ने उसे क्षमा किया। लेकिन, जैसे भविष्यद्वक्ता नातान ने उसे कहां था, उसके कामों ने परमेश्वर के विरुद्ध निंदा का दरवाजा खोल दिया था। *"तब दाऊद ने नातान से कहां, 'मैं ने यहोवा के विरुद्ध पाप किया है। नातान ने दाऊद से कहां, 'यहोवा ने तेरे पाप को दूर किया है; तू न मरेगा। **तौभी तू ने जो इस काम के द्वारा यहोवा के शत्रुओं को तिरस्कार करने का बड़ा अवसर दिया है,** इस कारण तेरा जो बेटा उत्पन्न हुआ है वह अवश्य ही मरेगा'"* (२ शमूएल १२:१३-१४)। परमेश्वर के नाम की रक्षा करनेवाले के रूप में, क्या हम हमारे विचार, आचरण, शब्द और कामों से इसकी रक्षा करने के लिए बारीकी से ध्यान दे रहे हैं? क्या हमारे जीवन यीशु मसीह की प्रतिष्ठा को सम्मान या शर्मिंदगी ला रहे हैं?

पौलुस ने रोम में यहूदियों को वही बात कहीं : *"अतः क्या तू जो दूसरों को सिखाता है, अपने आप को नहीं सिखाता? क्या तू जो चोरी न करने का उपदेश देता है, आप ही चोरी करता है? तू जो कहता है, 'व्यभिचार न करना, 'क्या आप ही व्यभिचार करता है? तू जो मूरतों से घृणा करता है, क्या आप ही मंदिरों को लुटता है? तू जो व्यवस्था के विषय में घमंड करता है, क्या व्यवस्था न मानकर परमेश्वर का अनादर करता है? क्योंकि तुम्हारे कारण अन्यजातियों में **परमेश्वर के नाम की** निंदा की जाती हैं,' जैसा लिखा भी है"* (रोमियों २:२१-२४)।

एक विशेष रिश्ता

जैसे कोई मसीह के साथ गहरे रिश्ते में जीवन जीता है, तब ऐसी घनिष्टता की मांग को समझना और स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। मसीह का नाम पवित्र है और वह जो उसके पीछे चलते हैं और उसका नाम लेते हैं उनके जीवन में ये विशेषताएं हो ऐसी आज्ञा वह देता है। *"पर जैसा तुम्हारा बुलानेवाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है, 'पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ"* (१ पतरस १:१५-१६)।

पवित्र होने का अर्थ उस प्रभु के लिए अलग होना; उसके और उसके उद्देश्य के लिए ही केवल पूरी तरह से आरक्षित रहना। पवित्र रहना यह प्रमुख तौर पर दूसरों से अलग रहने के बारे में नहीं। यह उस प्रभु के लिए समर्पित रहने के बारे में है। जिस तरह से विवाह को पवित्रता की आवश्यकता होती है (केवल एक दूसरे के लिए ही अलग रहना है), उसी तरह से मसीह के अनुयायियों को पवित्र रहना है (केवल मसीह के लिए अलग होना है)। पौलुस ने कहां, *"क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में ईश्वरीय धुन लगाए रहता हूँ, इसलिए कि मैं ने एक ही पुरुष से तुम्हारी बात लगाई है कि तुम्हें पवित्र कुंवारी के समान मसीह को सौंप दूँ। परंतु मैं डरता हूँ कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए, कहीं भ्रष्ट न किये जाएँ"* (२ कुरिन्थियों ११:२-३)।

मसीह का नाम पवित्र है और वह जो उसके पीछे चलते हैं और उसका नाम लेते हैं उनके जीवन में ये विशेषताएं हो ऐसी आज्ञा वह देता है।

मैं ने एक बार देखा कि एक मध्य पूर्व का मित्र -विचित्र रूप से -उसके उँगलियों में विवाह की दो अंगूठियाँ पहने हुए था। उसके साथ स्थानीय बाज़ार में बात करते हुए, मैंने उसे उसकी अंगूठियों के महत्त्व के बारे में पूछा। उसने उत्तर दिया, *"मुझे दो पत्नियाँ थी; ये अंगूठियाँ मेरे दो विवाह को प्रतिनिधित करती हैं।"* मैं सोचे बिना नहीं रह सका : अक्सर कितनी बार तथाकथित मसीह अनुयायी भी दो घनिष्ठ संबंधों में जीवन जीते हैं- एक मसीह के साथ और दूसरा जगत के साथ? वे जो ऐसे दो रिश्तों में घुमते रहते हैं उनके लिए कठोर शब्द इस्तेमाल किए हैं। याकूब की पुस्तक में, जो विश्वासियों के लिए लिखी गई, हम पढ़ते हैं, *"हे व्यभिचारिणियों, क्या तुम नहीं जानती कि संसार से मित्रता करना परमेश्वर से बैर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है"* (याकूब ४:४)।

यीशु का नाम लेने का अर्थ उसके प्रति निष्ठा की घोषणा करना है। परिभाषा से, इसका अर्थ दूसरी निष्ठाओं को छोड़ देना भी हैं। क्या हम दो जीवनसाथियों के साथ निष्ठा रख सकते हैं? अंत में, हमारी निष्ठा और हृदय ये केवल प्रभु से जुड़ी है। मसीह के प्रति हमारी निष्ठा हमारे प्राथमिकताओं को निश्चित करेगी? हम दूसरे नगर के नागरिक हैं (२ कुरिन्थियों ५:२०; फिलिप्पियों ३:२०)। हमें जगत के साथ *"समन्वय करने"* के लिए नहीं बुलाया गया हैं ताकि लोगों को मसीह के पास लाएं। बल्कि, हमें उसके चरित्र को प्रतिबिंबित करने के लिए बुलाया हैं। जगत को हमारे बुद्धिमान उपाय की आवश्यकता नहीं हैं-उन्हें हमारे सुंदर उद्धारकर्ता की आवश्यकता हैं। क्या हम सांस्कृतिक दृष्टिसे ज़्यादा प्रासंगिक रहने या बाइबल की आज्ञा माननेवाले रहने पर ज़्यादा केन्द्रित हैं?

परमेश्वर यह मांग करता है कि उसका नाम व्यर्थ न लिया जाए। *"व्यर्थ"* शब्द खालीपन या अयोग्यपण को दर्शाता है। हम परमेश्वर का नाम लेने से पहले, हम उसके व्यक्तित्व की योग्यता को समझे यह लागू है, क्योंकि केवल तभी हम ऐसी पवित्रता, अनुग्रह और महिमा के प्रति हमारी ज़िम्मेदारी को देखेंगे।

घनिष्टता में चलना

जिस वर्ष उज्जियाह राजा मर गया, यशायाह को परमेश्वर के सिंहासन के घर का दृष्टांत दिया गया। जब यह भव्य चित्र स्पष्ट हो रहा था, यशायाह टूटे मन से पापकबूल करने के उस बिंदु तक आया, घोषित किया, *"हाय! हाय! मैं नष्ट हुआ; क्योंकि मैं अशुद्ध होंठवाला मनुष्य हूँ; और अशुद्ध होंठवाले मनुष्यों के बीच में रहता हूँ, क्योंकि मैं ने सेनाओं के यहोवा महाराजाधिराज को अपनी आँखों से देखा है"* (यशायाह ६:५)। ऐसी पापकबुली उत्पन्न होती है, उसके अपने व्यक्तिगत पाप और उसके लोगों के पाप पर घृणा या गहरी जांच से नहीं, परंतु परमेश्वर की पवित्रता के प्रगटीकरण से।

यदि हम निर्गमन अध्याय १९ और २० को उलटा करे, तो हमारे पास धर्म है, लेकिन जब हम उन्हें क्रम में मानते है, तब हम एक संबंध देखते हैं।

उसी तरह से, हम हमारे पाप जो भयानक रूप से गंदे हैं ऐसे देखेंगे जब परमेश्वर के प्रज्वलित पवित्रता की पृष्ठभूमि के विरुद्ध उजागर किए जायेंगे। यदि हम सच में जो हैं वह देखना चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर -उसकी पवित्रता, उसके चरित्र की ओर देखना चाहिए। पछतावा यह हमने जो कुछ किया उसके बारे में केवल बुरा महसूस करने के बारे में नहीं; यह मन और

हृदय का परिवर्तन है जो परमेश्वर की पवित्रता और मसीह यीशु में प्रगट प्रेम के प्रगटीकरण पर आधारित है।

प्रेरित पौलुस ने उसके परिवर्तन के थोड़े ही दिनों बाद यह लिखा, *"मैं प्रेरितों में सब से छोटा हूँ"* (१ कुरिन्थियों १५:९)। वे जो इस विश्वासी, शक्तिशाली प्रेरित को जानते थे उन्होंने उसे ऐसे कुलचिन्ह स्तम्भ के नीचे नहीं रखा होता।

लेकिन पौलुस यही नहीं रुका। आगे उसकी सेवकाई में, उसने इफिसियों की कलीसियाँ को लिखा, *"मैं जो सब पवित्र लोगों में से छोटे से भी छोटा हूँ"* (इफिसियों ३:८)। ठीक है, एक मिनट ठहरिए। हम एक मनुष्य के बारे में बोल रहे हैं जिसे मसीह के लिए हम गिन सकते उससे ज़्यादा बार मारा गया था। उसे पथराव किया। तीन बार जहाज, जिन पर वह था टूट गए। एक रात-दिन समुद्र में बिताए। कैद में रखा गया। भूखा रहा। ठण्ड में। निरंतर जोखिमों रहा। उसे गलत समझा गया। (२ कुरिन्थियों ११:२४-२८ में इस सूची को देखे)। और वह अपने आप को सभी संतों से छोटा कहता है?

फिर भी, वह आगे कहता जाता है। जैसे पौलुस पृथ्वी पर की उसकी यात्रा के समाप्ति की ओर आया, उसने एक ख़त लिखा जिसमें उसने अपने आप को *"सबसे बड़ा पापी"* कहां (१ तीमुथियुस १:१५)। यह कैसे हो सकता है जो मनुष्य इतना मसीह केन्द्रित था उसने खुद को *"सभी प्रेरितों से सब से छोटा,"* से *"सभी संतों से सबसे छोटा"* से *"सबसे बड़ा पापी"* तक कहां? क्या पौलुस की उम्र बढ़ने के साथ उसकी हालत में सुधार आया? क्या मैं ऐसा सुझाव दूँ कि केवल उसके विपरीत हुआ होगा : जैसे पौलुस यीशु मसीह के करीब और करीब जाता गया, उसने मसीह की पवित्रता और सुंदरता के वैभव में उसके अपने जीवन का ज़्यादा मूल्यांकन किया। यशायाह की तरह, वह ऐसा कहने तक आया, *"मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ"* (रोमियों ७:२४)। यदि हम अपने आपको उसी तरह से देखने में चूक जाते हैं, तो क्या यह मसीह के साथ घनिष्टता की कमी के कारण हो सकता है?

रिश्ते को परिभाषित करना

यह महत्वपूर्ण है यह समझना कि निर्गमन २० में परमेश्वर ने जो आज्ञा दी थी उससे पहले निर्गमन १९ में क्या हुआ : *"तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना!"* निर्गमन १९ में, परमेश्वर ने उसके लोगों के साथ वाचा स्थापित की, उसके साथ एक रिश्ते में उन्हें निमंत्रित किया। वह रिश्ता बलिदान के मेमने के बहाए हुए लहू के आधार पर था, जिसने उनके पापों का प्रायश्चित्त (अच्छादन) किया उस समय तक जब यीशु जो परमेश्वर का मेमना जगत

के पाप के कर्ज़ के लिए किमत न भर दे। निर्गमन २० में, वे पहले ही उसके चुने हुए लोग थे, परमेश्वर उन्हें निश्चित नियम देने लगा। उसने उन्हें यह कानून क्यों दिए? एक कारण यह उनको दिखाए कि वे उसकी धार्मिकता के सिद्ध मानक से कम हो रहे थे। लेकिन परमेश्वर ने ऐसे नियम दिए कि उन्हें सिखाए कि वे कैसा जीवन व्यतीत करें ताकि उनके आसपास के देशों के सामने योग्य रीति से उसका प्रतिनिधित्व करे। लेकिन आइए हम स्पष्ट रहे। परमेश्वर ने इस्राएली लोगों को आज्ञा इसलिए नहीं दी कि वे उसके साथ संबंध बनाने का प्रयास कर सकें। जैसे हम परमेश्वर के साथ संबंध बनाना अपने स्वयं के प्रयासों से प्राप्त नहीं कर सकते हैं, न ही वे कर सकते थे।[४४] यदि हम निर्गमन अध्याय १९ और २० को उलटा करे, तो हमारे पास धर्म है, लेकिन जब हम उन्हें क्रम में मानते है, तब हम एक संबंध देखते हैं।

जब मसीह ने कैसरिया, फिलिप्पी में चेलों को उपदेश दिया, तो उसने वहां उन्हें वैसा ही निमंत्रण दिया। *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)। ये वचन संबंध को स्थापित करने के बजाय रूपरेखा के रूप में दिए गए, क्योंकि परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता सिर्फ अनुग्रह द्वारा ही स्थापित होता है। यीशु के वचन वे जो उसके साथ पहले से रिश्ते में हैं उनके लिए महत्वपूर्ण उपदेश थे।

फिर वे निर्गमन या मत्ती में प्रगट किये हो, परमेश्वर के दिल की धड़कन वही होती है-की उसके लोग, जो उसका नाम लेते हैं, वे उसके समान हो और उसे सही रूप में प्रतिनिधित करें। मसीह उसके अनुयायियों को अवसर प्रदान करता है कि उन्होंने उनकी पुरानी प्रतिष्ठाओं, जीवन के मार्ग, और व्यर्थ जीवन व्यतीत करने को छोड़ देना हैं-शास्वत खोज, ईश्वरी विरासत और एक नई पहचान के लिए जो उस प्रभु जिसके पीछे वे चलते हैं उसकी परछाई में छिपी है।

बाहरी जगत के लोगों ने विश्वासियों को अन्ताकिया में *"मसीही"* नाम दिया क्योंकि वे यीशु समान, दिखते, काम करतें, बोलते और प्रेम करते थे (प्रेरितों के काम ११:२६)। शब्द जो उन्होंने इस्तेमाल किया वह, क्रिस्चियानॉस था। जिसे लॅटिन भाषा से लिया गया, प्रत्यय-ईयानॉस को पूरे रोमन साम्राज्य में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह प्रत्यय स्वामी के नाम के अंत में जोड़ा जाता है कि वे सभी जो उसके हैं उन्हें पहचाने। ज़्यादातर शाब्दिक रूप से, यह शब्द *"दास, या "*मसीह का घराना*" दर्शाता है। अन्ताकिया में के इन विश्वासियों को "*मसीह के दास*" के रूप में पहचाना गया था।"*[४५]

यह परेशान करनेवाला है कि आज हमारे विकृत और दुष्ट जगत में, बहुत से मसीह अनुयायियों पर दबाव डालते हैं कि अपने आप को *"मसीही"* शीर्षक से चिन्हित करे ताकि सही

पहचान करा सके। क्या हमारे जीवन और कार्य- जैसे यीशु के प्रारंभिक अनुयायी करते थे उनके समान नहीं होने चाहिए कि -हमें मसीह के साथ जल्दी से पहचाना जा सके? क्या हमें किसी शीर्षक को सख्ती से लगाना चाहिए ताकि लोग यीशु मसीह के साथ हमारी एकता को पहचान जाए?

शायद यही जो यीशु के मन में था जब उसने अपने चेलों से कहां, *"उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें"* (मत्ती ५:१६)। यीशु क्या कहता है उस पर ध्यान दीजिए : हमारे भले काम परमेश्वर की महिमा के लिए किए जाते हैं -परमेश्वर ने स्वीकार करने के लिए नहीं, न ही स्वयं को शास्वत जीवन प्राप्त करने के लिए। लेकिन जिस तरह से हम जीवन व्यतीत करते हैं, वचन में और कार्यों में, इन बातों ने उसके नाम के साथ हमारी पहचान कराना चाहिए।

क्रूस उठाना यह उसका नाम लेने के साथ समानार्थक है। *"उसके द्वारा तुम उस परमेश्वर पर विश्वास करते हो, जिसने उसे मरे हुओं में से जिलाया और महिमा दी कि तुम्हारा विश्वास और आशा परमेश्वर पर हो"* (१ पतरस १:२१)।

निमंत्रण दिया गया है ....

क्रूस उठाओ, मेरे साथ पहचान दिखाओ, और जो तुम्हारे आसपास है उनको मुझे प्रतिनिधित करो – *"जगत के अंत तक"* (प्रेरितों के काम १:८)।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. *"परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेने"* का क्या मतलब है इसका स्पष्टीकरण दीजिए। कौनसे तरीके से आप परमेश्वर का नाम व्यर्थ लेते हैं? विशेष उदाहरण दीजिए।

२. आपका जीवन मसीह के पास आत्माओं को कैसे आकर्षित करता है? आपका जीवन उन्हें उसकी सुंदरता से कैसे दूर करता है?

३. आप दो जगत, दो रिश्तों में एकसाथ आने का कैसे प्रयास करते हैं? (विवाह की दो अंगूठियों के साथ वाले मेरे मित्र के बारे में सोचिए)

२१

क्रूस की आशीषें

अपने जीवन के अंतिम वर्षों में, डेव्हिड लिविंग्स्टन, साउथ अफ्रीका का एक प्रसिद्द खोजकर्ता और मिशनरी, ने इंग्लैंड में केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में छात्रों के संगठन को भाषण दिया। अपने अंतिम बातों में, उन्होंने कहां :

> *"मेरे जीवन का इतना समय अफ्रीका में बिताने के लिए जो बलिदान मैं ने किया उसके बारे में लोग कहते हैं...जिसमे, चिंता, बीमारी, दु:ख या ख़तरा अब और तब सामान्य सुविधाओं को त्याग देना और इस जीवन के परोपकार शामिल हैं, ये हमें ठहरने कहेंगे और आत्मा को डगमगाने और प्राणों को खोने का कारण होंगे, लेकिन इसे केवल एक क्षण के लिए रहने दो। ये सब कुछ भी नहीं जब इसकी तुलना महिमा से की जाए, जो हम में और हमारे लिए प्रगट की जायेगी। मैं ने कभी भी बलिदान नहीं दिया।"*[४६]

क्या यह हो सकता है कि सबसे बड़ा बलिदान कोई कर सकता है वह मसीह के पीछे चलने की उसकी बुलाहट का इन्कार करना? शायद हम बलिदान से डरते हैं क्योंकि हम किसकी खोज कर रहे हैं इससे अधिक हम क्या खोज रहे हैं इस पर केन्द्रित रहते हैं : मसीह, पुरस्कार है। क्या हम उथल, पृथ्वी पर के सपने संजोग रहे हैं कि जो हमारे शरीर की बढ़ती उम्र के साथ गायब हो जाते हैं, इस जगत के निराशा से लड़खड़ाते हैं और अंत में हमारी मृत्यु के क्षण में नष्ट हो जाते हैं? क्या हमने इस जगत की वेदी पर क्षणभंगुर सफलता को पाने के लिए यीशु के पीछे चलने के निमंत्रण को त्याग दिया हैं? एसाव सदैव के लिए बाइबल का उदाहरण बन कर रह गया है जिसने क्षणभर (सूप का कटोरा) के लिए शास्वत महत्त्व (उसका जन्मसिद्ध अधिकार) की अदलाबदली किया। अब तक, हम इस जगत की बातों के लिए जीवन व्यतीत करने में कितने अधिक बेतुके और मुर्ख हुए हैं जब शास्वत पुरस्कार और सर्वशक्तिमान के साथ घनिष्टता हमारे समक्ष है। शायद हम वर्तमान के लिए जीते हैं क्योंकि हम सच में प्रभु जो शास्वतता को संभाले है उस पर विश्वास नहीं रखते।

यीशु ने एक मनुष्य की कहानी बतायी जिसे खेत में एक छिपा हुआ खज़ाना मिला उस पर विचार करे। *"स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाया और छिपा दिया, और मारे आनंद के जाकर अपना सब कुछ बेच दिया और उस खेत को मोल ले लिया"* (मत्ती १२:४४)। उस मनुष्य के हृदय में कोई शोक नहीं क्योंकि वह तुरंत जो सब कुछ उसके और खेत खरीदने के बीच में है उसे अपने जीवन से निकाल देता है। यह शुद्ध आनंद है जो वह महिमामयी भविष्य के लिए अपने अतीत के बोझ को निकाल देता है। जब तक हम मसीह को एक खज़ाने के रूप में नहीं देखेंगे, तब तक हम जगत की छोटी छोटी चीज़ें खोने का शोक मनाएंगे, जिसे हमें दूर करना चाहिए, ताकि उसके पीछे हो ले। हम पौलुस के हृदय हो सके। *"वरन् मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूँ। जिसके कारण मैं ने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूँ, जिससे मैं मसीह को प्राप्त करूँ"* (फिलिप्पियों ३:८)।

क्या यह हो सकता है कि सबसे बड़ा बलिदान कोई कर सकता है वह मसीह के पीछे चलने की उसकी बुलाहट का इन्कार करना?

चार्ल्स टिंडली, २०वीं शताब्दी की शरुआत में एक मेथडिस्ट प्रचारक ने, निम्नलिखित गीत लिखा।

मेरी आत्मा और उद्धारकर्ता के बीच में कुछ भी नहीं,
ताकि उसका आशीष भरा चेहरा देख सकूं;
उसके अनुग्रह को कम से कम रोकने वाला कुछ भी नहीं,
रास्ता साफ रखो! देखिए उसके बीच कुछ भी न आए।

दूसरी पंक्ति भी कम प्रभावशाली नहीं है।

दरम्यान कुछ भी नहीं, जैसे सांसारिक सुख;
जीवन की आदतें, हालांकि कितनी हानिकारक वह नजर आती हो,
मेरा हृदय उससे कभी अलग न हो जाए;
वह मेरा सब कुछ है, बीच में कुछ भी नहीं है।[४७]

टिंडली ने जीवन के सुख को स्पष्ट रीति से जान लिया था और समझ गया था कि जो कुछ भी उसके और मसीह के बीच में आया वह एक व्यत्यय था।

जब आशीष पिछड़ी नजर आती है

जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहां वह आज विश्वभर के अनेक पुलपीट से समृद्धि का संदेश जो घोषित किया जा रहा है उससे मौलिक रूप से भिन्न लगता है। यीशु ने कहां, *"परंतु हाय तुम पर जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शांति पा चुके। हाय तुम पर जो अब तृप्त हो, क्योंकि भूखे होंगे। हाय तुम पर जो अब हंसते हो, क्योंकि शोक करोगे और रोओगे। हाय तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उनके बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे"* (लूका ६:२४-२६)। क्या हम कल्पना कर सकते हैं, अमीरी, तृप्त पेट, हंसीं और लोगों की स्वीकृति शाप होगी? लूका के सुसमाचार में यीशु के शब्द हमें निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं। क्या हमने *"आशीष"* के मतलब को गलत अनुवादित किया हैं? क्या हम मसीह के मन से इतने अलग हुए हैं कि जिसे वह विलाप करता है, उसे हम *"आशीष"* कहते हैं, और जिसे वह *"आशीष"* कहता है, हम उसे *"विलाप"* कहते हैं? क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

प्रश्न यह है : परमेश्वर किसे आशीष कहता है?

जब परमेश्वर आशीषित व्यक्ति में बारे में बोलता है, वह आत्मा में दीन के बारे में बोलता हैं, वे जो शोक करते हैं, वे जो नम्र हैं, वे जो भूखे हैं और वे जो धार्मिकता के प्यासे हैं , वे जो दयालु हैं, वे जो शुद्ध हृदय के हैं, शांति करनेवाले हैं, वे जो धार्मिकता के कारण सताए गए हैं, और वे जो उसके द्वारा दु:खी नहीं हुए हैं (मत्ती ५:३-१२; मत्ती ११:६)। क्या यह हो सकता है कि जो कुछ हमें मसीह को जानने और उसे खज़ाने के रूप में मानने के लिए उसके निकट ले जाता है वह आशीष है? हमारे जीवन में कौनसी परिस्थितियां हैं जिसके बारे में हम वर्तमान में यह इच्छा कर रहे हैं कि वे हमारी उन्नति और उसकी महिमा के लिए इस्तेमाल करने की परमेश्वर की इच्छा है?

कितने जल्द हम होते हैं कि हमारे स्नातक कार्ड को सजाते हैं और उसे यिर्मयाह २९:११ के साथ प्रतिबिंबित करे, *"क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अंत में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा।"* लेकिन रुकिए! यिर्मयाह २९:१० यिर्मयाह २९:११ से पहले आता है। वचन दस में, परमेश्वर उसके लोगों से कहता है (मेरे अपने शब्दों

क्या हम मसीह के मन से इतने अलग हुए हैं कि जिसे वह विलाप करता है, हम "आशीष" कहते हैं, और जिसे वह "आशीष" कहता है, हम उसे "विलाप" कहते हैं?

में), *"तुम बंदिवास में सत्तर सालों तक जानेवाले हो। आप में से बहुत से लोग वापस घर नहीं आयेंगे, परंतु चिंता मत करो : मेरी कहांनी अभी ख़त्म नहीं हुई है।"* यह एक बड़ा समाचार है! परमेश्वर की योजना आपके क्षणभंगुर सांसारिक अस्तित्व से बड़ी है। हमें परमेश्वर को अपनी कहांनियों में जोड़ने से बंद करना हैं और हमारी कहांनियों को परमेश्वर के बड़े दृश्य में जोड़ना शुरू करे। 'द लास्ट बैटल' में द क्रोनिकल ऑफ़ नार्निया के अंत में, सी. एस. लेवीस लिखते है, *"इस जगत में उनका पूरा जीवन और नार्निया में उनके सभी साहस ये केवल कवर और शीर्षक पन्ना ही हैं : अब अंत में वे महान् कहांनी का पहिला पाठ शुरू कर रहे है जिसे पृथ्वी पर अब तक किसी ने नहीं पढ़ा है : जो निरंतर चलता रहता है : जिसमे हर एक पाठ उसके पहले पाठ से उत्तम है।"*[४८]

हमें परमेश्वर को अपनी कहांनियों में जोड़ने से बंद करना हैं और हमारी कहांनियों को परमेश्वर के बड़े दृश्य में जोड़ना शुरू करे।

एक बार मेरी हवाई जहाज की यात्रा में कुछ समय के लिए मुझे लंडन में ठहरना पड़ा था। सुंदर शाम को बर्बाद नहीं करना चाहता था, मुझे वेस्ट एंड पर हर मॅजेस्टी के थियटर का 'द फैंटम ऑफ़ द ऑपेरा' के लिए अजब तौर पर रियायती टिकट मिला। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि टिकट कैसे इतने कम दाम में बेचा जा रहा था, जब तक कि मैं मेरी जगह पर बैठ नहीं गया। ऊपर के बाल्कनी में एक बड़े स्तम्भ के पीछे वह जगह थी, जहाँ से मैं स्टेज का केवल थोड़ा सा हिस्सा देख सकता था। सौभाग्यसे, द फैंटम ऑफ़ द ऑपेरा' में कोई और बात से ज़्यादा संगीत था, लेकिन उस परिस्थिति ने मुझे एक स्पष्ट सबक सिखाया। जीवन में, हमें यह समझने की आवश्यकता हैं कि हम जो हो रहा है उसका केवल कुछ भाग ही देख सकते हैं। हम ऐसे समय में जी रहे हैं। परमेश्वर शास्वत है। वह जिसे आशीष कहता है जिसे हम कभी कभी शाप कहकर संबोधित करते हैं। वह इसलिए क्योंकि सांसारिक है और अक्सर बहुत बार, सांसारिक-मन के हैं। *"अभी हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है, परंतु उस समान आमने-सामने देखेंगे"* (१ कुरिन्थियों १३:१२अ)।

क्या आप चिंतित हैं क्योंकि आप आपके मार्ग में अगले मोड़ के आगे नही देख सकते? क्या आप विश्वास रखते हैं कि प्रभु जिसे अंत शरुआत से मालुम है वह आपका व्यक्तिगत मार्गदर्शक है-और आप आपकी जीतनी फिक्र करते है उससे कई अधिक वह आपकी फिक्र करता है? फनी क्रोस्बी, हालाँकि अंधी थी, फिर भी इतिहास में वह सबसे बड़ी गीतकार थी। उसके ८००० गीत और सुसमाचार गीतों में से एक में उसने लिखा :

मेरा उद्धारकर्ता मुझे पूरे रास्ते में अगुवाई करता है;
मुझ़ी इसके अलावा क्या मांगना है?
क्या मैं उसकी कोमल दया पर संदेह करू,
जो उसके जीवन द्वारा मेरा मार्गदर्शक है?"[४९]

जब मसीह हमें क्रूस उठाने और उसके पीछे चलने के लिए बुलाता है, तो वह हमें आशीष के जीवन के लिए बुलाता है। सच्ची आशीष। अस्थायी अमीरी के जोश के लिए नहीं या किसी और बातों के लिए नहीं जो हमें शास्वत पुरस्कार से रूकावट बन सके। बल्कि, वह हमें उस जीवन के लिए निमंत्रित करता है जो सदैव रहनेवाला है उसके द्वारा रचित और भरा हुआ रहनेवाला है। यह गंभीर है कि कितनी जल्दी हम थके हुए और निराश हो सकते हैं जब वहीँ बातें जो हमारे प्रभु ने प्रतिज्ञा दी है हम पर आती है।

हैरानी की बात है, कि अक्सर हमारा प्रभु वही करता है या होने देता है, जिसका उसने वादा किया था, कि हम अपने जीवनों में उसके उपस्थित होने पर सबसे ज़्यादा संदेह करने लगते हैं।

यही सच है।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके जीवन में कौनसी बातें हैं जिन के लिए आप विलाप करते हैं? परमेश्वर आपको आशीष देने के लिए उन्ही चीज़ों का उपयोग कैसे करेगा?

२. क्या आप के जीवन में ऐसा कुछ है जिसे जगत *"आशीष"* के रूप में मानता है जो आपको परमेश्वर के साथ चलने में बाधा करता है?

३. सबसे बड़ा बलिदान कोई कर सकता है कि मसीह के पीछे चलने की उसकी बुलाहट का अस्वीकार करें यह कैसे हो सकता है? स्पष्टीकरण दीजिए।

२२

दु:ख और उत्पीड़न की दस आशीषें

आइए हम दस आशीषों के बारे में सोचें जो दु:ख और सताव से निकलती हैं। याद रखे, दु:ख का अनुभव करना यह हमारे टूटे हुए जगत में जीने का आतंरिक परिणाम हो सकता है, लेकिन मसीह-अनुयायी के रूप में सताव का अनुभव करना यह क्रूस उठाने का सरल रीति से परिणाम है। जबकि हम दु:ख और सताव की खोज नहीं करते, तब भी यदि हम दु:ख भोगते हैं क्योंकि हम मसीह का नाम धारण करते हैं (१ पतरस ४:१६), हमारा दु:ख यीशु मसीह के साथ हमारे संबंध के सत्यता की गवाही देता है।

१. दु:ख और सताव में, मसीह के साथ हमारा रिश्ता गहरा होता है।

"ताकि मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ" (फिलिप्पियों ३:१०)।

हम अक्सर कितनी बार प्रार्थना करते हैं, *"प्रभु, मैं तुझे और अधिक जानना चाहता हूँ!"* यह उस व्यक्ति के हृदय की पुकार है जिसे उद्धारकर्ता की सुंदरता की झलक मिल गई है। और फिर भी परमेश्वर हमारी प्रार्थना का उत्तर दे ऐसी उम्मीद कैसे करते है? क्या हम मसीह के ज्ञान और अनुभव के साथ पूरी तरह से भर जाने की उम्मीद करते हैं, या क्या हम उसके बारे में और भी घनिष्टता से सीखने के लिए परमेश्वर हमें अवसर प्रदान करे ऐसी उम्मीद करते है?

हमारे सांत्वनादाता के रूप में उसे सच में जानने में, दर्द तो होगा ही।
हमारे प्रदान करनेवाले के रूप में उसे सच में जानने में, आवश्यकता तो होगी ही ।
हमारे आरोग्यदाता के रूप में उसे सच में जानने में, दुर्बलता अवश्य ही होगी।
हमारे पुनर्स्थापक के रूप में उसे सच में जानने में, कुछ तो अवश्य ही लिया जाएगा।
हमारे उद्धारकर्ता के रूप में उसे सच में जानने में, कुछ तो अवश्य ही नुकसान होगा।
हमारे पुनरुत्थान के रूप में उसे सच में जानने में, मृत्यु तो अवश्य ही होगी।

प्रभु स्वयं वह एकमात्र है जो हमारे लिए स्थिति तैयार करता है कि घनिष्टता में संगति बिताए- *"उसके दु:ख की संगति"* भी शामिल है। कठिन परिस्थितियों के बीच में परमेश्वर को जानने के बहुमूल्य अवसर को न खोए (वो जिसका आप ने कभी चुनाव नहीं किया हो)। "उसे जानने' की आपकी प्रार्थना का वह शायद जवाब दे रहा होगा।

शद्रक, मेशक और अबेदनगो ने परमेश्वर के साथ सबसे घनिष्ठ संगति का आनंद कब किया? नबूकदनेस्सर की आग की भट्टी में उन्होंने आनंद किया था। वहां से बाहर आने की उन्हें जल्दी नहीं थी। वास्तव में, राजा की आज्ञा के द्वारा उन्हें वहां से बुलाया गया था। एक ही चीज़ जिसे आग ने जलाया वह रस्सी जो उन्हें बंधन में बांधे थी (दानिय्येल ३:२५-२७)।

मसीह ने उसके अनुयायियों को शारीरिक रक्षा का अभिवचन कभी भी नहीं दिया। उसने उन्हें उससे बढ़कर बात का अभिवचन दिया : उसकी उपस्थिति। अपने पिता के पास ऊपर स्वर्ग में जाने से पहले उसने अपने चेलों को आज्ञा दी, यीशु ने उन्हें कहां, *"इसलिए, तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, ..."* और फिर उसने उन्हें यह अभिवचन दिया : *"देखो, मैं जगत के अंत तक सदा तुम्हारे साथ हूँ"* (मत्ती २८:१९अ-२०)। कभी कभी शारीरिक आग अवश्य ही हमारे शरीर को स्पर्श करती है, लेकिन मसीह ने परमेश्वर के क्रोध और न्याय की भयानक आग को अपने ऊपर लिया ताकि हम उसके जीवन का हमेशा आनंद ले सके। मसीह को क्रूस पर त्यागा गया ताकि हम परमेश्वर की उपस्थिति में शास्वत रूप में निवास कर सके। यह वर्तमान दु:ख तो केवल एक परिस्थिति है जिस पर यीशु मसीह की उपस्थिति और बहुमुल्यता प्रदर्शित होती है।

२. दु:ख और सताव में, हम कौन है इसके बारेमें हमें स्मरण कराया जाता है।

"पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे" (२ तीमुथियुस ३:१२)।

यह वचन प्रश्न उत्पन्न करता है, "यदि मैं सताव नहीं भोग रहा हूँ, तो क्या मैं मसीह यीशु में धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहा हूँ? क्या हम ज़्यादा सोचते हैं जब हम मसीह-अनुयायी के रूप में अवश्य दु:ख सहते हैं या जब हम नहीं सहते हैं? शायद हमारा आखिरी बड़ा विचार होना चाहिए।

हमें सताव सहने के लिए नहीं खोजना चाहिए, परंतु सताव यह धार्मिक जीवन जीने का परिणाम होगा यह हमें पहचानना हैं। शारीरिक अत्याचार के नाटकीय उदाहरणों के बारे

में सोचना आसान है, लेकिन सताव भिन्न मार्ग से आ सकते हैं। कभी कभी, सताव के परिणाम भावनात्मक होते हैं जब विश्वासियों को उनके विश्वास के कारण बहिष्कृत, नजरंदाज, अपमानित, धमकाना, बदनाम या बेइज्जत किया जाता हैं। पहला पतरस ४:१ हमें बताता है, *"....क्योंकि जिसने शरीर में दु:ख उठाया वह पाप से छुट गया।"* इसके बारे में विचार करें। अगर हमारा शरीर पाप करना चाहता है परंतु हम पवित्र आत्मा के अधीन है, तो शरीर दु:ख उठाता है। हमारा कुछ भाग मर जाता है। यह सच है और पीड़ादायक है। जब हमारे पास कष्टमय अपमान का शानदार प्रत्युत्तर होता है, लेकिन पहचानते है कि यह मसीह के मन से नहीं है और हम उसे कहने से इन्कार करते हैं, तब हमारा शरीर दु:ख उठाता हैं। जब वासना ज़ोर करती है और कामुकता को मीठा परोसती है, लेकिन हम उस विचार की ओर ध्यान देने से इन्कार करते हैं, तब हमारा शरीर दु:ख उठाता है। जब हमें दूसरों के सामने अपनी बड़ाई करने का अवसर होता हैं लेकिन तब हम निचला स्थान लेने का चुनाव करते हैं, तब हमारा शरीर दु:ख उठाता है।

जब हम मसीह के लिए खड़े होते हैं, तब हम जगत से अलग नजर आयेंगे।

हम दु:ख उठाना और सताव का नाटक कर सकते हैं, लेकिन सत्यता यह है : अगर आप एक धार्मिक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, तो आप सताव सहेंगे-फिर वह किसी भी तरह का हो। हमें इस जगत में स्थापित नहीं होना चाहिए जिसे हमारे मसीह ने क्रूस पर चढ़ा दिया है। जब हम मसीह के लिए खड़े होते हैं, तब हम जगत से अलग नजर आयेंगे।

इस वचन (२ तीमुथियुस ३:१२) में दो समान सुंदर स्मरण शामिल हैं : हम कौन हैं और हम किसके हैं। इस सत्यता ने मेरे तीन साथियों और मुझ को २०१३ फरवरी में मंगलवार सुबह को वापस घर लाया।

आशीष की आग

अफ्रीका के हमारे नगर नायगेर में यह अन्य सुबहों की तरह एक सुबह थी, गर्म और धूप वाली। सुबह की हमारी प्रार्थना अभी समाप्त करने के बाद, हम चार लोग राजधानी नगर की ओर चले जा रहे थे कि कुछ सरकारी कागजी कामकाज को पूरा करे। मैं मेरी हौंडा सीआरवी चला रहा था, जिसे प्यार से मैं *"कैमिला"* कहता था। भीड़ बहुत थी-और सप्ताह के कामकाज के सुबह के लिए भी विशेष थी। हम भीड़भाड़वाले रास्ते के मोड़ से जा रहे थे जब एक आदमी वाहन के सामने कूदा।

उस आदमी को टक्कर मारने से बचने के लिए ज़ोर से ब्रेक लगाया, तभी अचानक हमें चारो ओर से पंद्रह से बीस जवान लोगों ने आ घेरा। हालाँकि उनमे से ज़्यादातर लोग केवल चिल्ला रहे थे, लेकिन कुछ ही क्षण में दूसरों ने हमारी कार के सामने कुछ टायर फेंके, दूसरे टायर को हुड पर रखा और एक आखिरी टायर को सरका दिया- आग लग चुकी थी-हमारे वाहन के सामने के भाग के नीचे। हमें सभी तरफ से अन्य कार द्वारा घेरा गया था।

हमने तुरंत पता लगा गया कि हम अब जिन्दे जलाए जानेवाले हैं।

हमें तुरंत कुछ करने का है यह जानकर, मैंने हमारे पीछे के भाग में जाँच की। एक टैक्सी मेरे बम्पर पर थी; मैं पीछे नहीं जा सकता था, मैंने आगे देखा, परंतु भीड़ के सदस्य को चोट पहुँचाए या मारे बिना आगे नहीं जा सकता था। (वे शास्वतता के लिए तैयार है ऐसे नजर नहीं आ रहे थे-हम तैयार थे)। जीवन भर हॉर्न बजाने जैसा महसूस होने के बाद-ठीक है, क्योंकि यह केवल तीन सेकंड के लिए था-टैक्सी करीबन पांच फीट पीछे चली गई। भीड़ अन्य टायरों को जलाने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन वे पांच फुट काफी थे। कैमिला को पीछे धकेलने के बाद, मैं टैक्सी में तुरंत बैठ गया। (जी हाँ, मैंने टैक्सी से संपर्क किया, लेकिन इसीलिए तो बम्पर होते है।)

अगले कुछ मिनट, सुबह पर काम पर जानेवाले लोगों के बजाय बोर्न आयडेंटीटी के दृश्य जैसे दिख रहा था। दो कारों के बीच दबने के बाद, फुटपाथ पर जा गिरा (और परिणामस्वरूप तीन लोगों को वाहन के रास्ते से हटना पड़ा), कुछ और कारों के बीच में घूमने के बाद और रास्ते के दूसरी तरफ उड़कर जा गिरने के बाद, हमें खुला रास्ता मिला और अंत में, एक सुरक्षित स्थान।

परित्यक्त गंदे रास्ते की तरफ जाते हुए, परमेश्वर ने जो चमत्कार किया था उसके लिए हमने उसका धन्यवाद किया (हालाँकि हम प्रभु के साथ हमेशा के लिए रहने का अवसर चूक जाने के बाद भी पृथ्वी पर रहने से थोड़ा निराश थे)। हम हिंसा को कायम रखनेवाले इन लोगों की आत्माओं के लिए प्रार्थना करने लगे, और संयुक्त राज्य दूतावास को फोन किया जिन्होंने हमें *"आश्रय स्थान"* में जाने को कहां, जब तक वे इस घटना के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सके।

मेरे घर पर वापस आने के बाद, मैंने इसे फेसबुक पर पोस्ट किया :

> सुबह ९:३० को, नियामी समय (३:३० सुबह) मेरे और इन लड़कों के लिए कौन प्रार्थना कर रहे थे इसपर आश्चर्य कर रहा था। यह पूरी तरह से चमत्कार था कि हमें इस सुबह में हमारी कार

में जिन्दा जलाया नहीं गया था (या, कम से कम, जखमी किया गया था और हमारी कार को नष्ट नहीं किया था)। भीड़ का आक्रमण। परमेश्वर को उसकी रक्षा के लिए स्तुति की।

मैं जिसका अनुभव करने जा रहा था वह मसीह के शरीर की घनिष्टता थी और हम किसके है उसका स्पष्ट स्मरण था। मेरे इनबॉक्स में कई संदेश आते रहे। यहाँ पर कुछ अंश दिए गए हैं।

मिसूरी में के एक मित्र से :

पिछले कुछ सप्ताह, मैं अपने आप को सुबह २:०० बजे काफ़ी हद तक लगातार जागते हुए पाया है और पिछली रात कोई अलग नहीं थी, सिवाय इसके कि जब सुबह २:०० बजे उठा, मैंने अपने आप को करीबन एक घंटे भर तीव्र ठंडी मिठाई में पाया। जैसे अतीत के दिनों में, मैंने प्रार्थना की थी। लेकिन मैंने आपके लिए उत्साह से प्रार्थना की। मैं केन्द्रित रहा, और प्रार्थना की, इफिसियों ३:१४-२१ विशेष तौर पर आप के लिए। मैं मिसूरी में हूँ...वह सीएसटी है, इएसटी से एक घंटा पीछे, इसका मतलब मैं जाग रहा था और इस सुबह प्रत्यक्ष में नियामी में ९:०० बजे प्रार्थना कर रहा था और आपके समय के सुबह के १०:०० बजे तक प्रार्थना कर रहा था-सही समय में।

ओरेगॉन के और एक मित्र ने लिखा :

मैं मेरे समय के सुबह के १२:३० बजे प्रार्थना कर रहा था, जो ईएसटी का सुबह का ३:३० समय है। आप सभी को याद करते हुए मैं जाग गया। इसे नजरअंदाज न करना मैंने सीखा था। मैंने स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की, मैंने ने रक्षा के लिए प्रार्थना की और मैंने सुरक्षा के लिए प्रार्थना की। फिर मैं फिर से सो गया। मैं ने सपने में जलती भट्टी देखी और तब एक घंटा हो गया था मैं फिर उठा और फिर से प्रार्थना की। सारी महिमा परमेश्वर की हो। मैं इस सुबह आप सभी को छुड़ाने के लिए और *"कैमिला"* को बाहर निकलने का रास्ता देने के लिए कृतज्ञ हृदय से परमेश्वर की स्तुति कर रहा हूँ। आप सभी को वहां होना चाहिए था...इस सुबह को उसकी स्पष्ट रक्षा यह केवल एक स्मरण है कि वह आप के साथ है। तब भी जब चीज़ें बहुत ही संघर्षमय होती है, आप सभी को वहां होना चाहिए। उसके आश्चर्य कभी समाप्त नहीं होते। इस सुबह कृतज्ञता के साथ मेरा हृदय भर गया है। वह इतना भला है। आज आप सभीं के साथ आनंद करता हूँ!

मैंसेचुसेट्स से, एक स्त्री ने कहां :

इस सुबह ३:३० को, मैं डरावने सपने से जाग गई। मैंने एक साधारण प्रार्थना कहीं : *"हमारी रक्षा कर और हमें शांति दे।"* उस समय, मैं समझ नहीं पाई कि प्रार्थना में *"मेरे"* कहने के बजाय *"हमारे"* लिए क्यों कहां, लेकिन अब शायद मैंने ऐसा किया था। अगले दो या तीन महीनों में,

परमेश्वर ने मुझे विशेष रूप से आप के लिए प्रार्थना करने सात या आठ बार जगाया है और हर समय वह सुबह ३:३० था।

साउथ कैरोलिना से, यह ईमेल मुझे मिला :

मैं तुझे यह कहना चाहती थी कि ईएसटी अनुसार सुबह १:५२ से सुबह ३:२६ तक मैं नायगेर में के संघ के लिए प्रार्थना कर रही थी। मैं इस सुबह ७:२८ को जाग गई और आधे घंटे पहले मेरे पिता ने यह समाचार देने के लिए मुझे फोन किया था! मैं इतना ही कहना चाहती हूँ कि "मेरी आत्मा, ओह! मेरी आत्मा प्रभु का धन्यवाद करती है। मैं उसके पवित्र नाम की आराधना करती हूँ! ओह! मेरी आत्मा कभी गाए नहीं ऐसे गीत गा, मैं आपके पवित्र नाम की आराधना करती हूँ!

मैं यहाँ रुकी नहीं, तथापि, और एक अन्य लड़की जो नॉर्थइस्टर्न अमरीका में रहती है उसने लिखा :

मेरे पिता ने मुझे जगाया कि आपके लिए प्रार्थना करूँ जिस रात को भी जब टायर जल रहे थे। मेरे समान, उसे भी कोई कल्पना नहीं थी कि वह किसके लिए प्रार्थना कर रहा है, लेकिन उन्होंने इसे एक आवश्यक, भयावह अँधेरा -एक तात्कालिकता की भावना के रूप में वर्णन किया।

आपको यह जानने की जरुरत है की, मैं इस मनुष्य को कभी मिली नहीं।

मेरे जीवन में मेरा एक सबसे करीबी मित्र, एक आयरिश भाई, ने उस दिन अलग प्रार्थना की। उसने नायगेर में के अपने संघ के लिए प्रार्थना की और यह कि परमेश्वर हमें *"आग से भेजेगा"* ताकि हम शुद्ध हो सकें। परमेश्वर में हास्य की भावना है।

क्या ही सौभाग्य और आशीष है कि उस स्पष्ट क्षणों का अनुभव करें जहाँ हम जानते हैं कि हम कौन हैं और हम किसके हैं।

३. दु:ख और सताव के द्वारा, हम हमारे चरित्र का सुधार देखते हैं।

"केवल यही नहीं, वरन् हम क्लेशों में भी घमंड करें, यह जानकर कि क्लेश से धीरज, और धीरज से खरा निकलना, और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है" (रोमियों ५:३-४)।

एक बार मैं नॉर्थ कैरोलिना में ग्रीष्मकालीन शिविर में बोल रहा था, कॉलेज के एक नवयुवती ने मुझ से संकटमय और संघर्षमय पारिवारिक परिस्थितियां जिसका वह मित्रों के साथ सामना कर रही थी उसके बारे में बात की। प्रभु की आज्ञा पालन करने पर उसकी काफ़ी आलोचना हो रही थी। बातचीत आधे तक आई थी जिससे मुझे धक्का लगा। मैंने उसे पूछा, *"क्या*

तुम प्रभु को अधिक जानने के लिए प्रार्थना कर रही हो?" उसने मुझे अजीब नज़रों से देखा और मान लिया वास्तव में यही उसकी प्रार्थना थी। मुस्कुराते हुए, मैंने उसे दिखाया कि उसे अपने चरित्र में सुधार लाने और उसे नया बनाए ताकि वह उसे अधिक जान सके इसलिए अवसर प्रदान करने के द्वारा परमेश्वर उसकी प्रार्थनाएं सरल रूप से उत्तरित कर रहा था।

परमेश्वर ने हमारे जीवनों में कठिन समय आने दिया है कि मसीह हम में नजर आ सके। स्मरण रखे कि यीशु मसीह, *"आत्मा के द्वारा जंगल में ले जाया गया ताकि शैतान से उस की परीक्षा हो"* (मत्ती ४:१)। आत्मा यीशु मसीह को परीक्षा में कैसे ले जा सका क्योंकि परमेश्वर *"किसी को परीक्षा में नहीं डालता?"* (याकूब १:१३)। वही शब्द जिसका अनुवाद परीक्षा में डालना किया है उसे परीक्षा के रूप में भी अनुवादित किया जा सकता है। परमेश्वर उसके बच्चों की परीक्षा लेता है ताकि वे साबित हो सके, लेकिन दुश्मन परीक्षा में डालता है ताकि हमारा पतन हो सके।

१ कुरिन्थियों १०:१३ में हमें बताया गया है, *"तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।"* जब परमेश्वर इन कठिन परिस्थितियों को हमें अनुभव होने देता है, तो वह हमेशा ही उसमे से छूटने का रास्ता भी प्रदान करता है।

लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि अक्सर परमेश्वर का छुड़ाने का रास्ता पलायन के माध्यम से नहीं, लेकिन सहन करने के द्वारा है। शायद आप के जीवन में कोई परिस्थिति होगी कि आप इच्छा करोगे की परमेश्वर इसे दया से छुटकारा दे या उसे पूरी तरह से निकाल दे। क्या यह हो सकता है कि उसका प्रेम इसे दूर करने के लिए स्थिति को मूल्यवान समझता हो?

परमेश्वर ने हमारे जीवनों में कठिन समय आने दिया है कि मसीह हम में नजर आ सके।

वर्ष १८५१ था। एलिझाबेथ प्रेन्टिस ने हाल ही में उसके दो बच्चों को दफनाया था। शोक में डूबी, उसने प्रभु को एक छोटी कविता लिखी :

एक बच्चा और दो ताजी कब्रें मेरे पास है,
यह तेरी ओर से मुझे दिया गया उपहार है;
लहूलुहान, बेहोश, टुटा हुआ हृदय-
यह मेरा तेरे लिए उपहार है।

उसके उदासी के समय में, उसके पति ने प्रशंसा की, *"प्रेम आत्मा को अँधा होने बचा सकती है।"* ये वह शब्द थे जिन्होंने उसके गीत के शब्दों को प्रेरणा दी थी, ज़्यादा प्रेम, हे मसीह, तेरे लिए और विशेष रीति से, यह तीसरी पंक्ति :

शोक को उसका काम करने दो, फिर दु:ख या यातना होवे;
आपके संदेशवाहक मधुर है, उनके परहेंज मीठे है,
जब वे मेरे साथ गा सकते हैं; ज़्यादा प्रेम, ओ मसीह, तेरे लिए;
तुझे ज़्यादा प्रेम, तुझे ज़्यादा प्रेम![५०]

जो चीज़ें हम हमारे लिए कभी भी नहीं चुनेंगे वे प्रभु के दूत हो सकते हैं जो हमारे जीवन के निराशाजनक समय में उसके मधुर प्रेम को बता सकते हैं।

मेरी छोटी बहन, कॉरी, एक प्रतिभाशाली कवि और मेरी सबसे उत्तम मित्र, ने इस सत्य को एक शक्तिशाली कविता में बताया है, जो कठिन समय में लिखी गई जब उसके जीवन के जवानी के दिनों में ही उसके स्वास्थ्य में गिरावट आ रही थी ऐसा प्रतीत हो रहा था। इसे धीरे से पढ़िए। संदेश को ग्रहण करे।

मैं ने रविवार के गीतों को गाया,
और मुझे सभी पंक्तियाँ पता थी।
"सब कुछ यीशु को समर्पित करती हूँ,"
और "उसका हाथ मेरे हाथ में।"

लेकिन तभी दिन आया
जब परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली।
उसने कहां, "मैं तेरा जीवन उपयोग करना चाहता हूँ,
यह दिखाने के लिए कि मेरे मार्ग उत्तम।"

मैं नहीं चाहता कि लोग
केवल विश्वास और स्तुति के ही शब्द सुने।
लकीर का संबोधन करना काफ़ी नहीं है,
जिसके द्वारा आपका पालनपोषण हुआ है।

मैं यह चाहता हूँ कि तेरा जीवन इसे साबित करे।
मैं चाहता हूँ कि जगत देखे।
मैं हृदय के भीतर क्या कर सकता हूँ,

मुझे समर्पित हो जाओ।

क्योंकि मैं महान् बातें बताऊंगा
कि मैं, और प्रभु वह कर सके।
मैं मेरी महिमा प्रदर्शित करूँगा,
और मैं तुझे इस्तेमाल करने के लिए पूछ रहा हूँ।

लेकिन मुझे तेरे प्रयास,
तेरी शक्ति या सामर्थ्य की जरुरत नहीं है।
मैं किसी नायक,
या कोई बढ़िया मानव संत को नहीं खोज रहा हूँ।

मुझे तेरी कमजोरियां चाहिए।
मैं तेरी पीड़ा लेना चाहता हूँ।
और आप की योग्यताओंका
मेरे नाम को महिमा देने के लिए इस्तेमाल करूँगा।

और मैं चाहता हूँ की तू मुझ पर विश्वास रखे,
हर दिन मेरे मुख की खोज करे,
मैंने उत्तरों का अभिवचन नहीं दिया है,
मैं ने केवल अनुग्रह का अभिवचन दिया है।

अधोरेखित विषय के लिए,
यह केवल उसके बारे में नहीं,
सभी महान् चीज़ें मैं तेरे द्वारा करूँगा,
या जिस मार्ग से तु मुझे मदद करेगा।

लेकिन यही जो मैं तुझ में कर रही हूँ,
जो मैं चाहती हूँ कि जगत देखे।
कि जीवन का मार्ग कुछ भी नहीं,
वह मुझ में सुंदर किया जाता है।

इसलिए, मुझ पर भरोसा रख, हे अनमोल बच्चे,
और एक दिन तू समझ जाएगा,
कि जो तुम्हें अर्थहीन नजर आता है,
वही तो था जो मैंने ठहराया था।

४. हमारा दु:ख उठाना और सताव हमारे उद्धारकर्ता को प्रगट करता है।

"परंतु हमारे पास वह धन मिट्टी के बरतनों में रखा हैं कि यह असीम सामर्थ्य हमारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर ही की ओर से ठहरे। हम चारों ओर से क्लेश तो भोगते हैं, पर संकट में नहीं पड़ते; निरुपाय तो हैं, पर निराश नहीं होते; सताए तो जाते हैं, पर त्यागे नहीं जाते; गिराए तो जाते हैं, पर नष्ट नहीं होते। हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रगट हो। क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रगट हो। इस प्रकार मृत्यु तो हम पर प्रभाव डालती है और जीवन तुम पर।" (२ कुरिन्थियों ४:७-१२)

बाइबल में, हमारे शरीर को मिट्टी के घड़ों या मिट्टी के बर्तनों से तुलना की गई हैं। यह कल्पना दर्शाती है कि मसीह ने उसके आत्मा द्वारा हम में जीने का चुनाव किया है। वह हमारे मिट्टी के घड़े में खज़ाना है।

गिदोन और एक विशाल, पूरी तरह से तैयार दुश्मन को हराने के लिए परमेश्वर द्वारा दिए गए युद्ध की योजना के बारे में कुछ मिनट विचार करें, जिसका वर्णन ऐसे किया है, *"क्योंकि वे अपने पशुओं और डेरों को लिए हुए चढ़ाई करते, और टिड्डियों के दल के समान बहुत आते थे; और उनके ऊंट भी अनगिनत होते थे; और वे देश को उजाड़ने के लिए उसमें आया करते थे"* (न्यायियों ६:५)।

पहला, वहां बहुत ही संभावनाएं थी। परमेश्वर ने गिदोन की सेना को ३२,००० से ३०० तक कम कर दिया। वहां पर दो भिन्न प्रकार के सैनिक थे जिन्हें गिदोन ने वापस भेज दिया, लेकिन आखिरी ३०० पुरुष जो थोड़े थे वे घबराए हुए नहीं थे, और झरने से पानी पीने का चुनाव करने के द्वारा उन्होंने परीक्षा पास की थी उस तरीके ने दिखाया था कि वे किसी भी क्षण युद्ध के लिए तैयार है।

अगला, वहां पर रणनीति थी। मैं कल्पना करता हूँ कि गिदोन अपने छोटे से सैनिक दल को एकजुट कर रहा था और उन्हें कह रहा था, *"देखो दोस्तों, यह समय आक्रमण करने का है, तो यह योजना है। नरसिंगा और एक खाली घड़ा ले लो और आपके उस खाली घड़े में मशाल जलाओ। तब हम १०० के तीन गुट में अलग हो जायेंगे, दुश्मनों के शिविर को घेर लो, नरसिंगा फूंको, घड़े तोड़ दो और फिर पुकारो, "यहोवा के लिए, गिदोन के लिए!" मैं कल्पना कर सकता हूँ कि सैनिकों का मुंह उतर गया होगा और उन्होंने द लायन किंग में के टीमोन समान प्रत्युत्तर दिया होगा, "क्या मैं कुछ तो चूक रहा हूँ?" लेकिन गिदोन*

और उसके छोटे सैनिक दल ने विशाल दुश्मनों को "यहोवा की तलवार" से नष्ट कर दिया (न्यायियों ७:२०)।

मानवी दृष्टिकोण से कहां जाए तो, गिदोन को परमेश्वर द्वारा दी गई युद्ध की योजना की संभावनाओं से विजय प्राप्त करना यहोशू के सैनिकों का यरीहो के आसपास सात बार चक्कर लगाना, वहां नरसिंगा फूंकना और दीवार गिरने की उम्मीद रखने समान नजर आ रहा था। गिदोन के युद्ध के बारे में मुझे दो प्रश्न पूछने दीजिए : (१) मिट्टी के घड़ों के अन्दर की मशाल कब उजागर की गई? (२) विजय कब मिला? विजय सुरक्षित हो गई जब घड़े तोड़े गए और मशाल दिखने लगी।

नए नियम में हम देखते हैं कि यीशु ने कहां, *"तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। और लोग दीया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परंतु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें"* (मत्ती ५:१४-१६)। यीशु के सुननेवाले *"दीया"* की प्रतिमा जो ध्यान में ले रहे थे वह एक छोटा मिट्टी का बर्तन था-एक साधारण मिट्टी का दीया जिसे जलते रहने के लिए निरंतर तेल से भरा जाता था।

पारदर्शी होने का मतलब लोगों को आपके जीवन में झांकने देना नहीं हैं -यह आपके द्वारा उन्हें देखने देना हैं।

मसीह में भाइयों और बहिनों, हम जगत की ज्योति है क्योंकि यीशु, जगत का प्रकाश है, जो हम में निवास करता है। वह हमारे *"मिट्टी के घड़ों"* में खज़ाना है। गिदोन के दिनों के युद्ध समान, हमारे युद्ध की योजना प्रभावी होने के लिए, प्रकाश प्रगट होने के लिए हमारे मिट्टी के घड़े तोड़ना चाहिए। यह हमारा टुटापन है जिसमे जगत यीशु मसीह को देख पाएगा।

हम अक्सर पारदर्शिता के बारे में बोलते हैं, लेकिन हमें पता हैं इसका क्या मतलब है? यह शब्द प्रत्यक्ष १६वीं शताब्दी के अंत में उभर के आया और इसका मतलब *"उससे चमकना"*। इसे न चूके। पारदर्शी होने का मतलब लोगों को आपके जीवन में झांकने देना नहीं हैं -यह आपके द्वारा उन्हें देखने देना हैं। यहाँ बड़ा फर्क़ है। सच्ची नम्रता यह हमारी सभी कमियों पर ज़ोर देना नहीं है। बल्कि, हमारी असफलताओं के बावजूद उसके उद्धार को दिखाने के बारे में है। टुटापन उस अंत तक पहुँचने का एक माध्यम है। यहाँ पर लिटमस टेस्ट है : जब दूसरा व्यक्ति आपके साथ के बातचीत छोड़ देता है, क्या वे आपके जीवन के बारे में

या आपके उद्धारकर्ता के बारे में सोचते हुए उस बातचीत को छोड़ते हैं (फिर वह आपकी महसूस की हुई सफलता या असफलता हो)? क्या जगत आपके टूटेपन के माध्यम से मसीह की सुंदरता को जीवित और कार्यरत देखता है, एक टूटन जो आपको यीशु मसीह के स्वरूप में ज़्यादा से ज़्यादा बदल रही है?

आइए हम युद्ध की योजना से दूर न भागे जो हमारे उद्धारकर्ता को भटके और मर रहें जगत को प्रगट करेगा।

५. दु:ख और सताव हमारी शक्ति को फिर से प्रेरणा देते हैं।

"इसलिए कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊ, मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ। इसके विषय में मैं ने प्रभु से तीन बार बिनती की कि मुझ से यह दूर हो जाए। पर उसने मुझ से कहां, 'मेरा अनुग्रह तेरे लिए बहुत है; क्योंकि मेरी सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होती है।" इसलिए मैं बड़े आनंद से अपनी निर्बलताओं पर घमंड करूँगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती रहे। इस कारण मैं मसीह के लिए निर्बलताओं में, और निंदाओ में, और दरिद्रता में, और उपद्रवों में, और संकटों में प्रसन्न हूँ; क्योंकि जब मैं निर्बल हूँ, तभी बलवंत होता हूँ" (२ कुरिन्थियों १२:७-१०)।

चर्च का अधिकांश भाग कमज़ोर और बीमार है। इस कारण से नहीं कि मसीह काफ़ी नहीं, पर इस कारण से कि हम कमज़ोरी और सामर्थ्य में अस्पष्ट हैं। हम दु:ख और सताव की कठिनाइयों को प्रार्थना से दूर करना चाहते हैं, जबकि हमारे प्रभु ने कई बार पौलुस के कांटे को दूर करने से इन्कार किया, लेकिन कमज़ोरी को ही एक माध्यम के रूप में घोषित किया जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी सामर्थ्य प्रदर्शित करता है।

२ कुरिन्थियों १२:७ में, पौलुस ने स्पष्ट किया कि काँटा उसे *"दिया"* गया। लादा नहीं गया, पर एक दान-संपत्ति के रूप में दिया गया। आगे, क्या आप ने कांटे के उद्देश्य पर ध्यान दिया? प्रेरित ने स्पष्ट किया, *"ताकि मैं फूल न जाऊं।"* यह मानना आसान होगा कि यह *"शैतान का दूत"* केवल शत्रु था जो पौलुस पर आक्रमण कर रहा था, पर कबसे हमारी आत्मा का शत्रु हमें फूल न जाने से रोकता है? परमेश्वर पूर्ण रूप से नियंत्रण में है।

परमेश्वर से सबक या अवसर ये अक्सर शैतान के दूत द्वारा आते हैं। शत्रु चाहता है कि हम कांटे पर ध्यान रखे और परमेश्वर ने हमारे लिए तैयार किए हुए परीक्षा को चूक जाए। हम समस्या देख सकते हैं जबकि परमेश्वर वही परिस्थिति को हमें संयम सिखाने के लिए उपयोग करना चाहता है। हम हमारी असफलताएं देख सकते हैं जबकि परमेश्वर हमें उसकी

विश्वसनीयता दिखा रहा है। हम शोक देख सकते हैं जबकि परमेश्वर हम में उसकी सामर्थ्य प्रगट कर रहा होता है। हम बीमारी देख सकते हैं जबकि परमेश्वर हमें निर्भरता सीखा रहा होता है। परमेश्वर उसके अपने लोगों की परीक्षा लेता है की उन्हें साबित करें, उन्हें अपात्र नहीं ठहराए।

परमेश्वर उसके अपने लोगों की परीक्षा लेता है की उन्हें साबित करें, उन्हें अपात्र नहीं ठहराए।

बहुत सारे बाइबल के विद्वानों ने यह निश्चित करने का प्रयास किया कि पौलुस का वह *"काँटा"* क्या हो सकता है। हमें वह नहीं बताया गया। हमें जो पता है वह यह कि पौलुस ने केवल उसके परिश्रम, बंदिवास, मार खाना और करीबन मृत होने के अनुभव के बारे में लिखा है। वह कहता है, *"पांच बार मैंने यहूदियों के हाथ से उन्तालीस कोड़े खाए। तीन बार मैं ने बेंतें खाएँ; एक बार मुझ पर पथराव किया गया; तीन बार जहाज, जिन पर मैं चढ़ा था, टूट गए; एक रात-दिन मैं ने समुद्र में काटा। मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में, अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों के जोखिमों में; जंग के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में रहा। परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख-प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में; और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिंता प्रतिदिन मुझे दबाती है"* (२ कुरिन्थियों ११:२४-२८)। आगे पौलुस एक अद्भुत अनुभव को याद करता है, *"जिसे बताया नहीं जा सकता"* (२ कुरिन्थियों १२:४)।

तब फिर उसके *"कांटे"* का अस्पष्ट संदर्भ आता है।

इससे प्रोत्साहन प्राप्त करें। शायद पौलुस, पवित्र आत्मा के द्वारा चलाया गया था, वह इस कांटे के स्वरूप को हमें नहीं बताता ताकि हम उसे समझ सके। शायद उसका काँटा यह निरंतर प्रलोभन था जिससे पौलुस को दूर भागना और प्रतिकार करना था। शायद यह परेशान करनेवाली शारीरिक समस्या हो जिसे प्रभु ने स्वस्थ करना नहीं चाहा। शायद यह असमर्थता थी जो हमेशा पौलुस को उसकी अनुमानित क्षमता से दूर रखती प्रतीत होती थी। हमें पता नहीं- और शायद यह ऐसे ही उत्तम है। हमें जो पता है वह यह कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारे सभी काँटों के लिए पर्याप्त है।

गिदोन के मिद्यानी लोगों के साथ के युद्ध पर फिर से जाएँ, ३२,००० सैनिक युद्ध में नहीं भेजने के लिए परमेश्वर का क्या कारण था? *"जो लोग तेरे संग हैं वे इतने हैं कि मैं मिद्यानियों को उनके हाथ नहीं कर सकता, नहीं तो इस्राएल यह कहकर मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई मारने*

लगेंगे कि हम अपने ही भुजबल के द्वारा बचे हैं" (न्यायियों ७:२)। यह छोटासा जीवन परमेश्वर की महिमा के लिए है- परमेश्वर की महिमा के लिए जो हमें प्रेम करता है और वह चाहता है कि उसके राज्य में हम हमेशा के लिए उसका आनंद लेते रहे। जब यीशु हमें अपने आप का इन्कार करने और क्रूस उठाने को कहता है, तब यह दंड नहीं है लेकिन एक सौभाग्य है। यह एक निमंत्रण है कि परमेश्वर के जीवन को मर्त्य शरीर, कांटे और सब में प्रगट होने दे। *"जब मैं निर्बल होता हूँ, तभी बलवंत होता हूँ"* (२ कुरिन्थियों १२:१०)।

६. दु:ख और सताव उसकी महिमा के लिए एक जगह प्रदान करते हैं।

"हे प्रियो, जो दु:ख रूपी अग्नि तुम्हारे परखने के लिए तुम में भड़की है, इस से यह समझकर अचम्भा न करो कि कोई अनोखी बात तुम पर बीत रही है। पर जैसे जैसे मसीह के दु:खों में सहभागी होते हो, आनंद करो, जिससे उसकी महिमा के प्रगट होते समय भी तुम आनंदित और मगन हो। फिर यदि मसीह के नाम के लिए तुम्हारी निंदा की जाती है तो तुम धन्य हो, क्योंकि महिमा का आत्मा जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है। तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दु:ख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दु:ख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे" (१ पतरस ४:१२-१६)।

क्या हम वही परिस्थितियों को टालने के प्रयास करते हैं जो अवसर प्रदान करती हैं कि मसीह की सामर्थ्य और सुंदरता दिखाए?

पतरस हमें यह बताते हुए शरुआत करता हैं कि हमें आश्चर्य नहीं करना हैं या कोई अनहोनी बात हो रही है ऐसा नहीं मानना है जब कठिन समय से जाते हैं। आज अधिकांश कलीसियाओं में, यहाँ पर अजीब विरोधाभास है। जैसे पिछले पाठ में उल्लेख किया है, वही चीज़ें जिनका यीशु ने हमें अभिवचन दिया है वह होगी यदि हम उसके पीछे चलते हैं वे ही चीज़ें अक्सर होती हैं जो हमें उसकी उपस्थिति और प्रेम पर संदेह करने का कारण बनती हैं। क्या होगा यदि जीवन में माना हुआ मार्ग-परिवर्तन ही सच्ची आशीष का सबसे सरल रास्ता हो? क्या होगा यदि सबसे अनिच्छुक परिस्थितियां परमेश्वर की महिमा के लिए मंच बन जाएँ?

२०१५ जनवरी में, नायजेर में धार्मिक चरमपंथियों ने उस राष्ट्र में बहुत सी कलीसियाओं की इमारतें, और कलीसियाओं के अगुओं के कुछ घर एक ही दिन में जलाने के लिए भीड़ को उकसाया। उसी दिन उन्होंने एक अनाथालय और हमारे पड़ोस की पाठशाला को जला दिया।

क्या होगा यदि सबसे अनिच्छुक परिस्थितियां परमेश्वर की महिमा के लिए मंच बन जाएँ ?

ये घटनाएँ शनिवार को सुबह हुई, जब हमारे एक आँगन में साप्ताहिक बच्चों का बाइबल क्लब चल रहा था। हमारे गाँव में भीड़ पहुँचने से बीस मिनट पहले, बाइबल क्लब हो रहा था तब पड़ोसी रोते-रोते दरवाज के पास पहुंचे, हमारे संघ को आनेवाले खतरे की जानकारी दे रहे थे, इस प्रकार हमें अधिक सुरक्षित जगह जाने के लिए समय दिया। जब अपराधी पहुंचे, वे हमारे कुछ घरों को जलाना चाहते थे-मेरा भी घर उसमे शामिल था। हमारे कुछ पड़ोसी और मुस्लिम मित्रों ने आक्रमण करनेवालों का विरोध किया जब वे हमारे दरवाजे तक पहुंचे। एक व्यक्ति अपने जीवन का जोखिम उठाकर दीवार पर चढ़ा और बोतल में पेट्रोल भर कर बनाए हुए विस्फोटक को बुझा दिया।

हमारे घर बच गए, लेकिन अन्य बहुत सारे नहीं बचे। एक मसीही भाई जो मेरे सामने के रास्ते पर रहता था उसका घर लुटा और जलाया गया। भीड़ उसे क्रूस पर चढाने के लिए चिल्ला रही थी जब आग बढ़ रही थी, लेकिन भीड़ ने उसे पकड़ने से पहले वह बाल बाल बच निकला। एक और नायजेर मित्र जो एक स्थानीय कलीसिया का पासबान था उसने अपना घर, उसकी संपत्ति और चर्च इमारत को खो दिया। उस घटना के बाद में, उसने मुझे कहां, *"यह इतनी आशीष है, क्योंकि परमेश्वर ने अभिवचन दिया है यह होनेवाला है। अब चर्च की उन्नति होगी।"* और एक करीब के मसीही कर्मचारी ने स्पष्ट किया, *"मैं इतना धन्यवादी हूँ परमेश्वर ने हमारी इमारत को नहीं बचाया। यदि उसने ऐसा किया होता, तो हम उसके आशीष को खो चूके होते।"*

इन विश्वासियों ने इसे दुर्घटना के रूप में नहीं देखा। उन्होंने उसे परमेश्वर की महिमा के लिए स्थिति के रूप में देखा। परमेश्वर आपको कौनसी स्थिति दे सकता है जिसे आप टालना चाहोगे? किसी की अस्वीकृति? किसी परिचित द्वारा गलत आरोप लगाना? संपत्ति का नुकसान? इन स्थितियों को आपके विश्वास को प्रदर्शित करने का इरादा है, इन्हें नष्ट करने का नहीं।

७. दुःख और सताव हमारे दुश्मनों को डांटते हैं।

"केवल इतना करो कि तुम्हारा चाल-चलन मसीह के सुसमाचार के योग्य हो कि चाहे मैं आकर तुम्हें देखूं, चाहे न भी आऊं, तुम्हारे विषय में यही सुनूँ की तुम एक ही आत्मा में स्थिर हो, और एक चित्त होकर सुसमाचार के विश्वास के लिए परिश्रम करते रहते हो, और

किसी बात में विरोधियों से भय नहीं खाते। यह उनके लिए विनाश का स्पष्ट चिन्ह है, परंतु तुम्हारे लिए उद्धार का और यह परमेश्वर की ओर से है" (फिलिप्पियों १:२७-२८)।

पश्चिम अफ्रीका में, मेरे बहुत सारे पड़ोसी थे जिन्हें जगत *"कट्टरपंथी इस्लामवादी"* कह सकता है। एक दिन दोपहर के अंत में, एक नए पड़ोसी जगह में जाने के कुछ ही दिनों बाद, मैं एक मित्र के छोटीसी झोपड़ी पर टोमेटो पेस्ट खरीदने गया। जो मैं ढूंढ रहा था वह मुझे मिल गया। जब घर जानेवाला ही था, मैंने कहां की हम ख्रिसमस की पार्टी देने जा रहे हैं। मैं ने मेरे मित्र को यीशु के पृथ्वी पर आने के उत्सव आने का निमंत्रण दिया।

और एक जवान व्यक्ति जो करीबन बीस वर्ष का था उसने हमारी बातचीत सुनी और पूछा, *"क्या मुझे भी निमंत्रण है?"* तुरंत, मैं ने उसे कहां, *"बिलकुल !"* उसने कहां, *"क्या आप चाहते है कि अल-कैदा आपकी पार्टी में आए?"* मैंने उसे कहां वह मेरा पड़ोसी था और हम उसे वहां चाहते थे। बहुत ही सहज महसूस करते हुए, उसने आगे कहा, *"क्या आप भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं? मैं ने तुरंत उससे कहां कि मैं करता हूँ, क्योंकि भविष्यद्वक्ता यीशु की ओर इशारा करते हैं। इस खेल को जानकर, उसने फिर से पूछा, "*क्या आप सभी भविष्यद्वक्ताओं पर विश्वास करते हैं? यह समझते हुए कि वह यह पूछ रहा है कि क्या मैं मुहम्मद, इस्लाम का अंतिम भविष्यद्वक्ता पर विश्वास करता हूँ, मैंने उत्तर दिया, *"मेरे मित्र, मैं इस दुकान में टोमेटो पेस्ट खरीदने आया। वह मुझे मिल गई। अब, क्या मैं अन्य टोमेटो पेस्ट की खोज करता रहूँगा या मैं घर जाऊँगा और पकाऊंगा?" "आप घर जाओगे और पकाओगे,"* उसने कहां। *"यही सच्चाई है,"* मैं बोलता रहा। *"जीवन में, मैं शांति, आनंद, आशा, प्रेम और शास्वत जीवन की खोज कर रहा था। मुझे ये सब बातें और इससे भी ज़्यादा यीशु मसीह में मिल गई। मुहम्मद सेकड़ों वर्षों बाद आया और इसलिए मेरे विश्वास के लिए अप्रासंगिक है। मेरी तलाश यीशु के साथ समाप्त हो गई। तब मैं और कहीं क्यों तलाश करू क्योंकि जो मुझे पहले ही मिल गया है?"*

उस बातचीत के द्वारा, हम मित्र हो गए। उसने बाद में मुझ से कहां की बाद में आए ताकि विश्वास के विषय पर चर्चा करे। जब हम लोगों की धमकियों से नहीं डरते, तब वे उनके लक्ष्य हमारी आशा पर कर सकते हैं, जैसे मेरे नए मित्र ने किया। जब हमारी आत्मा का दुश्मन हमें उसके खाली, सांसारिक धमकियों से (जो हमारे शरीर पर प्रभाव डाल सकते हैं, लेकिन हमारी आत्मा पर कोई ख़तरा नहीं डाल सकते) डराने में असफल होता है तो वह आत्मिक जगत में उसके स्थान को गँवा देता है।

८. दु:ख और सताव हमें पुरस्कार देते हैं।

"धन्य हैं वे, जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निंदा करें, और सताए और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनंदित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था" (मत्ती ५:१०-१२)।

कई बार हम उसी बातों के विरोध में प्रार्थना करते हैं जो हमें परमेश्वर की आशीष और पुरस्कार लानेवाले होते हैं।

कई बार हम उसी बातों के विरोध में प्रार्थना करते हैं जो हमें परमेश्वर की आशीष और पुरस्कार लानेवाले होते हैं। यीशु ने केवल यह सुझाव नहीं दिया कि वे जिन्हें उसके नाम की खातिर सताया जाएगा वे आशीषित होंगे-उसने उसका अभिवचन दिया है। और जैसे कि वह काफ़ी नहीं, वह हमें बताता हैं कि यह पुरस्कार *"बड़ा"* है। आइए हम सताव बंद होने के लिए प्रार्थना न करें, लेकिन अनुग्रह को सहे- कि मसीह की महिमा की जाए।

सितम्बर २००१ में न्यूयॉर्क शहर पर आक्रमण होने के कुछ ही समय बाद में, जब अमरीकी सैनिक दल इराक में प्रवेश करनेवाले थे, एक स्त्री जिसका नाम करेन वाट्सन था उसने एक आवश्यकता को देखा। वह पहचान गई थी कि इराक में युद्ध के दौरान बहुत सी आत्माएं अब जल्द ही मरनेवाली हैं और चाहा कि वे यीशु मसीह के सुसमाचार को पहले सुने। उसे जोखिम पता थी, परंतु उसे यह भी पता था कि प्रभु उसे पके हुए खेत में भेज रहा था। अमरीका को जाने से पहले, उसने उसके पासबान के पास एक ख़त बंद लिफाफे में दिया, यह कहते हुए कि यदि उसकी मौत हो जाती है तभी इसे खोलना। वह २००२ में इराक गई और उस राष्ट्र के लोगों के लिए सेवकाई की, यीशु मसीह का सुसमाचार विश्वास से बताया और उसके प्रेम को व्यवहारिक मार्गों से दिखाया।

मार्च १५, २००४ में, उसके पासबान के दफ्तर में फोन बजा। करेन के मिशन संस्था से फोन आया था, यह बताते हुए कि करेन और उसके साथ अन्य दो लोग, स्थानीय हमलावरों द्वारा मारे गए जब वह उत्तरी इराक में स्त्रियों और बच्चों को सुसमाचार देने जा रही थी। इस समाचार को सुनने के बाद में, उसे उसके अन्य फाइलों में रखे करेन के ख़त की याद आई। उसने उस लिफाफे को खोला, वहां लिखा था, *"मुझे किसी जगह पर नहीं बुलाया गया; मुझे उसके पास बुलाया गया। आज्ञा मानना यह मेरा लक्ष्य था, दु:ख उठाने की अपेक्षा थी, उसकी महिमा मेरा पुरस्कार।"* करेन सताव और मृत्यु से हैरान नहीं थी। शास्वतता

उसकी आँखों में छा गई थी, वह इराक को प्रभु और लोगों की सेवा करने गई थी। उसके लिए, जीना यह मसीह, और मरना लाभ था (फिलिप्पियों १:२०-२१)।[५१]

परमेश्वर ने जो अभिवचन दिया है हम उसकी अपेक्षा क्यों न करें? जब परमेश्वर उसके वचन के प्रति सत्य होता है तब हम क्यों आश्चर्य करते हैं? आशीष के स्त्रोत से हम क्यों दूर भागना चाहते हैं?

चीन के कुछ भाग में, मसीह के नए अनुयायियों का बपतिस्मा देने से पहले, उनसे इस वाक्य को बार बार कहने को कहां जाता है :

> मैं किसी भी समय या जगह दु:ख उठाने, कैद में जाने,
> कैद से छूटने और मेरे प्रभु के लिए मरने के लिए भी तैयार हूँ।
>
> **यदि आप मुझे कैद करे,** तो आप मुझे बंदी श्रोतागण दे रहे हो
> कि अन्य लोगों को सुसमाचार बताऊँ।
>
> **यदि आप मुझे एकांतवास में रखे,**
> तो मैं प्रार्थना और मनन कर सकता हूँ।
>
> **यदि आप मेरा घर और मेरी संपत्ति ले लो,**
> तो मैं सुसमाचार प्रचार के लिए कहीं भी सफर कर सकता और उसे बता सकता हूँ।
>
> **यदि आप मुझे मारते हो,** तो मैं परमेश्वर की महिमा करूँगा और
> यह मुझे स्वस्थ करने का अवसर देता है।
>
> **यदि आप मुझे जानसे मार डालते हो,** तो आप मुझे महिमा के पास भेज दोगे-मेरा अंतिम लक्ष्य।[५२]

इसके साथ, उन्हें पिता के, और पुत्र के, और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा दिया जाता है।

मेरी माँ हमेशा मुझे एस्तेर केर रुस्थोई के निम्नलिखित शब्द याद दिलाने का निर्णय लेती थी,

> यह सबसे योग्य होगा जब हम यीशु को देखेंगे,
> जीवन के संकट इतने छोटे दिखेंगे जब हम मसीह को देखते है;
> उसके प्रिय चेहरे की एक झलक, सभी शोक मिटाए जायेंगे,
> इसलिए निडरता से दौड़ दौड़ते रहे जब तक हम मसीह को देखे।[५३]

९. दुःख और सताव हमें शास्वतता पर फिर से केन्द्रित करते हैं।

"इसलिए हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नष्ट होता जाता है; तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनंत महिमा उत्पन्न करता जाता है; और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परंतु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं" (२ कुरिन्थियों ४:१६-१८)।

२०१४ में, अथेनै, ग्रीस की यात्रा पर, मैंने जो कहांनी सुनी थी उसकी जांच करने के लिए रेल से यात्रा करने का निर्णय लिया। नेरांत्ज़ियोटिसा स्टेशन पर उतरने के बाद, मैं पूर्व ऑलिम्पिक पार्क तक चलता गया जहाँ केवल दस वर्षों पहले, अथेनै में २८वा ओलिम्पियाड का आयोजन किया गया था।

अफवाहे सच थी।

ऑलिम्पिक पार्क यह भूत का शहर, यादों के कब्रों का स्थान, बन चुका था। किसी को वहां देखे बिना दस बिलियन डॉलर के मैंदान के आसपास चलना भयानक अनुभव था। सायकिल या मोटरसाईकल के लिए तैयार किया हुआ मार्ग, जलविज्ञान केंद्र, ऑलिम्पिक स्टेडियम, फंवारे, चलने के मार्ग, झंडों के छेद और कमान सभी ने मुझे याद दिलाया कि वह पहले कैसे था। वह अब खाली लग रहा था; कुछ तो चूक रहा था। बहुत सारी सुविधाएं बंद थी और बाड़ों से घिरा हुआ था। एक सुविधा को खुला हुआ देखकर, मैं ने छोड़ा हुआ, गिला गलियारा देखा जहाँ ऑलिम्पिक खिलाड़ी कभी इकट्ठा हुआ करते थे। अनुभव असली था।

सुनसान स्तम्भ देखकर, मैं एक पर टिका और कुछ लिखने, सोचने और प्रार्थना करने लगा। गूगल का उपयोग करके दस वर्षों पहले की तस्वीर निकालने की कोशिश कर रहा था, मैंने इसकी कल्पना करने का प्रयास किया कि पार्क जिसमे मैं बैठा था जहाँ जगत के बड़े जाने-माने लोग कभी कुछ सप्ताह के लिए जमा हुए थे।

बाइबल को खोलते हुए, पौलुस के ये शब्द मेरे हृदय से प्रतिध्वनित हुए। *"और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परंतु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं"* (२ कुरिन्थियों ४:१८)। कितनी जल्दी लोगों की प्राप्ति, प्रशंसा और तालियाँ गायब हो गए थे। फिर भी अक्सर कितनी बार हम ऐसी अस्थायी बातों की खोज करते रहते हैं?

इन वचनों में, हमें स्मरण दिया हैं कि हल्का सा क्लेश जो हम भोगते हैं जो एक बड़े सत्यता की भविष्यवाणी करता है। वे केवल एक टोकन नहीं जो हमें स्मरण कराते हैं जो आनेवाला है, परंतु वे एक साधन है जो *"हमारे लिए अधिक उत्कृष्ट और शास्वत महिमा के भार के लिए काम कर रहे हैं।"* क्या हमारे दृष्टांत का अभाव *"हल्के से क्लेश"* को आत्मसात करने से इन्कार का कारण हो सकता है जो यीशु मसीह के साथ बने रहने में जुड़ा रहेंगा। क्या हमारे शास्वत दृष्टिकोण का अभाव अस्थायी चीज़ों पर हमारी मजबूत पकड़ के कारण उत्पन्न हो सकती है? क्या जीवन के क्लेशों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया दूसरों को शास्वतता पर फिर से केन्द्रित होने देती हैं, या क्या वह उन्हें व्यर्थ खोज पर इशारा करती है जिसका अंत अथेनै के त्यागे हुए ऑलिम्पिक पार्क जैसा दिखेगा?

क्या जीवन के क्लेशों के प्रति हमारी प्रतिक्रिया दूसरों को शास्वतता पर फिर से केन्द्रित होने देती हैं या क्या वह उन्हें व्यर्थ खोज पर इशारा करती है?

१०. दु:ख और सताव हमारी आशा को पुनर्जीवित करते हैं।

"क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं। क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है। क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से, व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की संतानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीडाओं में पड़ी तड़पती है; और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं। इस आशा के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है; परंतु जिस वस्तु की आशा की जाती है, जब वह देखने में आए तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा हैं उसकी आशा क्या करेगा? परंतु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उसकी आशा रखते हैं, तो धीरज से उसकी बाट जोहते भी हैं" (रोमियों ८:१८-२५)।

थक जाना कितना आसान है? लेकिन फिर से दु:ख के आशीषित काम पर ध्यान दे।

दु:ख केवल शास्वतता पर फिर से केन्द्रित नहीं होता, परंतु यह हमारी आशा को पुनर्जीवित करता है। *"और उस धन्य आशा की अर्थात् अपने महान् परमेश्वर और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की महिमा के प्रगट होने की बाट जोहते रहें"* (तीतुस २:१३)। क्या यह हो सकता है

कि मसीह की दुल्हन के सदस्य के रूप में, हमें दुल्हे के वापस आने के बारे में इतनी कम लालसा हैं क्योंकि हम उस जगत में इतने अधिक आराम से हैं जिसने उसे क्रूस पर चढ़ाया ?

१ यूहन्ना ३:२-३ में, प्रेरित स्पष्ट करता है, *"हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की संतान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे ! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है । और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है ।"* क्या हम उसके समान होने की लालसा करते हैं? क्लेश, सताव, और दुःख हमें सत्यता के लिए जागृत करते हैं कि इस जगत में हमारी आशा दीर्घायु जीने की नहीं हैं, लेकिन उसकी उपस्थिति में होने की हैं। *"इसमें तो हम कराहते और बड़ी लालसा रखते हैं कि अपने स्वर्गीय घर को पहिन लें कि इसके पहिनने से हम नंगे न पाए जाएँ। और हम इस डेरे में रहते हुए बोझ से दबे कराहते रहते हैं, क्योंकि हम उतारना नहीं वरन् और पहिनना चाहते हैं, ताकि वह जो मरनहार है जीवन में डूब जाए ।"* (२ कुरिन्थियों ५:२-४)

हमारे जीवनों ने सवालों को निमंत्रित करना चाहिए। सवाल किसके बारे में? हमारी आशा।

जब आप का जीवन सवाल उत्पन्न करता है

पतरस, एक चेला जो मसीह के सांसारिक सेवकाई में पूरे समय उसके साथ था, उसने प्रारंभ की कलीसिया को कहां, *"पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो। जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ"* (१ पतरस ३:१५)। हमारे जीवनों ने सवालों को निमंत्रित करना चाहिए। सवाल किसके बारे में? हमारी आशा। और ऐसे सवाल अविश्वासियों से सबसे सहज आते हैं जब हम कठिन समय में प्रभु में आनंद करते हैं।

एक तरह की आशा जो सांसारिक समझ से परे है आमतौर पर आपके विवाह के दिन या जब आपका अधिकारी आपको पदोन्नति देता है तब दिखाई नहीं देती। *"इस आशा के द्वारा हमारा उद्धार हुआ है; परंतु जिस वस्तु की आशा की जाती है, जब वह देखने में आए तो फिर आशा कहाँ रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उसकी आशा क्या करेगा?"* (रोमियों ८:२४)। आशा स्वयं प्रमाण देती है जब आपके जीवन से नींव गिर जाती है और तब भी आपके पास खड़े रहने के लिए नींव होती है । क्या हम आशा का प्रदर्शन करने के

लिए कठिन समयों को साधन होने दे रहे हैं? क्या हमारे पास कुछ तो हैं जिसमे अपमानित जगत सहभागी होना चाहता है? क्या हमारे जीवन प्रश्न भड़काते हैं?

२ अगस्त १५५७ में, एलिज़ाबेथ फोल्क्स को पाषंड के विरोध में खड़े होने के कारण जिन्दा जलाया गया। जब उसके सतानेवाले उसे खूंटी तक ले गए, उन्होंने उसकी निंदा की और उसके साथ दुर्व्यवहार किया। मरने के लिए तैयार होते हुए, उसने ये अंतिम शब्द कहें, *"पूर्ण जगत को बिदाई! विश्वास को बिदाई! आशा को बिदाई! प्रेम का स्वागत!"*[५४] वह पहचानती थी कि विश्वास और आशा ये दान थे जिन्हें पृथ्वी पर उपयोग में लाना था, परंतु एक बार जब प्रभु की उपस्थिति में जाए, तो केवल प्रेम रहेंगा। इस सांसारिक-उद्देश्य के लिए विश्वास और आशा के जो दान थे उनके द्वारा हम जगत को हमारे दिनों को घेरे रहनेवाली अदृश्य सत्यता दिखा सकते है। और जगत को यह आशा की अदृश्य सत्यता जो प्रगट करती है वह हमें देख रही है? सताव और दु:ख।

आशा एक आहत संसार में गूंजने वाली ऊँची आवाज़ है।

यह कहां गया है जब याकूब-जब्दी का पुत्र और यूहन्ना के भाई-को उसका सिर कलम करने के लिए ले जाया गया, उसकी ज्वलंत आशा और विश्वास ने रोमी सुरक्षाधिकारी जो उसके साथ चल रहा था उसके जीवन पर जीवन-परिवर्तन करनेवाला प्रभाव किया। उसे मार डालने पर, सुरक्षाधिकारी याकूब के पास घुटनों पर आया, मसीह को उसका उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में कबूल किया। कुछ क्षण बाद में, याकूब और सुरक्षाधिकारी दोनोंको उसी तरह से शास्वतता में ले जाया गया।[५५] इतिहास रिकॉर्ड करता है कि यीशु के मूल बारह चेलों में से दो को छोड़कर सभी शहीद होकर मरे। एक अपवाद प्रेरित यूहन्ना था, जिसे मसीह के पीछे चलने के अपराध में तेल में उबाला गया-और बच गया।[५६] बाद में यूहन्ना को बंदी बनानेवालों ने उसे एकांत भूमध्य द्वीप पर निर्वासित किया, जहाँ प्रभु ने उसे वचन दिए की पुस्तक लिखे जिसे यीशु मसीह का प्रकाशन कहते है। दूसरा जो शहीद नहीं हुआ वह यहूदा इस्करियोती था, जिसने यीशु को चंद सिक्कों के लिए धोखा दिया और बाद मे खुद को मार डाला।

चेलों ने ऐसी मौत आनंद से क्यों स्वीकार की? उन्होंने ऐसा किया क्योंकि उन्होंने पुनरुत्थित मसीह को देखा था, और शास्वत जीवन की उनकी आशा निश्चित थी। वे जानते थे कि मृत्यु की शक्ति पराजित हो गई है। जब यीशु ने उसके चेलों को भेजा, तो उसने उन्हें चेतावनी दी, *"मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अंत तक धीरज धरे रहेंगा उसी का*

उद्धार होगा। जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग जाना" (मत्ती १०:२२-२३अ)। सताव यह यदि का विषय नहीं था, पर कब।

क्रूस पर जाने से पहले, यीशु ने अपने चेलों से कहां, *"यदि संसार तुम से बैर रखता है, तो तुम जानते हो कि उसने तुम से पहले मुझ से बैर रखा। यदि तुम संसार के होते, तो संसार अपनों से प्रेम रखता; परंतु इस कारण कि तुम संसार के नहीं, वरन् मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है, इसी लिए संसार तुम से बैर रखता है। ...यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सतायेंगे; यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे"* (यूहन्ना १५:१८-२०ब)।

क्या होगा यदि आपकी सबसे बड़ी आशीष सताव से आती है? क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. यीशु के पीछे चलने के परिणामस्वरूप आपके जीवन में आप ने सताव का सामना कैसे किया है? इस ने आप के जीवन में कौनसी आशीषे लायी हैं?

२. कुछ बातों के नाम दीजिए जो सताव के इच्छित आशीषों को रूकावट बन सकते हैं?

३. आपके दुःख में परमेश्वर स्वयं को (उसके चरित्र को) कैसे प्रगट कर रहा है?

भाग ४

"...और पीछे

मेरे

हो ले।”

२३

जब मसीह घर में प्रवेश करता है

मुझे आश्चर्य पसंद है। मेरे सबसे स्मरणीय जन्मदिन की पार्टिया वहीँ है जिनकी योजना करने में मेरा कोई भाग नहीं था। मैं उसका आनंद लेता हूँ जब मेहमानों की सूची, भोजनसूची, और अन्य कार्य मेरे बिना तैयार किए जाते हैं -जब परिवार या मित्र जो मुझ से प्रेम रखते हैं वे सब कुछ सिद्धता में बड़ी देखभाल से तैयार करते हैं और केवल मुझे निमंत्रित करते है कि उत्सव मनाए। ऐसी पार्टी की सुंदरता यह केवल वह घटना नहीं, यह विचार और मानसिकता जो उसे करने में लगी होती हैं यह आश्चर्य है जो प्रेम पर विस्मयादिबोधक चिन्ह लगाता है !

यह कहने के बाद, ऐसी अनेको *"आश्चर्यजनक"* पार्टियों से पहले, मुझे पता रहता है कुछ तो हो रहा है। मुझे यह पता नहीं कि कहाँ, कब, या कैसे, लेकिन क्योंकि मुझे पता है कि कुछ व्यक्ति योजना बना रहे हैं, मैं जानता हूँ कि आनेवाला उत्सव बढ़िया होगा। मैं हर एक पार्टी का आनंद और आत्मविश्वास से अंदाज लगाता हूँ, क्योंकि मुझे इस घटना को रचनेवाले लोगों में विश्वास है।

इसके विपरीत, मैं जवान लड़कों या सामाजिक घटनाओं की पार्टी को गया हूँ, जिसमे जिनका सम्मान करना है उन्हें निर्दिष्ट किया जाता है। *"हमें कोई आश्चर्य नहीं चाहिए।"* ऐसे वाक्य योजना करनेवालों में आत्मविश्वास की कमी को दर्शा सकते हैं, या नियंत्रण रखने की इच्छा या दोनोंही।

चेलें खुद को इन दो दृष्टिकोण के बीच कहीं तो पाते हैं जब वे मसीह के निडर निमंत्रण को सुनते हैं। मत्ती १६:२४ में, यीशु यात्रा का अचूक विवरण नहीं देता है। वास्तव में, वह

जानबूझकर बुलावे की विशेषताओं को छिपाता है और इस निमंत्रण को साधारण *"मेरे पीछे हो ले"* के साथ निष्कर्ष निकालता है।

हमें योजनाओं के संच, या किसी निश्चित स्थान, या कुछ बड़े अविष्कार प्राप्त करने के लिए नहीं बुलाया गया हैं। हमें उसके पास बुलाया गया है। वह हमारा सपना हो जाता है। वह हमारी योजना हो जाता है। वह हमारा स्थान हो जाता है। वह हमारा लक्ष्य हो जाता है। क्या हमने इसे समझ लिया है? सच में? शरुआत से अंत तक, यहाँ पर केवल एक ही लक्ष्य है-मसीह को जानना।

दाऊद के हृदय में यह एक बड़ी इच्छा थी : *"एक वर मैंने यहोवा से माँगा है, उसी के यत्न में लगा रहूँगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिससे यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूँ, और उसके मंदिर में ध्यान किया करूँ"* (भजन संहिता २७:४)।

मरियम इसी एक बात की इच्छा करती थी जब वह जीवन की व्यस्तता से हटकर मसीह के चरणों के पास बैठती थी। उसके लिए, यीशु ने कहां, *"परंतु एक बात आवश्यक है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है जो उससे छिना न जाएगा"* (लूका १०:४२)।

पौलुस, हालाँकि बहुत सारे कार्य करनेवाला व्यक्ति था, उसने अपने जीवन का सारांश इस वाक्य से किया : *"हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ; परंतु केवल यह एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ता चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है"* (फिलिप्पियों ३:१३-१४)।

दाऊद, मरियम, और पौलुस के जीवनों को केवल एक बात ने परिभाषित किया। उसे जानना।

यदि मसीह अधिक विस्तृत धार्मिक आचरण का परिचय देने और लागू करने को आया था, तो हमारा लक्ष्य उसके पीछे चलने में नहीं होगा परंतु उसके क्रोध से डरने पर होगा। उसके वचन ने हमें व्यवस्था की ओर मार्गदर्शन किया होता, उसके प्रेम की ओर नहीं। यदि मसीह का जीवन हमारे लिए केवल अनुकरण करने के लिए आदर्श होता तो, यह हमें अपराधी ठहराएगा क्योंकि हम सब कम पड़ गए है। परंतु यह सुसमाचार है। सुसमाचार हमें उसे जानने के लिए निमंत्रित करता है-केवल उसके बारे में अधिक जानने के लिए नहीं।

सुसमाचार हमें उसे जानने के लिए निमंत्रित करता है-केवल उसके बारे में अधिक जानने के लिए नहीं।

"द फिडल ऑन द रूफ" इस संगीतमय सिनेमा में, अंत में, एक बड़ा दृश्य है जिसमे प्रमुख पात्र टेवी उसकी बेटी होडेल के साथ ट्रेन स्टेशन पर रुके है, जो अब उसके प्रिय दोस्त को मिलने जा रही है, जो सैबेरिया के वेस्टलैंड में एक राजनीतिक कैदी है। वहां ट्रेन प्लेटफार्म पर, यह जानते हुए कि अब वह उसके पिता के पास वापस कभी नहीं आएगी, वह उसके लिए अपनी भावना गाकर कहती है :

आप समझ जाए ऐसा करने की मैं कैसे आशा कर सकता हूँ,
मैं क्यों करती हूँ जो मैं करती हूँ?
क्यों मैं दूर देश को जाऊँ,
जिस घर से मैं प्रेम करती हूँ उससे बहुत दूर।

एक बार मैं आनंद से संतुष्ट थी,
जैसे मैं थी, जहाँ मैं थी।
लोगों के निकट, जो मेरे निकट थे,
यह घर में मुझे पसंद है।

एक मनुष्य आएगा यह कौन देख सकता है,
मेरे सपनों के आकार को कौन बदल सकेगा?
अब असहाय्य, मैं उसके साथ खड़ी हूँ,
पुराने सपने धुंधले हो रहे हैं देख रही हूँ।
ओह, यह कैसा उदासी भरा विकल्प है,
घर चाहिए, वह चाहिए....
मैं उसके सिवा मेरे हृदय की हर एक आशा को बंद करती हूँ,
जिस घर से मैं प्रेम करती हूँ उसे छोड़ रही हूँ।

वहां कहीं मेरा हृदय काफ़ी पहले स्थिर हो गया है,
मुझे जाना चाहिए, मझे जाना चाहिए।
मैं आश्चर्य करती रहूँगी ऐसे कौन कल्पना कर सकता है
जिस घर से मैं प्रेम करती हूँ उससे बहुत दूर।

फिर भी, वहां मेरे प्रिय के साथ, मैं घर पर हूँ।[५७]

मैं यह कल्पना नहीं कर सकता याकूब अथवा यूहन्ना उनके पिता जब्दी को ऊँचे मोटे स्वर में ये शब्द गीतों में गा रहे हैं, गलील समुद्र के किनारे जब वे मसीह के पीछे चलने के लिए उसे

पीछे छोड़नेवाले हैं। इन शब्दों को फिर से पढ़िए, लेकिन इस समय मसीह, हमारे दुल्हे के संबंध में। हमारे पास एक नया घर है और वह घर है, जहाँ वह है। फिर भी उत्तम, वह हमारा घर है। स्टीव ग्रीन इस तरह लिखते है : *"मैं जाऊँगा और यह यात्रा मेरा घर हो, मैं केवल आपके लिए जिऊंगा, मैं जाऊँगा क्योंकि यह जीवन मेरा अपना नहीं है, मैं जाऊँगा।"*[५८]

यह वास्तव में कैसे होता है? परमेश्वर में ऐसा आत्मविश्वास कैसे बनता है जिसे हम नहीं देख सकते? यीशु के साथ इस तरह से चलने की व्यवहारिक सत्यता क्या है जिसमे *"मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ्य को, और उसके साथ दु:खों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूँ"* (फिलिप्पियों ३:१०)।

यह सब प्रेम करने से शुरू होता है।

मध्य पूर्व में रहते हुए, मैं एक गृहस्थ से मिला जिसने प्रभु के नाम के लिए बहुत दु:ख उठाया था। वह इस्लाम से मसीह के पास आया था और उसके विश्वास के लिए बहुत बार गिरफ्तार किया गया था। कारागृह के सुरक्षा कर्मचारियों ने उसे सार्वजनिक सेल में रखा था जो हिंसक अपराधियों के लिए आरक्षित थे और अन्य कैदियों को भी कहां था, *"आप को जो चाहिए वह आप इसके साथ कर सकते हैं। उसने इस्लाम को छोड़ा है।"* समय-समय पर, वे उसे प्रश्न पूछने बाहर लाते थे और यातनाएं देते थे, खुले तौर पर उसे कहते थे, *"यदि तू यीशु मसीह में तेरे विश्वास का त्याग करेगा, तो तू आज ही यहाँ से घर जाएगा।"*

हमारे पास एक नया घर है और वह घर है, जहाँ वह है। फिर भी उत्तम, वह हमारा घर है।

पूछताछ करने के उनके अनेकों पद्धतियों में से एक उसे हाथो से बाँध कर लटकाना थी ताकि उसका शरीर लटकता रहेंगा। उसे पीड़ा देनेवाले फिर उसे मारते थे, उसी समय उसे याद दिलाते थे कि उसे मुक्त किया जाएगा, यदि केवल वह त्याग करेगा। ऐसा कुछ समय होने के बाद, एक दिन, परमेश्वर की आत्मा ने उसे जवाब दिया जो आवश्यक था। उसने सुरक्षा कर्मचारी से कहां, *"आप नहीं समझते मुझे क्या हुआ है। परमेश्वर का प्रेम यह मकड़ी के जाल समान है, और मैं एक कीटक समान हूँ। मैं परमेश्वर के प्रेम के जाल में अटक गया हूँ और हर समय मैं हिलता और निकलने का प्रयत्न करता हूँ, मैं उतना ही अधिक अटकता जाता हूँ। मैं अब स्थायी रूप से उसके प्रेम के जाल में अटक गया हूँ। इसलिए मुझे निरंतर मारते रहने के लिए स्वतंत्र महसूस करो और मेरी त्वचा पर सिगरेट के चटके देते रहो, पर मैं यीशु मसीह के नाम का त्याग नहीं करूँगा।"*

मेरे मित्र का उस पर अत्याचार करनेवालों को प्रेरित करनेवाला जवाब एक कविता जिसका शीर्षक अक्दामुत मिलन है उससे प्रतिध्वनित होता है, जिसे रब्बी मीर बेन इसाक ने इब्रानी भाषा में इसवी १०५० में लिखा है। इस कविता को बाद मे फ्रेडरिक एम. लेहमन ने एक गीतों ने रचा जब वो शब्द उसे कारागृह के एक घर की दीवार पर खुदे हुए मिले थे।

> क्या हम श्याही से सागर को भर सकते हैं, और क्या चर्मपत्र का आसमान बना सकते हैं,
> क्या पृथ्वी पर प्रत्येक डंठल एक कलम था और हर एक मनुष्य व्यवसाय से लेखक था,
> क्या ऊपर परमेश्वर के प्रेम को लिखने से सागर सुख जाएगा,
> यद्यपि पुस्तक आकाश से आकाश तक फैली हुई थी, फिर भी वह सम्पूर्णता को नहीं समा सकी।[५९]

यही वह प्रेम है जो हमें प्रेरित करता है।
यही वह प्रेम है जो हमें घर लाता है।
यही वह प्रेम है जो हमारा घर है।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके अपने जीवन पर चिंतन करें। क्या आप ने मसीह के पीछे चलने में आपके चुनाव में कोई अपवादात्मक उपनियम जोड़ा है? स्पष्टीकरण दीजिए।

२. उसके साथ आपके संबंध के बारे में उसकी योजना में आत्मविश्वास की कमी आपको क्या प्रगट करती है?

३. मसीह ने आपके सपनों को कैसे आकार दिया है?

२४

अनुसरण करना सीखना

मसीह के पीछे चलने के प्रभाव पर विचार करते हुए, मैं समझ गया कि यह एक अच्छी कल्पना होगी कि *"पीछे चलना"* शब्द के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करे। इस शब्द का अर्थ *"किसी के पीछे हो लेना,"* हो सकता है, लेकिन इसका अर्थ *"किसी को या किसी बात पर बारीकी से ध्यान देना"* भी हो सकता है। यह हमें आज के जगत से मिलता हैं। आखिरकार, यदि मैं आपके ट्वीटस या तस्वीरों को देखता हूँ, तो यह दर्शाता है कि आपके जीवन में क्या हो रहा है यह मैं जानना चाहता हूँ। लेकिन, व्यवहारिक तौर से कहां जाए तो, मसीह के पीछे प्रत्यक्ष चलना कैसे नजर आता है?

यीशु के पीछे चलने का पहिला सिद्धांत

जब हम यीशु के पीछे चलने तैयार हो जाते हैं, यहाँ पर एक बात हमें समझना चाहिए। वह गति निर्धारित करता है।

कड़ी मेहनत, खर्च करना और खर्च हो जाना अच्छा हो सकता हैं, लेकिन केवल व्यस्तता को आत्मिक संपत्ति के रूप में देखने से सावधान रहिए। परमेश्वर ने हमें व्यस्त रहने के लिए नहीं बुलाया हैं, लेकिन पवित्र रहने के लिए बुलाया है। हमारे जीवनों के लिए गति जो यीशु निर्धारित करता है वह जगत की दृष्टि में प्रभाव डालने के लिए नहीं है, लेकिन हमारे उद्धारकर्ता की दृष्टि में घनिष्टता में होने के लिए।

प्रतिदिन का आज्ञापालन किसी को ईश्वरी अवसरों के लिए तैयार करता है। नूह ने पृथ्वी पर जलप्रलय में भ्रमण करने से पहले आज्ञा मानकर सुखी भूमि पर एक जहाज बनाया। अब्राहम एक राष्ट्र को जन्म देने से पहले

प्रतिदिन का आज्ञापालन किसी को ईश्वरी अवसरों के लिए तैयार करता है।

विश्वासपूर्वक तम्बू लगाते हुए पाया गया। युसुफ किसी विशेषज्ञ से परामर्श करने से पहले कैदियों को नम्रता से परामर्श दे रहा था। मूसा फ़िरौन के सामने खड़े रहने से पहले भेड़ों की रखवाली करते हुए पाया गया। दाऊद ने ताज पहनने से पहले गीत लिखे। अलीशा एक भविष्यद्वक्ता के रूप में पदोन्नति पाने से पहले खेत में काम करता था। दानिय्येल ने राजा से प्रशंसा प्राप्त करने से पहले समझौते का प्रतिकार किया। परमेश्वर आपके श्रोतागणों की संख्या की ओर नहीं देखता लेकिन सर्वशक्तिमान के प्रति आपकी सेवा की ओर देखता है।

कई वर्षों पहले, मैंने एक प्रचारक को बी यु एस. वाय (busy) शब्द के लिए परिवर्णी शब्द देते हुए सुना। बींग अंडर (under) शैतान का योक (शैतान के बोझ के नीचे रहना)। सबसे पहले मुझे थोड़ी सी आहत हुई और उस कल्पना को छोड़ दिया, लेकिन पवित्र आत्मा ने इस सत्य के साथ मेरे हृदय में बोझ उत्पन्न किया। मेरा उसके कहने को शुरू में प्रतिक्रिया देना यह मेरी जीवनशैली के कारण था। मैं ने परमेश्वर के साथ व्यस्तता के लिए परमेश्वर के साथ घनिष्टता को आदानप्रदान किया था। मैं ने नाटकीय अवसरों के लिए प्रतिदिन की आज्ञापालन का आदानप्रदान किया था। दु:खद रूप से, मैं आज भी ऐसा करता हूँ। हम उसके लिए कुछ करे उससे ज़्यादा हम उसे अधिक जाने ऐसा वह चाहता है। वह उसके काम हमारे द्वारा होने से ज़्यादा वह हम में उसके काम के बारे ज़्यादा सोचता है।

तो यह कैसे होता है?

हम उसकी गति में कैसे निर्धारित हो सकते हैं?

यहीं पर आत्मिक अनुशासन मसीह के अनुयायियों के जीवन में महत्वपूर्ण हो जाता है।

यीशु की ओर से सबक

जब मसीह देहधारित हुआ और हमारे बीच में चला, उसके चेलों ने प्रचार करने, रोटी को बहुगुणित करना, या क्रूस उठाने पर सबक के लिए कभी नहीं पूछा। मसीह के जीवन के एक पहलू का उन्होंने निरिक्षण किया और उसके प्रार्थनामय जीवन को अधिक पूर्ण रूप से समझने की इच्छा की, *"प्रभु, हमें प्रार्थना करना सीखा"* (लूका ११:१)।

यीशु किसी समय हमें अप्रभावी नजर आता होगा। इससे अधिक जगत के दृष्टिकोण से बड़ा कोई प्रभावहीनता का उदाहरण नहीं है। *"परंतु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बंद कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर"* (मत्ती ६:६)। आप समझ गए क्या? जाओ, और आसपास कोई नहीं है तब अपने घर में अपने आप को बंद

करें, और उससे बात करे जिसे आप नहीं देख सकते। विश्वासहीन जगत की दृष्टि में इससे अधिक कोई उटपटांग बात नहीं है? और फिर भी, प्रेमी परमेश्वर की दृष्टि में विश्वास को दर्शाने का इससे स्पष्ट कोई मार्ग नहीं है ?

परमेश्वर आपकी इच्छा करता है। वह चाहता है कि आप उसके साथ अच्छा समय बिताए- उसके साथ संगति में रहने के द्वारा केवल बहुत से काम पूरे करने का समय नहीं (यह जितना अच्छा है) जबकि बर्तन धो रहे हैं या दाढ़ी बना रहे हैं या स्नान कर रहे हैं या आपके कंप्यूटर पर काम कर रहे हैं। हमारा स्वर्ग का परमेश्वर *"बड़ी घनिष्टता"* में उसके साथ बिना रूकावट का अच्छा समय बिताए ऐसे चाहता है। वह समय के लिए हमें कुछ तो कीमत चुकानी पड़ती हैं। सांसारिक कार्यक्षमता के शब्दों में परमेश्वर के साथ घनिष्टता असुविधा है। इसे आपके जीने के तरीके में सही करने की उम्मीद न करे। उसकी खोज करना अन्य सब कुछ बदल देगा। जो कोई परमेश्वर की उपस्थिति में निवास करने की इच्छा करता है उसने इस जगत की गति, योजनाएं, व्यक्तियों और कोलाहल से दूर जाने को तैयार होना चाहिए ताकि उसकी आवाज़ को सुनने के लिए ठहरे रहे।

जब यीशु स्वयं का इन्कार करने के बारे में बोलता है, तब मैं सोचने के अलावा कुछ नहीं कर सकता कि प्रार्थना एक प्रमुख मार्ग है जो हमें दैनिक आधार पर उसके वचन को लागू करने में मदद करती हैं। एक बार सीख लिया, तो उसके साथ समय बिताना यह आपके घर की ओर चलने में सबसे मधुर घटक हो जायेगा।

प्रार्थना का परिणाम

प्रार्थना का घर यह एक *"ख़तरनाक"* स्थान है क्योंकि यह वह स्थान है जिसमे परमेश्वर हमारे सांसारिक विचारों को उसके शास्वत दृष्टिकोण से बदल देता है। अपने संसार की आवश्यकताओं के साथ पूरी तरह से व्यस्त होना यह आसान बात है, लेकिन हमें आवश्यकताओं के पीछे चलने के लिए नहीं बुलाया गया हैं -हमारी पहली बुलाहट उसके पीछे चलना है।

प्रार्थना का घर यह एक "ख़तरनाक" स्थान है क्योंकि यह वह स्थान है जिसमे परमेश्वर हमारे सांसारिक विचारों को उसके शास्वत दृष्टिकोण से बदल देता है।

यीशु अपने चेलों से मत्ती ९:३७ में कहता है, *"पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।"* यदि यह मैंने यीशु के मुख से सुना है, तो मेरी पहली प्रतिक्रिया, *"आइए चले"* ये होगी। परंतु संभावना है, मैं गलत गंतव्य स्थान का चुनाव करूँ। क्यों? क्योंकि उसका अगला वाक्य

पहले *"गंतव्यस्थान"* को प्रगट करता है जो वह चाहता है। ***"इसलिए खेत के स्वामी से बिनती करो*** *कि वह अपने खेत काटने के लिए मजदूर भेज दे"* (मत्ती ९:३८)। मसीह के पीछे चलने में पहला कदम यह प्रार्थना के घर में जाना है। कुछ वचनों बाद, वह अवश्य अपने चेलों को जगत में भेजता है, लेकिन पहले, वह उन्हें अपने पास बुलाता है (मत्ती १०:१, ५)।

जब परमेश्वर ने उत्तरी अफ्रीका के नायजेर देश के लिए मेरे हृदय में बोझ डाला की, तब मैं ने एक स्थानीय जगह सुबह के नाश्ते के लिए न्यू जर्सी में मेरे कुछ कॉलेज के मित्रों को निमंत्रित किया। ओपरेशन जगत का एक नक्शा, और कुछ और स्त्रोत मेज पर रखे थे, मैं ने इन जवान लड़कों से पूछा कि क्या वे स्वेछासे जहाँ ज़्यादा करके सुसमाचार अब तक नहीं पहुंचा है उसके लिए मेरे साथ प्रार्थना करने को तैयार हैं?

प्रार्थना करने के कुछ सप्ताहों बाद में, हम समझ गए कि कुछ तो गलत हैं।

मेरे मित्रों को फिर से मिलने पर, मैंने मान लिया कि भले ही नायजेर मेरी प्रार्थना सूची में जोड़ा गया था, इस देश के लिए प्रार्थना करने के द्वारा मेरे जीवनशैली को किसी भी तरह से नहीं बदला। यह विश्वास प्राप्त हो गया था कि सबसे पहली बात बदलने की आवश्यकता थी वह हमारा हृदय था, हम ने और कुछ और मित्रों ने निर्णय लिया की प्रार्थना और उपवास करने के लिए २४ घंटे किसी घर में बंद रहे। हमने परमेश्वर से उत्साहपूर्वक चाहा कि वह कौन है, उसकी महिमा और नायजेर के लिए उसके मन के क्या है यह हमें बताए। प्रार्थना करते हुए पंद्रह घंटे बीत जाने के बाद में, मेरा मुख उस कमरे के कालीन से लगा हुआ था, जिन्हें मैं पहले कभी नहीं मिला था या जिनके बारे मैंने अतीत में कभी फ़िक्र नहीं की थी उन आत्माओं के लिए अनियंत्रित रूप से रो रहे थे।

मुझे याद है जब मैं पहली बार नायजेर की ज़मीन पर एयर फ्रांस जेट से उतरा था। मैं ने डामर पर नायजेरीयन मिलिटरी सदस्य के चेहरे को देखा था और जान गया था कि परमेश्वर ने इन लोगों के लिए मेरे हृदय को प्रेम से भर दिया है। यह एक अजीब प्रेम था - मैं ने जाना जिन लोगों को मैं कभी जानता नहीं था उन्हें प्रेम करने के लिए परमेश्वर ने मेरे हृदय को तैयार किया था।

सामान्य कड़ी उसकी मदद माँगने के बजाय उसकी खोज करना था।

नायजेर की यात्रा में प्रार्थना के कई अधिक भाग शामिल थे। छ साल के छोटे छोटे बच्चों से लेकर जवान बच्चों के साथ पूरी-रात भर प्रार्थना में लगे रहे, बड़ी सुबह मेरे भाई के साथ फोन पर बात हुई कि सहारा के आत्माओं के लिए प्रार्थना करें, यात्रा हमारे पैरों पर शुरू नहीं हुई, लेकिन हमारे घुटनों पर। सामान्य कड़ी उसकी

मदद माँगने के बजाय उसकी खोज करना था। हमें पहले उसके पीछे चलने के लिए बुलाया गया। वह हमें मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाएगा।

लेकिन सावधान रहे। सामर्थ्य को कम समझना आसान है जो उसके उपस्थिति में रहने से आती है।

बच्चे जिन्होंने मेरे जीवन को बदल दिया

मैं उन्नीस साल का था।

मध्य पूर्व में छमाही की पढ़ाई के लिए आया था। मिस्र, देश के कैरो में कुढ़े के ढेर पर मदर टेरेसा ने शुरू किए हुए बच्चों के घर पर सप्ताह में तीन दिन स्वयंसेवक के रूप में काम करते हुए मैं ने खुद को पाया। ननों ने जो इस घर को चलाते थे उन्होंने छह सुंदर नये जन्मे बच्चे मुझे देखभाल करने दिए, पांच लड़किया और एक लड़का। ये मेरे बच्चे थे।

बच्चों के इस घर पर मेरे दिन बोतलों, डकार लेना, शांत करना, डायपर बदलना, गाना, खेलना और बच्चों को सुलाने में लगे थे। मेरे इन बच्चों में दो जुड़वा बच्चे थे जिनका नाम मेर्ना और जैकलिन था। ये सुंदरताएं प्रसन्नता का प्रतीक थी। उनके छोटे से चेहरे सच में अलौकिक आनंद से चमकते थे।

कैरो में कुछ महीने मेरे इस कार्यकाल में, मैंने खोजा कि मेर्ना और जॅकलिन अब बच्चों के घर में नहीं थे। हालाँकि मुझे पता था यह अच्छा है कि वे बिना देखभाल के जीने में काफी बलशाली थी और वे उनके जैविक माता-पिता के पास वापस जा सकते हैं, मेरा हृदय फिर भी टूटा था। मैं उनकी कमी ज़्यादा महसूस करता था। मेरे आँखों में आसूं के साथ, उस अनाथालय के उनके खाली पालने के पास दर्द से ठंडी फर्श पर घुटनों पर आता था और प्रार्थना करता था।

मेरी प्रार्थना सीधीसादी थी। *"परमेश्वर, मेरी लड़कियों की देखभाल कर। उनके जीवन में किसी को ला जो उन्हें प्रेम करें और कोई उनके जीवन में यीशु का प्रेम बताए।"* बस इतना ही था।

ऐसी प्रार्थना की शक्ति के बारे में मुझे कुछ थोड़ा ही पता था।

मुझे याद है छमाही के बाद में मेरा विमान कैरो शहर छोड़ रहा था। हवाईजहाज उड़ने से पहले मेरे चेहरे पर आँसू बह रहे थे और हवाई जहाज की सेविका ने उसे पोंछने के लिए मुझे रुमाल दिया। उस रुमाल पर, पांच मिनट में मैं ने ये शब्द लिखे-जैसे कि वे पहले से ही मेरे हृदय में थे।

खाली पालना रो रहा है, मेरे हृदय में एक खाली छेद बना जा रहा है,
बच्चे ने कहां निवास किया है और वहां से कभी नहीं जा सके,
मैं कैसे एक छोटी सी आत्मा को छोड़ सकता हूँ जिसे मैं दिल से चाहता था?
क्या मैं मेरे स्वर्गीय पिता पर भरोसा कर सकता हूँ कि उनके हर एक आँसू पोंछे?
प्रभु, आपके खज़ाने के साथ दिन और क्षणों को बिताने दिया इसलिए आपका धन्यवाद,
और बहुत से सबक सीखे जो केवल शास्वतता ही अंदाज लगा सकती है,
और यदि मैं मेरे बच्चों की झलक इस जीवन फिर कभी नहीं देखूंगा,
मेरे हृदय की गहराई से, प्रभु, मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ, *"फिर एक बार धन्यवाद!"*

फिर से अमरीका में आ गया। मेरे बच्चों के चित्र मेरे घर की दीवार पर लगे हुए थे जहाँ मेरी विश्वविद्यालय की पढ़ाई जारी थी। उन दो लड़कियों के लिए मेरी प्रार्थना वही थी।

दो वर्षों बाद में, विश्वविद्यालय की डिग्री मेरे हाथ में थी। मैं लेबनान को गया...या जो मैंने सोचा था। परमेश्वर के पास अलग योजना थी। युद्ध, तार्किक विषय, और ईश्वरी मार्गदर्शन ने मुझे फिर से कैरो में लाया। राजा दाऊद के साथ, मैं यह जान गया, *"परंतु हे यहोवा, मैंने तो तुझी पर भरोसा रखा है, मैंने कहां, 'तू मेरा परमेश्वर है।' मेरे दिन तेरे हाथ में है"* (भजन संहिता ३१:१४-१५)। यह जानते हुए कि मेरी योजनाएं बदल गई है लेकिन परमेश्वर बदला नहीं है, मैं उस शहर में रास्ते के बच्चें, शरणार्थी और अंतराष्ट्रीय जवानों के साथ काम करने लगा।

आप किसके लिए प्रार्थना करते हो उसके बारे में सावधान रहिए-परमेश्वर शायद तैयारी कर रहा है कि आपकी अपनी प्रार्थना के लिए उत्तर बन जाए।

दिसंबर २००६ के किसी एक दिन, मैं ने एक विशेष करीबी रास्ते पर चलने का निर्णय लिया। बच्चों के कुछ समूह के पास से जाते हुए, मैंने एक दस वर्ष की लड़की को मुझे पुकारते हुए सुना, *"पार्लेज-वाउस फ्रंकाईस?"* मिस्र देश अरबी भाषा बोलनेवाला देश है, इसलिए यह असामान्य था कि वह फ्रेंच में कहें। बचपन से फ्रेंच बोलनेवाला होने से, मैं प्रत्युतर दे सका, और एक मित्रता का जन्म हुआ। उसका नाम लोब्ना था। उसके माता-पिता को जानने के बाद और यह जानने के बाद

कि इन बच्चों ने फ्रेंच भाषा में पढ़ाई की है, मैं इन बच्चों को, और उनके चचेरे भाई-बहन और उनके चचेरे भाई-बहनों के चचेरे भाई-बहन को सिखाने लगा।

कुछ महीने छोड़कर आगे चले।

मेरे फ्रेंच बच्चे और मैं लोब्ना के घर में जर्जर टूटी हुई प्लास्टिक मेज के चारोंओर बैठते थे, और फ्रेंच क्रियापदों को भूतकाल में संयोजित करते थे। हम कूड़ेकचरे से घिरे हुए थे और ऊपर कभी कभार मुर्गी फड़फड़ा रही होती। तब यह हो गया।

दो छोटी बच्चियां मेरी दुनिया में आई। फिर एक बार।

वे नंगे पैर थे, कचरे के ढेर में खेलने से पैर से सिर तक धूल से भरे हुए थे। उनके कपड़े थोड़े से फटे हुए थे, उनके बाल सुंदर रीति से बांधे हुए थे। उनके पास देखते हुए, मैंने उन दो बच्चों की आँखों की झलक देखी जो हमारी कक्षा में भटकते हुए आ गए थे। मैंने पढ़ाना बंद किया, यह जानकर की वे आँखे परिचित लगती है, मैंने लोब्ना को उन दो छोटी लड़कियों के बारे में पूछा। उसने मेरे प्रश्न को यह उत्तर देते हुए छोड़ दिया, *"वे मेरी दो छोटी बहने है,"*। मैंने कहां, *"नहीं। उनका नाम क्या है? लोब्ना ने कहां,* "जॅकलिन और मेर्ना।"

तुरंत, इसने मुझे स्पर्श किया।

बीस करोड़ की आबादीवाले शहर में, एक देश में जहाँ मैं फिर से कभी नहीं जाऊँगा यह योजना बनाई थी, परमेश्वर ने केवल जॅकलिन और मेर्ना को फिर से मेरे जीवन में ही नहीं लाया लेकिन उसने मुझे उनके घर में लाया था, कि उनके पास किसी भी समय जा सकता था। परमेश्वर ने मेरी अपनी प्रार्थना का उत्तर दिया था। आज, उन दोनों को पता है कि उनसे प्रेम किया जाता है। और-मुझे यह बताते हुए बड़ा आनंद होता है-वे दोनों यीशु से प्रेम करती है।

आप किसके लिए प्रार्थना करते हो उसके बारे में सावधान रहिए-परमेश्वर शायद तैयारी कर रहा है कि आपकी अपनी प्रार्थना के लिए उत्तर बन जाए।

मसीही लोग इस शब्द को टालना चाहते हैं

इस छोटे से पुस्तक में इस अगले भाग को शामिल करने से मैं हिचकिचा रहा था, लेकिन मैं विश्वास रखता हूँ कि इस विषय में शक्ति और सामर्थ्य पाई जाती है जो सरल रीति से यीशु के पीछे चलने से संबंध रखता है।

उपवास।

हम अक्सर उपवास को परमेश्वर से इस अद्भुत दान के स्थान और उद्देश्य को समझने के बजाय उससे ऐसा व्यवहार करते हैं जैसी कि यह एक क़ानूनी आचरण है। उपवास परमेश्वर के लिए नहीं है। यह आपके लिए है। मृत होकर जीना और स्वयं का इन्कार करने का यह सबसे बड़ा साधन है जैसे ही हम उस प्रभु जिसके पीछे हम चलते हैं उस पर केन्द्रित रहना चाहते हैं।

उपवास यह देह को उन चीज़ों का इन्कार करने के कृत्य हैं जिसके बारे में वह सोचता है जो उसे अस्तित्व में रखने आवश्यक हैं और परमेश्वर के वचन और व्यक्तित्व पर पोषण करने में उसे बदलना है। परमेश्वर का वचन जितना बपतिस्मा का उल्लेख करता है उससे ज़्यादा उपवास का उल्लेख करता है। यीशु मसीह ने उसकी सेवकाई की शरुआत चालीस दिन उपवास रखने से की, यह हमें बताता हैं कि उपवास कैसा है, स्पष्ट किया है कि उसके चेले उसके जाने के बाद उपवास रखेंगे, और यह भी सिखाया है कि कुछ सामर्थ्य केवल उपवास और प्रार्थना के बाद ही आता है। फिर भी, चर्च अक्सर इसके महत्त्व पर प्रश्न उत्पन्न करती है।

उपवास शरीर के हानि के बारे में इतना नहीं है जैसे यह प्राथमिकताओं को फिर से योग्य क्रम में लाने के बारे में है। यह आत्मा की खातिर देह को भूखा रखने के बारे में है। यह हमें स्मरण दिलाता हैं कि जिससे हम पोषण करते हैं वही बढ़ता जाएगा। जिस पर हम पोषण करते हैं वह हमें प्रेरित करेगा। हम अपने आपको किससे भरेंगे वह हम में से प्रवाहित होगा। शायद सबसे महत्वपूर्ण घटक जो समझना है वह यह है कि हम केवल उपवास करने के लिए उपवास नहीं करते। हमें उपवास करते हुए खाना चाहिए- और जो हम खाते हैं वह परमेश्वर का वचन है। हम अपने आपको सांसारिक चीज़ों से इन्कार करते हैं ताकि हम शास्वत से भर सके। जब उपवास करते हैं, तब मुझे नियमित भोजन समय पर खाने के मेज पर बैठना और कभी कभी *"खाना"* पसंद है। व्यवस्थाविवरण यह भोजन सूची है (यीशु भी उपवास करते समय व्यवस्थाविवरण पर भोजन कर रहा था, मत्ती ४:१-११)। अथवा शायद यह यशायाह की सेवकाई है, या मेरा पसंदीदा भोजन है, मत्ती।

ज़ाहिर तौर से, उपवास का अर्थ अपने आपको बहुत चीज़ों का इन्कार करना हैं (भोजन के अलावा) जो हमारे देह की इच्छाओं संतुष्ट करती हैं। तथापि, जो स्पष्ट है हम उसकी उपेक्षा नहीं करते : उपवास यह मुख्य रूप से बाइबल में के भोजन के बारे में है। मुझे यह मनोरंजक लगता है कि पश्चिम जगत (और सिंगापूर) के सिर्फ़ मसीही लोगों ने कभी मुझे सुझाव दिया था कि स्वास्थ्य के कारणों से वे भोजन का उपवास नहीं कर सकते। मैं आपको प्रोत्साहित

करता हूँ कि भोजन के उपवास को आपके जीवन की फिर से जाँच करने का नियमित हिस्सा बनाएं कि आपके शरीर को स्मरण दिलाने के लिए कि क्या आवश्यक है।

सारांश में, परमेश्वर आपके द्वारा क्या कर रहा है इसके बारे में यह प्रमुख तौर से नहीं है- वह उसका काम जिस किसी को वह चुनता है उसके द्वारा कर सकता है। यह वह आप में क्या कर रहा है इसके बारे में है। आप केवल आप ही है और वह आप में महिमामयी होना चाहता है। अगर आप उसके पीछे चलना चाहते है, तो आप ने अपने आप का इन्कार करना चाहिए। अपना हृदय, आपका मन, आपकी आत्मा और आपकी शक्ति उसकी होने दे।

जैसे ही हम प्रभु के साथ चलते हैं, तब वह हमारी आँखे खोलता हैं कि जो वो देखता है वह हम देखें। जितना अधिक हम प्रार्थना करते हैं, उतना ही अधिक हम उसकी सख्त आवश्यकता को पहचानते हैं। समस्या यह नहीं है कि हम हताशा में परमेश्वर को नहीं पुकारते हैं। सही समस्या यह है कि हम यह पहचानने में असफल हो जाते हैं कि हमें हमेशा ही उसकी सख्त जरुरत रहती हैं।

कितनी बार हम अक्सर प्रार्थना करते हैं कि हम दूसरों की प्रार्थनाओं का उत्तर हो सके? कितनी बार हम अक्सर प्रार्थना करते हैं कि हम हमारी अपनी प्रार्थनाओं का उत्तर हो सके? क्या प्रार्थना और उपवास परमेश्वर से हमें जो चाहिए वह प्राप्त करने के बारे में हैं या ऐसा हो सकता है कि परमेश्वर हमारे हृदय बदलने के बारे में हैं ताकि हम आत्माओं को उसका प्रेम और जोश बता सकें और हमारे आसपास की परिस्थितियों के लिए उसका मन हमें हो सके?

यीशु के पीछे चलने का दूसरा सिद्धांत

आइए समीक्षा करे।

यीशु के पीछे चलने का पहला सिद्धांत यह है कि वह गति निर्धारित करता है। प्रार्थना और उपवास ये दो दान है जो परमेश्वर ने हमें दिए हैं कि उसके साथ चलने को सीखने के लिए हमें शिक्षा प्रदान करे। दूसरा सिद्धांत जिस पर हम भरोसा रख सकते हैं जब यीशु मार्ग दिखा रहा है वह यह है : वह पहले ही उससे गुजरा है जो हम अनुभव करनेवाले हैं।

पड़ोसी स्थान जहाँ मेर्ना और जॅकलिन रहते थे अंत में वह मेरा घर हो गया। टूटे हुए गंदे नाले के पाईप, ताजा कूड़े के ढेर, और चुंहों की भीड़ के बावजूद उनका पड़ोसी भाग मेरा पृथ्वी पर का पसंदीदा स्थान हो गया था। एक बार, जब मेरी माँ मुझे मिलने आई, तब हम विशेष रूप से चूहें संक्रमित क्षेत्र के सकरे रास्ते से जा रहे थे। माँ को किसी तरह से

हमारे चूहों (वे, तब जिसमे पूंछ भी शामिल है, वे बहुत ही लम्बी हो सकती थी) के लिए कोई गहरी सराहना नहीं थी। एक दयालु पड़ोसी ने, उसकी परेशानी जानकर, उसके सामने चलने का निर्णय किया ताकि उसके मार्ग से उन जानवरों को डराए ताकि उसका पैर उन पर न पड़े। यह करुणामय कृत्य था-मेरी माँ उससे सहमत होगी।

सुंदर तरीके से, प्रभु हमारे सामने चलता है, हमारे मार्ग को तैयार करता है। इस पर सोचिए। हम आत्मविश्वासी हो सकते हैं कि उसके मार्ग सिद्ध है। हम जान सकते हैं कि हमारे कोई कदम उठाने से पहले वह हर एक कदम उठाता है। इब्रानियों को लेखक हमें बताता है, *"क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बांधकर चलें कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे"* (इब्रानियों ४:१५-१६)।

उस पर भरोसा रखना आसान होता है, जब वह हमें भजन संहिता २३ के *"हरी चराइयों"* से ले जाता है जहाँ हमारी आत्मा विश्राम पाती है। तथापि, उसी भजन में हमें बताया गया हैं कि वह हमें *"मृत्यु की परछाई की तराई से"* होकर वह हमें ले जाता हैं और उस मेज़ तक जहाँ हम हमारे शत्रुओं की उपस्थिति में बैठते हैं। परमेश्वर की अगुवाई का मतलब संकट से बचना नहीं है परंतु संकट में उसकी उपस्थिति है। समान रूप से सुसमाचार यह है कि वह हमारे पीछे पीछे आता है। *"क्योंकि यहोवा तुम्हारे आगे आगे अगुवाई करता हुआ चलेगा, और इस्राएल का परमेश्वर तुम्हारे पीछे भी रक्षा करता चलेगा"* (यशायाह ५२:१२)। हम उसकी उपस्थिति से घिरे हुए हैं (भजन संहिता १२५:२, १३९:५)।

राख में परमेश्वर की उपस्थिति

पिछले पाठ में, मैंने जनवरी २०१५ में नायजेर में जो हुआ था उस हमले का उल्लेख किया, जब करीबन हर एक चर्च इमारत २४ घंटों में जला दी गई थी। उस कहांनी में और भी बहुत कुछ बातें थी।

मेरे गाँव में उस हिंसा और जलाने की घटना के तीन दिन बाद में जब मैं मेरे घर के पास से चल रहा था, मैं एक घर और चर्च के स्थान पर आया जो पूरी तरह से जल चुका था। रास्ते पर जलाए हुए गीतों की किताबें, जले हुए मसीही साहित्य और काले हुए बाइबल बिखरे पड़े थे। जैसे जैसे मैं मलबे और टूटे अवशेष के बीच से गुजरता गया, मैं नीचे झुका और किसी एक बाइबल के आधे जले पन्ने को उठाया। मैं मुस्कुराया जब मैं जान गया कि

परमेश्वर ने मेरे हाथों को कौनसा पन्ना उठाने के लिए अगुवाई की। यह यशायाह ४३ का पहिला आधा भाग था : *"जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी। क्योंकि मैं यहोवा तेरा परमेश्वर हूँ, इस्राएल का पवित्र मैं तेरा उद्धारकर्ता हूँ।..मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूँ"* (यशायाह ४३:२-३, ५)।

जब हम यीशु के पीछे चलते हैं, तब वह हमें आग से बचाने का अभिवचन नहीं देता है, लेकिन वह अवश्य अभिवचन देता है कि वह उसमे से जाने के लिए हमें अकेले नहीं छोड़ेगा। वह मार्ग में अगुवाई करता और पीछे भी आता है। परमेश्वर की उपस्थिति दीर्घायु, वित्तियता में भरपूरी और हमारे शत्रुओं पर शाप हो इसकी शास्वती नहीं देती। लेकिन उसकी उपस्थिति अवश्य ही उसके सामर्थ्य, उसका प्रावधान, और उसकी रक्षा की शास्वती देती है। उसकी महिमा हमारे जीवनों के द्वारा प्रदर्शित होगी जब हम उसकी प्रभुता के अधीन हो जाते हैं। हमें वह सीधासाधा रखना चाहिए, फिर भी शक्तिशाली, यीशु के पीछे चलने की सच्चाई हमारे मनों में सबसे प्रथम रहे जब हम हमारे उद्धारकर्ता के साथ चलते हैं, अपने क्रूस उठाते हुए और जीवित मृत होकर चलते हैं।

वह हमें सुरक्षित घर ले जाएगा।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आप *"परमेश्वर के साथ निकटता"* को *"परमेश्वर के साथ व्यस्तता"* से बदल देने के खतरे से कैसे बच सकते हैं?

२. जब आप यीशु के पीछे चलना सीख रहे हैं तब आपके जीवन में प्रार्थना और उपवास ने कौनसी भूमिका निभाई हैं?

३. परमेश्वर आपके पहले जाता है और आपके पीछे चलता है इस अभिवचन पर आपके जीवन की कौनसी परिस्थितियों में आप दावा कर सकते हैं?

२५

प्रभु को बताना कि क्या करना है?

आप ने शायद यह प्राचीन चीनी कहांवत सुनी होगी : *"हज़ारो मीलों का सफ़र एक कदम से शुरू होता है।"* फ्रेंच लेखक, आंद्रे गिडे, कुछ इस तरह से लिखते है : *"मनुष्य नए सागर को खोज नहीं सकता जब तक उसे किनारे से नज़रे हटाने का साहस न हो।"* यदि आपको शास्वती चाहिए कि आप यीशु के पीछे कभी नहीं चलोगे, तो आप पहला कदम लेने से पहले जो कुछ आगे होनेवाला है उसे आपको यह दिखाना आवश्यक होगा।

क्या हम सच में मसीह के पीछे चल सकते हैं यदि हम उसकी अगुवाई, उसका वचन उसके ह्रदय पर विश्वास रखने को तैयार नहीं हैं?

आज कई सारे मसीही मसीह के वचन सुनते हैं, उस पर विश्वास रखने का भी दावा करते हैं, फिर भी परमेश्वर के वचन अनुसार पहला कदम लेने का इन्कार करते हैं क्योंकि वे चीज़ें कैसी होगी यह नहीं देख सकते। परंतु क्या हम पहला कदम लेने से पहले दूसरा कदम जानने की उम्मीद करते हैं? हमारी भूमिका आज्ञा मानने की हैं।

आइए आज्ञा मानने को अति-आत्मिकीकरण न करें।

परमेश्वर आप से नहीं चाहता है कि वह जो कह रहा है वह कह रहा है उसके कारणों को आप समझे। यह आपकी बुद्धि को संतुष्ट करने के बारे में नहीं परंतु उसकी योग्यता जो बिना शर्त मानी जाए। जैसे हमने पीछे चर्चा की, यदि जो कुछ कहां गया है केवल जब हम उसे समझते हैं तभी हम यीशु की आज्ञा मानते हैं, तो हम उसे एक गुरु के रूप में मानते हैं।

जब हमें पता नहीं की वह क्यों पूछ रहा है जो वह पूछ रहा है तब भी जब हम उसकी आज्ञा मानते हैं, तब हम प्रभु के रूप में उसकी महिमा करते हैं।

भजनकर्ता परमेश्वर के वचन की सुंदरता पर आश्चर्य करता है, यह घोषित करते हुए, *"तेरा वचन मेरे पाँव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है"* (भजन संहिता ११९:१०५)। यह यात्रा को रोशन करनेवाली तेज़ रोशनी नहीं है, लेकिन अगले कदम को स्पष्ट करने का एक दीया है ।

निश्चित रूप से, परमेश्वर भविष्य का विवरण दिखा सकता है, पर शायद उसकी दया में वह हमसे कुछ जानकारी छिपाकर रखता है-ताकि हमें उन अनावश्यक चिंताओं से बचाए जिन्हें हम अन्यथा सोचने का प्रयास कर सकते हैं।

मैंने अनेक अवसरों पर पूछा है क्यों वह मुझे बड़ा दृश्य नहीं दिखाता है। मैं जानना चाहता था कि सब कुछ कैसे होगा। एक ही प्रत्युत्तर मैं ने मेरी आत्मा में महसूस किया वह कुछ इस तरह था : *"नाथान, यदि मैंने तुझे अगले कुछ कदम दिखा दिए, तो तेरी योजनाएं मेरे ऊपर निर्भर रहने से ज़्यादा अपने आप पर रहेंगी।"* आज्ञा मानने की इच्छा करना आसान है जब तक परमेश्वर पहले हमें दिखाता है कहाँ हमारा आज्ञापालन हमें ले जाएगा। क्या ऐसा हो सकता है कि हमारी यात्रा की रसद पर पर्दा डाला गया हो ताकि हम हमारी योजनाओं पर इतना केन्द्रित न रह सके कि हम मसीह को जानने की घनिष्टता उत्तरोत्तर चूक जाएं ? जब हमें अगला कदम पता नहीं होता, तब हम प्रभु की अगुवाई की तरफ देखने के लिए मजबूर रहते हैं। क्या हम परमेश्वर को हमारे जीवन की रूपरेखा माँगते हैं जब हमें उसे यह पूछना चाहिए होता कि आज हम उसकी आज्ञा कैसे माने?

इसे ध्यान में रखें। आपके परिस्थितियों से दूर भागने के बजाय, ऐसा होने देने कि आपकी परिस्थितियां प्रभु यीशु की ओर दौड़ने के लिए गति दिलाए। वह हमारी परिस्थितियों से अधिक हमारे चरित्र बदलने में रूचि रखता है।

यीशु हमारी परिस्थितियों से अधिक हमारे चरित्र बदलने में रूचि रखता है।

मत्ती १६:२४ में के शब्दों की हम जाँच करने से पहले क्या हुआ इस पर ध्यान दे। यीशु ने अपने चेलों को इकट्ठा किया और पूछते हुए जनमत लिया, *"लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"* (मत्ती १६:१३)। उत्तरों की श्रृंखला प्राप्त करने के बाद, उसने उनसे प्रश्न पूछा और कहां, *"परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"* (मत्ती १६:१५)। हमें नहीं बताया गया ही यदि वहां पहले अजीब ख़ामोशी हो गई

थी, लेकिन हमें बताया गया है कि पतरस ने उत्तर दिया, *"तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है"* (मत्ती १६:१६)।

इस बातचीत के आगे, बाइबल हमें बताती है, *"उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, 'अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों, प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दु:ख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूँ"* (मत्ती १६:२१)। पतरस कैसे आगे बढ़ता है इस पर ध्यान दीजिए, *"इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, 'हे प्रभु, परमेश्वर न करे ! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।' उसने मुड़कर पतरस से कहां, 'हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिए ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परंतु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता हैं"* (मत्ती १६:२२-२३)। हम कितने धन्यवादी हो सकते हैं कि परमेश्वर का वचन यीशु के चेलों के जीवन में इस अजीब क्षण को शामिल करता है ताकि हमें हमारी कमज़ोरियों के बारे में स्मरण हो सके और शास्वत मूल्य का सबक सीखें।

जब हम परमेश्वर को क्या करना है यह बताते हैं

पतरस अगुवाई करने के प्रयत्न का एक परिणाम यह : उसकी समझ में नहीं आया कि वास्तव में कौन नियंत्रण रखे है। अक्सर कितनी बार हम यीशु को *"प्रभु"* कहके पुकारते है और फिर उसे बताते है कि क्या करें? जीवन आवश्यकता से अधिक भ्रमित करनेवाला हो जाता हैं जब हम यीशु को *"प्रभु"* कहके पुकारते हैं और फिर अगला कदम उसे बताते है। यही ठीक वैसे ही मार्था ने किया जब उसने यीशु को *"प्रभु"* कहके पुकारा और अगले वाक्य में क्या करना है यह उसे कहां। *"हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी चिंता नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिए अकेली ही छोड़ दिया है?"* (लूका १०:४०)।

यीशु मसीह की आज बुलाहट आपके और मेरे लिए सरल और स्पष्ट है : *"मेरे पीछे हो ले।"* हमें उसके निर्देश पर प्रश्न नहीं उठाने हैं, न ही उसके अधिकार से विवाद करना हैं। हमें उसके पीछे हो लेना हैं।

जब हम क्रूस से पहले ताज़ चाहते हैं

पतरस गलती में पड़ गया जिस क्षण वह सोचने लगा कि उसे अधिकार दिया गया है। मसीह के आनेवाले दु:ख और मृत्यु पर उसकी टिपण्णी के मिश्रण में, पतरस और अन्य चेले मसीह के पुनरुत्थान के बारे में स्पष्ट भविष्यवाणी को पूरी तरह से चूक गएँ। वास्तव में, मृत्यु से जी

अक्सर कितनी बार हम यीशु को "प्रभु" कहके पुकारते है और फिर उसे बताते है कि क्या करें?

उठने के बारे में मसीह की भविष्यवाणी के बारे में केवल उन्होंने स्मरण रखा जिन्होंने उसे मार डालने के लिए कहां (मत्ती २७:६३)। हमारे जीवन के द्वारा परमेश्वर महिमा प्रगट करना चाहता हैं इसे चूकना आसान होता है केवल इस कारण से कि हम उस यात्रा में चलने से इन्कार करते हैं जो उसके इस सामर्थ्य के प्रदर्शन की ओर ले जाते है। पतरस क्रूस को टालना चाहता था और सीधे ताज़ पाना चाहता था। वह क्या समझ नहीं पाया वह यह कि क्रूस के बिना कोई ताज नहीं है। आप क्रूस को पहले सहे बगैर ताज पर दृष्टि लगाने के प्रलोभन में कहाँ पड़ते हैं?

जब लाजर बीमार था और मर रहा था, यीशु ने उसके सुननेवालों से कहां, *"यह बीमारी मृत्यु को नहीं; परंतु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो"* (यूहन्ना ११:४)। ठहरिए। क्या लाजर मरा? केवल आधे अध्याय बाद में, जी हाँ। तब क्यों, यीशु ने कहां, *"यह बीमारी मृत्यु की ओर नहीं ले जाती?"* उसी तरह से सुपरमार्केट को भेंट देना ट्रैफिक बत्ती या चिन्ह की ओर नहीं ले जाती। सुपरमार्केट को जानेवाला रास्ता अनगिनत उजियाला स्तम्भ और चिन्हों से गुजरता हुआ जाता हो इससे पहले कि हम उस स्थान तक पहुँच जाए। तथापि, एक यात्रा इन बातों की ओर नहीं ले जाती- केवल इन बातों के द्वारा। उसी तरह से, आपका क्रूस उठाने की आपकी यात्रा और मसीह के महिमामयी, शास्वत राज्य की ओर उसके पीछे चलना अनेक संकट और परीक्षाओं में से ले जाएगा, परंतु यह उनकी ओर नहीं ले जाता। जीवन, मृत्यु नहीं, जो हमारे सांसारिक यात्रा के अंत में आता है।

जब यीशु संकेत देता है, *"मेरे पीछे हो ले"*, तो वह किसी अनिश्चित शब्दों में नहीं पर *"साफ साफ बोल रहा होता"* है कि दु:ख तो सहना पड़ेगा। उसने अपने चेलों को उस पर जल्द ही होनेवाले दु:ख और क्रूस पर चढ़ाएं जाने के बारे में बताया और फिर उनके क्रूस उठाने और उसके पीछे चलने के लिए निमंत्रण दिया। यही हमारे लिए भी वैसा ही है। हम उसका अनुसरण करते हैं जहाँ वह ले जाता है, यह जानकर कि आख़िरी पाठ हमारे पुनरुत्थान और उसकी उपस्थिति में आनंद के बारे में हैं।

जब हम अगुवाई करने की कोशिश करते हैं

यहाँ पर अगुवाई करने के प्रयास का तीसरा नकारात्मक परिणाम है।

जब पतरस ने यीशु को क्रूस को टालने को कहां, यीशु ने स्पष्ट कहां, *"हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो!"* (मत्ती १६:२३)। पतरस को वैसा कहने में, पतरस की कल्पना कहां से आई है इसकी पहचान यीशु करा रहा था। शैतान हमारी सोच से क्रूस को मिटाना चाहता है। *"शैतान"* का अर्थ *"विरोधी"*। यीशु का अनुसरण करने के बजाय, पतरस अगुवाई करने को देख रह था, और क्रूस का इन्कार करने से, वह उद्धारकर्ता का कार्यकारी शत्रु हो गया था। पौलुस ने फिलिप्पी की कलीसिया को इस विषय में चेतावनी दी : *"क्योंकि बहुत से ऐसी चाल चलते हैं, जिनकी चर्चा मैं ने तुम से बार बार की है, और अब भी रो रोकर कहता हूँ कि वे अपनी चाल-चलन से मसीह के क्रूस के बैरी हैं। उनका अंत विनाश है, उनका ईश्वर पेट है, वे अपनी लज्जा की बातों पर घमंड करते हैं, और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं"* (फिलिप्पियों ३:१८-१९)। जब हमारा मन सांसारिक संपत्ति, सावधानी, प्रतिष्ठा और पद पर लगा रहता हैं, तब हम उस प्रभु पर दृष्टि डालने से चुकते हैं जिसका अनुसरण हम कर रहे हैं और हम दूसरों को उसे देखने से बाधा लाते हैं, अपने आप को मसीह के क्रूस का बैरी बनाते हैं।

चर्च के लिए यह गंभीर चेतावनी है। यहाँ पर हमारी कलीसियाओं में बहुत सारे बैरी घूम रहे हैं और वे क्रूस को टालकर मसीह का दावा कैसे करते हैं उसके द्वारा हम उन्हें पहचान सकते हैं। बैरी चेलों समान पहनावा कर सकते हैं और सही उत्तर देने के लिए त्वरित भी होते हैं, फिर भी प्रभु यीशु जहाँ अगुवाई कर रहा है वहां जाने के लिए अनिच्छुक है।

पतरस के समस्या की मसीह ने पहचान करायी : *"क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परंतु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता हैं"* (मत्ती १६:२३)। बाद में, पवित्र आत्मा ने यीशु के इस वाक्य का स्पष्टीकरण दिया : *"अतः जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह विद्यमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परंतु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ, क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे"* (कुलुस्सियों ३:१-४)।

क्या हम मसीह के पीछे चलना चाहते हैं, परंतु अपने स्वयं की इच्छानुसार? क्या हम हमारी शिकायत, हमारी चिंताएं, हमारा अतीत-हमारा पाप इन्हीं बातों पर सोचते रहते हैं? क्या हम किसी भी बात से जुड़े हैं जो मसीह के साथ घनिष्टता में चलने हमें रोक सकती हैं?

अत्यधिक भार से दब मत जाइए। विश्वासी के रूप में अपराधी-नहीं ऐसी आपकी स्थिति को याद रखें : *"अतः अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दंड की आज्ञा नहीं"* (रोमियों ८:१)।

मसीह की बुलाहट सिद्ध होने के लिए सख्त प्रयास करने के बारे में नहीं है। आप पहले ही उसकी सिद्ध धार्मिकता में संवारे गए हैं। प्रभु यीशु आपको केवल उसके पीछे चलने के लिए बुलाता है, जैसे ही आप उसके अद्भुत प्रेम के सुख का आनंद लेते हो और उसके पवित्र आत्मा के विश्वासयोग्य दोषसिद्धि के अधीन बढ़ते जाते हो।

क्या हम मसीह के पीछे चलना चाहते हैं, परंतु अपने स्वयं की इच्छानुसार?

स्मरण रखें, दुश्मन कठोरता से अपराधी ठहराता है, लेकिन आत्मा कोमलता से दोषसिद्धि करता है *"जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए"* (गलातियों ४:१९)।

चिंतन करें और उत्तर दें

१. आपके जीवन के कौनसे क्षेत्र में आप मसीह के बैरी समान जीवन जी सकते हो? (स्वार्थी जीवनशैली, आज्ञापालन से ज़्यादा आरामदायक बातें चुनने इत्यादि द्वारा)?

२. आपके परिवार, मित्रों और परिचितों को यीशु मसीह के मार्ग से दूर ले जाने के लिए आपके जीवन से कौनसी बातें इशारा करती हैं?

३. आपका जीवन लोगों को मसीह की ओर किस तरह से इशारा करता है?

४. परमेश्वर आपको सभी कारणों को समझे बिना विश्वास में उसकी आज्ञा मानने के लिए पूछ रहा है?

५. अब तक के आपके जीवन के मार्ग के बारे में सोचो। यदि आप कुछ बातें जानते है जो आपके आगे थी, तो उसें टालने के लिए आप ने क्या किया होता? इसने मसीह के साथ आपकी घनिष्टता पर कैसे प्रभाव किया होता?

२६

आपके पास वह नहीं है जो इसके लिए आवश्यक है

मैं सोचता हूँ कि हमारे पास अक्सर गलत कल्पनाएँ होती हैं जब मसीह के पीछे चलने की बात आती है। इस पुस्तक के पन्नों में, हमारे पास एक वचन था जिसने हमारे मन पर प्रभाव डाला है : *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले"* (मत्ती १६:२४)। यह मान लेना आसान होगा कि यीशु के शब्द हमें अपने संकल्प का विश्लेषण करने को कहते है और उसके पीछे चलने के लिए हमें क्या छोड़ना है उसका हिसाब करें। परंतु आइए हम स्पष्ट रहें।

आपके पास वह नहीं है जो इसके लिए आवश्यक है । मेरे पास वह नहीं है जो इसके लिए आवश्यक है। समाप्त।

यीशु ने लूका १४:३३ में कहां, *"इसी रीति से तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"* यीशु ने यह नहीं कहां, *"जो कुछ उसके पास है वह सब कुछ त्याग करने के लिए तैयार है"*, न ही उसने कहां, *"जो कोई जो सब कुछ उसके पास है उसका त्याग न करे वह मेरा अच्छा चेला नहीं हो सकता।"* नहीं। मसीह के इस वाक्य के लिए पूर्ण समर्पण की आवश्यकता है।

जब मसीह ने घोषित किया, *"तुम में से जो कोई अपना सब कुछ त्याग न दे, वह मेरा चेला नहीं हो सकता,"* वह यह नहीं कह रहा था कि जो कोई सब कुछ त्याग करने में असफल हो जाता है उसे उसका चेला होने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यह कोई अनुमति के बारे

में नहीं था। यह संभवतः के बारे में था। यीशु कह रहा था, यदि तुम सब कुछ त्याग न दो, तो तुम मेरे चेले नहीं हो सकते-यह बिल्कुल संभव नहीं है।

मुझे स्पष्ट करने दीजिए।

यदि एक मित्र ने मुझे छोटे बच्चों के ज़्यादा टी-शर्ट उपहार में दिए, तो उसको यह जोड़ने में पूरी तरह से योग्य होगा, *"आप यह टी-शर्ट पहन नहीं सकते।"* इसका अनुमति से कोई लेना देना नहीं है; वह मुझे टाईट-फिटिंग के वस्त्र पहनने को प्रतिबंध करने का प्रयास कर रहा है। मामले का तथ्य यह एक चौड़े कंधेवाला ६ फीट २ इंच वाला मनुष्य ऐसे वस्त्र में संभवतः फिट नहीं हो सकता। यह शारीरिक रीति से संभव नहीं है। यहीं यीशु मसीह के बुलावे के साथ भी है।

क्या आप अब भी निराश हैं? निराश मत होइए।

इतना अद्भुत, सब कुछ दांव पर लगानेवाला, और पूर्ण भरपूरी देनेवाला बुलावा मानवी शक्ति से या हमारे साथ जगत की बाधाओं को खींचते हुए पूरा नहीं किया जा सकता। इस तरह से, मसीह हमें उसके जीवन में निमंत्रित करता है। उसकी मृत्यु में। उसके पुनरुत्थान में। *"क्योंकि तुम तो मर गए और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो हमारा जीवन है, प्रगट होगा; तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट किए जाओगे"* (कुलुस्सियों ३:३-४)। क्या इसमे कोई आश्चर्य है कि इब्रानियों का लेखक हमें ऐसा करने के लिए बुलाता है कि दौड़ लगाने से पहले *"हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझानेवाले पाप को दूर करे"* (इब्रानियों १२:१)।

यदि आप मेरे समान है, खोज निराशाजनक हो सकती है। वही पाप मुझे पीछे रोके रखते हैं। सही करने को मुझे पता है, पर अपने आप को गिरते पड़ते पाता हूँ। लगातार असफलताओं से परेशान होकर, मैं ऐसे सोचता हूँ, *"क्या बात है?"* लेकिन मेरा आदर्श बंद है। पापों की क्षमा और परमेश्वर के सम्मुख स्वीकृति मेरे अपने कामों के द्वारा नहीं आती, लेकिन यीशु मसीह के पूरे किए हुए काम पर विश्वास रखने से आती है। मसीह के पीछे चलने की हमारी अधिकांश निराशाजनक योग्यता हमारे स्वयं को मरने में असफल होने से आती है। हम पाप पर प्रभुता करने और जीवन में उद्देश्य प्राप्त करने का प्रयास जारी रखते हैं, जैसे कि हम अंत में सफल होंगे यदि हम अपने आप पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं। परंतु योडा ने ठीक कहां है, *"करो या मत करो। यहाँ कोई प्रयास नहीं है।"*[६०]

तो हमारी दुविधा के लिए क्या उत्तर है?

उपाय यह सुंदर रीति से बुना गया है और बार बार मसीह की सीख में बताया गया है। वह हमें मदर तेरेसा बनने को नहीं कह रहा है। वह हमें स्वयं को मरने के लिए कह रहा है-हर दिन। जैसे लूका ने मसीह की बातें लिखी है, *"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परंतु जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा"* (लूका ९:२३)। पौलुस के शब्दों में, *"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया"* (गलातियों २:२०)।

यीशु मसीह आपके जीवन का केवल हिस्सा होना नहीं चाहता। वह आपका संपूर्ण जीवन चाहता है।

हम *"यीशु को प्रभु"* नहीं कर सकते- वह प्रभु है। एक ही प्रश्न यह है, *"क्या हम अपने स्वयं चुनाव से उसे समर्पित होंगे या बाद में जबरदस्ती से? "*समर्पित*" होना यह अधिकार के अधीन होना है- इस बात में, उस अधिकार को। एक दिन "*हर एक जीभ अंगीकार करेगी कि यीशु मसीह ही प्रभु है" (फिलिप्पियों २:११)।

यीशु मसीह आपके जीवन का केवल हिस्सा होना नहीं चाहता। वह आपका संपूर्ण जीवन चाहता है। उसने आपके जीवन का एक हिस्सा नहीं माँगा है (स्वयं का त्याग); वह पूरा नियंत्रण चाहता है (स्वयं का इन्कार)। वह सब कुछ चाहता है। समाप्त।

क्या हम हमारे पूर्व-अस्तित्व की योजनाएं और सपनों में मसीह को जोड़ रहे हैं, या क्या हम नियंत्रण को नष्ट कर रहे हैं-ताकि उसे हमारी कहांनी लिखने दें?

मैं जब जवान लड़का था तब मैं टेलीविज़न बहुत कम देखता था। ठीक है, यह व्यवहारिक तौर पर अस्तित्व में नहीं था। हमारे पास एक सुपर ८ सिनेमा प्रोजेक्टर था (जिसका रास्ते के ढाबे से कोई लेना देना नहीं है), परंतु जब तक मैं दस वर्ष का नहीं हुआ था, तब तक मेरे परिवार ने एक नौ इंच का टेलीविज़न और वीसीआर दोनों खरीदने की सोची थी, तब एक रिश्तेदार ने उसे एक उपहार के रूप में दिया था। आगे, मेरे प्रारंभिक वर्ष सेनेगल, पश्चिम अफ्रीका में बीते थे, अमरीकी टीवी कार्यक्रमों से कई दूर जो जवान और बूढ़े दोनों के मन पर राज करते हैं।

यह कह दिया, वहां कुछ शो थे जो किसी तरह से वीएचएस टेप पर हमारे घर तक पहुंचे (यदि आपको पता नहीं कि वीएचएस टेप क्या है, तो किसी को पूछे जिसे आप वृद्ध समझते हैं)। उसमें

से एक आर्थर बच्चों का कार्यक्रम था। (क्या कोई पीबीएस के लिए पुकार दे सकता है?) मुझे यकीन नहीं है कि आजकल आपको आर्थर से ज़्यादा हानिरहित कोई और कार्यक्रम मिल सकता है, लेकिन बारीकी से सोचे तो, हम बच्चों के इस शीर्षक गीत में भी जगत की मानसिकता देख सकते हैं। आकर्षित करनेवाली धुन याद है?[६१] यह एक सीधा संदेश है, और यह हृदय से आता है, 'अपने आप में विश्वास करे, और शुरू करने का वही तो स्थान है!*" मैं ऐसे सुझाव दूंगा कि "*अपने आप में विश्वास करो" यह नष्ट होने का स्थान है, शुरू करने का नहीं। मुझ पर विश्वास रखो, मैं आर्थर के विरोध में नहीं। यह एक प्यारा शो है, पर उनके स्मरणीय छोटे कार्यक्रम में शामिल मानसिकता समाज में व्याप्त है। ऐसी सोच हमें परमेश्वर के वचन को हमारी भावनाओं और कल्पनाओं के अधीन करना सिखाती हैं।

परमेश्वर हमारे विश्वासों के अनुरूप सत्य को समायोजित नहीं करेगा, न ही वह हमें उस पर और उसने बाइबल में प्रगट की गई बातों पर विश्वास करने के लिए जबरदस्ती करेगा।

इस यात्रा में, हम यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में और उसके समान होने का क्या मतलब है उसके बारे में नए तौर से देख रहे हैं, हमारे अस्थायी अस्तित्व और इच्छाओं को छोड़ रहे हैं ताकि अपने आप को शास्वत, महिमामयी खोज प्रदान करे।

इस पुस्तक के दौरान, आप किस पर विश्वास करें यह आपको बताना मेरा उद्देश्य नहीं है। मेरा उद्देश्य सरल रूप से यीशु ने जो कहां उसे सुने और पूछे :

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

और यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था, तो वह हमारे जीवन में कैसे दिखेगा?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. इस जगत के कौनसे *"भार"* आपको आपकी मसीही दौड़ में धीरे करा रहे हैं?

२. आपकी अपनी शक्ति में मसीह के पीछे चलने का प्रयास करने में कौनसे खतरे हैं? इसके बजाय आपको क्या करना चाहिए?

३. कहाँ पर आप ने यीशु को आपके जीवन का हिस्सा होने देने का प्रयास किया जबकि वह पूरा नियंत्रण चाहता है?

२७

पछतावे के बिना जीवन

मुझे कोई संदेह नहीं कि इन शब्दों को पढ़नेवाले कई लोग जीवन में काफ़ी सफलता का आनंद लेते हैं। कक्षा में सफलता। मानकीकृत परिक्षण पर सफलता। क्रॉसफीट पर सफलता। कल्पनामय फुटबॉल संघ पर सफलता। सामाजिक माध्यम लोकप्रियता पर सफलता। विपरीत लिंग के साथ सफलता। निवेश में सफलता। चर्च जिसकी प्रशंसा करता है उसमें भी सफलता। आप समझ गए होंगे।

आप विजेता है।

या फिर क्या सच में हो?

विजय कहां मिलती है : स्वार्थी खोज में या निस्वार्थी बलिदान में?

क्या होगा यदि करीबन सब में विजय पाना संभव हो और फिर भी पराजित हुए है? वही बात है। पराजय पानेवाला।

यीशु की क्रूस उठाने की बुलाहट के बाद तुरंत, वह अपने चेलों को चेतावनी देता है, *"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा"* (मत्ती १६:२५)। यह अभिवचन है- बिल्कुल विपरीत अंत के साथ।

जगत की सामान्य मानसिकता पॉल *"बियर"* ब्रायंट के जैसी है, २५ साल अलाबामा क्रिम्सन टाईड के कॉलेज में फुटबॉल प्रशिक्षक था, जिसने कहां, *"यदि आप खुद पर विश्वास रखते है और समर्पण और घमंड है और कभी हार नहीं मानते, तो आप विजेता होंगे।"* जगत इस तरह की प्रेरणा की ज्वाला पर दौड़ता है, परंतु कौनसे अंत के लिए? क्या यह सत्यता है जिसके लिए आप को सृजा गया है? अपने आप में विश्वास रखें? अस्थायी,

अयोग्य विजय प्राप्त करो? खेल की ट्रॉफिया जमा करो, पोकेमोन के प्रत्येक स्तर पर विजय प्राप्त करें, अब तक बनाईं गई प्रत्येक बहुमूल्य मूर्ति को संचित करें, प्राचीन चीनी मिट्टी के बर्तनों से भरी दो अलमारियां प्राप्त करें, या बेकार ज्ञान की भारी मात्रा प्राप्त करें? तब क्या?

मृत्यु।

आपको अधिक के लिए सृजा गया है-कई अधिक के लिए।

एक विजेता जो पराजित हो गया

बाइबल में एक मनुष्य का उदाहरण है जिसने यही सब चीज़ें की- जगत की दृष्टि में सफल जीवन जीया लेकिन शास्वतता की दृष्टि में उसके जीवन को निराशाजनक रूप से बर्बाद किया।

देमास।

उसने शुरुआत अच्छी की। वास्तव में, बहुत अच्छी। फिलेमोन वचन २४ में, उसे प्रेरित पौलुस के साथी के रूप में सूचीबद्ध किया है। कुलुस्सियों ४:१४ में फिर से, पौलुस देमास और उसकी उपस्थिति वहां उसके साथ है इसका उल्लेख करता है। पौलुस इस समय कहां था? सबसे अधिक संभावना, उसे रोम में कैद किया गया था। दूसरे शब्दों में, देमास एक जवान मनुष्य था जो पौलुस के साथ, उसके बंदिवास में भी रहने को तैयार था।

परंतु उसके जीवन की कहांनी में यहाँ पर और एक वचन है।

जैसे ही पौलुस की सांसारिक यात्रा ख़त्म होने को थी, उसने विश्वास में उसके पुत्र तीमुथियुस को लिखा। उस ख़त में, पौलुस ने एक अन्य बात जोड़ी जिसमे कहां, *"क्योंकि देमास ने इस संसार को प्रिय जानकर मुझे छोड़ दिया है और थिस्सलुनीके को चला गया है"* (२ तीमुथियुस ४:१०)। दु:खद। गंभीर।

पौलुस उल्लेख करता है कि देमास थिस्सलुनीके को चला गया है, एक शहर जिसका नाम दो ग्रीक शब्दों से बना है, थेस्सलोस और नाइक।

हम *"नाइक"* कंपनी से परिचित है जो जगत के आसपास पैरों को सजाता है। परंतु क्या आपको पता है कि उस कंपनी का नाम *"नाइक"* विजय की ग्रीक देवी के नाम पर रखा गया है? यह प्रत्यक्ष में नाइक का अर्थ है : विजय।[६२]

नाइक विजय का स्थान है। शब्द थेस्सलोस, तथापि, भिन्न कहांनी प्रगट करता है। इस शब्द का अर्थ *"गलत, बेकार या खाली है।"* इस सत्यता को न चूके। थिस्सलुनीका वास्तविकता में, *"खाली विजयों का स्थान।"* देमास ने *"एक विजेता"* होने के लिए पौलुस को छोड़ दिया। लेकिन यहाँ एक समस्या है। उसकी विजय अंत में बेकार हो गई थी।

कोई विचार नहीं, कोई पीछे हटना नहीं, कोई पछतावा नहीं

कैरो के अत्यंत बीच में एक अस्पष्ट और ज़्यादा करके भुला हुआ कब्रिस्तान है। इस प्राचीन कब्रिस्तान की ऊँची दीवारें, सलाखोंवाला दरवाजा और उगी हुई झाड़ियाँ बचपन में सीक्रेट गार्डन देखने की यादें ताज़ा कर देती है। ऐसा सुना है की इस कब्रिस्तान में १८०० सदी के अस्पष्ट व्यक्तित्व हैं जिनमे मुझे खांस रूचि थी, वहां मेरा मित्र और मैं इस कब्र को ढूंढने गए।

हमारे साहस का महत्त्व, तथापि, इस प्राचीन कब्रिस्तान के पत्थर की दीवारों के भीतर रखा हुआ नहीं मिला। इस कहांनी की सामर्थ्य उसमे मिलती है जो उन दीवारों और उन कब्रों में नहीं मिल सकती।

सफलता का उत्तम पैमाना क्या है : एक दीर्घायु या एक विश्वासी जीवन?

कब्र तक जाने के लिए, हमें पहले पड़ोसी जगह पर उस व्यक्ति को ढूंढने की चौकसी करनी थी जिसे इसकी चाबी दी गई थी। बहुत खोज करने के बाद में, हमें द्वारपाल मिल गया, एक बुढ़ा इन्सान जिसके पास चाबी थी। लोहे के फ्रेमवाला चरमराता हुआ लकड़ी का दरवाजा खोलने पर, उसने हमें हमारी खोज शुरू करने दी। टूटी हुई कब्रें और कब्रों समान ऊँची ढलानों पर से जाते हुए और विभिन्न मलबे, शाखाओं और कचरे से एक के बाद एक कब्र साफ करते हुए, हमने आखिर में उस कब्र के पत्थर को ढूंढ लिया जिसकी हम खोज कर रहे थे। सालों से जमी हुई धुल पोंछने और पक्षियों की विष्ठा को साफ करने के बाद कब्र पर खोदे हुए शब्द दिखने लगे :

विल्यम व्हायटिंग बोर्डेन
१८८७-१९१३
कोई विचार नहीं
कोई पीछे हटना नहीं
कोई पछतावा नहीं

अमरीका में एक अमीर घराने में १८८७ में जन्म हुआ था और करोड़ों डॉलर की विरासत थी, बोर्डेन को उनके समय का एक अनोखा पाठशाला स्नातक उपहार दिया गया था : विश्व भर की यात्रा के लिए वित्त। जब विल्यम में सफर किया, उन्होंने विश्व भर में पाए जानेवाले अति दु:ख को देखा। उन्होंने उनका जीवन उसमे निवेश करने की जरुरत को समझा जो शास्वतता तक रहेंगी। घर पर उनके माता-पिता को भेजे गए ख़त में उन्होंने लिखा, *"मैं मेरा जीवन मिशन क्षेत्र तैयार करने के लिए दे रहा हूँ।"* और वही उन्होंने किया। मित्र उसे वैसा न करने को कह रहे थे, यह कहते हुए कि ऐसा निर्णय करने से, *"वह अपने आप को नष्ट कर रहा है।"* प्रत्युत्तर में, बाइबल के सामने के कवर पर उन्होंने लिखा :

"कोई विचार नहीं।"

उन्होंने याले और प्रिंसटन में पढ़ाई की थी। वहां होते हुए, उन्होंने शहर के शराबियों की सेवकाई करने के लिए याले आशा मिशन शुरू किया और याले के छात्र संगठन के ७० फीसदी लोगों को छोटे बाइबल अध्ययन में शामिल किया। उच्च वेतन नौकरी, बहुत ही आराम का जीवन, और मित्रों ने उसे करीब में रहने के लिए उस पर ज़ोर दिया इन सब बातों को अस्वीकार किया। बोर्डेन ने पिछली बात में और दो शब्द जोड़ दिए:

"कोई पीछे हटना नहीं।"

इस जगत की बातों से दूर हो जाने का इन्कार करते हुए, बोर्डेन १९१२ में चीन के लिए जहांज में चले गए, अरबी पढ़ने के लिए मिस्र में रुके। कैरो में आने के बाद, बोर्डेन किताबे पढ़ने लगे, लेकिन थोड़े ही दिनों में उन्हें स्पायनल मेनिनजाइटीस हो गया। एक महिना बीमार रहने के बाद, ९ अप्रैल, १९१३ में, २५ वर्षीय बोर्डेन जिस यीशु को प्रेम करते और उसकी सेवा करते थे उसके पास चले गए।

बोर्डेन के निधन का रिपोर्ट अमरीका के करीबन हर एक समाचार पत्र में था। एक स्त्री ने लिखा, *"बोर्डेन ने केवल अपनी संपत्ति नहीं दी, परंतु अपने आप को दे दिया, इस तरह से कि इतना आनंदित और स्वाभाविक वह नजर आ रहा था कि वह बलिदान से बढ़कर एक विशेषाधिकार था।"*[६३] क्या उनका जीवन बेकार था? क्या यह उनकी अकाली मृत्यु थी? परमेश्वर की अर्थव्यवस्था में नहीं। यीशु ने कहां, *"मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है, परंतु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है"* (यूहन्ना १२:२४)।

सफलता का उत्तम पैमाना क्या है : एक दीर्घायु या एक विश्वासी जीवन? कौन जीतता है : एक जो बहुत संपत्ति जमा करता है या एक जिसके पास उद्धारकर्ता और आत्माओं के लिए महान् प्रेम है? विजय कहां मिलती है : स्वार्थी खोज में या निस्वार्थी बलिदान में?

जब बोर्डेन के कुछ सामान उसकी माँ और बहिन को मिले, तो उन्हें एक खज़ाना मिला जो अच्छे-निवेश जीवन से जुड़ा हुआ था। मृत्यु में उनकी आँखे बंद करने से पहले, बोर्डेन ने उनके बाइबल के सामने के पृष्ठ पर अंतिम शब्द लिखे, *"कोई विचार नहीं"* और कोई पीछे हटना नहीं" के नीचे विल्यम जो जोड़ा,

"कोई पछतावा नहीं"

क्या हमें *"कोई पछतावा नहीं"* यह कह सकेंगे जब हमारे जीवनों की दौड़ ख़त्म करेंगे और हम प्रभु यीशु मसीह के समक्ष खड़े होंगे?

क्या आप विश्वास करते है यीशु ने जो कहां वही उसका मतलब था? सच में?

बहुतों की दृष्टि में, देमास, एक विजेता था। और बोर्डेन पराजित था। परंतु एक दिन आनेवाला है जब मनुष्यों का मूल्यांकन और *"विजय"* का कोई मतलब नहीं रहेंगा। एक दिन आनेवाला है जब हर एक विश्वासी को मसीह के न्यायासन (बेमा आसन) के समक्ष खड़े रहना है कि शरीर से किये हुए कामों का हिसाब दे, फिर वो मूल्यवान या बेकार हो (२ कुरिन्थियों ५:१०; १ कुरिन्थियों ३:११-१५)। यह विशेष न्याय इस बात का प्रश्न उपस्थित नहीं करेगा कि क्या व्यक्ति का उद्धार हुआ है या नहीं। यह एक तरह का ताज पहनाना, पुरस्कार समारोह होगा जब प्रभु उसके उद्धार पाए हुए लोगों को सम्मान और पुरस्कृत देगा जो इस जीवन में, शुद्ध इरादों के हृदय से, जिन्होंने विश्वासयोग्य रीति से प्रेम किया और सेवा की है-उसकी महिमा के लिए।

यीशु ने उसके पीछे आने, स्वयं का इन्कार करने, अपना क्रूस उठाने और उसके पीछे हो ले यह बुलाहट देने के बाद में, उसने आगे कहां:

"क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा, और जो कोई मेरे लिए अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" (मत्ती १६:२५-२६)।

वचन २६ में *"प्राण"* शब्द जो अनुवादित किया है यह वचन २५ में *"जीवन"* के लिए वही शब्द है। मसीह की स्वयं का इन्कार करने की बुलाहट यह ऐसा जीवन जीने के लिए निमंत्रण है जिसका शास्वत विजय में परिणाम होता है। लेकिन उनके लिए जो अपने स्वयं का जीवन जीने का चुनाव करते हैं, उनका परिणाम शास्वत नुकसान होगा।

क्या आप विश्वास करते है यीशु ने जो कहां वही उसका मतलब था?

सच में?

उस दिन के लिए तैयार होते है

मार्टिन लूथर के कैलेंडर पर दो दिन चिन्हित किए हुए थे : *"आज"* और *"उस दिन"*। *"उस दिन"* मसीह के न्यायासन को संबोधित करता है। उन्होंने उनके *"आज"* को शास्वतता के प्रकाश में जीया। जोनाथन एडवर्ड और लिओनार्ड रावेनहील प्रतिदिन प्रार्थना करते थे, *"प्रभु, मेरी आँखों की पुतली पर शास्वतता की छाप लगा दे।"* वेस्ली भाई और जॉर्ज व्हाईटफील्ड प्रभु के प्रति पवित्र जीवन व्यतीत करने को स्मरण रखने के लिए वे अपने आप को लगातार प्रश्नों की श्रृंखला पूछते रहते थे।[६४] और प्रेरित पौलुस ने सारांशित किया : *"इस कारण हमारे मन की उमंग वह है कि चाहे साथ रहें चाहे अलग रहें, पर हम उसे भाते रहें। क्योंकि अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए"* (२ कुरिन्थियों ५:९-१०अ)।

पौलुस के शब्द, *"हम इसे अपना लक्ष्य बनातें हैं"* ... , कि हम उसे प्रसन्न करें, यह वैचारिकता बताती है। उसका वाक्य प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति में निरंतर जागरूकता में जीवन जीने के लिए बुलाहट है, जिसके समक्ष हम एक दिन खड़े होंगे। उसके साथ आपकी मुलाकात होना है। और उसी तरह से मेरी भी।

क्या हम जीवन को बनानेवाले के साथ के शास्वत मुलाकात के बारे सोचने से अधिक कल का दोपहर का भोजन मित्रो या साथियों के साथ करने की मुलाकात के बारे सोचते हैं? क्या हम हमारे शास्वत दुल्हे के सामने जब खड़े होनेवाले है इससे अधिक क्या हम हमारे सांसारिक जीवनसाथी के सामने विवाह के दिन खड़े होने के क्षण को कितनी बारीकी से योजना करते हैं उसके बारे अधिक साहस करते हैं? क्या हम अधिक विचार मसीह के न्यायासन के समक्ष शास्वत लाभांश उत्पन्न करने से बढ़कर सेवानिवृत्ति योजनाएं कि आराम करे, सफर करे, गोल्फ खेले या समुन्दर किनारे सागर-कौड़ियों को जमा करने के बारे में सोचते हैं? क्या हम नियमित रूप से हमारे अपने जीवनों का परिक्षण करते हैं, अपने

निवेश के बारे में कठिन प्रश्न पूछते हैं और *"वो दिन"* आ रहा है देखते हुए शास्वत बातों पर लक्ष्य केन्द्रित करते हैं? क्या हमने उसे अधिक प्रसन्न करने को अपना लक्ष्य बनाया हैं ?

मेरे मित्रों, मुझे उस दिन पर आपकी आँखे लगाने और उसके प्रकाश में जीवन व्यतित करने के लिए आपको चुनौती देने दे जब आप प्रभु यीशु मसीह के समक्ष खड़े होंगे।

उसके अंतिम शब्द हमारे लिए यह है :

"हाँ, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।"

क्या आपका हृदय पुकार उठता है :

"आमीन। हे प्रभु यीशु आ!" (प्रकाशितवाक्य २२:२०) ?

सी. टी. स्टड, १८वीं सदी का अंग्रेज क्रिकेट खिलाडी जिन्होंने प्रसिद्धि और संपत्ति छोड़ दी ताकि उनके जीवन को परमेश्वर के वचन और आत्माओं में निवेश करें, वे कुछ इस तरह लिखते है :

केवल एक ही जीवन, जी हाँ केवल एक ही,
जल्द ही इसके क्षणभंगुर घंटे चले जायेंगे;
फिर, *"उस दिन"* मेरे प्रभु से मिलना होगा,
और उसके न्यायासन के समक्ष खड़ा रहूँगा;
केवल एक ही जीवन, 'यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा,
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।
केवल एक ही जीवन, धीरे से छोटी आवाज़,
उत्तम चुनाव करने के लिए कोमलता से बिनती करती है
स्वार्थी उद्देश्य मुझे छोड़ने को कहती है;
और परमेश्वर की पवित्र इच्छा से जुड़े रहूँ,
केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।

केवल एक ही जीवन, कुछ थोड़े वर्ष,
हर एक उसके बोझ, आशा और भय के साथ;
हर एक उसके मिट्टी के साथ जिसे मुझे पूरा करना है,
स्वयं के लिए जीना या उसकी इच्छा के लिए,
केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।

जब यह तेज जगत मुझे बुरी तरह प्रलोभित करता है,
जब शैतान जीत हासिल करेगा;

जब स्वयं उसके अपने मार्ग से जाने की खोज करेगा,
फिर प्रभु आनंद के साथ कहने के लिए मुझे मदद कर;
केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।

ओह! मेरे प्रेम को जोश से जलने दे,
और इस जगत से मुझे मुड़ने दे;
आपके लिए और केवल आपके लिए जीवन व्यतीत करूँ,
आपके राजासन पर आपको प्रसन्न करू;
केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।

केवल एक ही जीवन, जी हाँ, एक ही जीवन,
अब मुझे कहने दो, *"आपकी इच्छा पूरी हो"*;
और जब अंत में बुलाहट को सुनूंगा,
मुझे पता है मैं कहूँगा, "यह सबसे लायक था;
केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।

केवल एक ही जीवन, यह जल्द ही समाप्त हो जाएगा
केवल जो मसीह के लिए किया है वही रहेंगा।
और जब मर रहा हूँगा, मैं कितना आनंदित हूँगा,
यदि मेरे जीवन का दीया आपके लिए जल जाए।

मैं आपको छोड़ रहा हूँ, मेरे साथी चेले, हमारे उद्धारकर्ता के निमंत्रण के साथ :

"यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले" (मत्ती १६:२४)।

क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

चिंतन करें और उत्तर दें

१. जब आपका सांसारिक जीवन समाप्त हो जाएगा, तब क्या शास्वत निवेश रहेंगा?

२. क्या आपके प्रतिदिन के चुनाव जगत की सफलता या शास्वत सफलता कैसी प्राप्त की जाए इन पर केन्द्रित रहते हैं?

३. आप उस दिन के लिए सक्रीय रूप से कैसे तैयारी कर रहे हैं जब आप यीशु मसीह के समक्ष खड़े होंगे?

४. क्या होगा यदि यीशु ने जो कहां उसका वही मतलब था?

अंतिम टिप्पणियां

पाठ १

१ इसहाक वाटस ने ७५० से अधिक गीत लिखे हैं, परंतु कई सारे लोग *"व्हेन आय सर्वे द वंडरस क्रॉस"* को सबसे उत्तम गीत मानते हैं। चार्ल्स वेस्ली, जिसने खुद ६००० से भी ज़्यादा गीत लिखे, कथित तौर पर कहां उन्होंने उनके सभी गीतों को छोड़ दिया होता यदि केवल यह गीत लिखा होता। यह गीत सबसे पहले १७०७ में वाट्स के गीतों और आत्मिक गीतों में प्रकाशित हुआ था।

२ विल्यम मॅकडोनाल्ड, टू डीसायपलशीप, पन्ना १५। बिना संदेह, इस प्रकाशन ने पवित्र बाइबल के अलावा किसी और किताब से अधिक मेरे जीवन को परिवर्तित किया है।

३ सोरेन किर्केगार्ड प्रोवोकेशन : स्पिरिचुअल रायटिंग्स ऑफ़ किर्केगार्ड (न्यू यॉर्क : प्लोवू, २०१४), पन्ने १९७-१९९।

४ मत्ती १६:२४ के सभी संदर्भ बायबल सोसायटी ऑफ़ इंडिया, पुनः प्रकाशन, २०२२-२३ से लिए गए हैं।

पाठ २

५ २००३ में, ब्लाऊक्रांस ब्रिज बंजी जंप को अधिकृत रूप से जगत की २१६ मीटर तक की सबसे व्यवसायिक ब्रिज जंप माना गया। इसे बगैर विपत्ति के १९९७ से फेस अड्रेनालाइन द्वार व्यवसायिक तरीके से किया जाता है। www.faceadrenaline.com पर अधिक जानकारी देखें।

६ परमेश्वर की योजना-सृष्टि निर्माण से मसीह की नयी सृष्टि तक का बड़ा दृश्य हम देखना चाहते हैं? रॉक इंटरनॅश नल के किंग ऑफ़ ग्लोरी सिनेमा के १५-एपिसोड देखें। यह सिनेमा (एक पुस्तक के रूप में उपलब्ध है) परमेश्वर की कहानी और संदेश को कुछ इस तरह से पेश करता है कि वह समझ में आता है। सभी उम्र और संस्कृतियों के लोगों के लिए। कई भाषाओं में। www.king-of-glory.com।

पाठ ३

७ सी. एस. लेविस मियर ख्रिस्चियानीटी में, आशा पर उनके पाठ में।

८ *द न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१।*

९ थॉमस चाल्मर्स, एक स्कॉटिश प्रचारक, इस संदेश को दिया जिसका शीर्षक, द एक्स्पलसीव् पॉवर ऑफ़ अ न्यू अफेक्शन। आप संदेश का पूरा विवरण इस साईट पर प्राप्त कर सकते हैं-https://www.monergism.com/thethreshold/sdg/Chalmers%20Tlhomas%20-%20Thle%%20Exulsive%20Power%20of%20a%20New%20Af.pdf

१० ऑगस्टीन। कन्फेशन्स। रेक्स वार्नर द्वारा अनुवादित। न्यू यॉर्क :मेंटर, १९६३।

११ जॉन पाइपर ने डिजायरिंग गॉड में पाए जानेवाले लेख में यह टिपण्णी की है। इस साईट पर उपलब्ध है-http://www.desireinggod.org/articles/god-s-plan-for-martyrs

पाठ ४

१२ *न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१। "इन्कार किया" गया शब्द आखिर में दो लॅटिन शब्दों से आता हैं, डे का अर्थ "औपचारिक रूप से" और नगारे का अर्थ "नहीं कहना"। इस तरह, "इन्कार करना" यह औपचारिक रूप से किसी बात को या किसी को नहीं कहना है।*

१३ *द न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१।*

पाठ ७

१४ बच्चों का यह लोकप्रिय कोरस अंन ओम्ली द्वारा १९४८ में लिखा गया।

१५ सिनेमा, द हायडिंग प्लेस, को १९७५ में वितरित किया गया और वह कॉरी टेन बूम की इसी नाम की आत्मकथात्मक पुस्तक पर आधारित थी। सिनेमा का दिग्दर्शन जेम्स कॉलियर ने किया और उसे गोल्डन ग्लोब नामांकन प्राप्त हुआ।

पाठ ९

१६ ये आंकड़े और अन्य द ट्रावेलिंग टीम ने संकलित किए हैं, वह एक सेवकाई है जो मसीह की बुलाहट कि *"संपूर्ण जगत में जाओ"* (मरकुस १६:१५) के लिए जाने को छात्रों को जवाब देने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करती है। ये जानकारी इस साईट से जांची जा सकती है- http://www.thetravelingteam.org

१७ *द न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१।*

पाठ १०

१८ रिच मुलिन्स ने इस गीत को १९८७ में लिखा और रिकॉर्ड किया है। यह सबसे पहले उसका अल्बम पिक्चर्स इन द स्काय में प्रकाशित किया गया।

१९ चार्ल्स वेस्ली ने ये शब्द और अधिक इस गीत में लिखे है, *"व्हेर शाल माय वंडरिंग सोल बिगिन।"* इस गीत को सबसे पहले १९३९ में हिम्न्स और सेक्रेड पोयम्स में प्रकाशित किया गया।

पाठ ११

२० इस पाठ में आंकड़े केवल इस विषय पर ऊपरी जानकारी देते हैं। ये जानकारी और अधिक वित्त और परमेश्वर के विश्वभर मिशन पर इस साईट से जांचे जा सकते हैं -- http://www.thetravelingteam.org

२१ आप यह स्त्रोत पढ़ रहें हो इसलिए मुझे ख़ुशी है। अतिशयोक्ति न करने के लिए, मैंने पिछले दस सालों में आंतकवाद द्वारा सबसे अधिक मौतें जो हुई उनकी संख्या ली है जिसे आतंकवाद की परिभाषा से जोड़ा है (जिसमें आत्मघाती हमले से ज़्यादा शामिल है) ताकि यह जानकारी की अतिशयोक्ति न करने की सुनिश्चिती करे। इस स्टाटीस्टा का उपयोग करके, एक पोर्टल जो हजारों स्त्रोतों को एकसाथ लाता है, पिछले दस सालों में आतंकवाद द्वारा सबसे अधिक मौतें जो हुई (जब मैं लिख रहा हूँ उस समय) वह २०१५ में हुई जिसमे ३२.७६३ मृत्यु को रिकॉर्ड किया गया। इस जानकारी को इस साईट से प्राप्त किया जा सकता है -http://www.statista.com/statistics/202871/number-of-fatalities-by-terrorist-attacks-worldwide। भूख से संबंधित कारणों से बच्चों की मौतों के बारे में, मैं अतिशयोक्ति से दूर रहना चाहता था। वर्ल्ड फूड प्रोग्राम जैसी संस्थाओं से अधिकांश आंकड़े (अमरीका या ओएक्सएफएएम बताता है कि हर दिन २१,००० मौतें हुई हैं (जिसमे पाच साल से कम उम्र के बच्चे ८,००० से ज़्यादा है)। यदि इस अंदाज को २० फीसदी से कम भी किया तो, एक साल में आतंकवाद से ज़्यादा भूख संबंधित कारणों से दो दिनों में ज़्यादा मौतें हुई हैं।

२२ रॉबर्ट एच. गंड्री मॅथ्यू द्वारा : ए कॉमेंटरी ऑन हिस हैण्डबुक फॉर अ मिक्सड चर्च अंडर पर्सीक्युशन (दूसरा संस्करण) १९९४ में प्रकाशित किया, ग्रैंड रॅपिड्स : येर्डमन्स द्वारा। ये संदर्भ पन्ना ३८८ से आता है।

२३ कोरी टेन बुम्स द्वारा 'ट्रैम्प फॉर द लॉर्ड : द स्टोरी दयाट बिगिन्स व्हेर द हायडिंग प्लेस एंड्स'। हालाँकि मूल रूप से १९७४ में प्रकाशित किया गया था, यह संदर्भ २०११ संस्करण से आता जो जिसे सीएलसी प्रकाशन ने प्रकाशित किया है (फोर्ट वाशिंगटन, पीए), पन्ना ९२।

२४ विल्यम मॅकडोनाल्ड ने *"वन डे अट अ टाइम"* शीर्षक का एक उत्कृष्ट धार्मिक पुस्तक लिखा, जिसे एवरीडे पब्लिकेशन ने १९९६ में प्रकाशित किया, यह विशेष संदर्भ मैं २९ के भक्ति मनन से लिया गया है।

२५ एन्थोनी नॉरिस ग्रुव्स (१७९५-१८५३) मसीह का और *"फादर ऑफ़ फेथ मिशन्स"* का अनुयायी था, जिसने अपने परिवार के साथ जीवन व्यतीत किया और अरबी भाषा बोलनेवाले मुस्लिम लोगों को सुसमाचार प्रचार किया, पहले बगदाद में, और बाद में दक्षिणीय भारत में। और वह प्लायमाउथ ब्रदरन समूह का प्रारंभिक अगुवा भी रह चुका था, उसने ३० उम्र की शुरुआत में *"ख्रिस्चीयन डिवोटेडनेस"* शीर्षक की एक सामर्थ्यशाली और छोटी सी पुस्तिका भी लिखी थी जिससे संदर्भ लिया गया है। इस पुस्तक ने लोग जैसे जॉर्ज मुलर, विल्यम मॅकडोनाल्ड, जॉर्ज वरवेर, वाचमन नी और अन्य लोगों के जीवनों को प्रभावित किया था। संपूर्ण साहित्य प्रोजेक्ट गटेनबर्ग पर मुफ्त में उपलब्ध है : http://www.gutenberg.org/files/24293/24293-h/24293-h-htm

२६ डेव्हिड लिविंगस्टन, १८०० सदी में अफ्रीका का एक प्रसिद्द खोज करनेवाले और मिशनरी, वे बहुत से साहित्य दे गए हैं। एक संक्षिप्त भाग उनके प्रायवेट जर्नल्स जो १८५१-१८५३ के बीच में आए थे वहां से लिया है, जो बर्कली द्वारा प्रकाशित किए है : यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलीफोर्निया प्रेस, १९६०।

पाठ १२

२७ पिटर एल. जॅक्सन द्वारा दिग्दर्शित, यह महत्वपूर्ण संदर्भ २००१ फिल्म *"द फेलोशिप ऑफ़ द रिंग"* से आता है। जे. आर. आर. टोल्किंस त्रैयिकशास्त्रज्ञान पर आधारित 'द लॉर्ड ऑफ़ द रिंग", इस फिल्म को १३ ऑस्कर नामांकन प्राप्त हुए और अन्य प्रशंसकों से भी सराहा गया।

पाठ १३

२८ *द न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१।*

२९ विल्यम बार्क्ले का *"डेली स्टडी बाइबल"* कई सारे बाइबल छात्रों के लिए एक खज़ाना स्त्रोत हो गया था जब से वह पहले मार्च १, १९७६ में प्रकाशित हुआ था। फिलिप्पियों ४:८ पर उनकी लिखावट का कुछ अंश है।

३० काटे विल्किंसिन ने लिखा हुआ, यह गीत जिसका शीर्षक *"मे द माइंड ऑफ़ ख्राइस्ट, माय सेवियर"* गोल्डन बेल्स में प्रकाशित किया गया (लंडन : बच्चों के विशेष सेवकाई मिशन में, १९२५)।

पाठ १४

३१ लेवीस स्मेड्स ने उनकी पुस्तक *"फर्गिव और फॉरगेट"* में इस टिपण्णी को किया (हार्पर कॉलिन्स, १९९६), पन्ना १३३।

३२ यह संदर्भ संत ऑगस्टीन ऑफ़ हिप्पो से है जिसे *"नायसिन और पोस्ट-नायसिन फादर्स"* से लिया गया है, पहली श्रृंखला, खंड ६, आर. जी. मॅकमूलन ने अनुवादित किया। फिलिप शाफ ने संपादन किया। (बफेलो, न्यूयॉर्क : क्रिश्चियन लिटरेचर पब्लिशिंग कंपनी, १८८८)

३३ एमी कारमायकल, भारत में अनाथ लोगों की सेवा करनेवाली मिशनरी, 'यदि' इस शक्तिशाली अंश को लिखा था। उन्होंने इस अंश की पार्श्वभूमि बतायी : *"एक शाम को एक साथी ने एक जवान लडकी के बारे में समस्या बतायी जिसे प्रेम के मार्ग के बारे में कुछ भी पता नहीं था। इसने मुझे रातभर जगाया, ऐसे समय पर वचन ये हमेशा ही, 'प्रभु क्या मैं हूँ?' क्या मैंने उसे किसी तरह असफल किया है? मझे कलवरी के प्रेम के बारे में क्या पता है? और फिर एक के बाद एक वाक्य "यदि" आते गए, जैसे कि मेरे कानों में ज़ोर से कहें गए थे।"* इस संस्करण के बहुत से अंश ऑनलाइन मुफ्त उपलब्ध हैं, इस साईट पर भी : http://steppinginthelight, com/wp-content/uploads/2013/03/if-amy-carmaichael.pdf

पाठ १५

३४ जॉन हंट, थॉमस जागर और जेम्स कलवर्टस की कहानी का अंश सायमन गुल्लेबौड्स की पुस्तक, *"मोर दयान कॉनकरर से लिया गया : अ कॉल टू रॅडिकल डीसायपलशीप"* (लंडन, युके : मोनार्च बुक्स), २०११। पन्ना ४७।

३५ फिलिप हेन्री की आत्मकथा इस पुस्तक में लिखी गई है जिसे उसके बेटे, मॅथ्यू ने लिखा, जिसका शीर्षक, *"द मिसलेनियास वर्क्स ऑफ़ द रेव. मॅथ्यू हेन्री।"* १८३३ में प्रकाशित किया गया (हालाँकि मूल आत्मकथा १६९९ में प्रकाशित की गई थी), यह संदर्भ पन्ना ३५ में मिलता है। २०० वर्षों बाद में, जिम एलिओट, इक्वेडोर के लिए जानामाना मिशनरी और शहीद ने इस वाक्य का थोड़ा सा अलग संस्करण रिकॉर्ड किया है, *"वह कोई मुर्ख नहीं जो दे देता है जो वृद्धि करने के लिए नहीं रख सकता जो वह कभी गवां नहीं सकता।"*

पाठ १६

३६ *द न्यू ऑक्सफोर्ड अमेरिकन डिक्शनरी, २००१।*

पाठ १८

३७ फ्लावियस जोसेफस, ऑफ़ द वार : बुक पांचवी, पाठ ११। विल्यम व्हिस्टन द्वारा अनुवादित।

पाठ १९

३८ जॉन जी. एलिओट उसके अल्बम *"व्हेन गॉड इज प्रेस्ड"* में १९९२ में *"एम्ब्रेस द क्रॉस"* गीत को वितरित किया।

३९ रेमंड इ. ब्राउन। द डेथ ऑफ़ द मसीहा। पन्ना ९६३।

४० जेम्स हैस्टिंग। अ डिक्शनरी ऑफ़ ख्राइस्ट एंड द गौस्पल्स। पन्ना ७३२।

४१ एलिझाबेथ क्लिफने द्वारा १८६८ में लिखा गया ये गीत सबसे पहले १८७२ में उसकी मौत के तीन वर्षों बाद में *"ब्रिथिंग ऑन द बॉर्डर"* शीर्षक के तले प्रकाशित किया गया। आज, इसे सामान्य रूप से *"बिनीथ द क्रॉस ऑफ़ जीजस"* के नाम से संबोधित करते है।

४२ २,००० से ज़्यादा गीतों में प्रकाशित, ऑगस्टस टोप्लाडी का १७७६ का उत्कृष्ट साहित्य, *"रॉक ऑफ़ एजेस"*, निरंतर कई सारे आत्माओं को स्पर्श करता है।

पाठ २०

४३ स्टैनली जोन्स। *"द ख़ाइस्ट ऑफ़ द इंडियन रोड।"* द अबिंग्डन प्रेस (न्यू यॉर्क, एनआय) १९२५। यह संदर्भ पन्ना ११८ से लिया गया है।

४४ अंत में, व्यवस्था ने - परमेश्वर के धर्मी मानक (सिद्धता), स्वयं-धार्मिकता को चुप कराना और परमेश्वर के अंतिम उपाय - यीशु मसीह में विश्वास के द्वारा न्याय करना की ओर इशारा करते हुए इन्हें पूरा करने में मनुष्यजाति की अकार्यक्षमता को व्यक्त किया। जिस तरह से आइना गलत लगाया हुआ मेकअप, भोजन के अंश, या मुख्य फुन्सिया स्पष्ट करता है, उसी तरह से व्यवस्था हमारे पाप प्रगट करती है। जैसे आइना हमारे गन्दगी को साफ नहीं कर सकता, उसी तरह से व्यवस्था हृदय को साफ नहीं करा सकती।

४५ विल्यम टेम्प्लेटन, *"अंडर स्टैंडिंग एक्ट्स।"* खंड १। (झूलोन प्रेस, २०१२), पन्ना ३२०।

पाठ २१

४६ सॅम्युएल ज्वेमर में लिखा है, *"द ग्लोरी ऑफ़ द इम्पॉसिबल इन पर्सपेक्टिव ऑन द वर्ल्ड ख़्रिश्चियन मूवमेंट"*, जिसे राल्फ विंटर और स्टीफन हाव्थोर्न ने सम्पादित किया है। (पासाडेना : विल्यम कॅरी लाइब्रेरी, १९८१), पन्ना २५९।

४७ चार्ल्स अलबर्ट टिंडले ने इस गीत को १९०५ में लिखा। यह प्रेरणा उन्हें आई जब उन्होंने इसे उनके दफ्तर में एक दिन इसे लिखा। हवा के झोंके से कुछ कागज उड़ते हुए आए, और जहाँ वे काम कर रहे थे वहा आ गिरे। एक विचार उनके मन में आया, *"उनके काम के बीच में कुछ न आए।"* इस विचार से, एक गीत ने जन्म लिया, मेरी आत्मा और मेरे उद्धारकर्ता के बीच कुछ न आए। आज, यह ९० गीतों से भी ज़्यादा में प्रकाशित हो चुका है।

४८ सी. एस. लेविस, *"द लास्ट बैटल"* (हार्पर कॉलिन्स : न्यू यॉर्क, १९५६), पन्ना २२८।

४९ फन्नी क्रॉसबाय ने अपने जीवनभर में ८,००० गीत लिखे हैं। इस गीत से बढ़कर किसी और गीत ने मेरी आत्मा को बार बार स्पर्श न किया होगा। यह गीत आवश्यकता के समय में परमेश्वर के प्रावधान से उत्पन्न हुआ है। पांच डॉलर बड़ी हताशा से आवश्यक थे, तभी मेरे घर के दरवाजे पर दस्तक हुई। एक आश्चर्यचकित यात्री के पास क्रॉसबाय से भेट थी। पांच डॉलर। इसी प्रावधान ने कागज पर लिखने को कहां, सभी मार्ग में मेरा उद्धारकर्ता मेरी अगुवाई करता है।

पाठ २२

५० हालाँकि एलिझाबेथ प्रेन्टिस ने इस गीत को १८५० सदी के बीच में लिखा था, फिर भी १८६९ तक वह गीत केवल एक पत्रक के रूप में प्रकाशित हुआ था अंत में १८७० में पहली बार *“सॉन्स ऑफ़ डिवोशन फॉर ख्रिश्चियन असोसिएशन”* के गीतों में प्रकाशित किया गया।

५१ जेरी रॅन्क्लिन और इनोख ब्रिज। *“लाइव्स गिवन, नॉट टेकन : २१वीं सेंच्युरी साउथर्न बॅप्टिस्ट मार्टिर्स।”* (इंटरनॅशनल मिशन बोर्ड, आयएमबी), २००५।

५२ *डीसायपल्स मेकिंग डीसायपल्स। प्रशिक्षणार्थी मार्गदर्शिका संस्करण २.२. पीडीएफ। जिसे इस साईट पर प्राप्त करे- http://moredisciples.com/wp-content/uploads/2015/09/DISCIPLES-MAKING-DISCIPLES-2.2-TRAINERS-GUIDE.pdf*

५३ एस्तेर केर रुस्थोई, फिल केर की बहिन जिसने एवैन्जेलिजम में संगीत लिखा, एक लेखक, कवि, और सुसमाचार प्रचारक थी। वह अक्सर ख़राब स्वास्थ्य के कारण बीमार रहती थी और फिर जल्दी ही उम्र के ५३ साल में उसकी मृत्यु हो गई। इस तरह से, उसके गीत के शुरुआती शब्द, *“यह सब इसके लायक होता”* उसके अपने हृदय के प्रोत्साहन के लिए लिखा गया ऐसे नजर आता है। कभी कभार दिन बड़ा लगता है, हमारे संकट सहने को कठिन लगते हैं, हम तक्रार, कुडकुडाना और निराशा में जाने को प्रलोभित होते हैं; परंतु मसीह जल्द ही प्रगट होगा कि उसकी दुल्हन को ले जाए, सभी आँसू परमेश्वर के शास्वत दिन में मिट जायेंगे।”

५४ कॅरोलिन ब्रिज। *“हायर ग्राउंड : अ मेमॉयर ऑफ़ साल्वेशन फाउंड एंड लॉस्ट।”* रॉमन एंड लिटलफिल्ड पब्लिशर्स, २०११। पन्ना २५१।

५५ थिलेमन वान ब्राग्ट ने लिखा और जोसफ एफ. सोहम ने अनुवादित किया, *"मार्टिर्स मिरर : द स्टोरी ऑफ़ सेवंटीन सेंच्युरी ऑफ़ ख्रिश्चियन मार्टिरडम फ्राम द टाइम ऑफ़ ख्राइस्ट टू ए.डी. १६६०"* को हेराल्ड प्रेस ने १९३८ में प्रकाशित किया।

५६ टरटूलियन। *"द प्रिस्क्रिप्शन अगेंस्ट हेरेटिक्स।"* पिटर होल्म्स द्वारा अनुवादित। अध्याय ३६। इस साईट पर मिलेगा – http"//www.tertullian.org/anf/anf03/anf03-24.htm

पाठ २३

५७ *फिडलर ऑन द रूफ को पहले २२ सितम्बर १९६४ को किया गया। जोसफ स्टेन द्वारा लिखा हुआ, जेरी बॉक का संगीत और शेल्डन हार्निक के गीत, यह संगीतमय होलीवुड में, रास्ते पर, और थियटर स्टेज पर जगत भर में उत्कृष्ट हो गया।*

५८ स्टीव ग्रीन और डगलस मॅककेल्वि ने साथ में लिखा हुआ गीत, *"मैं जाऊँगा"* को बर्डविंग म्यूजिक के चिन्ह से २००२ में रिकॉर्ड किया गया। पूरा गीत इस साईट पर मिलेगा- http://stevegreenministries.org/product/i-will-go/

५९ इस गीत की दो पंक्तियाँ उतनी ही शानदार जो फ्रेडरिक एम. लेहमन द्वारा लिखी गई। यह इस साईट पर उपलब्ध है-http://library.timelesstruths.org/music/The Love_of_God/

पाठ २६

६० यह संदर्भ स्टार वार्स से आता है : उपविभाग ५- द एम्पायर स्ट्राइक्स बैक। इरविन किर्शनर द्वारा दिग्दर्शित, स्टार वार्स गाथा का यह उपविभाग १९८० में जारी किया गया।

६१ ब्रिटनी स्पीयर्स ने इस गीत को उसका अल्बम जिसका शीर्षक *"ब्रिटनी इन २००१"* है उसमें रिकॉर्ड किया है। यह रामी और मॅक्स मार्टीन और उनके साथ डीडो द्वारा लिखा और बनाया गया है।

पाठ २७

६२ पूरी कहांनी के लिए, फिल नाइट्स की पुस्तक देखें *"शु डॉग : अ मेमोयर बाय द क्रियेटर ऑफ़ नाइक।"* (स्क्रिब्नर, २०१६)।

६३ जानकारी जो यहाँ मिलती है और अधिक जानकारी के लिए, श्रीमती हॉवर्ड टेलर्स के बोर्डेन ऑफ़ याले' में देखे। (बेथानी हाउस पब्लिशर्स, १९८८)।

६४ वेस्ली भाई और जॉर्ज व्हाईटफिल्ड ने १७२९ एकसाथ धर्मी जीवन व्यतीत करें, पूरी तरह से प्रभु को समर्पित, अनुशासित जीवन व्यतीत करने के इरादे से एक समूह बनाया। बाहरी जगत, निंदा करते हुए, उनके समूह को *"द होली क्लब"* कहता था। मेथडिस्ट संगठन का इस समूह से निर्माण हुआ। हर रोज उनके निजी भक्ति से, वे अपने आप को २२ प्रश्नों की श्रृंखला पूछते थे जो *"क्या मैं सोचकर या बिना सोचे ऐसा प्रभाव निर्माण कर रहा हूँ कि मैं जो सच में हूँ उससे ज़्यादा मैं हूँ?* से लेकर "क्या यहाँ कोई है जिसका मैं भय रखूं, नापसंद करूँ, आलोचना करूँ, उसके प्रति नाराजगी या उपेक्षा रखूं? यदि ऐसा है, तो मैं इसके बारे में क्या कर रहा हूँ? इस यात्रा पर अधिक जानकारी के लिए वेस्ली भाइयों की आत्मकथा पढ़िए।

लाभदायक सुविधाएं : परमेश्वर के वचन का गहन अध्ययन

व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए,
इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना,
इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे;
क्योंकि ऐसा करने से तेरे सब काम सफल होंगे,
और तू प्रभावशाली होगा।
(यहोशू १:८)

बाइबल में, *"धन्यवादित व्यक्ति"* वह है जो परमेश्वर के वचन पर चिंतन करता है। *"क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, और न पापियों के मार्ग में खड़ा होता; और न ठट्ठा करनेवालों की मंडली में बैठता है। परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता; और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है; वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों के किनारे लगाया गया है, और अपनी ऋतु में फलता है, और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं। इसलिए जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।"* (भजन संहिता १:१-३).

चिंतन क्या है?

इब्रानी शब्द चिंतन के लिए हागाह शब्द है जिसका अर्थ शोक, विलाप करना या योजना बनाना ऐसे अनुवादित किया जा सकता है। यशायाह ३१:४ में, वह एक जवान सिंह उसके भक्ष्य पर गुरगुराता है ऐसे कहता है। कल्पना यह गहराई में विचार करना है। पवित्र बाइबल से चिंतन की परिभाषा जगत के दृष्टिकोण से पूरी तरह से विरुद्ध है।
जगत कहता है, *"चिंतन करो!"* आपके मन को खाली करो।
परमेश्वर कहता है, "चिंतन करो।" मेरे वचन से अपने मन को भरो।
जगत कहता है, *"आपके मन को आराम दो।"*
परमेश्वर का वचन कहता है, "आपके मन को शास्वत बातों पर केन्द्रित करो।"

हमारा आनंद कहाँ पर है?

भजनकार कहता है कि आशीषित पुरुष ऐसी सोच में आनन्द करता है।

हमें किस बात में ख़ुशी मिलती है? हमारा आनंद कहाँ है? हम उन बातों पर चिंतन करेंगे जिनसे हमें ख़ुशी मिलती है। हमारा जोश चिंतन के हमारे जीवन पर नियंत्रण करेगा और चिंतन करने का हमारा चुनाव हमारे जोश को आकार देगा। क्या हमारा चिंतन केवल दिन के कुछ निश्चित समय के लिए मर्यादित रहता है या यह निरंतर रहता है? यह आशीषित पुरुष जो पहिले भजन में है वह दिन और रात वैसा करता है। परमेश्वर के वचन पर चिंतन करना यह केवल हमारे दिन में कोई एक घटना नहीं है, लेकिन हमारे जीवन व्यतीत करने का मार्ग हैं। मेरे विचार कहां पर लगे रहते हैं? मेरे मन और जीवन में अवचेतन रूप में क्या होता रहता है जिसके बारे में मुझे कोई समझ नहीं होती है?

कौनसे झरने के किनारे हमें लगाया गया हैं? लगाया जाना यह उपस्थित रहने से अधिक है। यह हमारा निवासस्थान है। यदि हमारे जीवन की जड़े परमेश्वर के झरने से जुड़ी हैं, तो फिर हमारे जीवनों के सभी क्षेत्रों ने धर्मी समृद्धि निर्माण करना चाहिए (जगत की संपत्ति से भिन्न)। हम कौनसे फल उत्पन्न कर रहे हैं? क्या हम जिसे बाहरी कम फल मानते हैं उसके द्वारा निराश होते जबकि शायद परमेश्वर हम में सक्रीय होता है, हमें अधिक फल लाने के लिए तैयार कर रहा होता है? आत्मा जो परमेश्वर के ज्ञान से निरंतर ताजगी के झरने के किनारे लगाई गई है (१:२) उनकी जो मनुष्यों के शब्दों के बेकार झरने में चलते है उनसे तुलना की गई है (१:१)। परमेश्वर के वचन का हमारे जीवन में क्या स्थान है? क्या *"आशीषित"* की हमारी परिभाषा परमेश्वर के सोच के बराबर मेल खाती है?

परमेश्वर के वचन पर व्यवहारिक चिंतन

मार्गदर्शिका जो मैं आपको बतानेवाला हूँ यह परमेश्वर के वचन में समय बिताने का एक मार्ग है। पिछले कई सालों में मैंने कई तकनीकी और शैलियों का उपयोग किया हैं, लेकिन इस पद्धति को अत्यंत व्यवहारिक पाया है। यह सिद्ध नहीं है। न ही ये वचन के इस भाग के समग्र संदर्भ को संबोधित करने में कोई अच्छा काम करती है या परमेश्वर का वचन किसी निश्चित विषय पर क्या कहता है इसका व्यापक चित्र देती है। लेकिन परमेश्वर के वचन पर चिंतन करने का एक व्यवहारिक मार्ग है।

मैं इसे २०-१०-५-१ कहता हूँ।

पद्धति : २०-२०-५-१

जब कभी आप परमेश्वर के वचन को खोलते है, तो उसे प्रार्थनापूर्वक, शांतिपूर्वक, खोजपूर्वक और उद्देश्यपूर्वक करे। चार घटक निम्नलिखित है :

बीस अवलोकन के लिए है।
दस पूछताछ के लिए है।
पांच चिंतन के लिए है।
एक लागूकरण के लिए है।

अंश से निरिक्षण (२०)

परमेश्वर के वचन में प्रार्थनापूर्वक जाने के बाद और उस अंश को पढ़ने (ज़ोर से) के बाद में, उस वचन में टिप्पणियों के लिए देखे। जब मैं अवलोकन कहता हूँ, तब यह कोई गहरा आत्मिक अर्थ खोजने या मूल इब्रानी भाषा को जांचना नहीं है। इसके बजाय, यह उस एक वचन या अंश पर बीस टिप्पणियों को देखना हैं।

उदाहरण से स्पष्ट करने के लिए, यदि मैं आपके सामने बैठा हूँ, तो आप अवलोकन कर सकते है कि मैं (१) मेरे दाहिने हाथ में ब्रेसलेट पहने हूँ (२) नंगे पैर हूँ (२) सोया जूस पी रहा हूँ, (४) मॅकबुक, एयर पर काम कर रहा हूँ, (५) टकला हूँ , (६) होटल रूम में बैठा हूँ, (७) एक पुस्तक लिख रहा हूँ। सूची और भी अधिक लम्बी हो सकती है।

भजन संहिता १:२-३ में, मैं आशीषित पुरुष में इन बातों का अवलोकन कर सका (१) उसे चिंतन का **जोश** है ("यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है"), (२) चिंतन करने की उसकी **प्राथमिकता** (दिन और रात), (३) परमेश्वर के वचन पर चिंतन करने की **व्यस्तता** (उसकी व्यवस्था पर), (४) एक पेड़ के रूप में **चित्रित** किया है (पानी के झरने के किनारे लगाए पेड़ समान), (५) उसे चिंतन करने का **स्थान** है जो लोग देख सकते है (ध्यान दीजिए : पेड़ का पालनपोषण जड़ से आता है), (६) उसके पास **उत्पादन** है जो अन्य लोग आनंद ले सकते है उसके चिंतन के कारण (अपनी ऋतू में फल लाता है), और (७) उसकी **देखभाल** होगी (उसके पत्ते मुरझाते नहीं)। ज़ाहिर तौर पर, यह सूची और भी अधिक लम्बी हो सकती है।

सरल बिंदु यह है कि निरिक्षण करना सांसारिक लग सकता है, जैसे ही आप अंश में गहराई में जाते हो (एक या दो टिप्पणियों के बाद रुकते नहीं हो), तो आप उस दृश्य पर विचार करने लगोगे जो निर्धारित किया गया है और पवित्र आत्मा आपके मन को खोलना शुरू करेगा

कि वह क्या सोच रहा है। थोड़े से चिंतन के बाद हियाव छोड़ देने के प्रलोभन न पड़ो। हर एक वचन कम से कम बीस निरिक्षण का पता लगाओ। क्या असंभव लगता है? ऐसा नहीं है। कुछ मित्र और मैंने क्रूस से दिए गए मसीह के *"मैं प्यासा हूँ"* (यूहन्ना १९:२८) इस शब्द में बीस से ज़्यादा टिप्पणियां खोजी थी।

अवलोकन करने की इस प्रक्रिया में, अंश को १०-१५ बार पढ़ने की उम्मीद करें। बाधा महसूस करने पर? फिर से पढ़िए। और फिर से।

आपके अवलोकन करने को लिख कर रखे और बहुत जल्द आपका अपना भाष्य विवरण होगा ! ऐसी बीस टिप्पणियों को खोजने के बाद में, आप कोई संदेश सुनना चाहोगे या उस अंश पर टिकांकन पढ़ना चाहोगे -और अन्य बीस खोजोगे। और भी उत्तम, एक मित्र को उस अंश पर आपके साथ चिंतन करने के लिए निमंत्रित करे, और सूची में जोड़ते जाइए।

अंश पर पूछताछ (१०)

आपकी टिप्पणियों को प्राप्त करने के बाद में, उस अंश की पूछताछ करे। हालाँकि दस प्रश्नों पर बात निर्धारित की हो, फिर भी मैं सामान्य रूप से यह बहुत ही थोड़ा है ऐसे मानता हूँ। अंश के बारे में प्रश्न पूछने के बाद आगे के (बाद में के लिए) अध्ययन को सहायता मिलेगी, मूल अंश को बाइबल में दूसरे अंश से जोड़ें, और उन विचारों को प्रकाशित करें जिस पर आप ने कभी सोचा नहीं था। अपराधी मन, मानसिकता या सीएसआय समान अपराध दृश्य अन्वेषक बनिए। बुनियादी जाँच के प्रश्न पुछिएं : कौन? क्या? क्यों? कहाँ? कब?

(१) आशीषित पुरुष को एक पेड़ के समान और किसी और से समान रूप में क्यों चित्रित नहीं किया है? (२) उसे क्यों पानी के झरने के किनारे लगाया है? (३) क्या यह दर्शाता है कि उसे जानबूझकर वहां लगाया गया है? (४) उसे किसने लगाया है? (५) उसे क्यों लगाया है? (६) क्या कोई ऋतू है जिसमे वह फल नहीं देता? (७) कौन फल खाता है? इत्यादि।

अतिरिक्त टिपण्णी के रूप में, मेरे कई संदेश बाइबल के किसी अंश पर ऐसी पूछताछ से बने हैं।

अंश पर चिंतन करना (५)

आपके अवलोकन और पूछताछ के बाद में आपको पूर्ण शांति में पांच मिनट रहने के लिए मुझे प्रोत्साहन देने दीजिए। यह शांति सोने या घड़ियाल को ३०० बार टिक टिक चलने तक के लिए रुकना नहीं है। यह समय है कि अवलोकन और प्रश्न जो आप ने लिखे हैं उन

पर चिंतन करने के लिए है। यह अवसर है कि जो चिंतन आप ने किया है उसमे ध्यान लगाए और आगे क्या होने की आवश्यकता है उसके बारे प्रभु को आप को यह विश्वास दिलाने दे।

अच्छी खबर। वह ऐसा करेगा।

आपके जीवन के लिए लागूकरण (१)

फिर चाहे मैं बीस जवानों के समूह में हूँ या अपने आप, एक लागूकरण प्रति व्यक्ति आवश्यक है। याकूब १:२२-२५ परमेश्वर के वचन को आईने से तुलना करता है। मैं मेरा चेहरा या शरीर साफ करने के लिए आईने का उपयोग नहीं करता, न ही मैं इसे औरों की जाँच करने के लिए उपयोग करता हूँ। इसका उद्देश्य यह मेरे अपने चेहरे को प्रतिबिंबित करना है, ताकि मैं उसके अनुसार प्रत्युत्तर दे सकू।

उसी तरह से, जब मैं परमेश्वर की व्यवस्था में देखता हूँ (परमेश्वर का मेरे लिए प्रेम पत्र), मुझे दयापूर्वक मौका दिया गया है कि यह मेरे जीवन में क्या दिखाता है उसे देखे-ताकि मैं यीशु मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होता जाऊ। अपने आप को एक अच्छा प्रश्न पूछना यह है जब हम दिन में प्रवेश करते हैं : यह दिन कैसा अलग है और परमेश्वर के वचन में व्यस्त रहने के परिणाम से मैं कैसे बदल गया हूँ?

लाभांश

इसे लिखने में मुझे हिचकिचाहट हुई, क्योंकि मैं नहीं चाहता की आप के स्वयं के लिए खोज करने का आनंद आपसे चुरा न लु, लेकिन आप में से किसी को अतिरिक्त प्रोत्साहन की आवश्यकता हो सकती है, इसलिए कहां है।

परमेश्वर का वचन इस तरीके से अध्ययन करने में अद्भुत प्रतिफल मैंने प्राप्त किया है। परमेश्वर के वचन पर चिंतन करने और उसमे खो जाने से आप न केवल अनगिनत आशीष प्राप्त करते हैं, परंतु बगैर प्रयास किए, आप उसे अच्छी तरह से स्मरण रखते है। जबकि मैं सैंकड़ों वचन कह सकता हूँ, उसमे से अधिकतम मेरे मन और हृदय में खोदे गए हैं वे वो वचन नहीं है जिन्हें मैं जानबूझकर स्मरण करना चाहता था। कई सारे वचन जिन्हें मैं अच्छी तरह से जानता हूँ वे मेरे स्मरण में परमेश्वर के वचन पर गहराई में चिंतन करने से और मेरे हृदय के भीतर उन्हें गहराई में छिपाने से आ गए हैं।

मेरे मित्रों, "२०-१०-५-१" यह अत्यधिक सरल लग सकता है, परंतु मैं आपको निमंत्रित करता हूँ कि बाइबल में इस दृष्टिकोण से नम्रतापूर्वक और प्रार्थनापूर्वक गहराई में जाए। पवित्र आत्मा को आपसे मसीह की बातों को बताने के लिए तैयार हो जाए।

और, जब आप बाइबल पर चिंतन करते हैं, इसे ध्यान में रखे :

प्रभु जो कहता है वही उसका मतलब रहता है।

रॉक इन्टरनॅशनल से और एक सच्चा शिष्यत्व का स्त्रोत

समृद्ध हो : परमेश्वर के साथ घनिष्टता का आनंद लेना-पुस्तक

नाटे जब कैंसर से जुंझ रहे थे उस दौरान लिखी गई यह पुस्तक, वाचक को भजन संहिता १:२-३ से यात्रा पर ले जाती है जो आशीषित जीवन एकत्तीस पहलुओं की जांच करता हैं। यह पुस्तक दिल को झकझोर देने वाले प्रश्न उठाती है और मूल कारणों की जांच करती है जो मसीह-अनुयायियों को उसके साथ घनिष्टता का आनंद लेने से रोकते हैं।

क्या हम आत्मिक दरिद्रता की स्थिति में जीवन व्यतीत करते हैं जब परमेश्वर हमें सच में समृद्ध होने के लिए निमंत्रित करता है?

परमेश्वर के बारे जानने से लेकर उसे जानने और उसका आनंद लेने तक की यात्रा करें।

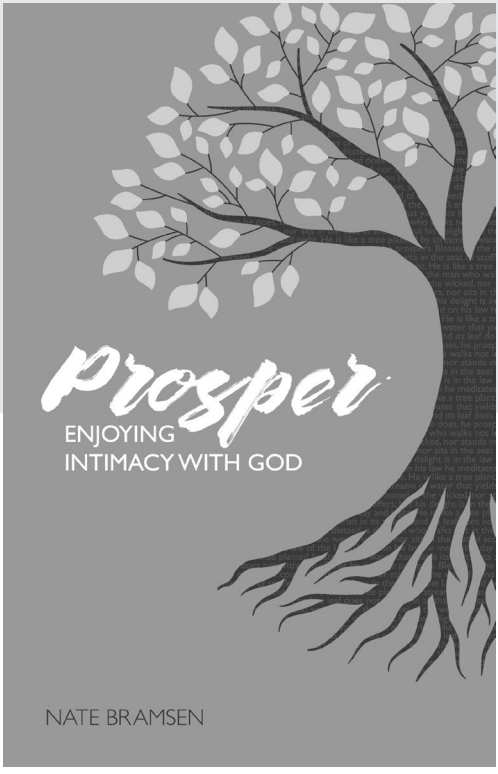

एक पेड़ की शक्ति उस भाग में रहती है जिसे कोई नहीं देखता।

WWW.ROCKINTL.ORG/
DISCIPLESHIP-FOCUSED-TOOLS

रॉक इन्टरनॅशनल से कालानुक्रमिक सुसमाचार संसाधन

उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक स्पष्ट-सुसमाचार साधन ११५ से अधिक भाषाओं में

महिमा का राजा- सिनेमा /डीव्हीडी

बाइबल को ऊँची आवाज़ में पढ़ने के लिए ७० घंटे लगते हैं। यह १५-उपविभागीय सिनेमा आपको इसकी मुख्य कहानी और संदेश २२२ मिनट में अनुभव करने देता है। महिमा का राजा सचित्र पुस्तक शब्द दर शब्द दृश्य दर्शन। महिमा का राजा सिनेमा का हिंदी संस्करण भी उपलब्ध है।

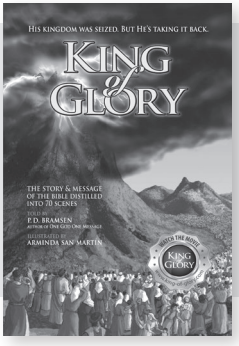

महिमा का राजा-सचित्र पुस्तक

बाइबल से अचूक वचन और चित्रों के साथ, यह यात्रा जगत के सबसे अधिक बिक्री होनेवाले पुस्तक से इसकी कहानी और संदेश को ७० दृश्यों में प्रसारित करती है। यह सभी उम्र और संस्कृति के लोगों के लिए है।

महिमा का राजा सचित्र अध्ययन मार्गदर्शिका

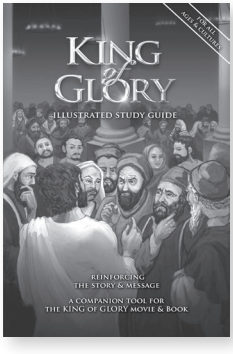

सिनेमा और सचित्र पुस्तक के लिए यह आश्चर्यजनक साथी साधन १५ या ७० पाठों (आपका चुनाव) का कार्यपुस्तिका/पाठ्यक्रम है जो बाइबल की नींव और ढाँचे को स्फूर्तिदायक रूप से स्पष्ट करती है। सभी अनुसूची, उम्र और सन्दर्भों के लिए अनुकूलनीय है।

साथ ही **महिमा का राजा रंग भरने की पुस्तिका** भी उपलब्ध है।

WWW.KING-OF-GLORY.COM

एक ही परमेश्वर एक ही संदेश-पुस्तक

आँखे खोल देने वाली तीन चरनों वाली बौद्धिक और आत्मिक यात्रा बाइबल के भविष्यद्वक्ताओं के साथ है जो संशयवादियों को उनकी बाधाओं का सामना करने देती और बाइबल की कहांनी और संदेश को समझाती है। संशयवादियों से ईमेल के कुछ अंश विपरीत स्पष्टता प्रदान करते हैं।

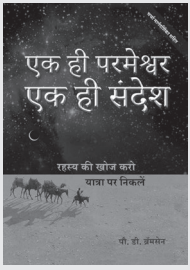

ROCKINTL.ORG/ROCK-DOCUMENT/ONE-GOD-ONE-MESSAGE-HINDI

ROCKINTL.ORG-RESOURCE-LIBRARY-HINDI

धार्मिकता का मार्ग -रेडिओ कार्यक्रम

इस बाइबल श्रृंखला में १५-मिनट के परस्पर जुड़े हुए एक सौ रेडियो कार्यक्रम शामिल हैं। पश्चिम अफ्रीका, सेनेगल के मुस्लिम लोगों के लिए सबसे पहले इसे वोलोफ भाषा में बनाया गया है।

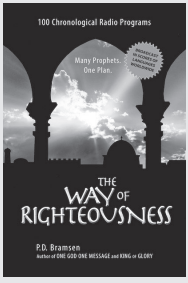

देखिए, सुनिए और पढ़िए, डाउनलोड कीजिए और बताइएं
ये सभी बहु-भाषीय स्त्रोत मुफ्त में हैं

ROCK INTERNATIONAL

WWW.ROCKINTL.ORG/RESOURCE-LIBRARY